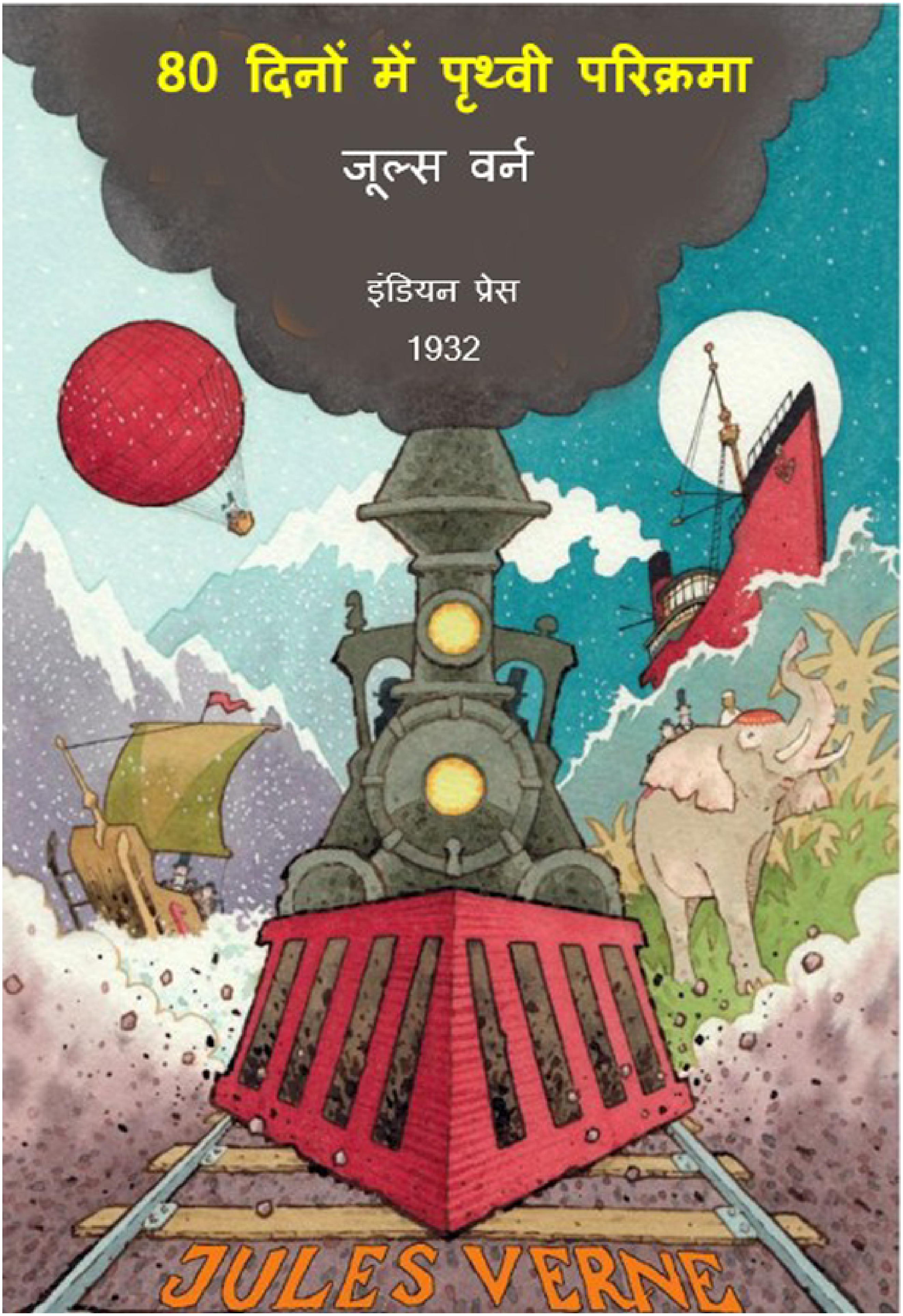
80 दिनों में पृथ्वी परिक्रमा

जूल्स वर्न

इंडियन प्रेस
1932



इंडियन प्रेस, किशोर सीरीज

८० दिनों में पृथ्वी-परिक्रमा

(जूल वर्न के Round the world in 80 days का
हिन्दी अनुवाद)

अनुवादक
रामस्वरूप गुप्त

सम्पादक
डा० नवलबिहारी मिश्र, बी० एस्-सी०
एम० बी० बी० एस०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस (पब्लिकेशन्स), प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद
१९६२

प्रकाशक
पी० एल० यादव
इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

मुद्रक
पी० एल० यादव
इंडियन प्रेस, प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

अस्सी दिनों में पृथ्वी-परिक्रमा

(१)

इँगलैंड के बर्लिंगटन गार्डेन्स की सैविल रो नामक सड़क पर ७ नम्बर का एक मकान था जहाँ १८१४ में शेरिडन की मृत्यु हुई थी। बात १८७२ की है। इसी मकान में लंदन के रिफार्म क्लब के विख्यात सदस्य श्री फ़िलियास फॉग, यद्यपि इनका तौर-तरीक़ा किसी को आकर्षित करनेवाला नहीं था, रहते थे।

उस समय के यही पहेली-नुमा सज्जन फ़िलियास फॉग, जिनके विषय में केवल इतना ही ज्ञात था कि वे एक बड़े विनम्र और अँगरेजी सभ्य समाज के अत्यन्त उच्च कोटि के सज्जन थे, इँगलैंड के उच्चतम वक्ताओं में से एक के उत्तराधिकारी हुए।

फ़िलियास फॉग अँगरेज जरूर थे लेकिन लंदन-निवासी शायद नहीं। नगर के किसी इक्सचेञ्ज, बैंक इत्यादि में वे कभी नहीं देखे गये। फ़िलियास फॉग द्वारा सुसज्जित जहाज कभी लंदन के बन्दरगाहों में नहीं आया। यह महोदय किसी सार्वजनिक संस्था में भी नहीं रहे। इनका नाम नगर के किसी प्रमुख विश्रामालय में भी नहीं सुना गया। किसी अदालत में इन्होंने वकालत नहीं की। यह न तो कोई निर्माता थे, न व्यापारी, न सौदागर, न शरीफ किसान। इँगलैंड के रॉयल इंस्टीट्यूशन, लंदन इंस्टीट्यूशन, आर्टीजियन्स् ऐसोसियेशन, रसल इंस्टीट्यूशन या कला एवं विज्ञान की संस्थाओं के सदस्य भी यह नहीं थे। सच पूछो तो इँगलैंड में मडराती हुई अनेक सोसाइटियों से उनका कोई सम्पर्क नहीं था। फ़िलीज फॉग केवल रिफार्म क्लब के सदस्य थे।

क्या इसमें किसी को आश्चर्य होना चाहिये कि ऐसा रहस्यमय व्यक्ति ऐसी प्रतिष्ठित संस्था का सदस्य हो। इसका उत्तर हम यही देंगे कि इन्होंने बेरिंग बन्धुओं की सिफारिश से प्रवेश किया जिनके साथ इनका खुला व्यापार था।

क्या यह फ़िलियास फ़ॉग धनी थे ? निस्सन्देह। लेकिन सबसे ज्यादा जानकार भी यह न बता सका कि उन्होंने यह धन कैसे पाया और इस जानकारी के लिये स्वयं फ़ॉग महोदय के पास जाना व्यर्थ था। किसी भी चीज में वे खर्चीले नहीं थे, और न लालची थे, क्योंकि जब कभी किसी उदार, उपयोगी या पुण्य कार्य के लिये धन की माँग होती तो वे इसे चुपचाप बिना किसी को बताये ही दे देते थे। संक्षेप में इनसे कम बातून कोई नहीं था। यह कम से कम बात करते थे और चुप की अपेक्षा अधिक रहस्यमय प्रतीत होते थे। लेकिन उनका जीवन खुला जीवन था और जो कुछ वे करते थे वह सदैव वही होता था जिसे उनकी असन्तुष्ट कल्पना और आगे प्राप्त करती।

क्या इन्होंने भ्रमण किया था ? यह सम्भव था, क्योंकि इनसे ज्यादा संसार का ज्ञान किसी को नहीं था। कोई ऐसा एकान्त स्थान नहीं था जिससे इनका परिचित होना न प्रतीत होता हो। कभी-कभी थोड़े और साफ शब्दों में क्लब में प्रचलित मतों का सुधार करते और रास्ता भूले हुए मुसाफिरों का हवाला देते। वे सच्ची सम्भावनाओं की ओर इशारा करते और घटनाओं ने प्रायः इनकी भविष्यवाणियों को न्यायोचित ठहराया जिससे प्रतीत हुआ कि इनमें एक प्रकार की दिव्य-दृष्टि का गुण था। यह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अवश्य हर जगह कम से कम भावनाओं में ही भ्रमण किया होगा।

एक बात निश्चित है कि कई वर्षों तक फ़िलियास फ़ॉग लंदन से बाहर नहीं गये। जिन लोगों को दूसरों की अपेक्षा इनसे अधिक

घनिष्ठ सम्पर्क होने का सौभाग्य प्राप्त था, वह लोग कहते थे कि कोई भी इन्हें, सिवाय उस सीधे रास्ते पर और कहीं नहीं देख सका जिस पर वे नित्यप्रति अपने घर से क्लब जाते थे। अखबार पढ़ने और ताश खेलने के अतिरिक्त उनका और कोई मनोरञ्जन नहीं था। इस शान्त खेल में यह कभी-कभी जीत जाते थे। यह इनके स्वभाव के सर्वथा अनुकूल था। इनकी जीत का पैसा इनकी जेब में कभी नहीं गया बल्कि इनके दान-कोष में महत्त्वपूर्ण स्थान पा गया। इसके अतिरिक्त, यह कहना चाहिये कि श्री फॉग केवल मनोरंजनार्थ ही खेलते थे, जीतने के लिये नहीं, थकान से रहित प्रयत्न करते थे और यह इनके चरित्र से मेल खाता था। इनके लिये खेल एक संघर्ष था, कठिनाइयों के प्रति संघर्ष।

फ़िलियास फॉग के बीबी-बच्चे नहीं थे जो कि अत्यन्त आदरणीय व्यक्तियों के सम्बन्ध में होता ही है। इनके रिश्तेदार या मित्र भी नहीं थे जो कि निस्सन्देह बहुत कम पाया जाता है। फ़िलियास फ़ॉग सैविल रो वाले अपने मकान में अकेले ही रहते थे जहाँ कोई नहीं आता था। मकान के भीतरी भाग के विषय में कोई सवाल ही नहीं उठता। इनकी सेवा के लिये एक ही नौकर काफी था। क्लब में नाश्ता करना, खाना खाना, एक ही कमरे में, एक ही मेज़ पर, ठीक निश्चित समय पर, न तो मित्रों की खातिर करते हुए न किसी अपरिचित को आमंत्रित करते हुए। ठीक आधी रात को केवल सोने के लिये घर वापिस आना इनका काम था। इन्होंने कभी उन सुखद कमरों का भी उपयोग नहीं किया जिनका प्रबन्ध क्लब ने अपने खास सदस्यों के लिये किया था। चौबीस घण्टों में से दस घण्टे यह अपने निवास-स्थान पर ही गुजारते थे या तो सोते हुए या अपना बनाव-सिंगार करते हुए।

अगर यह चमकदार फर्शवाले प्रवेश-कक्ष में चलते थे तो नपे-तुले कदम रखते हुए। अगर यह भोजन या नाश्ता करते तो क्लब

के रसोईघर, भांडार या दुग्धशाला से इनकी मेज पर रसीले और मांसल पदार्थ आ जाते थे। क्लब के कर्मचारी, जो कि वर्दी और हिरन की खाल के तलोंवाले जूते पहिने होते थे, साफ मेजपोशों पर खास चीनी के बर्तनों में इनकी खातिर करते थे। क्लब के पुरानी वजा के सुरापात्रों में इनके लिए सुगन्धित और उम्दा किस्म की शराब आती थी। यहाँ तक कि अमरीकन झीलों से अधिक दाम खर्च करके लाई हुई क्लब की बर्फ इनकी सुराओं को ताजा और शीतल रखने के काम में आती थी।

यदि इस वातावरण में रहना ही सनकी होना है तो यह तय है कि इस सनक में भी कुछ अच्छाई है।

सैविल रो वाला मकान बिना भड़कीला होते हुए ही अपने सुखद होने के नाते तारीफ के काबिल था। इसके अतिरिक्त घर में रहनेवालों की अपरिवर्तनवादिता के होते हुए भी नौकरों की संख्या घटाकर केवल एक कर दी गई थी। लेकिन फ़िलियास फ़ॉग अपने अकेले इस एक नौकर से असाधारण समय की आशा रखते थे।

आज ही दूसरी अक्टूबर को, फिलियास फॉग ने जेम्स फार्स्टर को केवल इसलिए निकाल दिया था कि उस नौजवान ने इनको हजामत बनाने को पानी बजाय छियासी फारेनहाइट पर पचासी फारेनहाइट पर गरम किया हुआ देकर नाराज कर दिया था और यह अपने उत्तराधिकारी का रास्ता देख रहा था जो कि ग्यारह बजे से साढ़े ग्यारह बजे तक आनेवाला था।

फ़िलियास फ़ॉग अपनी आरामकुर्सी पर चौकोर से बैठे थे। परेड करते हुए सिपाही के पैरों की तरह उनके पैर आपस में जुड़े हुए थे, हाथ घुटनों पर टिके हुये, शरीर सीधा, सर उठा हुआ। वे घड़ी की चलती हुई सुइयों को देख रहे थे। घड़ी भी एक विचित्र मशीन-सी थी जो घण्टे, मिनट, सेकेण्ड, महीने के दिन और वर्ष भी

बताती थी। साढ़े ग्यारह बजे श्री फ़ॉग अपनी आदत के अनुसार घर छोड़कर क्लब चले जाते थे।

उसी समय दरवाजे पर थपथपाहट हुई। जेम्स फ़ार्स्टर, जो बरखास्त हो गया था, आया।

'नया नौकर' उसने कहा।

तीस वर्षीय एक जवान आदमी आगे आया और उसने झुककर सलाम किया।

'तुम फ़्रान्सीसी हो और तुम्हारा नाम जॉन है?' फ़िलीज फ़ॉग ने पूछा।

'जीन, यदि श्रीमान् को यह अप्रिय न लगे।'

नवागन्तुक ने उत्तर दिया। 'जीन पासेपार्टाऊट' खानदानी नाम है जो मुझसे चिपका रहा है और जिसे मेरी व्यापार-विरोधी प्रवृत्ति ने न्यायोचित ठहराया है। श्रीमान्, मैं विश्वास करता हूँ कि मैं एक ईमानदार आदमी हूँ। वैसे साफ तो यह है कि मैंने अनेक धंधे किये हैं। मैं एक फेरीवाला गायक रहा हूँ, एक सरकारी घुड़सवार, लियोटार्ड की भाँति छलाँग भरता हुआ और ब्लोंडिन की तरह रस्से पर नाचता हुआ; और तब अपने गुणों को अधिक उपयोगी बनाने के लिए मैं व्यायाम का प्राध्यापक हो गया; और अन्त में मैं सार्जेण्ट हो गया। मेरे पास कागजों में उत्तम बन्दूक चलाने के लेख भी मौजूद हैं। फ्रांस छोड़े हुए मुझे ५ वर्ष हो गये और अब घरेलू जीवन का स्वाद लेने का इच्छुक हूँ और इसी लिये इँगलैंड में घरेलू नौकर रहा हूँ। अब, बेकारी में यह जानकर कि श्रीमान् फ़िलिआस फ़ॉग ही समस्त संयुक्तराष्ट्र में सबसे ठीक और सबसे अधिक सुबीते के सज्जन हैं, मैंने अपने को श्रीमान् के सम्मुख उपस्थित किया है, यह आशा लेकर कि उनके साथ शान्तिपूर्वक रहूँगा और पासेपार्टाऊट का नाम तक भूल जाऊँगा।

'पासेपार्टाऊट मेरे लिये ठीक है' श्रीमान् बोले।' मुझसे तुम्हारी सिफारिश की गई है। तुम्हारे संबंध में मेरे पास अच्छी खबरें हैं। तुम्हें मेरी शर्तें मालूम हैं ?

'हाँ, श्रीमन्।'

'अच्छा, टाइम क्या है ?'

'ग्यारह बज के बाइस मिनट।' अपनी जेब से एक भारी चाँदी की घड़ी निकालते हुए उसने कहा।

'तुम सुस्त हो,' श्री फ़ॉग बोले।

'क्षमा कीजियेगा, श्रीमान्, ऐसा नहीं हो सकता।'

'तुम चार मिनट सुस्त हो। खैर, कोई हर्ज नहीं। अन्तर बता देना ही पर्याप्त है। तब, इसी समय से यानी ग्यारह बज के २६ मिनट पर, आज बुधवार को, २ अक्टूबर १८७२ को तुम मेरे नौकर हुए।'

यह कह कर फ़िलिआस फ़ॉग उठे, बाँयें हाथ में अपना हैट लिया, इसे सर पर रक्खा और बिना कुछ और कहे हुए चले गये।

पासेपार्टाऊट ने एक बार दरवाजा बन्द होते सुना। उसके नये मालिक बाहर जा रहे थे। फिर दूसरी बार अब उसके पहिलेवाला नौकर जेम्स फ़ास्टर जा रहा था। पासेपार्टाऊट वहाँ सैविल रो वाले मकान में अकेला रह गया।

(२)

'मेरे विचार में श्रीमती टुसाउड के यहाँ लोग ऐसे ही अच्छे और जिन्दादिल थे जैसे कि मेरे नये मालिक।' पासेपार्टाऊट ने कहा।

'यहाँ यह कहना ठीक ही है कि श्रीमती टुसाउड के यहाँ के लोग मोम के पुतले हैं जो लंदन में अधिक देखे जाते हैं और जो केवल बात करने में पीछे हैं।'

उस अल्प समय में जिसमें उसकी फ़िलियास फ़ॉग से मुलाकात हुई थी, उसने अपने होनेवाले मालिक का निरीक्षण शीघ्रता मगर सावधानी से किया था। वह चालीस वर्ष का बुड्ढा-सा व्यक्ति था, अच्छा खूबसूरत चेहरा-लम्बा चौड़ा जिसे जरा-सा मोटापा बिगाड़ नहीं रहा था। उसके बाल और मूँछें हल्के थे, माथा घना और कनपटियों पर बिना झुर्रियों के। चेहरा बजाय चमकने के पीला था और दाँत शानदार थे। इनमें बहुत बड़ी मात्रा में काम करते समय का इतमीनान था और जैसा कि चेहरा देखकर हाल बतानेवाले कहते हैं, यह गुण प्रायः उनमें ही पाया जाता है जो बातचीत की अपेक्षा अधिक काम करते हैं। शान्त, शीघ्र न उत्तेजित होनेवाले, साफ नजर, स्थिर आँखों के पपोटे, वह उन ठण्डे स्वभाववाले अंग्रेजों में से एक सम्पूर्ण से व्यक्ति थे जो आम तौर पर इँगलैंड में मिलते हैं और जिनकी भिन्न-भिन्न मुद्राओं को ऐन्जिलिका कॉफ़मन ने आश्चर्यजनक रीति से चित्रित किया है। इनके जीवन में देखे गये भिन्न-भिन्न कार्यों में इस व्यक्ति ने सर्वाङ्ग में एक अत्यन्त सन्तुलित व्यक्ति होने का आभास दिया, बराबर लटका हुआ, इतना पूर्ण जितना कि लेराय या अर्नशॉ का समयमापक यंत्र। निस्सन्देह फ़िलियास फ़ॉग पूर्णता के अवतार थे। यह इनके पैरों और हाथों की भावाभिव्यक्ति से लक्षित होता था क्योंकि मनुष्यों और जानवरों तक में अंगों से ही उत्तेजनाओं का व्यक्तिकरण होता है।

फ़िलियास फ़ॉग उन व्यक्तियों में से थे जो गणितीय त्रुटिहीनता रखते थे, जो कभी जल्दबाजी नहीं करते थे, सदैव तत्पर रहते थे। और अपने कार्यों में सोच-समझकर आगे बढ़ते थे। वे सदैव छोटे से छोटे रास्ते पर चलते थे और लम्बे कदम नहीं रखते थे। वे कभी काहिल नहीं प्रतीत होते थे। वे कभी फालतू हरकतें नहीं करते थे। वे कभी विचलित या दुखी नहीं देखे गये। वे कभी कामों

में जल्दी नहीं करते थे लेकिन वे सदैव समय पर पहुँच जाते थे। फिर भी इतना समझ लेना चाहिये कि वे अकेले रहते थे, और कहना चाहिये, प्रत्येक सामाजिक संबंध से अलग। वे जानते थे कि मतभेद उन्नति में बाधक होते हैं और इसी लिये उनका विरोध किसी से नहीं था।

जहाँ तक जीन, जो पासेपार्टाऊट कहा जाता है, का संबंध है वह एक सच्चा पेरिसवाला था जिसने व्यर्थ ही एक ऐसे मालिक की तलाश की थी जिसके निकट वह आ सकता। इँगलैण्ड में पाँच वर्षों तक नौकरी करते हुए उसे ऐसा कोई मालिक नहीं मिला था। पासेपार्टाऊट लम्बे कंधों, ऊँची नाक, गरमी आँखोंवाले व्यक्तियों में नहीं था जो केवल गुस्ताख और मूढ़ होते हैं। नहीं, पासेपार्टाऊट एक अच्छा व्यक्ति था। इसके चेहरे की झलक प्रिय, होंठ कुछ उभरे हुये जो सदैव स्वाद लेने या चूमने के लिये इच्छुक रहते थे, एक नम्र कामवाला व्यक्ति वह था। उसका सर अच्छा और गोल था जैसा कि हम एक मित्र का पसन्द करेंगे। उसकी आँखें नीली थीं, उसका रंग गुलाबी, उसका चेहरा इतना मोटा कि उसे अपने गालों की हड्डियाँ भी न दिखें, उसका सीना चौड़ा, शरीर पूर्ण, पुट्ठे मजबूत और शक्ति देव जैसी जिसे उसने जवानी में किये हुए व्यायाम से प्राप्त किया था। उसके भूरे बाल कुछ इधर-उधर हिलते-से थे। यदि प्राचीन मूर्त्तिकार बुद्धि की देवी के बालों को सँवारने के अट्ठारह तरीकों से परिचित थे तो पासेपार्टाऊट को अपने बालों के लिये केवल एक ही तरीका मालूम था। लम्बी तीलियोंवाले एक बड़े कंघे के केवल तीन ही घुमाव उसके बालों को सँवारने के लिये काफी थे।

बुद्धि का अल्पतम कोष भी यह कहने की आज्ञा नहीं देगा कि इस युवा पुरुष का उदार चरित्र फ़िलीज फ़ॉग के चरित्र से मेल खा जायेगा। पासेपार्टाऊट क्या सब बातों में ठीक वैसा ही नौकर

होगा जैसा कि उसके मालिक चाहते थे ? इसका पता उससे काम लेने पर ही चलेगा। जैसा कि हमने देखा, बहुत घूमने-फिरने के बाद वह अब विश्राम चाहता था।

अँगरेज सज्जनों की कथित और प्रशंसित शान्तिप्रियता सुनकर ही वह इँगलैंड आया था, केवल रोजी की तलाश में। लेकिन अब तक भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया था। वह कहीं भी जम नहीं सका। उसने दस विभिन्न घरों में नौकरी की थी। उनमें से हर एक में लोग शक्की, अनियमित और साहसी कामों या देशों के पीछे दौड़नेवाले थे जो पासेपार्टाऊट के लिये उपयुक्त नहीं थे। उसके पहिले मालिक पार्लियामेण्ट के सदस्य थे जो हेमार्केट में रातें बिताने के उपरान्त प्रायः पुलिस के कंधों पर लदकर घर वापिस आया करते थे। पासेपार्टाऊट सबसे अधिक अपने मालिक लार्ड लाँगजफेरी का आदर करने की इच्छा करता हुआ कभी-कभी विनम्रता से टीका-टिप्पणी करने का साहस करता था जो बुरी तरह ग्राह्य होते थे और उसे वहाँ से हटना पड़ा। उसी समय उसे पता चला कि फ़िलियास फ़ॉग एक नौकर की तलाश कर रहे थे। उसने इन महोदय के विषय में पूछताछ की। वह व्यक्ति, जिसका जीवन इतना अनियमित था, जो किसी विचित्र बिछौने पर कभी नहीं सोया था, जिसने सफर भी नहीं किया था, जो कभी अनुपस्थित नहीं हुआ था, एक दिन भी नहीं, इसके उपयुक्त ही था। वह हाजिर हुआ और उन शर्तों पर स्वीकृत हुआ जो हमें मालूम ही हैं।

साढ़े ग्यारह बजे, पासेपार्टाऊट सैविल रो वाले भवन में अकेला था। उसने तुरन्त ही वहाँ का निरीक्षण प्रारम्भ कर दिया, तहखाने से लेकर ऊपरवाले कमरे तक। इस साफ करीने के, गम्भीर, कट्टर-पंथी मकान से वह प्रसन्न हुआ। और फिर यह नौकरों के लिये संगठित था। इसने इस पर एक सुन्दर घोंघे के खोल जैसा प्रभाव

डाला। उसने बिना कठिनाई के दूसरी मंजिल पर अपना कमरा खोज लिया। यह इसको ठीक लगा। बिजली की घंटियों और बात करने की नलियों द्वारा इस कमरे का सम्बन्ध नीचे की मंजिलों से था।

अँगीठी के ऊपरवाले तख्ते पर एक बिजली की घड़ी ठीक वैसी ही थी जैसी फ़िलियास फ़ॉग के शयन कक्षवाली। दोनों एक क्षण पर टिक-टिक करती थीं। 'यह मेरी रुचि का है, यह मेरी रुचि का है!' पासेपार्टाऊट ने कहा।

अपने कमरे में घड़ी के ऊपर बँधी एक सूचना पर भी उसने गौर किया। दैनिक टहल का यह कार्यक्रम था। फ़िलीज फ़ॉग के रोज नियमित रूप से आठ बजे प्रातःकाल उठने के समय से लेकर उनके साढ़े ग्यारह बजे रिफार्म क्लब नाश्ते के लिये जाने के समय तक का लेखा इसमें था। आठ बज के तीन मिनट पर चाय और टोस्ट, नौ बज के सैंतिस मिनट पर हजामत के लिए पानी, साज-सिंगार दस बजने में बीस मिनट पर इत्यादि-इत्यादि बातें सूचना में दी हुई थीं। तब प्रातः साढ़े ग्यारह से आधी रात तक, जब कि करीनेवाले महोदय सोने जाते थे, हर चीज अंकित थी। पासेपार्टाऊट को इस कार्यक्रम पर विचार करने और इसके विभिन्न आदेशों का प्रभाव अपने मस्तिष्क पर डालने में प्रसन्नता हुई।

जहाँ तक इन महोदय के वस्त्रों की अलमारी का सम्बन्ध है, यह अच्छी रुचि की थी और आश्चर्यजनक रूप से सम्पूर्ण थी। हर पतलून, कोट, वास्कट के जोड़ों की संख्या सम थी। यह संख्या एक रजिस्टर में लिखी थी और यह भी कि मौसम के अनुसार किस तारीख को यह वस्त्र पहिने जायेंगे। यह नियम इनके जूतों के सम्बन्ध में भी था।

संक्षेपतः सैविल रो के इस मकान में, जो कि विख्यात मगर दिवालिये शेरिडन के समय में ऊबड़-खाबड़ रहा होगा, आराम देह

साज-सामान था जो आनन्द और आराम का द्योतक था। वहाँ न तो अध्ययन-कक्ष था, न पुस्तकें जो श्री फ़ॉग के लिये किसी काम की न होतीं क्योंकि रिफार्म क्लब की ओर से उनके लिये दो पुस्तकालय थे, एक साहित्यवाला, दूसरा कानून और राजनीति-वाला। उनके शयनागार में एक औसत कद की तिजोरी थी जिसकी बनावट आग और चोरों से उसकी रक्षा करती थी। वहाँ घर में कोई हथियार नहीं थे, न तो शिकार के लिये, न युद्ध के लिये। वहाँ की प्रत्येक वस्तु शान्तिप्रियता की द्योतक थी।

मकान का सूक्ष्मता से निरीक्षण करने के उपरान्त, पासेपार्टी-ऊट ने अपने हाथ मले, उसका चौड़ा चेहरा आलोकित हुआ और उसने प्रसन्नता से दोहराया, 'यह मुझे पसन्द है, यह मुझे पसन्द है! मेरे लिये यही जगह है। श्री फ़ॉग और मैं ठीक-ठीक एक दूसरे को समझेंगे। एक घर और इतना करीने का। कैसी मुकम्मिल मशीन! मुझे इसकी सेवा से अफसोस नहीं होगा।'

(३)

साढ़े ग्यारह बजे फ़िलियास फ़ॉग सैविल रो वाले घर से चल दिये थे। अपना दाहिना पैर बाँयें पैर से पाँच सौ पचहत्तर मर्तबा और बायाँ पैर दाहिने पैर से पाँच सौ छिहत्तर मर्तबा पहिले रखने के पश्चात् वे रिफार्म क्लब पहुँचे। यह पाल माल में बनी एक विशाल और ऊँची इमारत थी जिसके निर्माण में दस लाख से कम रुपया नहीं खर्च हुआ था।

फ़िलियास फ़ॉग तुरन्त ही खाने के कमरे में गये जिसकी नौ खिड़कियाँ पतझड़ से चमत्कृत एक वाटिका में खुलती थीं। वहाँ वे रोज की भाँति एक मेज के पास बैठ गये जहाँ तश्तरी उनका रास्ता देख रही थी। उनके नाश्ते में एक तश्तरी, उम्दा किस्म की चटनी के साथ एक उबली मछली, मसालों से सुसज्जित भुने हुए

गोमांस का एक लाल टुकड़ा, चेस्टर का पनीर और इन सबको गले के नीचे उतारने के लिये इस उम्दा चाय के कुछ प्याले थे जो कि रिफार्म क्लब के भाण्डारों के लिये एकत्रित की गई थीं।

बारह बज के सैंतालिस मिनट पर यह महोदय उठे और उस बड़े कमरे की तरफ घूम पड़े जो सुन्दर चौखटों में मढ़ी तसवीरों से सुसज्जित एक भड़कीला कमरा था। वहाँ एक नौकर ने बिना खुला 'टाइम्स' अखबार उनको दिया। इसकी थका देने वाली खोलने की क्रिया उन्होंने इस मुस्तैद हाथ से की जो इस प्रकार के कठिन कार्यों में अभ्यस्त था। पौने चार बजे तक फिलियास फॉग इस अखबार को पढ़ने में लगे रहे और इसके बाद वाले अखबार 'स्टैण्डर्ड' में दिन के प्रमुख भोजन तक। 'रायल ब्रिटिश' चटनी तो और आई बाकी नाश्ते की ही भाँति यह भोजन भी समाप्त हुआ।

छः बजने में बीस मिनट पर यह सज्जन फिर बड़े कमरे में आये और 'मार्निंग क्रॉनिकिल' अखबार पढ़ने में लग गये।

आध घण्टे बाद रिफार्म क्लब के कई सदस्य अन्दर आये जहाँ अँगीठी में कोयले की आग जल रही थी। वे फिलियास फॉग के रोजमर्रा के साथी थे, इन्जीनियर, एन्ड्रू स्टुअर्ट, महाजन जॉन सुलीवन और फ्लैनागन, सैमुअल फैलेनटिन, बैंक ऑफ इँगलैण्ड के डाइरेक्टरों में से एक गाथियर रैल्फ, इत्यादि जो उन्हीं की तरह ताश के जोशीले खिलाड़ी थे।

'अच्छा, रैल्फ', थामस फ्लैनागन ने पूछा 'वह डकैती का क्या हुआ?'

'क्यों,' ऐन्ड्रू स्टुअर्ट ने जवाब दिया, 'बैंक रुपयों से हाथ धोयेगा।'

गॉथियर रैल्फ ने कहा, 'इसके विपरीत हम डाकू को पकड़ लेंगे, यह आशा तो है। जासूस, जो बहुत होशियार लोग हैं,

अमरीका, योरप और तमाम बन्दरगाहों को भेजे जा चुके हैं और इस व्यक्ति के लिये भाग जाना कठिन होगा।'

'लेकिन तुम्हारे पास तो डाकुओं का विवरण है?' ऐन्ड्रू स्टुअर्ट ने पूछा।

'पहिले तो वह डाकू है ही नहीं।' गॉथियर रैल्फ ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

'यह कैसे, वह व्यक्ति डाकू नहीं है जिसने बैंक-नोटों के रूप में पचपन हजार पाउण्ड निकाल लिये हैं?'

'नहीं', गॉथियर रैल्फ ने उत्तर दिया।

'तो फिर क्या वह एक निर्माता है?' जॉन सुलीवन ने कहा।

'मार्निङ्ग क्रॉनिकिल' हमें विश्वास दिलाता है कि वह एक शरीफ आदमी है'।

जिसने यह उत्तर दिया था वह फ़िलियास फॉग के अतिरिक्त और कोई नहीं था जिनका सर तब उनके चारों ओर ढेर लगे अखबारों से ऊपर निकला। उसी समय उन्होंने अपने साथियों को शुभकामनाएँ दीं जिन्होंने इनका उत्तर दिया। इस समय की बहस का विषय, जिसको संयुक्तराष्ट्र के विभिन्न अखबार पहिले से ही अपनी बहस का विषय बनाये थे, २९ सितम्बर को घटित हुआ था। पचपन हजार पाउण्ड की बड़ी रकम के एक गड्डी नोट बैंक ऑफ इँगलैंड के प्रमुख खजांची के सामने से उठा लिये गये थे। अंडर-गवर्नर गॉथियर रैल्फ ने किसी को, जो आश्चर्यचकित था कि इतनी चोरी इतनी सरलता से कैसे हुई, यह उत्तर दिया था कि उस समय खजांची तीन शिलिंग छ: पेन्स बही में दर्ज कर रहा था और सब तरफ निगाह रखना सम्भव नहीं था।

लेकिन यहाँ यह कहना उपयुक्त है, जिससे डकैती कम सनसनीखेज हो जाती है, कि बैंक ऑफ इँगलैंड जनता के सम्मान का बड़ा खयाल रखती है। वहाँ न तो रक्षक हैं और न रोक के जँगले। सोना,

चाँदी और नोट सब आजादी से पड़े रहते हैं, और, कहना चाहिये, सर्वप्रथम आनेवाले की दया पर। वहाँ पास से गुजरनेवाले पर शक नहीं किया जाता। अँगरेजी तौर-तरीकों का निरीक्षण करनेवालों में से एक का कथन है—बैंक के एक कमरे में जहाँ वह एक दिन था, उसे सोने की एक ईंट को सूक्ष्मता से देखने की जिज्ञासा हुई। इसकी तौल सात से आठ पाउण्ड तक थी जो खजांची की मेज पर खुली पड़ी हुई थी। उसने यह ईंट उठा ली, इसकी परीक्षा की, अपने पड़ोसी को दी, और उसने दूसरे को। इस प्रकार वह ईंट इस हाथ से उस हाथ में जाती हुई एक अँधेरे दरवाजे तक गई और अपनी जगह आध घंटे तक वापिस नहीं आई। खजांची ने एक बार भी तो अपना सर नहीं उठाया।

लेकिन २६ सितम्बर को इस प्रकार नहीं हुआ। नोटों की गड्डी लौटकर नहीं आई और जब बैठक के ऊपर लटकती हुई घड़ी ने पाँच बजे कार्यालय के बन्द होने की सूचना दी तो बैंक ऑफ इँगलैंड को पचपन हजार पाउण्ड नफा और नुकसान के खाते में डाल देने पड़े।

चोरी ठीक-ठीक जान लेने पर अत्यन्त दक्ष कार्यकर्त्ताओं और जासूसों में से चुने हुए व्यक्ति लीवरपूल, ग्लासगो, हावर, स्वेज, ब्रिन्डसी, न्यूयार्क आदि प्रमुख बन्दरगाहों को भेजे गये और सफलता मिलने पर दो हजार पाउण्ड तथा पुनः प्राप्त धन का पाँच प्रतिशत देने का वायदा भी किया।

इस सूचना का इन्तजार करते हुए जो कि तफतीश करनेवालों को देनी थी, सारे जासूसों को यह आदेश दिया गया कि वे आने और जानेवाले तमाम मुसाफिरों पर नजर रक्खें।

मार्निंग क्रानिकिल के अनुसार यह मान लेने के यथेष्ट कारण थे कि चोर इँगलैंड के किसी भी डाकुओं के गिरोह का नहीं था। इस २६ सितम्बर के दिन एक उत्तम वस्त्रों से सुसज्जित अच्छे

स्वभाव और विशेष चाल-ढाल का सज्जन बैंक से आते-जाते देखा गया था, जहाँ कि चोरी का काण्ड हुआ। तफतीश करनेवालों ने एक सही विवरण उस चोर का तैयार करने की इजाजत दी जो तुरन्त ही संयुक्तराष्ट्र और योरप के तमाम जासूसों को भेज दिया गया। कुछ आशावान व्यक्ति, जिनमें गॉथियर रैल्फ भी थे, विश्वास करते थे कि चोर भागेगा नहीं।

जैसा कि माना जा सकता है, तमाम लंदन और सारे इँगलैंड में इस विषय की चर्चा थी।

नागरिक पुलिस की सफलता के पक्ष-विपक्ष में बहस हुई। इसलिये रिफार्म क्लब के सदस्यों की इस विषय पर बहस या चर्चा को सुनकर आश्चर्य नहीं होना चाहिये। बैंक के एक अन्डर गवर्नर भी इसमें शामिल थे।

माननीय गॉथियर रैल्फ इस खोज के परिणाम पर शक करने को तैयार नहीं थे। उनका विश्वास था कि घोषित पुरस्कार खोज-कर्त्ताओं की बुद्धि और उनके जोश को और उत्तेजित कर देगा। लेकिन उनके साथी एन्ड्रू स्टुअर्ट ऐसे किसी विश्वास से अलग ही थे। ताश की मेज पर बैठे हुए सज्जनों में बहस जारी थी। स्टुअर्ट फ्लैनागन के और फैलिनटिन फ़िलियास फॉग के साथी थे। खेल के समय टोलियाँ बोलीं नहीं लेकिन खिलाड़ी लोगों ने फिर उसी विषय पर बहस प्रारम्भ कर दी।

'मेरा विचार है', एन्ड्रू स्टुअर्ट ने कहा, 'बातें तो अधिकतर चोर के ही पक्ष में हैं क्योंकि वह अवश्य ही एक कुशल व्यक्ति होगा।'

'ठीक', रैल्फ ने जवाब दिया, 'लेकिन कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ उसे आश्रय मिल सके।'

'अमाँ हटो।'

'आपके खयाल में वह कहाँ जा सकता है?'

'मुझे उसके विषय में तो मालूम नहीं है' एन्ड्रू स्टुअर्ट ने जवाब दिया, 'लेकिन फिर भी, संसार बड़ा विशाल है'। 'पहिले था' फ़िलियास फ़ॉग ने एक धीमी आवाज में कहा। इसके बाद बोले थॉमस फ़्लैनागन 'लो, ताश लो अब तुम्हारी काट है।'

खेल के समय बहस हटा दी गई लेकिन एन्ड्रू स्टुअर्ट ने पुनः यह कहते हुए चालू कर दी,—'पहिले कैसे? क्या दुनिया अब छोटी हो गई है?'

'बेशक,' गॉथियर रैल्फ ने उत्तर दिया।

'मैं श्री फ़ॉग से सहमत हूँ। संसार पहिले से छोटा हो गया है क्योंकि अब हम सौ वर्ष पहिले की अपेक्षा दस गुनी शीघ्रता से इसका चक्कर लगा सकते हैं। और उस मामले में, जिसमें हम इस समय मुब्तिला हैं, यही चीज खोज को तेजी देगी।'

'और चोर के फरार होने को अधिक आसान भी कर देगी।'

'अब, श्री स्टुअर्ट, आपके खेलने की बारी है।' फ़िलियास फ़ॉग ने कहा।

लेकिन शक्की स्टुअर्ट को विश्वास नहीं हुआ और बाजी समाप्त होने पर उन्होंने उत्तर दिया। 'श्री रैल्फ, यह मानना पड़ेगा कि तुमने यह कहने का एक हास्यात्मक तरीका प्राप्त किया है कि दुनिया अब और अधिक छोटी हो गई है। अब तो इसका सफ़र तीन महीनों में किया जा सकता है।'

'केवल अस्सी दिनों में,' फ़िलियास फ़ॉग ने उत्तर दिया। 'हाँ, सज्जनो,' जॉन सुलीवन ने कहा, 'अस्सी दिन, क्योंकि ग्रेट इन्डियन पेनिनसुलर रेलवे में रोथल और इलाहाबाद का दर-म्यानी विभाग खुल गया है। यह देखिये मार्निंग क्रानिकिल द्वारा प्रस्तुत गणना:—

मॉण्ट सेनिस और ब्रिन्डिसी होकर लण्डन से स्वेज़	७ दिन
स्टीमर द्वारा स्वेज़ से बम्बई....................	१३ दिन

रेल द्वारा बम्बई से कलकत्ता....................	३ दिन
स्टीमर द्वारा कलकत्ते से हाँगकाँग (चीन).........	१३ दिन
स्टीमर द्वारा हाँगकाँग से याकोहामा (जापान) को...	६ दिन
स्टीमर द्वारा याकोहामा से सैन फ्रैनसिस्को.........	२२ दिन
रेल द्वारा सैन फ्रैनसिस्को से न्यूयार्क...............	७ दिन
स्टीमर और रेल द्वारा न्यूयार्क से लण्डन.........	६ दिन
	८० दिन

'हाँ, अस्सी दिन !' एन्ड्र् स्टुअर्ट ने चिल्लाकर कहा। इन्होंने ध्यान न देने के कारण गलत बात की थी और खराब मौसम, प्रतिकूल हवाओं, जहाजों की बरबादी, रेल के उलटने आदि का समावेश नहीं किया था।

'हर चीज का शुमार कर लेने पर,' फ़िलियास फ़ॉग ने खेल जारी रखते हुए कहा क्योंकि इस बार बहस ने खेल का कोई लिहाज नहीं किया।

एंड्र् स्टुअर्ट ने जोर से कहा, 'यदि हिन्दू या भारतीय रेलों को उखाड़ डालें, रेलगाड़ियों को रोक दें, डब्बे लूट लें और मुसाफिरों से टिकट-संबंधी मुनाफा ले लें, तो भी !'

'सब कुछ शामिल करते हुए भी' फ़िलियास फ़ॉग ने उत्तर दिया ताश फेंकते हुए फिर कहा, 'दो तुरुप।'

एन्ड्र् स्टुअर्ट, जिनके बोलने की अब बारी थी, ताशों को इकट्ठा करते हुए बोले,—

'सैद्धान्तिक रूप से आप ठीक कहते हैं, श्री फ़ॉग, लेकिन क्रियात्मक रूप से—'

'श्री स्टुअर्ट, क्रियात्मक रूप से भी।'

'मैं आपको ऐसा करते हुए देखना बहुत पसन्द करूँगा।'

'यह केवल आप पर ही निर्भर है। आइये, हम सब एक साथ इसे प्रारम्भ करें।'

'ईश्वर भला करे'! स्टुअर्ट ने चिल्लाकर कहा, 'लेकिन मैं बड़ी प्रसन्नता से चार हजार पाउण्ड की बाजी लगाता हूँ कि इन परिस्थितियों में यह यात्रा असम्भव है।'

'इसके प्रतिकूल, बिल्कुल संभव है,' श्री फॉग बोले।

'अच्छा, तब यह सफर कीजिये न।'

'संसार की यात्रा और अस्सी दिनों में?'

'हाँ!'

'मैं राजी हूँ।'

'कब?'

'तुरन्त, केवल मैं आपको सचेत कर देना चाहता हूँ कि मेरा सफर-खर्च आपके ही जिम्मे होगा।'

स्टुअर्ट ने, जो अपने साथी की जिद पर खीज उठे थे, चिल्लाकर कहा 'मूर्खता है।' 'हटाओ जी, आइये, खेला ही जाये।'

फ़िलियास फ़ॉग ने उत्तर दिया, 'तब फिर बात की जाये क्योंकि अभी बात पक्की नहीं हुई।'

एंड्रू स्टुअर्ट ने काँपते हाथों से पत्ते फिर उठा लिये। फिर यकायक उनको मेज पर रखते हुए कहा 'अच्छा श्री फ़ॉग, मैं चार हजार पाउण्ड बद रहा हूँ।'

'मेरे प्यारे स्टुअर्ट, होश में आओ। यह सब मजाक है।' फ़ैलेनटिन ने कहा।

एन्ड्रू स्टुअर्ट बोले—'जब मैं बाजी लगाता हूँ तो वह मजाक नहीं होता।'

'ऐसा ही हो,' श्री फ़ॉग ने कहा और तब अपने साथियों की ओर मुखातिब होते हुए पुनः बोले—'मेरा बीस हजार पाउण्ड

बेरिंग बन्धुओं के यहाँ जमा है। मैं खुशी से उस पर खतरा ले सकता हूँ।'

'बीस हजार पाउण्ड!' जॉन सुलिवन चिल्ला पड़े। 'बीस हजार पाउण्ड, जिन्हें कोई गैबी विलम्ब तुमसे छीन सकता है।'

'जो बात देखी नहीं गई उसका अस्तित्व ही क्या' फिलियास फॉग ने उत्तर दिया।

'लेकिन श्री फॉग अस्सी दिनों के इस समय की गणना न्यूनतम की गई है?'

'सोचकर की गई न्यूनतम गणना हर बात के लिये काफी होती है'।

'लेकिन अधिक आगे न बढ़ जाने के कारण ही आपको गणितीय ढंग से रेलों से जहाजों में और जहाजों से रेलों पर कूदना ही है'।

'मैं इसी हिसाबी ढंग से छलाँग मारूँगा।'

'यह तो मजाक है।'

'चूँकि शर्त का सवाल है, ऐसे गम्भीर विषय को लेकर एक अच्छा अँगरेज कभी मजाक नहीं करता', फ़िलियास फ़ॉग ने उत्तर दिया, 'मैं उस व्यक्ति से बीस हजार पाउण्ड की शर्त लगाता हूँ जो यह कहेगा कि मैं अस्सी दिनों से कम में संसार-यात्रा नहीं कर सकता, अर्थात् नौ सौ बीस घण्टे या एक सौ पन्द्रह हजार दो सौ मिनट में। मंजूर है?'

'हमें स्वीकार है', स्टुअर्ट, फैलिनटिन, सुलिवन, फ्लैनागन और रैल्फ आदि सज्जनों ने सलाह करके कहा।

'बहुत अच्छा', मिस्टर फॉग बोले। 'डोवरवाली गाड़ी आठ बजकर पैंतालिस मिनट पर छूटती है। मैं इसे ही पकड़ूँगा।'

'इसी शाम को?' स्टुअर्ट ने पूछा।

'इसी शाम को,' फ़िलियास फ़ॉग ने उत्तर दिया। वे फिर बोले,

'चूँकि आज बुधवार है, दूसरी अक्टूबर। रिफार्म क्लब के इसी सैलून में २१ दिसम्बर, दिन शनिवार, शाम को आठ बजकर पैंतालिस मिनट पर मुझे लण्डन वापिस आ जाना चाहिये और इसके जुर्म में बेरिंग बन्धुओं के यहाँ मेरे खाते में जमा बीस हजार पाउण्ड तुम्हारी सम्पदा हो जायेगी, सज्जनो। यह रहा इस रकम का चेक।'

शर्त का एक मसौदा तैयार किया गया और उसी जगह उस पर इसमें दिलचस्पी लेनेवाले छः व्यक्तियों के हस्ताक्षर हो गये। फ़िलियास फ़ॉग शान्त थे। उन्होंने सचमुच जीतने के लिये नहीं बदा था और अपने भाग्य का आधा जोखिम में डाल दिया था क्योंकि उन्हें इसका आभास हो गया था कि शायद इस कठिन, जो-कि असम्भव नहीं, योजना को कार्यान्वित करने में व्यय करना पड़े जिसके लिये आधी रकम काफी थी। जहाँ तक उनके प्रतिद्वन्द्वियों का प्रश्न है, उन पर काफी प्रभाव था, दाँव के कारण नहीं बल्कि इन हालात में एक मुकाबिले के लिये उद्यत होने में उन्हें एक झिझक थी।

तब सात बज गये। उन्होंने मिस्टर फ़ॉग से खेल बन्द करने को कहा ताकि वे रवानगी के लिये अपनी तैयारियाँ कर सकें। 'मैं हमेशा तैयार रहता हूँ', इस शान्त व्यक्ति ने उत्तर दिया। ताश खेलते हुए उन्होंने कहा, 'अब आपके खेलने की बारी है, मिस्टर स्टुअर्ट।'

(४)

सात बजकर पच्चीस मिनट पर ताश में बीस गिनी जीतने के पश्चात् मिस्टर फ़ॉग अपने साथियों से बिदा हुए और रिफार्म क्लब से चल दिये। आठ बजकर दस मिनट पर उन्होंने अपने घर का दरवाजा खोला और अन्दर दाखिल हुए।

पासेपार्टाऊट को, जिसने दिल से इनके कार्यक्रम का अध्ययन किया था, असमय में ही आ जाने की गलती के अपराधी मिस्टर फॉग के उपस्थित होने पर आश्चर्य हुआ। सूचना के अनुसार सैविल रो भवन के स्वामी को ठीक आधी रात से पहिले नहीं आना चाहिये था।

सर्वप्रथम फिलियास महोदय अपने शयनकक्ष में गये। तब उन्होंने पुकारा, 'पासेपार्टाऊट' !

पासेपार्टाऊट उत्तर न दे सका, क्योंकि उसके लिये यह शायद पुकार नहीं थी। इसका कोई समय तो था नहीं।

'पासेपार्टाऊट', श्री फॉग ने बिना अपनी आवाज ऊँची किये हुए फिर पुकारा।

पासेपार्टाऊट हाजिर हुआ।

'यह दूसरी बार मैंने तुम्हें पुकारा,' श्री फॉग ने कहा।

'लेकिन अभी आधी रात तो नहीं हुई,' पासेपार्टाऊट ने अपने हाथ में अपनी घड़ी लिये हुए उत्तर दिया।

'मुझे यह मालूम है और इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। दस मिनट के अन्दर हम डोवर और कैले के लिये चल देंगे।'

उस फ्रांसीसी के चेहरे पर एक प्रकार का घृणा का भाव परिलक्षित हुआ। यह प्रत्यक्ष था कि उसने अभी ठीक समझा नहीं था।

'श्रीमान् क्या बाहर जा रहे हैं ?' उसने पूछा।

'हाँ,' फिलियास फॉग ने उत्तर दिया, 'हम संसार का भ्रमण करने जा रहे हैं।'

अपनी आँखें फाड़े हुए, भौंहें चढ़ी हुई, बाजू फैले हुए, शरीर गिरा हुआ पासेपार्टाऊट ने बेहोशी की ओर उन्मुख आश्चर्य का भाव प्रकट किया।

'संसार का भ्रमण' ! वह बड़बड़ाया।

'अस्सी दिनों में,' श्री फ़ॉग ने उत्तर दिया, 'अत: हमारे पास बहुत कम समय है।'

'लेकिन बक्स इत्यादि ?' बेहोशी में अपने सर को इधर से उधर घुमाते हुए पासेपार्टाऊट ने कहा।

'किसी बक्स वगैरह की जरूरत नहीं। केवल एक दरी का थैला, जिसमें दो गरम कमीजें और तीन जोड़े मोजे काफी होंगे। इतना ही तुम्हारे लिये भी। और फिर रास्ते में खरीद लेंगे। तुम मेरी बरसाती ला सकते हो और सफरी कोट तथा मजबूत जूते भी, यद्यपि हम कम या नहीं के बराबर ही चलेंगे। जाओ।'

पासेपार्टाऊट ने जवाब देना पसन्द किया होता लेकिन वह ऐसा न कर सका। वह अपने कमरे को चला गया, एक कुरसी पर गिर पड़ा और अपने देश में प्रचलित एक फिकरे का प्रयोग करते हुए बोला; 'अच्छा-अच्छा, अजीब झमेला है। कहाँ मैं शान्त रहना चाहता था।'

मशीन की तरह उसने सफर की तैयारी की। संसार की यात्रा अस्सी दिनों में! क्या वह एक पागल के पल्ले पड़ा था ? नहीं। शायद यह एक मजाक था। वे डोवर को जा रहे थे। क्या खूब! कैले को जाना! होने दो ऐसा ही। फिर भी इससे वह अधिक परेशान नहीं हो सका। पाँच वर्ष से उसने अपनी जन्म-भूमि के दर्शन नहीं किये थे। शायद वे पेरिस तक जायें और उस बड़ी राजधानी को देखकर उसे आनन्द होगा। लेकिन चलने में इतना सावधान व्यक्ति क्या वहाँ तक जायेगा। हाँ, निस्सन्देह; लेकिन यह भी सच था कि वह रवाना तो हो ही रहे थे। इस घर के बाहर जा रहे थे, वह व्यक्ति जो आज तक घर का ही अंग बना रहा!

आठ बजे तक पासेपार्टाऊट ने उस थैले में अपने और मालिक के कपड़े रख दिये थे। तब विचलित मस्तिष्क लेकर वह कमरे के

बाहर चला गया जिसे होशियारी से उसने बन्द कर दिया और वह फिर श्री फ़ॉग के पास चला गया।

श्री फ़ॉग तैयार थे, अपनी बगल में 'ब्रेडशॉ का कॉन्टीनेन्टल रेलवे स्टीम ट्रैन्जिट एण्ड जेनरल गाइड' दबाये हुए जिससे उन्हें अपनी यात्रा के लिये आवश्यक आदेश प्राप्त होने थे। उन्होंने नौकर के हाथ से थैला ले लिया, उसे खोला और उसमें उन बैंक-नोटों का एक भारी बंडल डाल दिया जो सभी देशों में प्रचलित हैं।

'तुम कुछ भूले तो नहीं हो'? उन्होंने पूछा।

'कुछ नहीं, श्रीमान्'।

'मेरी बरसाती और कोट'?

'वे भी हैं।'

'ठीक, यह लो थैला', और मिस्टर फॉग ने इसे पासेपार्टाऊट को थमा दिया और कहा, 'देखो, इसका जरा ठीक से ध्यान रखना। इसमें बीस हजार पाउण्ड हैं'।

थैला पासेपार्टाऊट के हाथों से सरक-सा पड़ा मानो बीस हजार पाउण्ड सोने की शक्ल में होने के कारण बहुत भारी हो।

तब मालिक और नौकर नीचे आये और बाहर सड़क पर वाला दरवाजा दोहरे ताले से बन्द किया गया। सैविल-रो के अन्त में गाड़ियों का एक अड्डा था। फ़िलीज फ़ॉग और उनका नौकर एक गाड़ी में बैठ गये जो तेजी से चेरिंगक्रास स्टेशन की तरफ दौड़ पड़ी। इस स्टेशन पर साऊथ इस्टर्न रेलवे मिलती है। आठ बजे के बीस मिनट पर गाड़ी स्टेशन के फाटक के सामने रुकी। पासेपार्टाऊट बाहर कूद पड़ा और उसके पीछे ही मालिक भी। ड्राइवर को दाम दिये गये। इसी समय एक गरीब भिखारिन अपनी गोद में एक बच्चा लिये हुए श्री फ़िलियास के पास आई और सहायता की याचना की। उसके नंगे पैर कीचड़ से सने थे।

सर एक पुरानी टोपी से ढका था जिससे एक खंडित पर लटक रहा था। दूसरे फटे कपड़ों पर एक फटी-पुरानी शाल थी।

श्री फ़ॉग ने जेब से वे बीस गिनी निकालीं जो उन्होंने अभी ताश में जीती थीं। भिखारिन को गिन्नियाँ देते हुए कहा, 'मेरी अच्छी औरत, यहाँ तुमसे मिलकर मुझे खुशी हुई'। तब वे चले गये।

पासेपार्टाऊट की आँखों में एक प्रकार की नम सनसनाहट-सी हुई। उसके मालिक ने उसके हृदय को छू दिया था।

श्री फ़ॉग और वह तुरन्त ही स्टेशन के बड़े मुसाफिरखाने में चले गये। वहाँ फ़िलीज़ फ़ॉग ने पेरिस के दो प्रथम श्रेणी के टिकट लाने की उसे आज्ञा दी। तब, वापस आते हुए उन्होंने रिफार्म क्लब के अपने पाँचों साथियों को देखा।

'सज्जनो, मैं जा रहा हूँ', उन्होंने कहा। 'पासपोर्ट पर अंकित विभिन्न लेखों से आपको पता चल जायेगा कि मैंने यात्रा की है या नहीं।'

'अरे! मिस्टर फ़ॉग, यह सब बेकार है।' गॉथियर रैल्फ ने कहा। 'हमें आप पर विश्वास है।'

'अच्छी बात है, श्री फ़ॉग बोले।'

'आपको याद है न, कि आपको लौटना है'—एन्ड्रू स्टुअर्ट ने कहा।

'अस्सी दिनों में,' श्री फ़ॉग ने उत्तर दिया, 'शनिवार, २१ दिसम्बर, १८७२ पौने नौ बजे रात को।'

'अच्छा, नमस्कार, सज्जनो।'

आठ बजकर चालिस मिनट पर फ़िलियास फ़ॉग और उनका नौकर एक ही डब्बे में बैठ गये। आठ बजकर पैंतालिस मिनट पर सीटी बजी और गाड़ी चल दी।

रात अँधेरी थी। मजे की बारिश हो रही थी। अपनी जगह

पर पीठ टेके हुए फ़िलियास फ़ॉग चुप थे। अभी तक गुमसुम-सा पासेपार्टाऊट नोटों का थैला छाती से चिपकाये हुए था।

लेकिन सिडेनहैम आने से पहिले ही नौकर ने निराशा की वास्तविक चिल्लाहट की।

'क्या बात है' ? श्री फॉग ने पूछा।

'क्यों, ज-ल्-दी में—विचलित दशा में मैं भूल गया—'

'क्या भूल गये' ?

'अपने कमरे की बत्ती बुझाना'।

'बहुत अच्छा, नौजवान, यह तुम्हारे खर्चे पर जलती रहेगी'।

(५)

लगडन छोड़ने में, फिलियास फॉग ने सचमुच ही उस महान् उत्तेजना का शक तक नहीं किया था जो उनका प्रस्थान पैदा करने जा रहा था। रिफार्म क्लब में ही पहिले इस शर्त की खबर फैली और इसने आदरणीय सदस्यों के वृत्त को आन्दोलित कर दिया। तब क्लब से खबर अखबारों में गई, अखबारों से लगडन की जनता में और पूरे संयुक्तराष्ट्र भर में। 'संसार-भ्रमण' के विषय पर टीका-टिप्पणी हुई, बहस हुई, आलोचना हुई। यह सब बड़े जोश और खरोश के साथ हुआ जैसे यह कोई बड़ा अहम मसला हो। कुछ फ़िलियास फ़ॉग के पक्ष में थे और कुछ इनके विपक्ष में। विपक्षियों की संख्या अधिक थी। उस समय एक दूसरे से बातचीत करने के जो साधन उपलब्ध थे, उनको देखते हुए, कम-से-कम समय में संसार की परिक्रमा करना असम्भव ही नहीं बल्कि काल्पनिक भी था। हाँ, सिद्धान्त में कागज पर कर लेने की बात ही और थी। 'टाइम्स', 'स्टैराडर्ड', 'ईवनिंग स्टार', 'मॉरनिंग क्रानिकिल' और बड़ी संख्या में बिकनेवाले बीसों अखबार श्री फ़ॉग के विपक्ष में थे। केवल 'डेली टेलिग्राफ' ने कुछ हद तक इनकी

नार्षद की थी। आम तौर पर फ़िलियास फ़ॉग खब्ती, मूख और सनकी समझे जाते थे। इस बाजी को स्वीकार कर लेने का अपराध इनके साथियों पर थोपा गया। इस बाज़ी से इसके निर्माता के मानसिक विकार का पता चलता था। इस विषय पर बहुत उग्र लेकिन तर्कयुक्त लेख निकले। प्रत्येक भौगोलिक वस्तु के विषय में इँगलैंडवालों की दिलचस्पी प्रसिद्ध है। इसलिये प्रत्येक वर्ग का कोई पाठक ऐसा नहीं था जिसने फ़िलियास फ़ॉग सम्बन्धी वार्त्ता का पारायण न किया हो।

पहिले कुछ दिनों कुछ भावुक व्यक्ति, अधिकतर स्त्रियाँ फिलियास फॉग के पक्ष में थे। कुछ यहाँ तक कह बैठते थे कि 'उँह! इसमें क्या हुआ। इससे अधिक विचित्र बातें हुई हैं'।

सात अक्टूबर को रॉयल जियाग्रीफिकल सोसाइटी के एक पत्र में एक लम्बा लेख प्रकाशित हुआ। इसमें इस विषय पर सभी दृष्टिकोणों से विचार हुआ था और इस साहसिक कार्य की बेवक़ूफी पर भी रोशनी डाली गई थी। इसी लेख के अनुसार सब कुछ यात्री के खिलाफ था, मनुष्य की अड़चनें और प्रकृति की भी। इस योजना की सफलता के लिये यह आवश्यक था कि एक अलौकिक आवागमन मान लिया जाये। रेलों का ठीक समय पर आना और छूटना भरोसे की बात हो सकती है, मुख्यतः योरप में जहाँ मुकाबलतन फासले कम हैं। लेकिन जहाँ भारतवर्ष को पार करने में तीन दिन और अमरीका को पार करने में सात दिन लगते हों वहाँ क्या ऐसा सम्भव है? मशीन की दुर्घटनाएँ, रेलगाड़ियों का उलट जाना, लड़ जाना, खराब मौसम और बर्फ का ढेर होना क्या फ़िलियास फ़ॉग के लिये अड़चनें नहीं थीं? क्या जाड़े में जहाज पर हवाओं और कुहरे की दया पर उन्हें निर्भर नहीं रहना पड़ेगा? अच्छे से अच्छे जहाजों को भी देर लग ही जाती है। एक बार विलम्ब होने से ही सारा कार्यक्रम चौपट हो सकता है। यदि श्री फ़ॉग को जहाज

पकड़ने में कुछ घंटों की देर हो गई तो दूसरे जहाज का इंतजार करने के लिये उन्हें बाध्य होना पड़ेगा और इस प्रकार उनकी यात्रा में अधिक समय लग जाने की पूरी सम्भावना है। इस लेख से एक सनसनी फैल गई। सभी अखबारों ने इसकी नकल की और श्री फ़ॉग का पक्ष काफी दुर्बल हो गया।

मिस्टर फ़ॉग के प्रस्थान के कुछ ही दिनों बाद उनकी बाजी को लेकर बड़े शोर हुए। इंगलैंड के शर्त बदनेवाले वहाँ के जुआरियों से ज्यादा बुद्धिमान होते हैं। बाजी लगाना अंगरेजों का स्वभाव है। रिफार्म क्लब के सदस्य ही नहीं बल्कि आम जनता ने इस बदाबदी में भाग लिया। फ़िलियास फ़ॉग घुड़दौड़ के घोड़े के समान थे जिन पर हजारों की बाजियाँ लग रही थीं। धीरे-धीरे, जब से वह लेख छपा था मि० फ़ॉग का पक्ष कमजोर होता जा रहा था।

केवल एक ही व्यक्ति फ़ॉग महोदय के पक्ष में रह गये थे। यह आदरणीय व्यक्ति, लार्ड अल्बेमार्ले, गठिया के कारण अपनी आराम कुर्सी पर पड़े रहते थे। यह सज्जन अपना सर्वस्व लुटा देते यदि संसार की यात्रा करने के योग्य हो सकते। इन्होंने फ़िलियास फ़ॉग के पक्ष में पाँच हजार पाउण्ड की बाजी लगा दी। जब संसार-भ्रमण की योजना की मूर्खता और सारहीनता से इन्हें अवगत किया गया तो इन्होंने यह उत्तर देकर अपनी सन्तुष्टि कर ली कि अगर यह कार्य सरल है तो यही क्या कम है कि इसका श्रीगणेश एक अँगरेज द्वारा ही होगा।

फ़िलियास फ़ॉग के मतावलम्बियों की संख्या निरन्तर कम ही होती जा रही थी। प्रत्येक व्यक्ति इनके खिलाफ हो रहा था और इसका कारण भी था। बाजियाँ खूब लग रही थीं मगर एक अनहोनी घटना ने पाँसा ही पलट दिया और बाजियाँ रुक गईं।

इसी दिन नौ बजे शाम को, मेट्रोपोलिटन पुलिस के कमिश्नर को निम्न आशय का तार मिला :—

'स्वेज से लण्डन

'कोवान, कमिश्नर ऑफ पुलिस, सेन्ट्रल ऑफिस, स्काटलैंड स्क्वायर : मुझे बैंक का चोर, फिलियास फॉग मिल गया है। गिरफ्तारी का वारण्ट बम्बई ब्रिटिश इण्डिया, को फौरन् भेजो।

'फिक्स, डिक्टेटिव'

इस तार का प्रभाव तुरन्त हुआ। यह महापुरुष खूब गायब हुए। रिफार्म क्लब में वहाँ के सदस्यों के पास इनका फोटो था। उसकी जाँच की गई। यह तो वही साहब निकले जिनका विवरण इंक्वायरी कमीशन ने प्रस्तुत किया था। इनके अलग रहने और यकायक गायब हो जाने से उन्होंने कहा कि वाकई इनका जीवन बड़ा ही रहस्यमय था। अब यह साफ था कि संसार की यात्रा के बहाने और इसकी पुष्टि में एक निरर्थक बाजी लगाने का इनका एक मात्र उद्देश्य अँगरेजी पुलिस की आँखों में धूल झोंकने का था।

(६)

यह हैं वे परिस्थितियाँ जिनमें फिलियास फॉग सम्बन्धी वह सूचना भेजी गई थी।

नौ अक्टूबर, बुधवार को, पेनिनसुलर एण्ड ओरियण्टल कम्पनी का जहाज मंगोलिया ग्यारह बजे दिन को आनेवाला था। स्वेज नहर द्वारा यह जहाज ब्रिन्डसी से बम्बई तक आता-जाता रहता था। उस लाइन पर यह जहाज सबसे ज्यादा तेज चलानेवाले जहाजों में से एक था। यह रफ्तार सदैव ही नियमित रफ्तार से बढ़ जाती थी।

'मंगोलिया' का इन्तजार करते हुए, देशी और विदेशी लोगों के बीच जहाजी प्लैटफार्म पर दो आदमी चहलकदमी कर रहे थे।

इनमें से एक संयुक्तराष्ट्र के कॉन्सुलर एजेण्ट थे जो स्वेज में बस गये थे। दूसरे एक छोटे, शान्त, बुद्धिमान् व्यक्ति थे जिनके चेहरे पर घबराहट थी और जो अपनी भौंहों को बहुत ज्यादा

सिकोड़ रहे थे। इनकी लम्बी पलकों के नीचे बड़ी चमकदार आँखें थीं लेकिन इनकी चमक यह इच्छानुसार दबा सकते थे। इस समय, एक स्थान पर न रुक सकने के कारण, आते जाते इनमें कुछ घबराहट दिखाई दे रही थी।

इस पुरुष का नाम फिक्स था और यह अँगरेजी पुलिस के जासूस या कार्यकर्त्ता थे। बैंक ऑफ इँगलैंड की चोरी हो जाने पर ये विभिन्न बन्दरगाहों को भेजे गये थे। इनको स्वेज नहर से जानेवाले सभी मुसाफिरों की निगरानी करनी थी। अगर इन यात्रियों में से किसी पर भी इन्हें शक हुआ तो इन्हें गिरफ्तारी के वारगट आने तक उसका पीछा करना था। ठीक दो दिन पहिले इन्हें मेट्रोपोलिटन पुलिस के कमिश्नर से सम्भावित चोर का विवरण प्राप्त हुआ था। यह विवरण उस विशेष और भड़कीले व्यक्ति का था जो बैंक के खजाने में देखा गया था। सफलता-प्राप्ति पर घोषित उस बड़े इनाम से यह जासूस बहुत उत्तेजित था। इसीलिये यह 'मंगोलिया' के आने का बड़ी बेसबरी से रास्ता देख रहा था।

'और तुम कहते हो, कॉन्सल,' इसने दसवीं बार पूछा, 'यह जहाज पिछड़ नहीं सकता।'

'नहीं, मिस्टर फिक्स' उसने उत्तर दिया। 'कल इसकी रवानगी पोर्ट सईद से हुई थी और एक सौ साठ किलोमीटर की दूरी ऐसे जहाज के लिये कोई बात नहीं है। मैं फिर कहता हूँ कि 'मंगोलिया' को नियमित समय से पहिले ही पहुँच जाने पर सरकार द्वारा पच्चीस हजार पाउण्ड का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

'यह जहाज सीधे ब्रिण्डसी से आता है ?' फिक्स ने पूछा।

'सीधे ब्रिण्डसी से जहाँ इसने भारतीय डाक ली। वहाँ से यह पाँच बजे शाम को रवाना हुआ। आप घबराइये नहीं। जहाज आने में देर नहीं होगी। लेकिन उस विवरण से, जो आपको मिला

है, आप कैसे उस आदमी को पहिचानेंगे अगर वह इस जहाज पर होगा ?'

फिक्स ने उत्तर दिया—'इन लोगों को पहिचानने के बजाय हम इनकी टोह लेते हैं। तुम्हें उनकी गन्ध आ जाती होगी और यह गन्ध उस विशेष बुद्धि की तरह है जिसमें, नजर और खुशबू शामिल हैं। मैंने अपने जीवन में ऐसे कई व्यक्तियों को पकड़ा है। अगर हमारा चोर जहाज पर है तो मेरे हाथों से वह बचकर नहीं जा सकता।

'मैं ऐसी आशा करता हूँ, मिस्टर फिक्स, क्योंकि यह चोरी बहुत बड़ी है।'

'शानदार चोरी,' जोशीले जासूस ने जवाब दिया। 'पचपन हजार पाउण्ड! अक्सर ऐसा सौभाग्य नहीं आता! चोर छिछोरी करने लगे हैं। जैक शिपड की जाति मिट रही है! वे अब शिलिंगों पर नियत डोलाने लगे हैं।'

'मिस्टर फिक्स,' कॉन्सल ने जवाब दिया, 'तुम इस प्रकार बात करते हो कि मैं सचमुच तुम्हारी सफलता चाहता हूँ। लेकिन यह मैं फिर कहूँगा कि उन परिस्थितियों के अनुसार जिनमें तुम हो, मुझे भय है कि यह कठिन ही होगा। क्या आप नहीं जानते कि आपके विवरण के अनुसार यह चोर बिल्कुल एक ईमानदार आदमी से मिलता है ?'

'कॉन्सल,' जासूस ने उत्तर दिया, 'बड़े चोर हमेशा ईमानदार आदमियों से मिलते-जुलते हैं। शायद आप समझते हैं कि बदमाश चेहरेवालों के लिये ईमानदार बने रहने के अतिरिक्त और रास्ता ही नहीं है, नहीं तो पकड़ लिये न जायें। ईमानदार चेहरों को खुला ही रखना चाहिये। मैं मानता हूँ कि यह एक कठिन काम है और यह एक व्यापार की अपेक्षा एक हुनर अधिक है।'

प्रत्यक्ष है कि उपरोक्त फिक्स में आत्माभिमान की कमी नहीं थी।

इसी समय उस प्लैटफार्म की चहल-पहल बढ़ती जा रही थी। बहुत-सी जातियों के मल्लाह, सौदागर, जहाज के दलाल, कुली और मिस्री किसान बड़ी संख्या में आ रहे थे। जहाज आनेवाला ही था। मौसम खुला हुआ था मगर पूर्वी हवा के कारण वातावरण ठंढा था। सूरज की पीली रोशनी में कुछ गुम्बद शहर के ऊपर उठे दिखाई पड़ रहे थे। दक्षिण की तरफ स्वेज नहर में एक बाँह की तरह फैला हुआ पुश्ता था। लाल सागर के वक्ष पर कई मछली मारनेवाले और किनारे तक आनेवाले जहाज चक्कर लगा रहे थे।

इस भीड़ में चलते-फिरते, अपने पेशे की आदत के अनुसार मिस्टर फिक्स तेजी से पास गुजरनेवालों की प्रतीक्षा कर रहे थे। उस समय साढ़े दस बजे थे।

'लेकिन यह जहाज तो अब आने से रहा,' बन्दरगाह की घड़ी को बजते हुए सुनकर वे चिल्ला पड़े।

'वह दूर नहीं होगा,' कॉन्सल ने उत्तर दिया।

'यह स्वेज पर कितनी देर ठहरेगा?' फिक्स ने पूछा।

'चार घण्टे, जो कोयला इत्यादि लेने के लिये पर्याप्त है। लाल-सागर के दूसरे छोर पर अदन तक फासला तेरह सौ दस मील माना गया है, अतः ईंधन की जरूरत पड़ ही जाती है।'

'और स्वेज से यह जहाज सीधा बम्बई जाता होगा?'

'सीधा, बिना सामान उतारे हुए।'

'अच्छा, तब तो अगर चोर ने इसी जहाज से यही रास्ता पकड़ा है, तो स्वेज पर उतरने का उसका इरादा अवश्य होगा। इस तरह दूसरे रास्ते से वह एशिया की डच या फ्रान्सीसी अमल-

दारियों को जा सकेगा। वह जरूर जानता होगा कि भारत में वह सुरक्षित न रह सकेगा क्योंकि वहाँ अँगरेजी शासन है।'

'अगर वह बहुत दूरदर्शी हुआ तो,' कॉन्सल ने उत्तर दिया।

'तुम जानते हो कि एक अपराधी दूसरी जगहों की अपेक्षा लण्डन में अधिक सुरक्षित है।'

इस विचार ने जासूस को मनन करने की काफी सामग्री दी। इसके बाद वह अपने दफ्तर में गया। घबराहट और बेचैनी से प्रभावित जासूस अकेला रहा। सचमुच अगर यह बदमाश अमरीका पहुँचने के इरादे से इँगलैंड से चला होगा तो इसने अवश्य ही पूर्वी भारत के रास्ते को पसंद किया होगा क्योंकि अटलांटिक की अपेक्षा यह रास्ता अधिक निरापद है।

फिक्स अधिक समय तक विचारों की दुनिया में नहीं रहा। सीटियों की तेज आवाजों ने जहाज के आगमन की सूचना दी। एक हड़बड़ी में सारे कुली और मिश्री किसान प्लेटफार्म की तरफ दौड़ पड़े। इस भागदौड़ से मुसाफिरों को असुविधा हुई। एक दर्जन नावें किनारे से 'मंगोलिया' की तरफ चल पड़ीं। शीघ्र ही नहर के तटों के बीच 'मंगोलिया' गुजरता हुआ दिखाई दिया। ग्यारह बज रहे थे जब जहाज ने लंगर डाला। निकलती हुई भाप ने बड़ा शोर किया। वहाँ जहाज पर काफी मुसाफिर थे। कुछ ऊपर डेक पर रुके रहे और नगर के चित्रमय दृश्य का अवलोकन करते रहे लेकिन अधिकांश नावों द्वारा तट पर आ गये।

उतरे हुए सभी यात्रियों का फिक्स ने बड़ी होशियारी और ध्यान से निरीक्षण किया। तेजी से मिश्री किसानों को धक्का देकर पीछे हटाते हुए एक यात्री ने इनसे अँगरेजी कॉन्सुलर एजेण्ट के दफ्तर का पता पूछा। उसी समय इस यात्री ने एक पासपोर्ट पेश किया जिस पर वह सही डलवाना चाहता था। फिक्स ने तुरन्त पासपोर्ट ले लिया और एक नजर में ही उस पर लिखा विवरण पढ़

लिया। कागज उसके हाथ में काँप उठा। विवरण बिल्कुल उसी विवरण से मेल खा गया जो उसे मेट्रोपोलिटन पुलिस के कमिश्नर से मिला था।

'यह पासपोर्ट आपका नहीं है ?' उसने यात्री से पूछा।

'नहीं।' यात्री बोला, 'यह मेरे मालिक का है।'

'और तुम्हारे मालिक कहाँ हैं ?'

'वहीं जहाज पर।'

'लेकिन उन्हें अपनी शिनाख्त के लिये स्वयम् कॉन्सिल के दफ्तर में आना चाहिये।

'क्या यह जरूरी है ?'

'अनिवार्य।'

'अच्छा' दफ्तर है कहाँ ?'

'वहाँ चौराहे के कोने में।' दो सौ कदमों के फासले पर एक मकान की ओर इशारा करते हुए जासूस बोला।

'तो मैं मालिक के पास जाता हूँ जो अपने कार्यक्रम में गड़बड़ी पसन्द न करेंगे।'

इसके अनन्तर यात्री ने फिक्स को झुककर सलाम किया और जहाज पर वापिस चला गया।

(७)

जासूस प्लैटफार्म से चल दिया और कॉन्सिल के दफ्तर की तरफ मुड़ा। तुरन्त ही उसके आग्रह पर उसे अफसर के सम्मुख किया गया।

"मेरे पास यह विश्वास करने के यथेष्ट कारण हैं कि हमारा आदमी 'मंगोलिया' पर ही है।" फिक्स ने अपने और उस पासपोर्टवाले यात्री के बीच की घटना सुना दी।

'अच्छा, मिस्टर फिक्स, मुझे इस बदमाश के चेहरे को देख-कर सुख नहीं होगा'। कॉन्सल ने कहा। 'लेकिन शायद वह मेरे दफ्तर में नहीं आयेगा। एक चोर अपने निकल भागने की निशानियाँ छोड़ जाना पसन्द नहीं करता।

'कॉन्सल', जासूस बोला, 'अगर वह एक होशियार आदमी है, जैसा हम समझते हैं, तो अवश्य आयेगा।'

'पासपोर्ट पर सही डलवाने, क्यों ?'

'हाँ। पासपोर्ट ईमानदारों को परेशानी में डालते हैं और बदमाशों को भागने में सहायता देते हैं। मैं तुम्हें चेतावनी दिये देता हूँ कि उसका सब कुछ कायदे का होगा लेकिन तुम उस पर सही न करना।'

'और क्यों नहीं ? अगर उसका पासपोर्ट ठीक है तो उस पर सही न डालने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।'

'लेकिन मुझे इस व्यक्ति को उस समय तक रोके रखना ही है जब तक कि मुझे लण्डन से इसकी गिरफ्तारी का वारण्ट नहीं मिल जाता।

'मिस्टर फिक्स, यह तुम्हारा मामला है,' कॉन्सल बोला, 'लेकिन मैं······मैं······'

कॉन्सल अपनी बात पूरी न कर सका। उसी समय उसके निजी दफ्तर के दरवाजे पर थपथपाहट हुई और दफ्तर के नौकर के साथ दो विदेशी अन्दर आये। इनमें से एक तो वही नौकर था जो जासूस से बात कर चुका था। निस्सन्देह वे नौकर और मालिक ही थे। मालिक ने अपना पासपोर्ट पेश किया। संक्षेप में कॉन्सल से उस पर सही कर देने की प्रार्थना की। कॉन्सल ने पासपोर्ट लेकर ध्यान से पढ़ा। दूसरे कोने में फिक्स अपरिचित व्यक्ति को ध्यान से देख रहा था। पढ़ चुकने पर कॉन्सल ने पूछा :—

'आप श्री फ़िलियास फ़ॉग हैं?'

'हाँ श्रीमान,' सज्जन ने उत्तर दिया।

'और साथ का व्यक्ति आपका नौकर है?'

'हाँ, पासेपार्टाऊट नामक एक फ्रान्सीसी।'

'आप लण्डन से आ रहे हैं?'

'जी हाँ।'

'और आप जा कहाँ रहे हैं?'

'बम्बई।'

'ठीक, श्रीमान् आप जानते हैं कि पासपोर्ट पर सही डलवाने का यह तकल्लुफ बेकार है। हम अब पासपोर्ट की माँग भी नहीं करते।'

'मैं यह जानता हूँ, श्रीमान्। लेकिन मैं आपकी सही से अपनी स्वेज़ यात्रा का प्रमाण लेना चाहता हूँ।'

'बहुत अच्छा श्रीमान्।'

कॉन्सल ने पासपोर्ट पर हस्ताक्षर कर के तारीख डाल दी और मोहर लगा दी। इसकी फीस अदा करके मिस्टर फ़ॉग चल दिये।

'इसका चेहरा-मोहरा तो एक पूरे ईमानदार आदमी जैसा है,' कॉन्सल ने कहा।

'सम्भवतः,' फ़िक्स ने उत्तर दिया। 'लेकिन यहाँ हमारे सामने प्रश्न दूसरा है। क्या आपका ख़याल है कि इस व्यक्ति के नक्श-निगार हू-ब-हू उस विवरण से मिलते हैं, जो मुझे प्राप्त हुआ है?'

'मैं तुमसे सहमत हूँ, परन्तु तुम जानते हो कि तमाम विवरण...'

'मैं इस पर साफ दिल से विचार करूँगा। मुझे तो मालिक से नौकर कम उलझा हुआ मालूम नहीं होता है। इसके अतिरिक्त

वह एक फ्रान्सीसी है जो बिना बोले नहीं रह सकता। मैं आपसे शीघ्र ही फिर मिलूँगा।'

तब जासूस पासेपार्टाऊट की खोज करने के इरादे से चल दिया।

उसी समय कॉन्सल के मकान से आकर श्री फॉग प्लैटफार्म की ओर चले गये थे। वहाँ उन्होंने अपने नौकर को कुछ आदेश दिये। तब वे नाव से जहाज पर अपने कमरे में चले गये। उन्होंने डायरी निकाली जिसमें निम्नाङ्कित नोट दिये हुए थे—

'आठ बजकर पैंतालिस पर दो अक्टूबर को बुधवार के दिन लण्डन से चले।

'सात बजकर बीस मिनट पर तीन अक्टूबर को प्रातःकाल पेरिस पहुँचे।

'आठ बजकर चालिस पर बृहस्पत को पेरिस से चले।

'छः बजकर पैंतिस पर चार अक्टूबर शुक्रवार को मॉन्ट सेनिस होकर टुरीन पहुँचे।

'सात बजकर सत्ताइस पर शुक्रवार को प्रातःकाल टुरीन से चले।

'चार बजे शाम पाँच अक्टूबर को शनिवार के दिन ब्रिन्डसी पहुँचे।

'पाँच बजे शाम को उसी दिन 'मंगोलिया' जहाज से रवाना हुए।

'ग्यारह बजे दिन को नौ अक्टूबर को बुधवार के दिन स्वेज पहुँचे।

'१५८ १-२ घण्टे या ७ १-२ दिन कुल खर्च हुए।'

मिस्टर फॉग ने यह तारीखें एक गाइडबुक में लिख लीं जो दूसरी अक्टूबर से इक्कीस दिसम्बर तक महीना, महीने का दिन, सप्ताह का दिन, पेरिस, ब्रिन्डसी, स्वेज, बम्बई, कलकत्ता, सिंगापुर,

हाँगकाँग, याकोहामा, सैनफ्रैनसिस्को, न्यूयार्क, लिवरपूल और लण्डन को पहुँचने का ठीक-ठीक समय बतलाती थीं। इन तारीखों से रास्ते के हर स्थान पर जल्दी या देर से पहुँचने का भी पता चलता था। इस कायदे से लिखी किताब में इन्होंने प्रत्येक बात का ब्योरा लिख लिया था।

आज नौ अक्तूबर, बुधवार को इन्होंने स्वेज पर अपनी पहुँच दर्ज कर ली जो कि निर्धारित पहुँचने के समय से मेल खाती थी और इस प्रकार इन्होंने न तो समय खोया न प्राप्त किया। तब इन्होंने कमरे में ही नाश्ता किया। जहाँ तक नगर घूमने का सवाल था, इन्होंने इस पर सोचा भी नहीं। यह उस अँगरेज जाति के थे जो भ्रमण के समय रास्ते में पड़नेवाले देशों को देखने के लिये अपने अनुचरों को भेज देते हैं।

(८)

कुछ ही देर में फ़िक्स प्लेटफ़ार्म पर पासेपार्टाऊट से मिले। वह वहीं इधर-उधर देखता हुआ घूम रहा था।

'अच्छा, मेरे दोस्त, क्या तुम्हारे पासपोर्ट पर हस्ताक्षर हो गये हैं?' फ़िक्स ने पूछा।

'अरे, आप हैं मिस्टर!' फ्रान्सीसी ने जवाब दिया।

'बहुत आभारी हूँ। सब ठीक है।'

'और तुम घूमने निकले हो?'

'हाँ, लेकिन हम इतनी जल्दी जाते हैं कि जैसे मैं स्वप्न में यात्रा कर रहा हूँ। हम स्वेज में ही हैं, न?'

'हाँ, स्वेज में ही।'

'मिस्र में?'

'मिस्र में ही। आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं।'

'और अफ्रीका में?'

'हाँ, अफ्रीका में।'

'अफ्रीका में?' पासेपार्टाऊट ने दोहराया। 'मुझे ऐसा विश्वास नहीं होता। मान लीजिये, श्रीमान, मैंने सोचा कि हम पेरिस से आगे नहीं जायँगे और हमने इस विशाल राजधानी को देखा, सात बजकर बीस मिनट और नौ बजकर बीस मिनट पर प्रातःकाल फिर एक बार। यह सब उत्तरी स्टेशन और ल्यान्स स्टेशन के बीच गाड़ी की खिड़की से तेज बारिश में देखा गया। मैं इस पर अफ़सोस करता हूँ। मैं पेरे लाचेज़ और चैम्पस् इलीसीज़ के सर्कस को फिर देखना पसन्द करता।'

'तब शायद तुम बड़ी जल्दी में हो?' जासूस ने पूछा।

'मैं तो नहीं, मेरे मालिक हैं। लगे हाथ मुझे कुछ कमीजें और जूते भी लेने हैं। हम बिना बक्सों के ही केवल एक टाट का थैला लेकर चल दिये हैं।'

'मैं तुम्हें एक दूकान पर लिये चलता हूँ जहाँ तुम्हें अपनी जरूरत की हर चीज मिलेगी।'

'श्रीमान् निस्सन्देह आप बहुत मेहरबान हैं।' दोनों चल दिये। पासेपार्टाऊट अविराम बोलता रहा।

'और हाँ, मुझे इसका ध्यान रखना है कि कहीं जहाज छूट न जाये', पासेपार्टाऊट ने कहा।

'समय बहुत है। और अभी तो दोपहर ही है', फिक्स ने उत्तर दिया।

पासेपार्टाऊट ने अपनी बड़ी घड़ी निकाली।

'दोपहर, हटो जी! दस बजकर आठ मिनट हुए हैं!'

'तुम्हारी घड़ी सुस्त है।' फ़िक्स बोला।

'मेरी घड़ी! यह तो खानदानी घड़ी है जो मुझे अपने पुर्खों से मिली है। साल में पाँच मिनट का भी तो अन्तर नहीं पड़ता। यह तो असली घड़ी है।'

'अच्छा, मैं समझ गया कि मामला क्या है। तुम लण्डन टाइम रखते हो जो स्वेज टाइम से दो घंटे सुस्त है। तुम्हें हर देश में बारह बजे घड़ी ठीक कर लेने का खयाल रखना होगा।'

'क्या कहा! घड़ी में हाथ लगाऊँ!' पासेपार्टाऊट चीख पड़ा—'कभी नहीं।'

'तब सूरज से इसका मेल नहीं खा सकेगा।'

'सूरज के लिये तो और भी खराब है। सूरज तब गलत होगा।'

तब उसने अपनी घड़ी पुनः घड़ीवाली जेब में रख ली।

कुछ देर बाद फ़िक्स उससे बोला। 'तब तुम लण्डन से बड़ी जल्दी में चले होगे?'

'मुझे सोचना तो यही चाहिये। पिछले बुधवार को आठ बजे शाम श्री फ़ाग अपनी सभी आदतों के प्रतिकूल क्लब से वापिस आये और इसके बाद पौन घंटे में ही हम चल दिये।'

'आपके स्वामी जा कहाँ रहे हैं?'

'ठीक बिलकुल आगे। वे संसार का भ्रमण कर रहे हैं।'

'क्या कहा! संसार का भ्रमण' फ़िक्स चिल्ला उठा।

'हाँ, अस्सी दिनों में!' उनका कथन है कि ऐसा एक शर्त पर हुआ है, गो कि मुझे विश्वास नहीं होता। इसमें कोई अक्लमन्दी तो दिखाई नहीं देती। बात कुछ और ही होगी।'

'यह फ़ॉग साहब तो पैदाइशी प्रतिभाशाली हैं, क्यों?'

'मुझे ऐसा ही सोचना चाहिये।'

'क्या यह धनी हैं?'

'प्रत्यक्षतः शायद हैं। इनके पास नये बैंक नोटों की एक अच्छी रकम है। यह सफर-खर्च में इसे खर्च भी खूब करते हैं। इन्होंने 'मंगोलिया' के इन्जीनियर को एक अच्छा इनाम देने को कहा है बशर्ते वह इन्हें समय से पहले ही बम्बई पहुँचा दे।'

'और अपने इस मालिक को तुम बहुत दिनों से जानते होगे?'

'मैं', पासेपार्टाऊट ने उत्तर दिया। 'मैं तो अपने लोगों के प्रस्थान के दिन ही इनके यहाँ नौकर होकर आया था।'

जासूस पर इन जवाबों का जो स्वाभाविक प्रभाव पड़ा वह सोचा ही जा सकता है।

लण्डन से ठीक चोरी के बाद ही रवाना हो जाने, इस बड़ी रकम के साथ रखने, दूर देशों में शीघ्र पहुँचने की इस उतावली ने, एक विचित्र शर्त के बहाने ने, फ़िक्स के विचारों को पूरी तरह पक्का कर दिया। उसने उस फ़्रांसीसी को बातों में लगाये रक्खा और यह निश्चित जान लिया कि यह व्यक्ति अपने मालिक को कतई नहीं जानता। इसे शायद यह नहीं मालूम है कि इसका मालिक एकान्त का जीवन व्यतीत करता था, कि बिना किसी प्रत्यक्ष आमदनी के साधन के ही लोग इसे धनी कहते थे, कि यह एक रहस्यमय व्यक्ति था। फिर भी फ़िक्स को इसका पक्का यक़ीन था कि फ़िलियास फ़ॉग स्वेज़ में नहीं उतरेंगे। वे सचमुच बम्बई जा रहे थे।

'क्या बम्बई यहाँ से दूर है?' पासेपार्टाऊट ने पूछा।

'काफी दूर', जासूस ने जवाब दिया। 'समुद्र द्वारा तुम्हें दस दिन और लगेंगे।'

'और बम्बई है किस जगह?'

'भारतवर्ष में।'

'एशिया में?'

'बिल्कुल।'

'लानत है! मैं जो कहने जा रहा था और जो मुझे परेशान किये है, यह मेरी बत्ती है। चलते समय मैं उसे बुझाना भूल गया और वह मेरे हिसाब में जल रही है। मैंने हिसाब लगाया है कि हर चौबीस घंटों पर मुझे दो शिलिङ्ग पड़ेंगे। मुझे जितना मिलता है ठीक उससे छः पेंस ज्यादा। आप समझते ही हैं कि हमारी यात्रा कितनी जल्दी क्यों न समाप्त हो जाये......'

क्या फ़िक्स महोदय बत्ती वाली बात समझ पाये ? असम्भव-सा है। उन्होंने अब और कुछ नहीं सुना और अब एक इरादे पर पहुँच रहे थे। फ्रान्सीसी और वे एक दूकान पर आ गये थे। फ़िक्स अपने साथी को वहाँ अपना सामान खरीदते हुए छोड़कर चले गये। जाते समय उसे जहाज पर ठीक समय में पहुँच जाने की याद भी दिला दी। फिर वे शीघ्रता से कॉन्सल के दफ्तर में आये। पूरे तौर पर विश्वास हो जाने पर फ़िक्स के होश-हवास अब ठीक थे।

'श्रीमान्', उसने कॉन्सल से कहा, 'अपना आदमी तो मिल गया। वह एक विचित्र व्यक्ति की तरह बना हुआ है और संसार की परिक्रमा अस्सी दिनों में करना चाहता है।'

कॉन्सल बोला—'तब तो वह एक बदमाश है। और वह दो महाद्वीपों की पुलिस को धोखा देकर लण्डन लौट आने की सोच रहा है।'

'हम देखेंगे', फ़िक्स ने कहा।

'लेकिन तुम्हें धोखा तो नहीं हुआ है ?' कॉन्सल ने दुबारा पूछा।

'नहीं, मुझे यकीन है।'

'तब इस चोर ने स्वेज पर उतर कर सही डलवाने के लिये क्यों इसरार किया ?'

'यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन आप सुनिये तो।' उसने तब संक्षेप में अपने और मिस्टर फ़ॉग के नौकर की दरम्यानी बात-चीत सुना दी।

'निस्सन्देह,' कॉन्सल ने कहा, 'सब अनुमान इस व्यक्ति के खिलाफ पड़ रहे हैं। आप अब करने क्या जा रहे हैं ?'

'मैं लण्डन एक तार भेजूँगा और प्रार्थना करूँगा कि शीघ्र ही मुझे गिरफ्तारी का वारण्ट बम्बई को भेज दिया जाये। मैं 'मंगो-

लिया' पर इसका पीछा भारत तक करूँगा। नम्रता से इससे बात करूँगा, एक हाथ इसके कन्धे पर और एक हाथ में वारण्ट लिये हुए।'

शान्तिपूर्वक इतना कहकर जासूस वहाँ से चल दिया। वह तार-घर गया और मेट्रोपोलिटन पुलिस के कमिश्नर को तार दे दिया। पौन घण्टे बाद अपना हल्का सामान लिये हुए और काफी रुपये के साथ फिक्स जहाज पर चढ़ गया। शीघ्र ही जहाज लालसागर के जल पर काफी भाफ छोड़ता हुआ चल दिया।

(९)

स्वेज और अदन के बीच का फासला ठीक तेरह सौ दस मील है। कम्पनी का टाइमटेबुल अपने जहाज को इस फासले को तय करने के लिये एक सौ अड़तीस घण्टों का समय देता है। 'मंगोलिया' अपनी निर्धारित पहुँच के लिये तेजी से चला। लगभग सभी यात्री, जो ब्रिन्डसी में सवार हुए थे, भारतवर्ष ही जा रहे थे। कुछ बम्बई जा रहे थे, कुछ बम्बई होकर कलकत्ते को। चूँकि रेल भी अन्तरीप के आर-पार तक जाती है, अत: लंका के द्वीप का चक्कर लगाना व्यर्थ था।

'मंगोलिया' के इन मुसाफिरों में अधिकांश भारत जा रहे थे जिनमें कई सिविल सर्विस के हाकिम और हर ओहदे के सैनिक अफसर थे। बाद वालों में कुछ अँगरेजी सेना के और कुछ घरेलू सैनिक दलों के थे। सब की तनख्वाहें ऊँची थीं क्योंकि सरकार ने पुरानी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के स्थान और उसकी शक्तियों को हस्तगत कर लिया था।

अफसरों के इस समाज का जीवन उस जहाज पर बड़ा अच्छा था। इसमें कुछ नौजवान अँगरेज भी थे। यह लोग लाखों रुपये लेकर विदेश में व्यापारी कोठियाँ स्थापित करने जा रहे थे। जहाज पर का प्रबन्ध सुन्दर था। नाश्ते के समय २ बजे लंच के समय,

साढ़े पाँच बजे भोजन के समय और आठ बजे ब्यालू के समय, जहाज के रेफ्रेजरीटर में रक्खा हुआ ताजा माँस और अन्य स्वादिष्ट भोजन मेजों पर सजा दिया जाता था। स्त्रियाँ, जिनकी संख्या कम थी, दो बार शृंगार करती थीं। संगीत और शान्त समुद्र होने पर नृत्य का भी आयोजन था।

लालसागर अपने परिवर्तनशील स्वभाव के कारण प्रायः अशान्त हो उठता है जैसा कि सभी लम्बे और सकरे जलागार हो जाते हैं। जब कभी एशियाई-तट या अफ्रीकी-तट से हवाएँ उठती थीं तो दीर्घाकार होने के कारण 'मंगोलिया' भयंकर रूप से डोलने लगता था। औरतें तब गायब हो जातीं, पियानो शान्त हो जाते और नाच-गाना तुरन्त बन्द हो जाता। फिर भी अशान्त वातावरण के होते हुए भी शक्तिशाली इंजनों द्वारा चालित 'मंगोलिया' अविलम्ब अपने पथ पर बाबुलमन्दब की ओर बढ़ा चला जाता था।

उस तमाम समय फिलियास फॉग क्या कर रहे थे? माना जा सकता है कि, सदैव व्याकुल और उत्सुक, उनका मन परिवर्तित मौसम में उलझा होगा।

ऐसी कोई बात नहीं थी। अब भी वे वही रिफार्म क्लब के सदस्य थे, रहस्यमय और गम्भीर। इन्हें कोई घटना या दुर्घटना चकित नहीं कर सकती थी। वे अधिक प्रभावित प्रतीत नहीं हुए। जहाज के बरामदे में वे बहुत कम देखे गये। लालसागर को देखकर वे अपने को बहुत कम दुःखी करते थे। इस सागर के तटों पर बिखरे हुए विचित्र नगरों को भी इन्होंने नहीं देखा। इन नगरों की बाह्य रेखायें बड़ी चित्रमयता से क्षितिज पर परिलक्षित थीं। अरब की खाड़ी के खतरों को इन्होंने स्वप्न में भी नहीं सोचा। इन खतरों का वर्णन स्ट्रैबो, एरियस, आर्टीमिडोरस और दूसरे प्राचीन इतिहासकारों ने भय के साथ किया है। इस खाड़ी में जहाजियों ने

पुराने समय में बिना बलिदान चढ़ाये सफर करने की कभी हिम्मत नहीं की।

'मंगोलिया' पर कैदी की तरह यह विचित्र व्यक्ति क्या कर रहा था ? पहिले वे एक दिन में अपने चारों खाने खाते थे। जहाज का लुढ़कना और हिलना इनके कामों में कोई बाधा न डाल सके। तब वे ताश खेलते। अपने जैसे लगी खिलाड़ी भी उनको वहाँ मिल गये। इन साथियों में एक कलेक्टर, जो गोआ में अपनी नौकरी पर जा रहा था, एक मिनिस्टर, आदरणीय डेसीमस स्मिथ जो बम्बई वापिस जा रहे थे, और अँग्रेजी सेना के ब्रिगैडियर-जेनरल जो अपने सैनिक दल में बनारस को जा रहे थे। इन तीनों यात्रियों को ताश का उतना ही शौक था जितना श्री फॉग को।

जहाँ तक नौकर का सम्बन्ध है, समुद्री बीमारी का उस पर कुछ प्रभाव नहीं हुआ। वह आगे के कमरे में था और मजे से खाता था। यह कहना चाहिये कि इन परिस्थितियों में किया हुआ सफर उसके लिये कतई अप्रिय नहीं था। उसने इसे पसंद ही किया। अच्छा रहना, अच्छा खाना, वह देश का दृश्य देख रहा था। उसका विचार था कि यह सारी सनक बम्बई में खत्म हो जायेगी। दूसरे दिन स्वेज से चलने के बाद जहाज के बरामदे में उस कृपालु व्यक्ति से मिलकर उसे कम खुशी नहीं हुई, जिससे मिस्र में पहुँचते समय वह बोला था।

अपनी अत्यन्त प्रिय मुस्कराहट के साथ वह उसके पास जाते हुए बोला, 'अगर मैं भूला नहीं हूँ तो आप वही सज्जन प्रतीत होते हैं जिन्होंने स्वेज में मेरा पथ-प्रदर्शन किया था।'

'निस्सन्देह', जासूस ने उत्तर दिया। 'मैं तुम्हें पहिचानता हूँ। तुम उसी बुड्ढे अँगरेज के नौकर हो—

'बिल्कुल, श्रीमान्।'

'श्रीमान्जी' पासेपार्टाऊट ने जवाब दिया, 'इस जहाज पर फिर आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। आप जा कहाँ रहे हैं ?'

'क्यों, वहीं जहाँ आप जा रहे हैं, बम्बई को।'

'यह खूब रही! क्या आप यह सफ़र पहले भी कर चुके हैं ?'

'कई बार,' फ़िक्स बोला। 'मैं पेनिनसुलर कम्पनी का एजेन्ट हूँ।'

'तब आप भारतवर्ष से परिचित होंगे ?'

'हाँ, यही समझ लीजिये,' फिक्स ने उत्तर दिया जो अधिक खुलना नहीं चाहता था।

'और क्या भारतवर्ष एक विचित्र जगह है ?'

'बहुत ही विचित्र! मस्जिदें, मीनार, मन्दिर, फकीर, पगोडा, चीते, साँप, नर्त्तकियाँ सब वहाँ हैं। लेकिन शायद तुम्हें देश में घूमने का अवकाश रहेगा ?'

'आशा तो है, श्रीमान्। आप अच्छी तरह समझते हैं कि एक दुरुस्त-दिमाग आदमी को यह आज्ञा नहीं दी जाती कि वह अपना जीवन संसार-भ्रमण के बहाने जहाज से रेल में और रेल से जहाज में कूदते हुए व्यतीत करे जब कि भ्रमण का निर्धारित समय केवल अस्सी दिन हो। नहीं, आप यकीन रखिये, यह सब उछल-कूद बम्बई में समाप्त हो जायगी।'

'श्री फॉग तो ठीक हैं ?' बड़े स्वाभाविक ढंग से फ़िक्स ने पूछा।

'बिल्कुल अच्छी तरह हैं, श्रीमान् और मैं भी। मैं भूखे दानव की तरह खाता हूँ। यह समुद्री जलवायु का प्रभाव है।'

'मैं बरामदे पर आपके मालिक को कभी नहीं देखता।'

'वे ज्यादा जिज्ञासु नहीं हैं।'

'क्या, मिस्टर पासेपार्टाऊट तुम जानते हो कि यह अस्सी दिनों का भ्रमण किसी छिपे हुए राजनीतिक उद्देश्य का बहाना है ?

'सच कहता हूँ, श्रीमान् मुझे इस संबंध में कुछ नहीं मालूम है। मैं इसे जानने का लेशमात्र भी उत्सुक नहीं हूँ।'

इस मुलाकात के बाद पासेपार्टाऊट और फ़िक्स की अक्सर बातचीत होती थी। जासूस का विचार था कि उसे इन फ़ॉग महोदय के नौकर से खूब घुले-मिले रहना चाहिये। मौका आ सकता है जब इससे कुछ मदद मिले। 'मंगोलिया' के जलपान-गृह में वह अक्सर उसे ह्विस्की या एल-शराब पिलाता जिसे खुशी से वह स्वीकार कर लेता था। इसकी निगाह में फ़िक्स एक बड़ा शरीफ व्यक्ति था।

उधर 'मंगोलिया' तेजी से चला जा रहा था। तेरह तारीख को उन्हें मोचा दृष्टिगोचर हुआ। चारों ओर टूटी दीवारों के ऊपर हरे खजूर के वृक्ष दिखाई पड़ रहे थे। दूर पर, पहाड़ों के बीच, लम्बे-चौड़े कॉफी के खेत थे। इस महत्त्वपूर्ण स्थान को देखकर पासे-पार्टाऊट बड़ा प्रसन्न हुआ। गोलाकार दीवारों और टूटे-फूटे एक किलेवाला यह नगर बड़े चाय के प्याले और तश्तरी की तरह प्रतीत हुआ।

अगली रात 'मंगोलिया' बाबुलमन्दब के जलडमरूमध्य से होकर गुजरा। बाबुलमन्दब अरबी नाम है जिसका अर्थ 'आँसुओं का दरवाजा' है। दूसरे दिन चौदह तारीख को जहाज अदन बन्दर-गाह के उत्तर-पश्चिम में पहुँचा। वहाँ फिर उसे कोयला लेना था। कोयला पाये जानेवाले स्थानों से इतनी दूर जहाजों के लिये उसे लाना मामूली बात नहीं है। इसमें पेनिनसुलर कम्पनी को आठ लाख पाउण्ड का अतिरिक्त खर्च पड़ जाता है। अनेक बन्दरगाहों में कोयले के गोदाम स्थापित करना आवश्यक हो गया

है। इन दूर के स्थानों पर कोयले की कीमत तीन से लेकर चार पाउण्ड प्रतिटन तक बढ़ जाती है।

बम्बई पहुँचने से पहिले अब भी 'मंगोलिया' को १६५० मीलों का फासला तय करना था। कोयला लेने के लिये उसे बन्दर पर चार घण्टों तक रुकना पड़ा था। इस विलम्ब से फ़िलियास फ़ॉग के कार्यक्रम में कोई गड़बड़ी नहीं पड़ी क्योंकि इसका अन्दाज पहिले से ही लगा लिया गया था। इसके आनिश्चित अदन पर १५ तारीख की सुबह तक पहुँचने के बजाय, जहाज वहाँ १४ की शाम को ही पहुँच गया और इस प्रकार १५ घण्टों की बचत कर ली।

श्री फ़ॉग और नौकर उतर पड़े। यहाँ भी यह सज्जन अपने पासपोर्ट पर हस्ताक्षर डलवाना चाहते थे। छिपकर फ़िक्स ने इनका पीछा किया। हस्ताक्षर की कार्यवाही हो जाने के बाद, फ़िलियास फ़ॉग अधूरे खेल को पुनः चालू करने जहाज पर चले गये। अपने स्वभाव के अनुसार पासेपार्टाऊट सुमालियो, बैनियान्स, पारसियों, यहूदियों, अरबों, योरपवालों के बीच घूमता रहा। इसने यहाँ की किलेबन्दी की प्रशंसा की, जिसके कारण यह स्थान इंडियन ओशन का जिब्राल्टर कहा जाता है। इसने कुछ शानदार तालाबों की भी सराहना की जहाँ कुछ अँगरेज इन्जीनियर अब भी काम कर रहे थे। यहीं पर दो हजार वर्ष पहले सॉलोमन बादशाह के इन्जीनियर भी काम कर चुके थे। जहाज पर वापिस आते हुए उसने अपने आप कहा, 'बहुत विचित्र, बहुत विचित्र!' वह फिर बोला, मैं देखता हूँ कि अगर कुछ नई चीज देखने को मिले तो सफ़र बुरा नहीं होता।

छः बजे शाम 'मंगोलिया' अदन के बन्दरगाह में था और शीघ्र ही हिन्द महासागर जा पहुँचा। अदन और बम्बई का फ़ासला तय करने के लिए जहाज को १६८ घण्टों की आवश्यकता थी। हिन्द महासागर का वातावरण जहाज के लिये अनुकूल था।

ठीक से सन्तुलित होने के कारण जहाज कम हिलता-डुलता था। नये ठाठबाट से स्त्रियाँ डेक पर आ गईं। नाच-गाना फिर होने लगा। उनकी यात्रा तब बड़ी अनुकूल परिस्थितियों में हो रही थी। मित्र के रूप में जो खुशमिजाज साथी दैवयोग से उसे मिल गया था उससे उसे हार्दिक आनन्द हुआ।

रविवार को, २० अक्टूबर दोपहर के समय, उन्होंने भारतीय तट के दर्शन किये। दो घण्टे बाद जहाज बन्दरगाह में दाखिल हुआ। यह बन्दरगाह सालसिट, कोलाबा, इलिफैन्टा और बुचर टापुओं से मिलकर बना है। साढ़े चार बजे जहाज बम्बई के प्लेट-फार्म से लग गया। फ़िलियास फ़ॉग तब उस दिन का तैंतीसवाँ ताश का खेल खत्म कर रहे थे। एक हिम्मतवाली चाल की कृपा से इन्होंने और इनके साथी ने एक शानदार जीत से यह सुन्दर यात्रा समाप्त की। बाइस अक्टूबर से पहिले 'मंगोलिया' को बम्बई नहीं पहुँचना चाहिये था। वह २० को ही पहुँच गया। लण्डन से चलने के समय से अब तक दो दिनों की बचत हुई थी। इस बचत को कायदे से फ़िलियास फ़ॉग ने अपनी डायरी में बचत के खाने में दर्ज कर लिया।

(१०)

सब जानते हैं कि भारतवर्ष एक उल्टे त्रिकोण की शक्ल का है और इसका ऊपरी क्षेत्रफल चौदह लाख वर्गमील है। यहाँ की जनसंख्या १८ करोड़ है। इस महान् देश के एक भाग पर अँगरेजी सरकार का पूर्ण आधिपत्य है। कलकत्ते में एक गवर्नर-जनरल रहता है और मद्रास, बम्बई तथा बंगाल में गवर्नर रहते हैं। आगरे में एक लेफ्टीनेण्ट-गवर्नर रहता है।

अँगरेजी भारत, जैसा कि इसे कहा जाता है, केवल सात लाख वर्गमील के क्षेत्रफल का है और इतने भाग की जनसंख्या ११ लाख

है। यह कहना पर्याप्त है कि देश का एक बड़ा भाग अब भी महारानी की हुकूमत से बरी है। कुछ घरेलू राजाओं को सम्मिलित करते हुए अब भी हिन्दुओं की स्वतन्त्रता पूर्ण है। १७५६ से, जब पहिली मर्तबा मद्रास नगर के स्थान पर अंगरेजी कोठी स्थापित हुई थी १८५७ के सैनिक-विद्रोह तक महत्त्वपूर्ण ईस्ट इण्डिया कम्पनी सर्वशक्तिमान थी। थोड़ा-थोड़ा करके इसने भिन्न-भिन्न प्रान्तों पर अधिकार कर लिया। कम्पनी ने वार्षिक लगान पर राजाओं से प्रान्तों को ले लिया और कभी आंशिक लगान दे देती थी और कभी वह भी नहीं। इसने इनके गवर्नर-जनरल और तमाम घरेलू या सैनिक कर्मचारियों के नाम रख दिये। अब कम्पनी नहीं रही और भारत की अँगरेजी अमलदारियाँ अब सीधे इँगलैंड के बादशाह के अधिकार में हैं। इस प्रकार इस प्रायद्वीप में दृष्टिकोण, रीति-रिवाज, जात-पाँत आदि खराबियाँ धीरे-धीरे दूर हो रही हैं। अब तक लोग पैदल, घोड़ों पर, बैलगाड़ियों में, मनुष्य द्वारा खींची जानेवाली छोटी गाड़ियों में, पालकियों में आदमियों की पीठों पर, गाड़ियों में और इसी प्रकार यात्रा के अनेक प्राचीन साधनों द्वारा यात्रा करते थे। अब सिन्धु और गंगा नदियों में तेजी से भाप के जहाज चलते हैं। रेल देश के आर-पार जाती है और इसने कलकत्ते से बम्बई की यात्रा केवल तीन ही दिनों में सुलभ कर दी है।

इस रेल का रास्ता सीधा देश के आर-पार नहीं है। हवाई यात्रा का फासला १००० से ११०० मील तक है। औसत रफ्तार से चलनेवाली रेलगाड़ी इस फासले को तीन दिनों से कम में तय कर लेगी। संक्षेप में ग्रेट इण्डियन पेनिनसुलर रेलवे के रास्ते के यह प्रधान बिन्दु हैं। बम्बई के टापू को छोड़कर यह सालसिट के टापू को पार करती है, तन्नाह के सामने प्रधान देश का स्पर्श करती है, पश्चिमी घाट की श्रृङ्खला को पार करती है। उत्तर पूर्व में

बुरहानपुर तक जाती है। लगभग स्वतन्त्र से बुन्देलखण्ड में प्रवेश करती है, इलाहाबाद तक जाती है, पूर्व की ओर घूमती है, बनारस में गंगा से मिलती है, थोड़ा अलग हटती है और फिर बुर्दिदन और फ्रान्सीसी नगर चन्द्रनगर होकर दक्षिण-पूर्व की ओर उतरती है। इस प्रकार कलकत्ते में इसका रास्ता जा कर समाप्त होता है।

साढ़े चार बजे, 'मंगोलिया' के मुसाफिर बम्बई में उतरे। कलकत्ते की गाड़ी ठीक आठ बजे छूटती थी। श्री फॉग ने तब अपने साथियों से बिदा ली, जहाज से चल दिये और नौकर को सामान खरीदने के कुछ आदेश दिये। आठ बजे से पहिले उसे स्टेशन पर आ जाने को कह दिया और अपनी नियमित चाल से पासपोर्ट दफ्तर की तरफ चल दिये। बम्बई के आश्चर्यजनक किसी भी स्थान को देखने की उन्होंने बात भी नहीं सोची। सिटी हॉल, शानदार वाचनालय, किले, बन्दरगाह, रूई बाजार, दुकानें मस्जिदें, गिर्जे, यहूदियों के स्थान, मालाबार पहाड़ी का शानदार पैगोडा, इत्यादि कोई भी स्थान इन्होंने नहीं देखा। वे इलिफैन्टा की उत्कृष्ट कलाकृतियों पर भी विचार नहीं करेंगे और न सालसिट टापू की चित्रमय गुफाएँ ही देखेंगे। बौद्धकालीन भवन-निर्माण-कला के अवशेष चिह्नों का भी इनके लिये कोई महत्त्व नहीं था। पासपोर्ट के दफ्तर से चलकर फिलियास फॉग चुपचाप स्टेशन पर आ गये और वहीं भोजन किया। दूसरी वस्तुओं में से वहीं पाये जानेवाले खरगोश का कुछ भाग भोजनालय के स्वामी ने इनके सामने पेश किया और उसकी बड़ी प्रशंसा की। फिलियास फॉग ने खरगोश के जिगर को स्वीकार कर लिया और बड़ी तबियत से इसका स्वाद लिया लेकिन तमाम मसालों के होते हुए भी वह इन्हें स्वादहीन लगा। उन्होंने मालिक को बुलाया।

'श्रीमान्' वे बोले, 'क्या यह खरगोश है ?'

'हाँ, श्रीमान्,' वह धूर्त दिलेरी से बोला, 'जंगलों का खरगोश।'

'और वह खरगोश मारे जाते समय म्याऊँ करके नहीं बोला था ?'

'म्याऊँ करके! अरे मालिक! बिल्कुल खरगोश ही है। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि......'

'जनाब मालिक' मिस्टर फॉग नर्मी से बोले, 'कसम न खाइये और यह याद कीजिये कि पुराने जमाने में, भारतवर्ष में बिल्लियाँ पवित्र मानी जाती थीं। वह जमाना अच्छा था।'

'जमाना बिल्लियों के लिये ही अच्छा था क्या ?'

'और शायद यात्रियों के लिये भी।'

इसके बाद मिस्टर फॉग चुपचाप खाने लगे।

कुछ क्षणों बाद, जब श्री फॉग जहाज से उतरे, जासूस फिक्स भी उतर पड़ा और बम्बई के पुलिस कमिश्नर के पास तेजी से चल दिया। उसने अपने को जासूस बतलाया और उस कार्य को भी जो उसे सौंपा गया था। उसने यह भी बतलाया कि चोर के समक्ष उस समय वह किस स्थिति में था। उसने पूछा कि क्या लण्डन से कोई गिरफ्तारी का वारण्ट आया था। सचमुच वहाँ कुछ नहीं आया था। दरअसल फॉग साहेब के बाद लण्डन से रवाना किया हुआ वारण्ट अभी पहुँचा ही नहीं था।

फिक्स का चेहरा उतर गया। उसने इस सज्जन पुरुष श्री फॉग की गिरफ्तारी का वारण्ट पुलिस कमिश्नर से लेना चाहा। डायरेक्टर ने इन्कार कर दिया। यह मामला लण्डन पुलिस का था और उसीको कानूनन् वारण्ट देने का अधिकार था। नियमों की यह दृढ़ता, कानून की ऐसी पक्की पाबन्दी अँगरेजों के व्यवहारों में पाई जाती है। फिक्स ने आग्रह नहीं किया और समझ लिया कि उसे वारण्ट आने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इसने उस रहस्यमय धूर्त

को आँख से ओझल न होने देने का इरादा किया जब तक वह बम्बई में था। फिलियास फॉग वहाँ ठहरेगा, इसमें उसे शक नहीं हुआ। जैसा हम जानते हैं, पासेपार्टाऊट का भी यही विश्वास था। इस प्रकार वारण्ट को वहाँ पहुँचने का समय मिल जायेगा।

उन आखिरी आदेशों के बाद जो उसके मालिक ने उसे दिये थे, पासेपार्टाऊट ने अच्छी तरह समझ लिया था कि बम्बई में भी वही होगा जो स्वेज और पैरिस में हुआ था। यात्रा यहीं समाप्त नहीं होगी। कम से कम कलकत्ते तक इस यात्रा का क्रम जारी रहेगा। शायद कुछ आगे भी बढ़ जाये। वह स्वयम् से पूछने लगा कि क्या श्री फॉग की यह शर्त सचमुच सच्ची ही थी और अगर भाग्य उसे घसीट नहीं रहा था तो क्या वह संसार की परिक्रमा अस्सी दिनों में करेगा जब कि वह विश्राम करना चाहता था। रास्ता देखते हुए और कुछ कमीजं तथा जूते खरीदने के बाद उसने बम्बई की सड़कों का सैर की। वहाँ लोगों की बड़ी भीड़ थी जिसमें सभी राष्ट्रीयताओं के यूरूपियन थे। नुकीली टोपियोंवाले फारसी, गोल पगड़ियोंवाले बनिये, सिंधी, जिनकी टोपियाँ चौकोर थीं, लम्बे वस्त्रों-वाले आरमीनिया के लोग और पारसी भी थे। पारसियों का एक त्योहार, हो रहा था। पारसी लोग जोरैस्टर के मतावलम्बियों के खास खानदानी हैं। यह लोग बड़े उद्योगी, बड़े सभ्य, बड़े बुद्धिमान् और हिन्दुओं में सबसे ज्यादा नैतिक बल रखनेवाले होते हैं। बम्बई के स्थानीय धनी व्यापारी इस जाति के हैं। इस दिन उनका कोई धार्मिक जश्न मनाया जा रहा था। वहाँ जुलूस और अनेक मनो-रञ्जन भी थे। गुलाबी रंग का झीना वस्त्र पहिने हुए नाचनेवाली लड़कियाँ भी थीं। इनके वस्त्रों पर सोने और चाँदी का काम था। यह लोग बड़ी उत्तमता से साजों पर नृत्य करती थीं जिसे देखकर आश्चर्य होता था।

यहाँ यह कहना व्यर्थ ही है कि पासेपार्टाऊट ने इन विचित्र

उत्सवों को देखा या नहीं, क्या उसकी आँखें चारों तरफ फैली रहीं और सब कुछ सुनने के लिये कान उठे रहे ? क्या उसका दिखावा एक अत्यन्त ऊँचे दर्जे के बेवकूफ जैसा था ? दुर्भाग्य से, अपने और अपने मालिक के, उसकी जिज्ञासा उसे जरूरत से ज्यादा आगे घसीट ले गई। उसने अपने मालिक की यात्रा में बाधा डालने का खतरा भी ले लिया।

दर असल, इस पारसी उत्सव के देखने के बाद, पासेपार्टाऊट स्टेशन की तरफ चला। मालाबार पहाड़ी पर स्थित पैगोडा को पार करते समय कमबख्ती से उसे यह खयाल आया कि चलकर उसके अन्दर देखा जाये। वह दो बातों से अनभिज्ञ था। पहिली बात यह कि कुछ हिन्दू पैगोडों में ईसाइयों का प्रवेश वर्जित है। दूसरे यह कि मत के माननेवाले भी बिना बाहर दरवाजे पर जूते उतारे अन्दर नहीं जा सकते। यहाँ यह कहना चाहिए कि ठोस राजनीतिक कारणों से अँगरेजी सरकार देश के सूक्ष्मातिसूक्ष्म धार्मिक मामलों का आदर करती है और ऐसा ही आदर अपने प्रति भी चाहती है। यही कारण है कि देश के रीति-रिवाजों को न माननेवालों को सरकार सख्त सजा देती है। पासेपार्टाऊट बिना यह सोचे हुए कि वह कोई गलती कर रहा है, अन्दर घुस गया बिल्कुल एक सीधे-साधे मुसाफिर की तरह। अन्दर बनी हुई कारीगरी के चमत्कार की वह प्रशंसा कर रहा था। उसी समय उस पवित्र फर्श पर वह पटक दिया गया। क्रोधावेश में तीन पुजारी उस पर टूट पड़े और उसके जूते और मोजे फाड़ डाले। असभ्यता से चिल्लाते हुए उन्होंने उसे पीटना शुरू कर दिया। सुदृढ़ और फुर्तीला होने के कारण फ्रांसीसी फिर उठ खड़ा हुआ। अपने घूँसे और जूते से उसने अपने दो शत्रुओं को बौखला दिया। उनके लम्बे वस्त्रों से उलझते हुए वह पैरों की पूरी शक्ति से बाहर भागा। भीड़ में

गायब होकर उसने उस तीसरे हिन्दू को भी पछाड़ दिया जो उसके पीछे दौड़ा था।

आठ बजकर पाँच मिनट पर अर्थात् गाड़ी चलने के कुछ ही देर पहिले पासेपार्टाऊट नंगे सर और नंगे पैर स्टेशन पहुँचा। वहाँ हाथापाई में खरीदे हुए सामान का बंडल भी खो गया था। फिक्स प्लैटफार्म पर ही था। स्टेशन तक मिस्टर फॉग का पीछा करके उसकी समझ में आया कि वह धूर्त बम्बई से जा रहा था। उसने तुरन्त ही कलकत्ते तक उसका पीछा करने का इरादा किया और अगर आवश्यकता हुई तो आगे तक भी। पासेपार्टाऊट ने फिक्स को नहीं देखा जो अँधेरे में खड़ा था लेकिन फिक्स ने यह सुना कि वह मालिक से संक्षेप में अपने साहसपूर्ण वाकयात बयान कर रहा था।

फिलियास फॉग ने केवल इतना ही जवाब दिया कि अब और ऐसा नहीं होना चाहिए। वह गरीब बिना कुछ बोले, नंगे पैर और कुछ विचलित-सा अपने मालिक की ही तरह एक जगह पर बैठ गया।

फिक्स एक दूसरे डब्बे में बैठने जा रहा था कि एक विचार ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। उसने अपने चलने के इरादे में सुधार किया। 'नहीं, मैं रुकूँगा', उसने कहा। भारतीय अमलदारी में घुस आना, अब कहाँ जा सकता है!'

इसी समय इंजन ने जोर की सीटी दी और गाड़ी अंधकार में विलीन हो गई।

(११)

गाड़ी समय पर छूटी थी। इसके यात्रियों में कुछ अफसर, घरेलू हाकिम और अफीम तथा नील के व्यापारी थे जो अपने व्यवसाय के काम से प्रायद्वीप के पूर्वी भाग को जा रहे थे।

पासेपार्टाऊट अपने मालिक के ही डब्बे में बैठा। सामने कोने में एक तीसरा यात्री बैठा था। यह थे ब्रीगैडियर-जनरल सर फ्रांसिस क्रोमार्टी। यही सज्जन स्वेज से बम्बई आते समय श्री फॉग के खेल के साथी थे। यह बनारस में अपने सैनिक दल को जा रहे थे।

सर क्रोमार्टी लम्बे, गोरे लगभग पचास वर्ष के वृद्ध थे। इन्होंने पिछले सैनिक विद्रोह में विशेष ख्याति पाई थी। इन्हें सचमुच देशीय व्यक्ति कहा जा सकता था। युवाकाल से ही वे भारत में रह रहे थे। जन्मभूमि को कभी-कभी ही गये थे। यह अच्छे ओहदे पर थे। अगर फिलियास फॉग ने पूछा होता तो इस देश के तौर-तरीकों, इतिहास और सङ्गठन के विषय में विवरण देते हुए इन्हें प्रसन्नता होती। लेकिन यह सज्जन तो कुछ भी नहीं पूछ रहे थे। वे यात्रा नहीं कर रहे थे बल्कि एक परिधि बना रहे थे। इनका शरीर भारी था। इस समय श्री फॉग लन्डन छोड़ने के समय से लेकर अब तक खर्च हुए समय का हिसाब लगा रहे थे। अगर कोई निरर्थक हरकत करना उनके स्वभाव में होता तो वे पश्चात्ताप करते।

अपने सहयात्री की मौलिकता को सर फ्रैंसिस क्रोमार्टी ने पहचान लिया था। उन्होंने ताश खेलते समय यह पहिचान की थी। वे पूछने जा रहे थे कि क्या उस मुर्दा शक्ल के अन्दर कोई दिल भी था या नहीं। क्या नैतिक महत्त्वाकांक्षाओं और प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति उनकी आत्मा जागरूक थी? उनके दिमाग में उस समय यही प्रश्न था। उन तमाम विचित्रताओं में जिन्हें जनरल ने देखा था, इस व्यक्ति के समान कोई नहीं था। अस्सी दिनों में पृथ्वी-परिक्रमा की अपनी योजना श्री फॉग ने क्रोमार्टी से छिपाई नहीं और उन परिस्थितियों को भी बता दिया जिनमें वे सफर कर रहे थे। जनरल ने इस शर्त में केवल एक सनक देखी जिसका कोई सार्थक उद्देश्य नहीं था। इसमें उस शिवम् का अभाव था जो प्रत्येक

नकअ्गन व्यक्ति का पथ-प्रदर्शन करता है। जिस प्रकार यह विचित्र बगान यात्रा कर रहा था उस तरह से यह न तो अपना ही कोई उपयोग कर रहा था और न किसी दूसरे का।

बम्बई छोड़ने के एक घंटे बाद, गाड़ी ने सालसिट का टापू पांक छोड़ दिया था और मुख्य धरती पर आ गई थी। कल्याण स्टेशन पर इसने दाहिनी ओर वह पथ छोड़ दिया जो कन्डालह और पाऊनह होकर भारत के दक्षिण-पूरब जाता है और पनवेल स्टेशन पहुँचता है। इस स्थल पर यह पश्चिमी घाट के पहाड़ों की घाटियों में उलझ गया। इन पहाड़ों की उच्चतम चोटियाँ जंगलों से ढकी थीं।

समय-समय पर श्री फॉग और कोमार्टी साहब कुछ वार्तालाप कर लेते थे। इसी समय एक वार्ता पुनः प्रारम्भ करते हुए श्री कोमार्टी बोले :—

'कुछ वर्षों पहले, श्री फॉग, आप इस स्थल पर एक विलम्ब का अनुभव करते जो आपकी यात्रा में बाधा डाल देती।'

'सर फ्रैंसिस, ऐसा क्यों होता ?'

'क्योंकि रेल इन पहाड़ों की तरेटी पर ही रुक जाती थी और कन्डालह के स्टेशन तक इन पहाड़ों को पालकियों या टट्टुओं पर पार करना होता था। इस प्रकार पहाड़ी की दूसरी ओर पहुँचने में काफी देर लग जाती थी।

'विलम्ब से मेरे कार्यक्रम में कोई गड़बड़ी न होती', श्री फॉग ने उत्तर दिया। 'मैं कुछ बाधाओं को पहिले से ही देख लेता।'

'लेकिन फॉग साहब', जनरल ने जवाब दिया, 'आप इस जवान आदमी के साहसपूर्ण कार्यों का अमंगल कर डालेंगे।'

अपने लबादे में अपने पैर ढके हुए पासेपार्टाऊट गहरी नींद सो रहा था और स्वप्न में भी न देख सका कि वे लोग उसी के विषय में बात कर रहे थे।

'इस प्रकार की आज्ञा-उलंघन के विषय में अँगरेजी सरकार ठीक सख्ती करती है,' सर फ्रैन्सिस ने उत्तर दिया। 'यह इस बात पर जोर देती है कि हिन्दुओं के रस्म-रिवाजों का आदर होना चाहिए, और अगर आपका नौकर.........'

'हाँ, अगर वह पकड़ लिया जाता, मिस्टर फ्रैन्सिस, तो उसे सजा हो जाती, वह सजा भुगतता और तब वह चुपचाप योरप लौट आता। मैं नहीं कह सकता इस मामले से उसके मालिक के कार्य में क्या बाधा पड़ती!'

और तब वार्तालाप फिर रुक गया। रात को गाड़ी ने घाटों को पार किया, नासिक पहुँची और दूसरे दिन २१ अक्टूबर को यह अधिक समतल भूमि पर दौड़ रही थी। देश में खेती खूब थी। चारों तरफ छोटे-छोटे मकान थे जिनके ऊपर पैगोडा का गुम्बद विलायती गिरजे की कँलगी के समान लग रहा था। अनेक छोटे चश्मे, अधिकतर गोदावरी की सहायक नदियाँ इस उपजाऊ भूमि को सींचती थीं।

जागकर पासेपार्टाऊट ने चारों तरफ देखा और यह विश्वास न कर सका कि वह ग्रेट पेनिनसुलर रेलवे में हिन्दुओं के देश में भ्रमण कर रहा था। उसे यह असम्भव प्रतीत हुआ। फिर भी वास्तविकता तो यही थी। एक अँगरेज इंजीनियर द्वारा चालित और अँगरेजी कोयले से गरम किया हुआ रेल का इंजन रूई, कॉफी, काली मिर्च, लहसुन और लाल मिर्च के पौदों पर धुआँ उड़ा रहा था। खजूर या ताड़ के पेड़ों के ऊपर इंजन की भाप गुम्बदनुमा चक्कर खा रही थी। इन वृक्षों के बीच चित्रमय बँगले और बिहार दिखाई दिये और आश्चर्यजनक मन्दिर भी जो भारतीय स्थापत्य कला से आच्छादित थे। चारों और विस्तृत भूमि थी और जंगल भी जिन में साँप और शेरों की कमी नहीं थी। रेलगाड़ी की आवाज से भयभीत नहीं हुए। वे जंगल जिनके बीच सड़कें थीं, अब भी

हाथियों के आगार थे। यह हाथी तेजी से भागती हुई रेल को ध्यान से देखते थे।

प्रातःकाल, मल्लिग्राम के स्टेशन के बाद यात्रियों ने उस खतरनाक इलाके को पार किया जो काली देवी के भक्तों द्वारा प्रायः रक्तरंजित किया जाता है। पास ही एलौरा और उसके शानदार पैगोडा थे और प्रसिद्ध औरंगाबाद भी जो खौफनाक औरंगजेब की राजधानी थी और अब निजाम राज्य से अलग किये हुए प्रान्तों में से एक का एक प्रमुख स्थान था। यहीं पर ठगों के सरदार, गला घोंटकर मार डालनेवालों के राजा फेरिंघिया का दौरदौरा था। यह कातिल अमेद्य समूहों में संघटित थे और मौत की देवी की शान में गला घोंट देते थे। हर उम्र के व्यक्तियों को बिना रक्तपात के मार डालते थे। एक जमाना था जब यहाँ हर स्थान पर खोदने से एक लाश मिलती थी। अँगरेजी सरकार बहुत कुछ इन कातिलों को रोकने में सफल हुई है। यह भयङ्कर संस्था अब भी जीवित है और अपना कार्य करती है।

साढ़े बारह बजे गाड़ी बुरहानपुर स्टेशन पर रुकी और पासे-पार्टाऊट ने एक जोड़ा भारतीय जूतियों का खरीदा जो नकली मोतियों से अलंकृत थे और जिन्हें उसने सचमुच गर्व से पहिन लिया। यात्रियों ने शीघ्रता से नाश्ता-पानी किया और फिर असरि-गढ़ के लिये रवाना हो गये। थोड़ी देर ताप्ती के तट पर रुके जो सूरत के करीब कैम्बे की खाड़ी में गिरनेवाली एक छोटी-सी नदी है।

उन विचारों का, जिनमें पासेपार्टाऊट इस समय डूबा हुआ था, वर्णन करना उपयुक्त है। बम्बई आने तक उसने सोचा था कि बात वहाँ खत्म हो जायगी और मामला बढ़ेगा नहीं। लेकिन अब चूँकि वह पूरी रफ्तार से भारत के आर-पार जा रहा था, उसके मस्तिष्क में विचार परिवर्तित हुए। उसकी स्वाभाविक भावनाएँ दौड़

कर उसके पास वापिस आई । उसने पुनः जवानी के कल्पित विचारों को महसूस किया । उसने गम्भीरता से मालिक की योजनाओं को ग्रहण किया । उसे शर्त की सच्चाई पर विश्वास हुआ, परिणामतः संसार के इस भ्रमण में और इस अधिकतम समय में जो अब बढ़ाया नहीं जा सकता था । पहिले ही वह सम्भावित विलम्ब पर विचलित था और उन सब घटनाओं पर भी जो रास्ते में हो सकती थीं । दाँव में उसे दिलचस्पी हुई और इस विचार पर काँप उठा कि उस शाम से पहिले वह इस पर समझौता कर सकता था अपनी उस अक्षम्य मूर्खता से । अतः मिस्टर फॉग से कहीं ज्यादा कम गम्भीर वह अधिक अशान्त था ।

उसने गुजरे हुए दिनों को बार-बार गिना, रेल रुकने को कोसा, उस पर मंद गति होने का दोष लगाया और मिस्टर फॉग को इसलिए दोषी ठहराया कि उन्होंने रेल के चालक के लिए एक पुरस्कार क्यों नहीं घोषित किया । भला आदमी यह नहीं जानता था कि जहाज पर जो सम्भव था वही रेल पर नहीं था क्योंकि रेल की चाल नियमित थी ।

शाम होने तक वे सतपुड़ा के पहाड़ों की घाटियों में दाखिल हुए । यह पहाड़ खानदेश के इलाके को बुन्देलखण्ड से अलग करते हैं ।

दूसरे दिन, २२ अक्टूबर को, घड़ी देखने के बाद पासेपार्टाऊट ने जवाब दिया, उस प्रश्न का जो श्री क्रोमार्टी ने किया था । उन्होंने पूछा था कि समय क्या है । 'सुबह के तीन बजे हैं', नौकर बोला । दरअसल ग्रीनविच की दोपहर से मिली हुई इस घड़ी को दो घंटे सुस्त होना चाहिए था और थी भी ।

सर फ्रैन्सिस ने तब पासेपार्टाऊट के बताये हुए समय में सुधार किया और वही बात कही जो फिक्स ने उससे कही थी । उस ने उसे यह समझाने की कोशिश की थी कि उसे हर दोपहर को

घड़ी मिला लेनी चाहिए। चूँकि वह लगातार सूर्य की दिशा में पूर्व की ओर जा रहा था, दिन उतनी ही मर्तबा चार मिनट अधिक छोटे होते जायेंगे जितनी मर्तबा वह अक्षांशों को पार करेगा। यह बेकार था। जनरल की बातों को उस जिद्दी आदमी ने समझा था या नहीं, उसने अपनी घड़ी आगे न बढ़ाने की ज़िद की। इस घड़ी को वह लण्डन के समय से मिलाये रखता था। यह एक निर्दोष पागलपन था जिससे किसी को हानि नहीं पहुँचती थी।

प्रात:काल आठ बजे और रोथल पहुँचने के १५ मील पहिले रेल एक बड़े मैदान में रुकी। इसके किनारे पर कुछ बँगले और मजदूरों के झोपड़े थे। रेल को ले जानेवाला डब्बों में यह पुकारता हुआ आया कि मुसाफिरों को यहाँ उतरना है।

फिलियास फॉग ने सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी की ओर देखा। वे इमलियों और झाड़ियों के उस जंगल में रेल के रुकने का अभिप्राय कतई न समझ सके। उतना ही आश्चर्यचकित पासेपार्टाऊट पटरी पर दौड़कर गया और लगभग तुरन्त ही वापस आ गया। उसने चीखते हुए कहा, 'श्रीमान्, अब आगे रेल नहीं जायेगी।'

'तुम्हारा मतलब क्या है?' क्रोमार्टी साहेब ने पूछा।

'मेरा मतलब है अब रेल आगे नहीं जा सकती। रेल का रास्ता यहीं तक है।'

तुरन्त ही ब्रिगेडियर जनरल गाड़ी के बाहर आ गये। इत्मीनान से फॉग साहेब भी उनके पीछे उतर पड़े। दोनों ने रेल के कॉन्डक्टर से बात की।

'हम कहाँ हैं?' क्रोमार्टी साहेब ने पूछा।

'खोल्बी के पुरवे में' कॉन्डक्टर बोला।

'क्या हमें यहाँ रुकना है?'

'बिल्कुल, रेल का रास्ता अभी पूरा बना नहीं है।

'अभी बना नहीं है, यह कैसे?'

'नहीं। यहाँ से इलाहाबाद तक ५० मील का रास्ता अब भी बनना बाकी है। ५० मील के बाद रेल की पटरी फिर शुरू होती है।'

'लेकिन अखबारों में तो पूरे रास्ते के चालू होने की घोषणा की गई है।'

'लेकिन, प्राय: पत्रों की बातें गलत थीं।'

'लेकिन आप टिकट तो बम्बई से कलकत्ते तक देते है।' मिस्टर क्रोमार्टी ने उत्तर दिया जो अब उत्तेजित होनेवाले थे।

'निस्सन्देह', कॉन्डक्टर ने उत्तर दिया, 'लेकिन मुसाफिर लोग अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हें खोलबी से इलाहाबाद तक दूसरे तरीकों से जाना होगा।'

सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी क्रोधित हो उठे। पासेपार्टाऊट ने बड़ी खुशी से कॉन्डक्टर को नीचे पटक दिया होता लेकिन मालिक की ओर वह आँख न उठा सका।

'सर फ्रैन्सिस, हमें जाना तो है ही, अगर आप इलाहाबाद तक जाने का कोई साधन जुटा सकें।' श्री फॉग ने सरलता से कहा।

'श्री फॉग, यह रुकावट तो बिल्कुल ही आपके भ्रमण में बाधक है।'

'नहीं, श्री फ्रैन्सिस, इसकी गुन्जाइश पहिले से रख ली गई थी।'

'क्या कहा ? क्या आपको मालूम था कि रेल......?'

'कतई नहीं, लेकिन मैं जानता था कि किसी-न-किसी रुकावट का कहीं-न-कहीं आ जाना बहुत सम्भव है। खैर, कोई बात नहीं। मेरे पास दो दिन फाजिल हैं जिन्हें मैं आसानी से गँवा सकता हूँ। २५ की दोपहर को हाँगकाँग के लिये कलकत्ते से जहाज चलता है और हम कलकत्ते समय पर ही पहुँच जायेंगे।

ऐसी सम्पूर्ण तयशुदा बात पर अब और कहा ही क्या जा सकता था।

यह बिल्कुल सच था कि रेल का ठीक काम लायक बना हुआ पथ यहीं तक था। पत्र तो कुछ उन घड़ियों की तरह हुआ करते हैं जिनमें समय से आगे रहने की लत है और इन पत्रों ने पहिले से ही इस रास्ते के पूरा बन जाने की घोषणा कर रक्खी थी। बहुत से मुसाफिरों को रास्ते का इस प्रकार खंडित होना मालूम था। उन्होंने रेल से उतरकर गाँव में सब प्रकार की सवारियों की खोज की जैसे कि चार पहियोंवाली पालकी गाड़ियाँ, बैलगाड़ियाँ, चलते हुए पेगोडों की तरह की सफरी गाड़ियाँ, टट्टू इत्यादि। तमाम गाँव छान डालने के बाद श्री फॉग और श्री क्रोमार्टी खाली हाथ वापिस आये।

'मैं पैदल जाऊँगा,' श्री फॉग ने कहा। पासेपार्टाऊट तब वहीं आ गया था। उसने अपनी शानदार जूतियों को देखते हुए एक भावपूर्ण मुद्रा बनाई। खुशकिस्मती से वह भी किसी चीज की तलाश करता रहा था। कुछ सकुचाते हुए उसने कहा :—

'श्रीमान्, मैं समझता हूँ मैंने सवारी का एक साधन ढूंढ़ लिया है।'

'क्या ?'

'यहाँ से सौ कदम पर रहते हुए एक हिन्दुस्तानी का हाथी।'

'आइये हाथी देखा जाये,' मिस्टर फॉग ने जवाब दिया। पाँच मिनटों के बाद फिलियास फॉग, सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी और पासेपार्टाऊट एक झोपड़ी को आये जिसके चारों तरफ बाँस-बल्लियों का घरौंदा-सा बना था। झोपड़ी में एक भारतीय रहता था और बाड़े में एक हाथी। इनके कहने पर वह भारतीय मिस्टर फॉग और उनके दो साथियों को बाड़े के अन्दर ले गया।

इन लोगों ने वहाँ एक अध-पालतू जानवर देखा जिसे उसका मालिक उठा रहा था, किराये पर देने के लिये नहीं बल्कि एक लड़नेवाले जानवर के समान। इसके लिये उसने जानवर की स्वाभाविक नम्रता को दबाया था, ताकि धीरे-धीरे उसमें वह आक्रोश जागृत हो जाये जिसे हिन्दुस्तानी भाषा में 'मुत्श' कहते हैं। इसके लिये उसने इसे तीन महिनों तक शकर और मक्खन खिलाया था। इस प्रकार का परिणाम प्राप्त करने के लिये यह तरीका या व्यवहार चाहे उपयुक्त न हो, परन्तु इनके रखनेवालों को इस दिशा में कम सफलता नहीं मिलती।

जानवर का नाम किआऊनी था जो अपने सब साथियों की तरह तेजी से लम्बा सफर कर सकता था और वह भी उस समय जब कोई दूसरी सवारी काम न दे। फिलियास फॉग ने उसे नौकर रखने का इरादा किया। भारत में हाथी बड़े कीमती होते हैं और उनके रखने में काफी खर्च भी उठाना पड़ता है। यहाँ अब इनकी कमी भी प्रारम्भ हो गई है। नर हाथियों की तलाश बहुत की जाती है और अकेले यही सर्कस में काम करने के लायक होते हैं। ऐसे हाथी पालतू दशा में नहीं हो सकते। वे केवल जंगल से पकड़कर लाये जा सकते हैं। इसीलिये उनकी विशेष देखभाल रक्खी जाती है। जब मिस्टर फॉग ने उस हिन्दुस्तानी से हाथी किराये पर माँगा तो उसने बिल्कुल इन्कार कर दिया।

फॉग ने जिद की और १० पाउण्ड प्रति घन्टे की ऊँची कीमत भी देने को कहा लेकिन वह नहीं माना। बीस पाउण्ड पर भी राजी नहीं हुआ। फिर ४० पाउण्ड कहे गये और वह अस्वीकार कर दिये गये। कीमत के हर बढ़ावे पर पासेपार्टाऊट उछल पड़ता था। भारतीय अड़ा ही रहा। यह जरूर था कि दाम अच्छे थे। यह मानते हुए कि हाथी को इलाहाबाद पहुँचने में १५ घण्टों का

समय लगेगा, उसके मालिक को ६०० पाउण्ड की आमदनी पड़ जाती।

तब बिना जरा भी उत्तेजित हुए, फॉग साहेब ने उस हिन्दुस्तानी से हाथी मोल ले लेने का प्रस्ताव किया। पहिले उन्होंने जानवर के हजार पाउण्ड लगाये। भारतीय सौदा नहीं करना चाहता था। शायद वह ताड़ गया था कि यह सौदा अच्छे दामों पर पटेगा।

सर फ्रैन्सिस मिस्टर फॉग को अलग ले गये और उनसे सोच-समझ कर आगे दाम बढ़ाने की प्रार्थना की। उन्होंने अपने साथी क्रोमार्टी साहेब को यह उत्तर दिया कि बिना सोचे-समझे कुछ कर बैठने की उनकी आदत ही नहीं थी। यहाँ पर तो बीस हजार पाउण्ड की बाजी का सवाल था। उनके लिए इस हाथी का लेना अनिवार्य था और अगर उन्हें हाथी की कीमत का बीस गुना भी देना पड़े तो भी वे हाथी नहीं छोड़ेंगे।

मिस्टर फॉग फिर भारतीय के पास गये जिसकी छोटी आँखें लालच से चमक उठीं और उनसे यह जाहिर हुआ कि उसे केवल दामों की चिन्ता थी। फॉग ने क्रमशः १२००, १५००, १८०० और अन्त में पूरे २ हजार लगा दिये। साधारणतया सुर्ख रहने-वाला पासेपार्टाऊट भावनाओं से पीला पड़ गया।

दो हजार पाउण्ड पर हिन्दुस्तानी मान गया।

'कसम अपनी जूतियों की', पासेपार्टाऊट ने चीखते हुए कहा, हाथी के गोश्त की क्या शानदार कीमत लगी है !'

सौदा खत्म हुआ। अब सिर्फ चालक तलाश करना रह गया था। यह तो आसान था। एक बुद्धिमान् पारसी नौकरी के लिए राजी हो गया। फॉग ने उसकी स्वीकृति दे दी। तुरन्त हाथी लाया गया और साज-सामान से लैस कर दिया गया। हाथी चलाने या

'महावत' का काम पारसी को खूब आता था। उसने एक गद्दे से हाथी की पीठ ढक दी और दो बेडौल से हौदे रख दिये।

दरी के उस प्रसिद्ध थैले में से निकालकर फॉग ने २ हजार बैंक-नोट हिन्दुस्तानी को दे दिये। ऐसा लगता था मानो रुपया पासेपार्टाऊट के कलेजे से ही निकाला जा रहा था। तब मिस्टर फॉग ने क्रोमार्टी साहेब को इलाहाबाद ले चलने की इच्छा प्रकट की। जेनरल राजी हो गये। एक और मुसाफिर बढ़ जाता तब भी वह भीमकाय हाथी न थकता। खोल्बी में कुछ खाना बनाने का सामान लिया गया। एक हौदे में क्रोमार्टी साहेब बैठे और फॉग साहेब दूसरे में। पासेपार्टाऊट दोनों तरफ पैर रखकर बैठ गया। वह जेनरल और मालिक के बीच में बैठा था। पारसी हाथी की गर्दन पर जम गया। नौ बजे हाथी गाँव छोड़कर चल दिया और ताड़ के घने जंगल में प्रविष्ट हुआ।

(१२)

चालक ने फासला कम करने की गरज से अपने दाहिनी ओर सड़क छोड़ दी जिसके निर्माण का काम अब भी चालू था। यह लाइन विन्ध्य पहाड़ों के कारण बड़ी टेढ़ी-मेढ़ी थी और लम्बी भी थी। फॉग साहेब सबसे छोटे रास्ते पर जाना चाहते थे। पारसी देश के रास्तों से बहुत परिचित था। इसने जंगल में से होकर जाने का इरादा किया जिस पर फॉग राजी हो गये क्योंकि इस रास्ते से २० मील की बचत सोची गई।

जेनरल और श्री फॉग गर्दन तक हौदों में धँसे हुए थे। हाथी की ऊबड़-खाबड़ चाल से यह लोग खूब हिलते रहे। उधर महावत हाथी को तेजी से चला रहा था। इन लोगों ने बिना अधिक बोले हुए और एक दूसरे को देखे हुए विचित्र और उदासीन अंग्रेजों की तरह इस असुविधा को सहन कर लिया।

जहाँ तक पासेपार्टाऊट का प्रश्न है, वह गर्दन पर डटा था और हाथी की तेज चाल के कारण अधिक हिलता-डुलता था। मालिक की सिफारिश से उसने दाँतों के बीच अपनी जुबान न रखने का ध्यान रक्खा मानों वह गई होती। एक बार वह हाथी की गर्दन पर लुढ़क गया और अबकी बार पीछे की ओर दुम पर। वह एक कमानीदार तख्ते पर जोकर की तरह उछल रहा था। इन अपनी नटों जैसी कलाबाजियों में भी वह हँसता और मजाक करता था। समय-समय पर वह अपने थैले में से कुछ शकर निकालता था जिसे हाथी अपनी सूँढ़ की नोक से ले लेता था। ऐसा करने में उसकी नियमित चाल में कोई रुकावट नहीं पड़ती थी।

दो घंटों के सफर के बाद चालक ने हाथी रोक दिया, और उसे एक घण्टे का विश्राम दिया। हाथी ने झाड़ियों और पेड़ों की शाखायें खाईं। पास के तालाब में पानी भी पिया। इस रुकने की क्रोमार्टी साहेब ने शिकायत नहीं की। वे भी थके थे। फॉग साहेब ऐसे लगते थे मानो अभी बिस्तरे से उठे हों।

'लेकिन यह तो फौलाद के बने हुए हैं!' जेनरल ने उनकी ओर प्रशंसा से देखते हुए कहा।

पासेपार्टाऊट ने, जो जल्दी-जल्दी नाश्ता तैयार कर रहा था, इसकी ताईद की।

दोपहर को चालक ने रवानगी का एलान किया। जंगल बीहड़ हो उठा था। बड़े जंगलों के बाद अब इमली और छोटे कद के ताड़ के पेड़ों के झंखाड़ आये। इसके बाद विस्तृत और सूखे मैदान पड़े जिनमें कहीं-कहीं झाड़ियाँ थीं। उत्तरी बुन्देलखण्ड के इस सारे भाग में यात्री कम आते हैं। यहाँ कुछ कट्टरपन्थी लोगों की आबादी है जो हिन्दू धर्म के अत्यन्त बेढब रिवाजों में आस्था रखते हैं। उस इलाके पर अँगरेजी सरकार का पूर्णाधिकार न हो

सका जो देशी नरेशों के रोब-दाब में था। विन्धाचल में बने हुए उनके दुर्गम गढ़ों में भी सरकार की पहुँच नहीं हो सकती थी।

वे अब विन्ध्याचल के आखिरी ढाल पर उतर रहे थे। किआउनी अपनी रफ्तार पर आ गया था। दोपहर तक चालक कलेंगर गाँव का फेरा कर चुका। यह गाँव कानी के किनारे स्थित था जो गंगा नदी की एक सहायक नदी थी। उसने सदैव आबाद स्थानों को बराया। इलाहाबाद उत्तर-पूरब में १२ मील भी नहीं था। केले के पेड़ों के झुण्ड के नीचे विश्राम हुआ। केले का फल रोटी के समान स्वास्थ्यवर्द्धक, मक्खन की तरह गाढ़ा और स्वादिष्ट था। बकौल मुसाफिरों के यह फल बहुत पसन्द किया जाता था।

दो बजे, चालक एक घने जंगल के आश्रय में प्रविष्ट हुआ जिसे कई मीलों तक उसे पार करना था। इस पर जंगल में ढके-ढके चलना उसने अधिक पसन्द किया। अब तक, कोई अप्रिय घटना नहीं घटी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि यात्रा बिना किसी दुर्घटना के पूरी हो जायेगी। यकायक व्याकुलता के चिह्न दिखाते हुए हाथी रुक गया।

उस समय चार बजे थे।

'मामला क्या है ?' क्रोमार्टी साहेब ने दरियाफ्त किया।

'मुझे नहीं मालूम, हाकिम साहेब', पारसी ने जवाब दिया। घनी शाखाओं से खरखराहट की आवाज भी उसने सुनी।

कुछ देर बाद, वह आवाज और तेज हो गई। इसे एक संगीत-मण्डली की आवाज कहा जा सकता था जो अब भी दूर थी और आदमियों तथा पीतल के बाजों की आवाजों जैसी लग रही थी।

पासेपार्टाऊट की आँखें और कान उधर ही लगे थे। श्री फॉग ने सब्र से इन्तजार किया और एक शब्द भी नहीं बोले।

पारसी नीचे कूद पड़ा और हाथी को एक पेड़ से बाँध दिया। वह घने-से-घने भाग में घुस गया। कुछ देर बाद वापस आकर बोला :—

'ब्राह्मणों का एक जुलूस इधर आ रहा है। अगर सम्भव हो तो आइये, छिप जायें।'

चालक ने हाथी खोला और उसे एक झाड़ी में कर दिया। मुसाफिरों को उतरने से रोक दिया। वह स्वयम् हाथी पर सवार होने के लिये तैयार हो गया, अगर भागना जरूरी हुआ लेकिन उसने सोचा कि वफादारों की टोली बिना उसे देखे हुए निकल जायेगी। पत्तियों की गहनता ने उसे पूर्णतया ढक लिया था।

बाजों और मनुष्यों की आवाजों का शोर करीब आ गया। वह शोर बड़ा बेसुरा था। ढोलों की आवाज में तानों के रूखे स्वर सम्मिलित थे। शीघ्र ही जुलूस का मुखिया पेड़ों के नीचे से निकला। मिस्टर फॉग और उनके साथियों से पचास कदम पर वह था। शाखाओं में से तुरन्त ही इन लोगों ने जुलूस के विचित्र समुदाय को देख लिया।

पहिली कतार में ऊँची टोपियाँ और सोने-चाँदी की बेलों से अलंकृत लम्बे वस्त्र पहिने हुए पुरोहित थे। उनके चारों ओर पुरुष, स्त्री और बच्चे थे। यह लोग जनाज़े के समय गाये जाने-वाले मरसिये-से गा रहे थे जो नियमित रूप से बाजों की आवाजों द्वारा खण्डित हो जाते थे। उनके पीछे बड़े पहियोंवाली एक गाड़ी पर एक विशाल मूर्ति थी। गाड़ी के पहियों की तीलियाँ लिपटे हुए सर्पों जैसी थीं। इस गाड़ी में दो अलंकृत बैलों के जोड़े थे। यह मूर्ति चौभुजी थी जिसका शरीर गहरे लाल रंग से पुता हुआ था। इसकी आँखें जंगली, बाल उलझे हुए, जुबान लटकती हुई और ओंठ पान से लाल थे। इसकी गर्दन में नर-कंकाल

की माला थी और कमर के चारों तरफ नर-करों की पेटी थी। यह एक लेटे हुए दैत्य पर खड़ी थी जिसका शीश गायब था।

सर फ्रेन्सिस क्रोमार्टी ने इस मूर्ति को पहिचान लिया। उन्होंने बुदबुदाकर कहा, 'काली देवी, प्रेम की देवी।'

पासेपार्टाऊट बोला, 'यह तो मौत की देवी है, प्रेम की कभी नहीं! कुरूप, बुड्ढी औरत है यह तो!'

पारसी ने उसे इशारा किया कि चुप रहे।

मूर्ति के चारों तरफ बुड्ढे फकीरों का एक दल था। यह लोग कूदते और अपने शरीरों को हिलाते थे। मिट्टी से पुते हुए इनके जिस्मों पर चोटों के निशान जैसे खरांचे थे जिनसे बूँद-बूँद खून टपक रहा था। अजीब मूर्ख धर्मान्ध लोग थे। यह लोग हिन्दुओं के महोत्सवों पर जगन्नाथजी के रथ के पहियों के नीचे लेट जाते थे।

उनके पीछे भड़कीले पूर्वी वस्त्र पहने हुई एक औरत को घसीट रहे थे जो कठिनता से अपने को सीधा रख पा रही थी।

यह औरत जवान और योरुपवालों जैसी गोरी थी। उसका सिर, गर्दन, कंधे, कान, बाजू, हाथ और पैरों की उँगलियाँ जवाहरात, हारों, कड़ों, कर्णफूलों और अँगूठियों से लदे हुए थे। वह जरी के काम का कुरता पहिने थी और हल्की मलमल का डुपट्टा ओढ़े थी।

इस जवान स्त्री के पीछे बिल्कुल ही प्रतिकूल लगनेवाले रक्षक थे। इनकी कमरों से नंगी तलवारें लटक रही थीं और इनके पास तमंचे भी थे। यह लोग पालकी पर एक लाश लिये जा रहे थे।

यह एक बुड्डे पुरुष का शरीर था जो कीमती राजसी पोशाक पहिने था। उसके साफे में मोती टके थे। इसके कपड़ों पर सोने-चाँदी का काम था। कमर पर बँधे हुए काश्मीरी कपड़े पर हीरे

टके हुए थे। उसके शानदार बाजू एक भारतीय राजकुमार जैसे थे।

इसके बाद गाने-बजानेवाले और कट्टरपंथी रक्षक थे जिनकी चिल्लाहटें बाजों की आवाजों को कम कर देती थीं।

सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी ने इस सारे ताम-झाम को दुःख से देखा और चालक की तरफ घूमते हुए कहा :—

'सती है !'

पारसी ने इशारे से 'हाँ' कहा और ओठों पर अपनी उँगलियाँ रक्खीं। भारी जुलूस पेड़ों से बाहर आया और शीघ्र ही जंगलों में गायब हो गया।

धीरे-धीरे गानों की आवाज मिट गई और इस तमाम शोर-गुल के बाद शान्ति हो गई।

फिलियास फॉग ने सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी द्वारा कहा गया शब्द सुना था। ज्यों ही जुलूस चला गया, उन्होंने पूछा :—

'सती क्या है ?'

'सती एक मानव-बलिदान है लेकिन स्वयं अपनी मर्जी से किया हुआ,' क्रोमार्टी साहेब ने जवाब दिया। उन्होंने बतलाया कि जिस औरत को उन्होंने देखा था वह कल अव्वल वक्त में जला दी जायेगी।

'ओह ! बदमाश !' पासेपार्टाउट ने चिल्लाकर कहा। वह इस घृणा को व्यक्त किये बगैर न रह सका।

'और यह लाश' ? श्री फॉग ने पूछा।

'यह इसके पति, राजकुमार की है जो कि बुन्देलखण्ड का एक स्वतन्त्र राजा है।' चालक ने उत्तर दिया।

भावना में डूबे फिलियास फॉग ने पूछा, "किस तरह आज भी यह जंगली रिवाज भारतवर्ष में प्रचलित हैं ? क्या अँगरेज इन्हें मिटा नहीं सके ?"

सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी ने कहा, 'भारत के सबसे बड़े भाग में ऐसे बलिदान नहीं होते, लेकिन इन जंगली इलाकों पर हमारा कोई प्रभाव नहीं है, खास तौर पर बुन्देलखण्ड में। विन्ध्याचल का सारा उत्तरी ढाल कत्लों और अविराम डकैतियों का घटनास्थल है।'

'अभागी औरत जिन्दा जला दी जाये!' पासेपार्टाऊट बुदबुदाया।

'हाँ, जला दी जायेगी और अगर ऐसा न हो तो उसके करीबी रिश्तेदार उसकी जो दुर्गति कर डालें, उस पर तुम्हें विश्वास भी न होगा।' जेनरल ने जवाब दिया। वे लोग उसका सर मुड़ा देंगे। मुश्किल से एक मुठ्ठी चावल खाने को देंगे। वे उसे दुःख देंगे और उसे अपवित्र मान लेंगे। इस प्रकार उपेक्षित वह एक कोने में कुत्ते की मौत मर जायेगी। इसलिए इस भयानक और नारकीय जीवन की कल्पना ही इन भाग्यहीन प्राणियों को ऐसे बलिदान के लिये मजबूर करती है। प्रेम या धर्मान्धता का इसमें कोई हाथ नहीं होता।

कभी-कभी, सचमुच यह बलिदान इच्छापूर्वक ही दिया जाता है। सरकार का इसे रोकना परमावश्यक है। कुछ साल हुए, मैं बम्बई में रहता था। एक जवान विधवा गवर्नर के पास आई। उसने अपने पति के शव के साथ सती होने की आज्ञा माँगी। आप सोच ही सकते हैं, गवर्नर ने इन्कार कर दिया। तब विधवा शहर से चली गई। उसने एक स्वतन्त्र राजा का आश्रय ग्रहण किया। वहाँ वह सती हो गई।

जेनरल की इस कथा के बीच चालक ने अपना सर हिलाया और कहा :—'कल जो बलिदान होगा वह स्वेच्छा से नहीं होगा।'

'तुमको कैसे मालूम हुआ?'

'यह एक कहानी है जो बुन्देलखण्ड में हर एक आदमी जानता है।' चालक ने उत्तर दिया।

'लेकिन यह भाग्यहीना तो कोई एतराज करती नहीं दिखाई दी थी', सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी बोले।

'क्योंकि भाँग और अफीम खिलाकर उसे नशे में कर दिया गया था।'

'लेकिन उसे ले कहाँ जा रहे हैं ?'

'पिल्लाजी के मन्दिर में जो यहाँ से दो मील पर है। वहाँ वह बलिदान का इन्तजार करती हुई रात बितायेगी।'

'और बलिदान किया जायेगा——?'

'दिन निकलते ही।'

इस उत्तर के बाद, चालक हाथी को घने वन से बाहर लाया और उसकी गर्दन पर कूदकर बैठ गया। लेकिन जब वह उसे एक विचित्र सीटी द्वारा रवाना करने जा रहा था, मिस्टर फॉग ने उसे रोक लिया और सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी को सम्बोधित करते हुए कहा, 'अच्छा होता, अगर वे इस स्त्री को बचा सकते !'

'इस औरत को बचाना चाहते हैं,' मिस्टर फॉग ?, ब्रिगैडियर जेनरल ने चिल्लाकर कहा।

'मेरे पास अब भी १२ घण्टे फालतू हैं जो मैं उसके लिए खर्च कर सकता हूँ।'

'वाकई, आपका हृदय कोमल है !' जेनरल ने कहा।

'कभी-कभी, जब समय होता है तो मेरा हृदय कोमल हो जाता है।' फिलियास फॉग ने सरलता से कहा।

(१३)

परेशानियों से भरा हुआ यह इरादा तो कम साहसिक नहीं था मगर था शायद असम्भव ही। शायद मिस्टर फॉग अपना

जीवन या कम-से-कम अपनी स्वतन्त्रता खतरे में डालने जा रहे थे। परिणामतः उनकी आयोजना की सफलता पर भी असर हो सकता था लेकिन इसमें वे हिचके नहीं। इसके अतिरिक्त सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी के रूप में उन्हें एक मददगार भी मिल गया।

जहाँ तक पासेपार्टाऊट का सवाल है, वह तैयार था और उस पर भरोसा किया जा सकता था। मालिक के विचार से वह उत्तेजित हो उठा था। उसे प्रतीत हुआ कि इस बर्फ जैसे ठंडे आवरण के नीचे एक हृदय और आत्मा भी थे। वह फिलियास फॉग को प्यार करता था।

और वहाँ चालक भी था। इस मामले में उसका क्या भाग होगा? क्या वह भारतीयों का साथ न देगा? उसकी सहायता न मिलने पर, इतना तो निश्चित ही होगा कि वह किसी तरफ न रहे।

सर फ्रैन्सिस ने उससे खुला प्रश्न किया।

'अफसर साहेब,' चालक बोला, 'मैं एक पारसी हूँ, और वह औरत भी एक पारसी है। मुझसे काम लीजिये।'

'बहुत अच्छा', श्री फॉग ने जवाब दिया।

'फिर भी, क्या आप जानते हैं', पारसी ने जवाब दिया, 'कि हमारे जीवन का ही खतरा नहीं है बल्कि अगर पकड़े गये तो भयंकर सजा मिलेगी।'

मिस्टर फॉग ने कहा, 'मेरा विचार है कि कोई कदम उठाने के लिए रात तक रुकना पड़ेगा।

'मैं भी यही खयाल करता हूँ।' चालक ने उत्तर दिया।

तब उस बहादुर हिन्दू ने इस प्रथा के शिकार अर्थात् उस विधवा का कुछ विवरण दिया। वह पारसी जाति की विख्यात सुन्दरी थी। उसका पिता बम्बई का एक धनी सौदागर था। शहर में

उसने पूर्ण अँगरेजी शिक्षा प्राप्त की। अपने व्यवहारों और आचार-विचारों से वह विलायती प्रतीत होती थी। उसका नाम आऊदा था।

लावारिस तो थी ही, उसका विवाह उसकी इच्छा के प्रतिकूल इस बुड्ढे बुन्देलखण्डी राजा से कर दिया गया। तीन महीने बाद ही वह विधवा हो गई। यह जानते हुए कि उसके भाग्य में क्या है, वह भागी, तुरन्त ही पकड़ ला गई, और राजा के सम्बन्धियों ने उसे जला देने का इरादा किया क्योंकि इसकी मृत्यु में उनका मतलब सिद्ध होता था।

इस विवरण ने मिस्टर फॉग और उनके साथियों के उदार संकल्प को और पुष्ट कर दिया। यह तय हुआ कि चालक पिल्ला-जी के मंदिर की ओर हाथी ले चले और शीघ्रातिशीघ्र वहाँ पहुँच चले।

आधा घंटे बाद पेड़ों के एक घने झुंड के नीचे ठहराव हुआ। जहाँ यह लोग रुके वह स्थान मंदिर से ५०० कदम पर था जो इन्हें दिखाई नहीं देता था मगर उन धर्मान्ध व्यक्तियों की चिल्लाहट अवश्य सुनाई देती थी।

तब विधवा स्त्री तक पहुँचने के साधनों पर विचार हुआ। चालक उस मन्दिर से परिचित था। उसके कथनानुसार वह स्त्री उस मंदिर में कैद थी। क्या वे किसी दरवाजे से अन्दर जा सकते थे जब कि तमाम टोली गहरी निद्रा में निमग्न हो या नशे में धुत हो, या उन्हें दीवार में सूराख करना होगा ? इसका निर्णय तो उसी जगह, उसी समय हो सकता था। यह तो निश्चित था कि उसे भगाये जाने का कार्य उसी रात सम्पन्न होना चाहिए, दिन में नहीं क्योंकि दिन निकलते ही अभागिन ज्वालाओं में झोंक दी जायेगी। उस समय मनुष्य की कोई दखलन्दाजी काम न देगी।

मिस्टर फॉग और उनके साथियों ने रात तक इन्तजार किया। जैसे ही अँधेरा हुआ, करीब साढ़े छः बजे शाम को उन्होंने मन्दिर के चारों तरफ का भेद लेने का इरादा किया। फकीरों की आखिरी चिल्लपों खत्म हो चुकी थी। अपने तौर-तरीकों के अनुसार यह लोग भाँग के गहरे नशे में थे और शायद इसलिए चुपचाप उनके बीच से निकलकर मन्दिर तक जाना सम्भव हो सकता था।

इन लोगों का पथ-प्रदर्शन करता हुआ चालक चुपचाप जंगल में से चला। शाखाओं के नीचे दस मिनटों तक रेंगने के उपरान्त वे एक छोटी नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ मशालों के प्रकाश में उन्होंने लकड़ियां का एक ढेर देखा। यह चिता थी जो कीमती चन्दन की लकड़ी की बनी थी। इस पर पहिले से ही सुगन्धित तेल छिड़का था। इस चिता के ऊपरी भाग पर राजा का यत्न से सुरक्षित शरीर रक्खा था। विधवा के जलने के समय इसे भी जलाना था। इस चिता से सौ कदमों पर मन्दिर था जिसके गुम्बद पेड़ों की चोटियों को पार करके ऊपर निकले थे।

'आइये !' चालक ने धीमी आवाज में कहा।

शीघ्र ही चालक एक खुले स्थान पर रुका जो कि मशालों के प्रकाश में दिखाई पड़ रहा था । नशे से बोझिल सोनेवालों से जमीन ढकी थी।

पार्श्व में, पेड़ों के बीच, पिल्लाजी का मन्दिर साफ दिखाई पड़ रहा था। लेकिन चालक को बड़ी निराशा हुई जब उसने धुआँ निकलती हुई मशालों से प्रकाशित रक्षकों को देखा जो दरवाजों पर पहरा दे रहे थे और नंगी तलवारें लिये हुए टहल रहे थे। इन लोगों ने समझ लिया कि इस तरफ कोई जुगाड़ नहीं लग सकती। वे रुक गये और धीरे-धीरे बातें कीं।

'आइये, इन्तजार किया जाये,' जेनरल ने कहा, 'अभी आठ भी नहीं बजा है और सम्भव है कि यह पहरेदार सो जायें।'

'ऐसा हो सकता है,' पारसी ने जवाब दिया। यह लोग एक पेड़ के नीचे लेटकर इन्तजार करने लगे। इन लोगों ने आधी रात तक रास्ता देखा परन्तु परिस्थिति बदली नहीं। पहरा उसी प्रकार जारी रहा। यह साफ था कि वे पहरा देनेवालों के सो जाने पर भरोसा नहीं कर सकते थे।

अन्तिम बातचीत के बाद चालक बोला कि वह चलने के लिये तैयार था। मिस्टर फॉग, पासेपार्टाऊट और सर फ्रैन्सिस उसके पीछे चल दिये। उन्होंने काफी लम्बा चक्कर लगाया ताकि पीछे से मन्दिर तक पहुँच सकें।

आधी रात के लगभग घंटे भर बाद वे दीवारों के नीचे पहुँचे। उस समय उन्हें कोई नहीं मिला। इस ओर कोई पहरा नहीं था। दरवाजे और खिड़कियाँ बिल्कुल नहीं थीं।

लेकिन दीवारों के नीचे पहुँच जाना ही पर्याप्त नहीं था। वहाँ कोई सेंध लगाना भी जरूरी था। उस काम के लिये इन लोगों के पास जेबी चाकुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं था। सौभाग्य से मन्दिर की दीवारें ईंटों और लकड़ी की बनी थीं जिनमें सूराख करना कठिन नहीं था। एक ईंट निकाल ली जाये, दूसरी अपने आप निकल आयेगी।

वे चुपचाप, बिना किसी प्रकार का शोर किये दीवारों तक पहुँचे। एक तरफ से पारसी और दूसरी तरफ से पासेपार्टाऊट ने ईंटें निकालना शुरू कर दिया ताकि दो फुट चौड़ा सूराख हो जाये। काम उन्नति पर था, लेकिन दुर्भाग्य से कुछ पहरेदार मन्दिर के पीछे दिखाई दिये और वहाँ जम गये ताकि कोई वहाँ न आ सके।

काम रोके हुए इन चार व्यक्तियों की निराशा का वर्णन करना कठिन होगा।

'सिवाय चल देने के और अब हम कर ही क्या सकते हैं?' जेनरल ने धीमी आवाज में पूछा।

'हम छोड़कर बस जा ही सकते हैं,' चालक ने जवाब दिया।

'ठहरो', फॉग ने कहा। 'अगर हम कल दोपहर से पहिले इलाहाबाद पहुँच जायें तो काम चल जायेगा।'

'लेकिन अब आप आशा क्या रखते हैं?' सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी ने जवाब दिया, 'जल्द ही दिन निकल आयेगा और—'

'इस समय का खोया हुआ मौका आखिरी समय तक मिल सकता है।'

जेनरल, फॉग साहेब की आँखों के भाव को पढ़ रहे थे। यह मुर्दादिल अँगरेज किस चीज की आशा कर रहा था? क्या बलिदान के समय यह उस जवान स्त्री की तरफ दौड़ पड़ेगा और खुल्लम-खुल्ला उसे उसके कातिलों से छीन लेगा?

यह तो पागलपन होता और इस हद तक यह व्यक्ति पागल था, यह भी कैसे मान लिया जाये? फिर भी, सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी इस भयानक दृश्य के अन्त तक इन्तजार करने पर राजी हो गये। चालक ने अपने साथियों को उस जगह नहीं छोड़ा जहाँ वे छिपे थे। वह उन्हें फिर खुले स्थान पर ले गया। वहाँ से सोती हुई टोलियाँ देखी जा सकती थीं।

उसी समय एक पेड़ की निचली शाखाओं पर अड्डा जमाये हुए, पासेपार्टाऊट एक विचार पर गौर कर रहा था जो बिजली की तरह उसके दिमाग में आया था।

वह अपने से ही कहने लगा था, 'क्या पागलपन है! फिर भी, क्यों नहीं? यह एक मौका है, शायद एकमात्र और फिर ऐसे जानवरों से—'

और सभी घटनाओं पर उसने अपने विचारों को यह शक्ल नहीं दी थी। वह साँप की तरह और उतनी ही सरलता से नीचे जमीन पर सरक पड़ा।

घंटे बीत रहे थे और शीघ्र ही दिन निकलने का आभास-सा मिला। अँधेरा अब भी प्रगाढ़ था।

यही निश्चित समय था। सोई हुई टोली में ऐसा दृश्य था जैसा अन्त समय पुनः जीवित हो उठने का होता है। लोग जाग पड़े। बाजों की आवाजें होने लगीं। नये सिरे से चिल्लपों जारी हो गई। अभागिनी स्त्री के मरण का समय आ पहुँचा।

मन्दिर के द्वार अब खुल गये थे। अंदर से तीव्र प्रकाश निकला। मिस्टर फॉग और सर फ्रैन्सिस बलि को देख सके। वह जगमगा रहा था। उसे दो पुरोहित बाहर घसीट रहे थे। उन्हें प्रतीत हुआ जैसे कि नशे की खुमारी को आत्म-संयम से दूर करती हुई वह बद-नसीब औरत अपने बधिकों से छूटने का प्रयत्न कर रही हो। सर फ्रैन्सिस का हृदय जोरों से धड़कने लगा। उन्होंने एक सिहरन-सी महसूस की और फॉग साहेब का हाथ पकड़ लिया। उन्हें लगा जैसे उस समय में एक खुला हुआ चाकू हो।

इस समय भीड़ उत्साहित थी। जवान और फिर भाँग का नशा छा गया। वह फकीरों के बीच से गुजरी, जो मजहबी नारे लगाते हुए उसे लिये जा रहे थे।

फिलियास फॉग और उनके साथी उसके पीछे चले और भीड़ की पिछली कतारों में मिल गये।

दो मिनटों के बाद वे नदी के किनारे आ गये और चिता से पचास कदमों के फासले पर रुक गये। चिता पर राजा का शव रक्खा था। अर्द्ध अंधकार में उन्होंने अपने पति के शव के पास चुपचाप पड़ी हुई विधवा को देखा।

तब एक मशाल लाई गई और तेल से तर लकड़ी तुरन्त जल उठी।

इस क्षण, सर फ्रेन्सिस क्रोमार्टी और चालक ने फॉग साहेब को पीछे रोक लिया जो भावुकतापूर्ण जुनून में चिता की ओर दौड़ने जा रहे थे।

लेकिन फिलियास फॉग ने पहिले ही उन्हें पीछे ढकेल दिया था। उसी समय यकायक दृश्य बदला। भय की एक चीत्कारमय आवाज हुई। पूरी भीड़ भयभीत होकर जमीन पर गिर पड़ी।

तब बुड्ढा राजा क्या जीवित था ? यकायक एक प्रेत की तरह वह उठता हुआ दिखाई दिया। उसने जवान स्त्री को अपनी बाहुओं में उठा लिया और धुँए के बादलों के बीच चिता से उतर पड़ा। धुएँ के कारण वह सचमुच भूत जैसा लग रहा था।

यकायक भय उत्पन्न हो जाने से फकीर और पुरोहित जमीन पर लेट गये। उनके मुख पृथ्वी की ओर थे। अपनी आँखें उठाकर ऐसे करिश्मे को देखने की उन्हें हिम्मत न हुई।

निर्जीव से स्त्री के शरीर को बलिष्ठ बाजू लिये जा रहे थे जैसे कि वह बहुत हल्का हो। मिस्टर फॉग और क्रोमार्टी साहेब खड़े रहे। पारसी ने अपना सर झुका लिया था और पासेपार्टाउट, अवश्य ही, कम चकित नहीं था।

पुनर्जीवित व्यक्ति उस जगह आया जहाँ फॉग और क्रोमार्टी खड़े थे और धीरे से कहा :

"आइये, सब चल दें !"

यह खुद पासेपार्टाऊट ही था जो गहरे धुएँ में चिता पर सरक पड़ा था। अब भी फैले हुए अंधकार से फायदा उठाते हुए पासेपार्टाउट ने ही उस जवान स्त्री को मौत के पंजों से छुड़ाया था। बड़े साहस और सौभाग्य से अपना अभिनय करते हुए पासेपार्टाऊट ही था जो आम घबराहट और भय के बीच निकल गया था।

मशालों में चारों के गायब हो जाने के एक क्षण ही बाद हाथी उन्हें तेज चाल से ले उड़ा। चीखों, पुकारों यहाँ तक कि फॉग की टोपी को बेधती हुई एक गोली ने उन्हें बताया कि चालाकी खुल चुकी थी।

निस्सन्देह, प्रज्ज्वलित चिता पर बुड्ढे राजा का शरीर अब भी रक्खा था। भय दूर होने पर पुरोहितों को मालूम हुआ कि लड़की भगा दी गई थी।

वे तुरन्त जंगल में दौड़ पड़े। उनके पीछे पहरेदार भी थे। बंदूकें दागी गईं। भगानेवाले तेजी से भागे और थोड़ी ही देर में वे गोलियों या तीरों की मार के बाहर हो गये।

(१४)

लड़की भगाये जाने का साहसिक काम सफल हो गया था। एक घण्टे बाद पासेपार्टाऊट अपनी सफलता पर हँस रहा था। सर फ्रेन्सिस क्रोमार्टी ने उस बहादुर का हाथ थाम लिया। उसके मालिक ने उससे कहा, 'बहुत अच्छे' और यह शब्द फॉग ऐसे व्यक्ति के मुख में प्रशंसा के ही समान थे। इस पर पासेपार्टाऊट ने जवाब दिया कि उस मामले का सारा गौरव उसके मालिक के ही कारण था। जहाँ तक उसका सवाल था, उसे तो एक विचित्र विचार आया था। उसे यह सोचकर हँसी आई कि कुछ देर के लिये वह यानी पासेपार्टाऊट, जो पहिले एक नट, कोयला झोंकनेवालों का भूतपूर्व सारजेण्ट था, एक सुन्दर रमणी का विधुर हुआ था।

जहाँ तक जवान विधवा का प्रश्न है, उसे कुछ नहीं मालूम था कि क्या हुआ था। सफरी कपड़ों में लिपटी हुई, वह एक हौदे में बैठी थी।

उधर बड़े विश्वास के साथ पारसी द्वारा चालित हाथी तेजी से बढ़ चला। जंगल अब भी अंधकारमय था। पिल्लाजी के मन्दिर को

छोड़ने के एक घण्टे बाद, वह एक बड़े मैदान में दाखिल हुआ। सात बजे वे रुक गये। जवान औरत अब भी पूरी बेहोशी की दशा में थी। चालक ने उसे पानी और शराब के कुछ घूंट पिलाये मगर मूर्छितावस्था कुछ देर तक और रही। इस बात पर सर फ्रैन्सिस को कोई बेचैनी नहीं हुई क्योंकि भाँग के नशे से उत्पन्न परिणाम से वे परिचित थे।

लेकिन अगर जवान स्त्री के होश में आने का प्रश्न जनरल के सामने नहीं था तो आगे चलकर हो जाने का विश्वास भी कम नहीं था। वह फिलियास फॉग से यह कहते हुए जरा भी नहीं हिच-किचाये कि अगर श्रीमती आऊदा भारत में रहीं हो तो अनिवार्यतः वे अपने वधिकों के हाथों में फिर पड़ जायेंगी। ये धर्मान्ध लोग सारे प्रायद्वीप भर में फैले हुए थे और अँगरेज पुलिस के होते हुए भी वे अवश्य ही अपने शिकार को पुनः हस्तगत करने में सफल होंगे, चाहे वह मद्रास में हो या बम्बई में या कलकत्ते में। इस बात की पुष्टि के लिये कोमार्टी साहेब ने एक सच्ची घटना बताई जो अभी घटित हुई घटना जैसी ही थी। इनके विचार में जवान स्त्री भारत छोड़ने के बाद ही सुरक्षित हो सकेगी।

फिलियासफॉग ने इन बातों पर सोचने और इन्हें ध्यान में रखने की बात कही।

दस बजे चालक ने इलाहाबाद स्टेशन के आ जाने की सूचना दी। रेल की खण्डित लाइन वहाँ से फिर चालू होती थी जहाँ एक रात और एक दिन से भी कम समय में गाड़ियाँ इलाहाबाद से कलकत्ते तक का फासला तय करती थीं।

तब फिलियास फॉग को जहाज पकड़ने के लिये समय पर ही पहुँच जाना चाहिये क्योंकि जहाज दूसरे दिन २५ अक्टूबर को दोपहर तक हाँगकाँग के लिए रवाना हो जायेगा।

सुन्दरी को स्टेशन के एक मुसाफिरखाने में रक्खा गया। पासेपार्टाऊट से उसके लिए अनेक वस्त्र खरीदने को कहा गया। मालिक ने उसको, जितना वह चाहे, खर्च करने की स्वतन्त्रता दे रक्खी थी।

पासेपार्टाऊट फौरन बाहर जाकर शहर की सड़कों पर चलने लगा। इलाहाबाद अर्थात् 'देवताओं का नगर' भारतवर्ष में बहुत ही सम्मानित था क्योंकि यह दो अत्यन्त पवित्र नदियों, गंगा और यमुना के संगम पर बसा हुआ था। इन नदियों का पवित्र जल पूरे प्रायद्वीप के निवासियों के लिये एक आकर्षण है। यह भी कहा जाता है, जैसा कि रामायण की कथाओं में दिया है, कि गंगा स्वर्ग से निकली है और वहाँ से ब्रह्मा की कृपा से धरती पर उतरती है।

सामान खरीदते समय पासेपार्टाऊट ने शीघ्र ही शहर देख लिया था। किसी समय एक शानदार किले द्वारा यह रक्षित था जो आजकल सरकारी जेल हो गया है। यह नगर व्यापार और वस्तुओं के निर्माण कार्य से अब शून्य है। पहिले यह एक व्यापारिक और वस्तु-निर्माण का केन्द्र था। पासेपार्टाऊट ने गर्व से एक विभिन्न-वस्तु-भाण्डार तलाश किया। फार्मर एण्ड कम्पनी से कुछ ही कदम दूर ऐसी एक दूकान थी। यह दूकान रीजेण्ट स्ट्रीट पर थी। दूकानदार एक बुड्ढा शक्की यहूदी था। यहाँ उसे वे चीजें मिल गईं जिन्हें वह चाहता था और जिनके लिए उसे ७५ पाऊण्ड देने में हिचक नहीं हुई। तब बिल्कुल विजयी-सा वह स्टेशन लौट आया।

श्रीमती आऊदा अब होश में आने लगीं। जो प्रभाव पिल्ला जी के पुरोहितों ने उन पर डाला था वह अब धीरे-धीरे मिट चला था और उनकी सुन्दर आँखों में फिर वही भारतीय कोमलता आ गई।

जब कवि-नरेश ऊफ़ाक उद्दाउल अहेमहागारा की रानी के सौन्दर्य की प्रशंसा करता है तो इस प्रकार कहता है :—

'उसके दो भागों में विभाजित चमकदार बाल उसके कोमल और उज्ज्वल कपोलों को घेर हुए हैं। बाल अपनी लहर और ताजगी से चमक रहे हैं। प्रणय देवता कामदूत के धनुष जैसी उसकी आबनूस के रंग की भौंहें थीं। उसकी लम्बी रेशमी पलकों के नीचे, बड़ी और स्वच्छ पारदर्शक आँखों के काले तिल में पवित्रतम स्वर्गीय आभा इस प्रकार तैर रही थी मानो वे आँखें नहीं हिमालय की पवित्र झीलें थीं। उसके मुस्कराते अधरों के बीच सुन्दर, सुडौल, सफेद दाँत चमक रहे थे जैसे अनार के पुष्प के अधखुले वक्ष में ओस की बूँदें। उसके कान सुडौल और हाथ गुलाबी थे। कमल की कलियों के समान उसके छोटे पैर कोमल थे। यह लंका के सुन्दरतम मोतियों की आभा से चमक रहे थे। उसकी कमर नाजुक और लचकदार थी और उसे एक हाथ घेर सकता था। यह उसके सुगठित शरीर की रूप-रेखा को सौन्दर्य प्रदान कर रही थी। इससे उसके उरोजों का आकर्षण भी बढ़ गया था जिन पर जवानी अपने उत्कर्ष पर सम्पूर्ण कोष लुटाती है। उसके रेशमी झीने वस्त्रों के नीचे उसका शरीर ऐसा लगता था मानो अमर मूर्तिकार विश्वकर्म्मा ने स्वयम् अपने स्वर्गीय हाथों से चाँदी में ढाल दिया हो।'

बिना इस कवित्वमय सांगोपांग वर्णन के इतना कहना पर्याप्त होगा कि बुन्देला राजा की विधवा एक आकर्षक स्त्री थी इस मानी में जो तमाम योरूपीय इसका अर्थ लगाते हैं। वह बड़ी शुद्धतापूर्ण अँग्रेजी बोलती थी। चालक ने यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं की थी कि इस जवान पारसी रमणी का शिक्षा ने कायाकल्प कर दिया था।

इसी समय गाड़ी इलाहाबाद से चलने वाली थी। पारसी रास्ता देख रहा था। फॉग साहेब ने उसे तय किया मुआवजा दे

दिया और एक पाई नहीं बढ़ाई। इससे पासेपार्टाऊट को कुछ आश्चर्य हुआ जो अपने मालिक के प्रति उस पारसी की भक्ति को अच्छी तरह जानता था। पारसी ने अपनी मर्जी से पिल्लाजी के मन्दिरवाले मामले में अपनी जान जोखिम में डाली थी। बाद को अगर हिन्दुओं ने जाना तो वह उनके प्रतिशोध से न बच सकेगा।

अब किआऊनी का प्रश्न रह गया था। ऊँची कीमत पर खरीदे हुए उस हाथी का क्या हो?

फिलियास फॉग ने पहिले ही इस पर कोई इरादा कर लिया था।

'पारसी,' उन्होंने चालक से कहा, 'तुम वफादार और बहुत काम के रहे। मैंने तुम्हारी सेवाओं का दाम तुम्हें दे दिया है, तुम्हारी भक्ति का नहीं। क्या तुम इस हाथी को चाहते हो? यह तुम्हारा है।'

चालक की आँखें चमक उठीं।

'श्रीमान् मुझे एक सम्पदा प्रदान कर रहे हैं,' उसने चिल्ला कर कहा।

'स्वीकार कर लो, चालक,' मिस्टर फॉग ने उत्तर दिया। 'और फिर भी मैं तुम्हारा कर्जदार रहूँगा'।

'खूब'! पासेपार्टाऊट चीख पड़ा। 'ले लो यार! किआऊनी एक बहादुर और साहसी जानवर है।'

बहादुर के पास जाते हुए उसने उसे कुछ शकर दी और कहा, 'यहाँ, किआऊनी, यहाँ।'

जानवर ने सन्तोष की कुछ चिंघाड़ की। तब पासेपार्टाऊट को कमर से पकड़कर और अपनी सूँड़ में लपेटते हुए, उसने उसे अपने सर तक ऊँचा उठा लिया। पासेपार्टाऊट जरा भी भयभीत नहीं हुआ और जानवर को प्यार किया जिसने धीरे से उसे जमीन

पर रख दिया। ईमानदार किआऊनी के सँड़ हिलाने पर उस अच्छे आदमी ने जोर से अपना हाथ हिलाया।

कुछ क्षणों के बाद पासेपार्टाऊट, फिलियास फॉग और सर फ्रैन्सिस क्रोमार्टी एक सुखद मोटर में बैठ गये जिसमें सबसे अच्छी जगह पर श्रीमती आऊदा बैठीं। तेज रफ्तार से यह लोग बनारस की तरफ जा रहे थे।

ज्यादा-से-ज्यादा इलाहाबाद से यह जगह अस्सी मील थी। दो घण्टों में यह लोग वहाँ पहुँच गये।

इस सफ़र के दरम्यान युवती पूर्णतया होश में आ गई और भाँग की खुमारी गायब हो गई।

रेल के एक डब्बे में, विलायती वस्त्रों में और बिल्कुल ही अपरिचित यात्रियों के मध्य अपने को पाकर उसे कितना आश्चर्य हुआ होगा।

सर्वप्रथम उसके साथियों ने उसकी बड़ी परवाह की और शराब के कुछ घूँट पिलाकर उसे होश में किया। तब ब्रिगेडियर जनरल ने सारा किस्सा बयान किया। उन्होंने फिलियास फॉग की उदारता पर बल दिया जिन्होंने उसे बचाने के लिये अपनी जान की भी बाजी लगा दी थी। उस साहसिक कार्य को भी विशेष रूप दिया गया जो पासेपार्टाऊट की बहादुराना सूझ के कारण हो सका था।

बिना एक शब्द कहे हुए फॉग साहेब ने उन्हें यह सब कहने दिया।

पासेपार्टाऊट शर्मिन्दा था और उसने कहा कि यह कोई तारीफवाली बात नहीं थी।

श्रीमती आऊदा ने अपने बचानेवालों को बहुत-बहुत धन्य-वाद दिया और इस कार्य को शब्दों के अतिरिक्त उसके आँसुओं ने अधिक किया। उसके सुन्दर नेत्रों ने ओंठों के बजाय धन्यवाद

व्यक्त किया। तब उसे सती का वह दृश्य याद आया। फिर वही भारतीय देश देखकर, जहाँ उसके लिए अनेक संकट थे, उसका हृदय भय से काँप उठा।

फिलियास फॉग समझते थे जो कुछ श्रीमती आऊदा के मन में था। उन्होंने उसे फिर आश्वासन देते हुए बड़े इत्मीनान से हाँग-काँग ले चलने का प्रस्ताव किया जहाँ इस झगड़े के समाप्त होने तक वे रुक सकती थीं।

श्रीमती आऊदा ने बहुत कृतज्ञतापूर्वक प्रस्ताव मान लिया। हाँगकाँग में उनके एक सम्बन्धी रहते थे जो उस जैसे ही एक पारसी थे और उस नगर के एक प्रमुख व्यापारी थे। हाँगकाँग अँगरेजी नगर है यद्यपि चीन के समुद्री तट पर बसा हुआ है।

दोपहर को साढ़े बारह बजे गाड़ी बनारस स्टेशन पर रुकी। ब्राह्मणों की कथाओं के अनुसार यह स्थान पुरानी काशी है जो पहिले मोहम्मद की क़ब्र की तरह स्वर्ग और उसके विपरीत बिन्दु के बीच लटकी थी। आज भौतिक युग में भारत का एथिन्स पृथ्वी पर है। एक क्षण में पासेपार्टाऊट ने उसके ईंटवाले मकान, मिट्टी के झोपड़े देख लिये। बस्ती बड़ी उजाड़-सी प्रतीत हुई।

यहीं क्रोमार्टी साहब रुकने जा रहे थे। वे सैनिक दल, जिनमें इन्हें जाना था, शहर के उत्तर कुछ मीलों पर थे। ब्रिगेडियर जनरल ने तब फॉग साहब से बिदा ली और उनकी सब प्रकार की सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रकट कीं। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि वे सफर इस प्रकार करें कि वह मौलिक कम और लाभप्रद अधिक हो। मिस्टर फॉग ने नर्मी से अपने साथी की उँगलियाँ दबाईं। श्रीमती आऊदा ने चलते समय जो शुभकामनाएँ कीं वे अधिक गहरी थीं। क्रोमार्टी साहब का आभार वे कभी नहीं भूलेंगी। जहाँ तक पासेपार्टाऊट का सवाल है, वह बहुत सम्मानित हुआ जब जनरल ने उससे बड़े तपाक से हाथ मिलाया। अत्यन्त प्रभावित

हुए पासेपार्टाऊट ने उनसे पूछा कि वह उनकी कब और कहाँ सेवा कर सकता था। तब वे विदा हुए।

बनारस छोड़कर अब रेल गंगा की घाटी के आंशिक भाग में थी। चूँकि आसमान बहुत साफ था, खिड़कियों से बिहार का परिवर्तित होता हुआ प्रदेश दिखाई दिया। पहाड़ों पर हरियाली थी। जौ, गेहूँ इत्यादि के खेत थे। घड़ियालों से भरे हुए और हरे जंगल थे। सुन्दर गाँव भी दिखाई दिये। पवित्र नदी के जल में कुछ हाथी और बड़े कूबड़वाले बैल नहाने के लिए आये। मौसम खत्म हो रहा था मगर फिर भी उतनी सर्दी में हिन्दू स्त्रियाँ और पुरुष पवित्रता से प्रातःकालीन दैनिक कार्य कर रहे थे। बौद्धधर्म के कट्टर शत्रु यह वफादार लोग सनातन धर्म के जोशीले अनुयायी हैं। तीन व्यक्ति इस धर्म के अवतार हैं, सूर्य देवता विष्णु; प्राकृतिक शक्तियों के अवतार शिव; और पुरोहितों तथा विधायकों के एकमात्र स्वामी ब्रह्मा। अब इस अँगरेज भारत को ब्रह्मा, विष्णु और शिव किस रूप में देखेंगे, जहाँ आज धुआँ उड़ाते हुए जलपोत गंगा के पवित्र जल को खलबला रहे हैं, ऊपर उड़ते हुए पक्षियों को भयभीत कर रहे हैं, जहाँ कछुये झुण्ड के झुण्ड तटों के पास दिखाई देते हैं, और जहाँ भक्तगण किनारों पर पड़े रहते हैं।

यह सब दृश्य बिजली-सा कौंध गया। कभी-कभी भाप के बादलों के कारण इनके सामने का दृश्य छिप जाता था। यात्री मुश्किल से चुनार का किला देख सके जो बनारस के दक्षिण पूर्व में था और बिहार के राजाओं का गढ़ था। गाजीपुर और वहाँ के गुलाबजल के कारखाने भी मुश्किल से दिखाई दिये। गंगा के बायें किनारे पर लार्ड कॉर्नवालिस की समाधि थी। बक्सर का किलेबन्द नगर, बड़ा व्यापारी और औद्योगिक नगर पटना जहाँ भारत का प्रमुख अफीम का बाजार है, अधिकतर अँगरेजी बस्ती

का नगर मुँगेर, उतना ही अँगरेजी जितना मैनचेस्टर या बरमिंघम आदि भी रास्ते में पड़े लेकिन जिन्हें यह लोग देख न सके।

तब रात हो आई। शेरों, भालुओं और भेड़ियों की आवाजों के बीच गाड़ी तेज रफ्तार से भाग रही थी। रेल के इंजन को देखकर शेर, भालू और भेड़िये भाग जाते थे। इन लोगों ने बंगाल या गोलकुण्डा या खण्डहर के रूप में गौड़ या मुर्शिदाबाद या चन्दर-नगर के आश्चर्य को नहीं देखा। चन्दरनगर भारत का एक शहर है जिस पर फ्रांसवालों का अधिकार है और जहाँ फ्रांसीसी झंडा लहराता है। अपनी मातृभूमि की इस बस्ती को देखकर पासे-पार्टाऊट को गर्व होता।

अन्त में सात बजे दिन को यह लोग कलकत्ते पहुँच गये। हाँगकाँगवाले जहाज ने दोपहर तक लंगर नहीं उठाया था। फिलि-यास फॉग तब पाँच घंटे पहिले पहुँच गये थे।

हिसाब से लण्डन छोड़ने के २३ दिनों बाद इन्हें भारत की राजधानी में २५ अक्टूबर को पहुँच जाना चाहिए था। यह इसी निश्चित समय पर वहाँ पहुँच गये थे। न तो यह जल्दी पहुँचे थे और न देर में। दुर्भाग्य से लण्डन से बम्बई तक जो दो दिन इन्हें बचे थे वे, हम जानते हैं कैसे, भारतीय प्रायद्वीप को पार करते समय खर्च हो गये थे। यह मान लिया जाये कि फिलियास फॉग को उन दो दिनों का कोई दुःख नहीं था।

(१५)

गाड़ी स्टेशन पर थी। सबसे पहिले पासेपार्टाऊट डब्बे से उतरा और उसके पीछे मिस्टर फॉग जिन्होंने अपने कमसिन साथी को उतरने में मदद की। फॉग साहब ने हाँगकाँग जानेवाले स्टीमर पर ही सीधे जाना ठीक समझा ताकि श्रीमती आऊदा को ठीक से

वहाँ बिठा दें। इन्हें वे छोड़ना नहीं चाहते थे जब तक वे इस देश में थीं जो इनके लिए इतना खतरनाक था।

जब मिस्टर फॉग स्टेशन के बाहर जा रहे थे, एक पुलिसमैन इनके पास आया और बोला,—

'मिस्टर फिलियास फॉग ?'

'मैं ही हूँ।'

'यह आदमी क्या आपका नौकर है ?' पुलिसमैन ने पासेपार्टाऊट की ओर संकेत करते हुए कहा।

'हाँ।'

'कृपा करके आप दोनों जरा मेरे साथ आइये।'

मिस्टर फॉग ने कोई ऐसी हरकत नहीं की जिससे आश्चर्य प्रकट होता। यह एजेण्ट कानून का प्रतिनिधि था। हर अँगरेज के लिए कानून पवित्र होता है। अपनी फ्रांसीसी आदतों के अनुसार पासेपार्टाऊट बहस करना चाहता था, लेकिन पुलिसमैन ने उसे अपने डण्डे से छू दिया और फिलियास फॉग ने हुक्म मान लेने का संकेत किया।

'क्या यह युवती हमारे साथ चल सकती है ?' मिस्टर फॉग ने पूछा।

'चल सकती है', पुलिसमैन ने जवाब दिया।

पुलिस मैन मिस्टर फॉग, श्रीमती आऊदा और पासेपार्टाऊट को दो घोड़ों से खींची जानेवाली एक चार पहियोंवाली पालकी गाड़ी तक ले गया। इसमें चार सीटें थीं। वे चल दिये। बीस मिनटों के सफर में कोई नहीं बोला।

गाड़ी ने पहले 'काला नगर' पार किया जिसकी सड़कें तंग थीं। यहाँ झोपड़ियों में गन्दे और चिथड़े पहिने हुए विभिन्न लोगों की आबादी थी। तब वे विलायती बस्ती से गुजरे, जो ईंटों के मकानों से सजी हुई थी। नारियल के पेड़ों की छाया थी जहाँ

प्रातःकाल होते हुए भी सुन्दर वस्त्र पहिने हुए लोग गाड़ियों में घूम रहे थे।

एक सादी इमारत के सामने पालकी गाड़ी रुकी। यह इमारत निजी कामों के लिए नहीं थी। पुलिसमैन ने अपने कैदियों को बाहर उतारा क्योंकि अब उन्हें कैदियों के ही नाम से पुकारा जा सकता है। वह उनको एक जालीदार खिड़कियोंवाले कमरे में ले गया और उनसे कहा,—

'साढ़े आठ बजे आपको अबादिया न्यायाधीश के सामने उपस्थित होना है।'

तब उसने दरवाजा बन्द किया और चला गया।

'देखिये, हम लोग कैदी हैं', पासेपार्टाऊट धम से एक कुर्सी पर गिरता हुआ बोला।

मिस्टर फॉग को सम्बोधित करते हुए श्रीमती आऊदा बोलीं, जिन्होंने अपनी भावनाओं को छिपाने की बेकार कोशिश की।

'श्रीमान्, आप मुझे छोड़ दें। मेरी ही खातिर आपका पीछा हो रहा है। इसलिए क्योंकि आपने मुझे बचाया है।'

फिलियास फॉग ने यह कहकर सन्तोष कर लिया कि ऐसा करना उनके लिए सम्भव नहीं था। सतीवाले मामले की वजह से पीछा किया जाना! असम्भव! अभियोगी खुद खतावार हैं। वे सामने कैसे आयेंगे? कोई गलती जरूर है। फिर भी फिलियास फॉग ने कहा कि वे किसी भी हालत में युवती को नहीं छोड़ेंगे। वे उसे हाँगकाँग ले जायेंगे।

'लेकिन स्टीमर दोपहर को जाता है।' पासेपार्टाऊट ने कहा।

'दोपहर से पहिले हम जहाज पर होंगे।' यह उस अभेद्य सज्जन पुरुष का सरल उत्तर था।

पासेपार्टाऊट ने मन में कहा, 'यह निश्चित है। दोपहर के पहिले हम जहाज पर होंगे।' लेकिन उसे पूरा यकीन नहीं था।

साढ़े आठ बजे कमरे का दरवाजा खुला। पुलिस का सिपाही फिर आया और कैदियों को दूसरे कमरे में ले गया। यह कचहरी का कमरा था और पहिले से ही योरोपियनों तथा वहाँ रहनेवालों की भीड़ से पीछे की ओर भरा हुआ था।

मैजिस्ट्रेट और उसके पेशकार की सीटों के सामने एक बेञ्च पर यह तीनों व्यक्ति बैठ गये।

मैजिस्ट्रेट अर्थात् न्यायाधीश अबादिया तुरन्त ही अन्दर आ गये और उनके पीछे उनका पेशकार भी आया। वह एक मोटा और भारी व्यक्ति था। उसने खूँटी पर टँगे हुए नकली बाल उठाये और सर पर रख लिया।

'पहिला मुकद्मा' उन्होंने कहा।

लेकिन अपना हाथ सर से लगाते हुए उन्होंने कहा,—

'लाहौल विलाक़ूवत! यह मेरे बाल नहीं हैं।

'आप ठीक कहते हैं, मिस्टर अबादिया, यह मेरे हैं।' पेशकार ने उत्तर दिया।

'मेरे प्यारे ऑयस्टर पफ़, आप कैसे समझते हैं कि एक मुंशी के नकली बाल पहिन कर न्यायाधीश बुद्धिमानी की सजा देगा?'

'नकली बालों की अदला बदली हुई। इन शुरूआत की बातों के समय पासेपार्टाऊट व्यग्रता से उबल रहा था क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उस कमरे की घड़ी की सुइयाँ तेजी से घूम रही हों।

'पहिला मुकद्मा,' जज अबादिया ने फिर कहा।

'फिलियास फॉग,' मुंशी आयस्टर पफ़ ने कहा।

'मैं हाजिर हूँ,' श्री फॉग ने जवाब दिया।

'पासेपार्टाऊट'।

'उपस्थित!' पासेपार्टाऊट ने उत्तर दि य।

'ठीक है !' जज अबादिया बोले । 'दो दिनों तक, कैदियो, बम्बई से आनेवाली सब ही गाड़ियों पर तुम्हारी तलाश हुई है ।'

'लेकिन हमारा अपराध क्या है ?' बेसबरी से पासेपार्टाऊट चिल्लाया ।

'तुमको अभी मालूम हो जायेगा ।' जज ने जवाब दिया ।

'श्रीमान्, मैं एक अँगरेज नागरिक हूँ, और मुझे अधिकार है—।' फॉग साहेब ने कहा ।

'क्या आपके साथ बेइज्जती का बर्ताव हुआ है ?' जज ने पूछा ।

'कतई नहीं ।'

'बहुत अच्छा, अभियोगियों को आने दो ।'

जज की आज्ञा से दरवाजा खोला गया और एक अफसर ने तीन हिन्दू पुरोहितों को अन्दर दाखिल किया ।

'ठीक,ठीक !' पासेपार्टाऊट बुदबुदाया । 'यही वे बदमाश हैं जो हमारी इस युवती को जलाने जा रहे थे !'

पुरोहित जज के सामने खड़ा हुआ और पेशकार ने पवित्रता खण्डित करने की रिपोर्ट जोर से पढ़ी । रिपोर्ट मिस्टर फॉग और उनके नौकर की थी । उन पर एक पवित्र धार्मिक स्थान के नियमों को भंग करने का आरोप लगाया गया था ।

'आपने आरोप सुन लिया ?' जज ने फिलियास फॉग से पूछा ।

'हाँ, श्रीमान्', फॉग साहेब ने उत्तर दिया । उन्होंने अपनी घड़ी देखते हुए कहा, 'और मैं जुर्म का इक़रार करता हूँ ।'

'अच्छा ! तुम इक़रार करते हो ?'

'मैं इक़रार करता हूँ और आशा करता हूँ कि अब यह पुरोहित भी स्वीकार करेंगे जो कुछ वे पिल्लाजी के मन्दिर में करने जा रहे थे ।'

पुरोहितों ने एक दूसरे को देखा। अभियुक्त की बात उनकी समझ में नहीं आई।

'बिल्कुल सच !' पासेपार्टाऊट ने चिल्लाकर कहा, 'पिल्लाजी के मन्दिर में वे अपने शिकार को जलाने जा रहे थे !'

पुरोहित स्तम्भित रह गये और जज साहेब को महान् आश्चर्य हुआ।

'कौन-सा शिकार ?' उन्होंने जवाब दिया। 'किसे जलाना चाहते थे ? दिन दहाड़े बम्बई शहर में ?'

'क्या कहा, बम्बई ?' पासेपार्टाऊट चिल्ला उठा।

'निस्सन्देह। हम पिल्लाजी के नहीं बल्कि मालाबार पर वाले मन्दिर की बात कह रहे हैं।'

'सबूत के लिये यह रहे पवित्रता-भंग करनेवाले के जूते।' उनकी मेज पर एक जोड़ा रखते हुए पेशकार ने कहा।

'मेरे जूते !' पासेपार्टाऊट ने चीखकर कहा।

उस समय मालिक और नौकर के मन की दशा सोची जा सकती है। बम्बई के पैगोडावाली घटना वे भूल गये थे। इसी की वजह से वे कलकत्ते में मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किये गये थे।

वास्तव में इस अप्रिय घटना से जो लाभ फिक्स को हो सकता था उससे वह अवगत था। अपना प्रस्थान १२ घण्टे देर करके उसने मालाबार पहाड़ी के पुरोहितों से सलाह की थी और उन्हें लम्बे मुआवजों का वायदा किया था। वह यह जानता था कि इस प्रकार के अपराध के लिए अँगरेजी सरकार बहुत सख्त थी। तब दूसरी गाड़ी से उसने पुरोहितों को आगे अपराधियों के पीछे भेज दिया था। युवती को छुड़ाने में जो समय लगा उसके परिणामस्वरूप फिक्स और हिन्दू पुरोहित फॉग साहेब और उनके नौकर से पहिले कलकत्ते पहुँच गये। अधिकारियों को तार द्वारा सूचित कर दिया

गया था कि रेल से उतरते ही वे गिरफ्तार कर लिये जाएँ। फिक्स महोदय की निराशा सोची जा सकती है जब उन्हें ज्ञात हुआ कि फिलियास फॉग अभी भारत की राजधानी में नहीं पहुँचे थे। वह यह सोचने पर मजबूर हो गये कि उनका चोर पेनिनसुलर रेलवे के एक स्टेशन पर रुककर उत्तरी प्रदेशों को चला गया होगा। चौबिस घण्टों तक बड़ी बेचैनी में रहते हुए, फिक्स ने उनकी स्टेशन पर निगरानी की। उसे कितना आनन्द हुआ होगा जब, आज प्रातः-काल, उसने उन्हें एक औरत के साथ गाड़ी से उतरते देखा होगा। औरत कौन थी, वह नहीं जान सका। उसने तुरन्त ही एक पुलिसमैन उनके पीछे लगा दिया। इस तरह मिस्टर फॉग, पासेपार्टाऊट और बुन्देले राजा की विधवा अबादिया जज के सामने पेश हुए।

अगर पासेपार्टाऊट अपने मामले में इतना न उलझा होता, तो कमरे के एक कोने में उसे वह जासूस दिखाई पड़ जाता जो गौर से बहस सुन रहा था क्योंकि बम्बई और स्वेज की तरह कलकत्ते में भी गिरफ्तारी का वारण्ट अभी नहीं आया था।

जज अबादिया ने पासेपार्टाऊट के मुँह से इकरार के वे शब्द नोट कर लिये थे जिन्हें वापिस पाने के लिये वह अपना सब कुछ दे डालता।

'वास्तविकता मान ली गई है।' जज ने कहा।

'अवश्य', मिस्टर फॉग ने रुखाई से कहा। जब कि अँगरेजी कानून का यह ध्येय है कि वह समानता से और सख्ती से भारत के लोगों के सभी धर्मों की रक्षा करेगा मैं कथित पासेपार्टाऊट को १५ दिनों का कारावास की सजा देता हूँ और ३०० पाऊण्ड का जुर्माना भी करता हूँ। इस व्यक्ति ने २० अक्टूबर को मालाबार की पहाड़ी पर के मन्दिर के फर्श को अपने अपवित्र पैरों से छुआ था और इसने इस जुर्म को मान भी लिया है।'

'तीन सौ पाऊण्ड!' पासेपार्टाऊट चिल्ला पड़ा। उसे केवल जुर्माने की ही चिन्ता थी।

'खामोश!' अफसर ने तेज आवाज में कहा।

'और चूँकि यह साबित नहीं हुआ है कि मालिक और नौकर में कोई इशारे बाजी नहीं हुई थी, मैं मालिक उसके नौकर की तमाम हरकतों के लिये जिम्मेदार ठहरता हूँ। मैं कथित फिलियास फाग को रोकते हुए आठ दिनों के कैद की सजा देता हूँ और १५० पाउण्ड जुर्माना भी करता हूँ। मुंशीजी, दूसरा मुकदमा पेश करो!'

कोने में बैठे हुए फिक्स ने अकथनीय संतोष की साँस ली। फिलियास फाग का कलकत्ते में आठ दिनों तक रुकना! वारण्ट आने के लिये इतना समय जरूरत से ज्यादा था।

पासेपार्टाऊट बरबाद हो गया। इस सजा से उसके मालिक पर आफत आ जायेगी। बीस हजार पाऊण्डों की बाजी चली जायेगी और यह सब इसलिये कि बेवकूफी की सीमा पार करते हुए वह उस कमबख्त मंदिर में चला गया था!

फिलियास फॉग शान्त थे मानो इस सजा का उन पर कोई प्रभाव न पड़ा हो। उन्होंने भौंहें तक नहीं सिकोड़ीं। जब पेशकार दूसरा मुकदमा पुकार रहा था, वे उठे और कहा,—

'मैं जमानत देता हूँ।'

'इसका तुम्हें अधिकार है,' जज ने कहा।

इस पर फिक्स ने एक सरसराहट सी महसूस की लेकिन वह फिर ठीक हुआ जब उसने जज को यह विचार करते देखा कि फिलियास फाग और उसका नौकर अजनबी थे अतः हर एक को एक-एक हजार पाऊण्ड की मोटी रकम जमानत के रूप में देनी पड़ेगी।

इस प्रकार फॉग साहेब को दो हजार पाउण्डों की चपत पड़ जायेगी जब तक वे अपनी सजा से बरी नहीं होगें।

'मैं जमानत दूँगा,' उन्होंने कहा।

बस उन्होंने थैले से बैंक नोट निकालकर मेज पर रख दिये।

'बरी होने पर यह रकम आपको वापिस कर दी जायेगी,' जज ने कहा,' तब तक आप जमानत पर रिहा हैं'।

'आओ,' फिलियास फॉग ने अपने नौकर से कहा।

'लेकिन कम-से-कम उन्हें मेरे जूते वापिस कर देने चाहिए,' पासेपार्टाऊट ने गुस्से से चिल्लाते हुए कहा।

उन्होंने जूते वापिस कर दिये।

'यह मुझे प्रिय है!' वह बुदबुदाया; 'प्रति जूता एक हजार पाऊण्ड से भी अधिक प्रिय!'

बहुत दयनीय सा पासेपार्टाऊट मिस्टर फाग के पीछे चल दिया जिन्होंने युवती को अपनी बाँह का सहारा दिया। फिक्स को अब भी आशा थी कि उसका अभियुक्त दो हजार पाऊण्डों की यह रकम नहीं छोड़ेगा और आठ दिन जेल में काट देगा। तब वह फाग के पीछे चल दिया।

मिस्टर फाग ने एक गाड़ी की जिसमें वे, उनका नौकर और श्रीमती आऊदा चढ़ गईं। फिक्स गाड़ी के पीछे दौड़ा जो एक प्लैटफार्म पर रुक गई।

एक मील दूर बन्दरगाह में रंगून जहाज लंगर डाले हुए था। उसका झंड़ा ऊपर दिखाई पड़ रहा था। ग्यारह बज गये। मिस्टर फाग एक घंटा आगे थे। फिक्स ने उन्हें गाड़ी से उतरते देखा और नौकर तथा श्रीमती आऊदा के साथ एक नाव में बैठते हुए भी। जासूस ने अपना पैर पटक दिया।

'बदमाश कहीं का!' वह चिल्लाया; 'यह तो जा रहा है! दो हजार पाऊण्डों पर लात मार दी! डाकू की तरह लुच्चा! हूँ! मैं कयामत तक उसका पीछा करूँगा, अगर जरूरत हुई; लेकिन जिस

प्रकार यह जा रहा है उस प्रकार तो चुराई हुई सारी रकम उड़ जायेगी !'

ऐसा कहने का जासूस के पास यथेष्ट कारण था। सचमुच, जब से वह लण्डन से चला था, क्या सफरी खर्च, क्या इनाम, क्या हाथी की खरीद, क्या जमानत और क्या जुर्माना, सब मिलाकर ५००० पाउण्डों से अधिक ही खर्च हो गये थे। बची हुई रकम का जितना प्रतिशत जासूसों को देने का वायदा किया गया था वह लगातार कम होता जा रहा था।

(१६)

चीनी और जापानी सागरों में चलनेवाले पेनिनसुलर एण्ड ओरियण्टल कम्पनी के जहाजों में से एक जहाज 'रंगून' भी था। यह लोहे के स्क्रूवाला जहाज ७७० टन का था और साधारणतया ४०० घोड़ों की ताकत का। उतना ही वह तेज चलनेवाला भी था लेकिन 'मंगोलिया' की तरह उतना सुखद नहीं था। जैसा फॉग साहब चाहते थे वैसा श्रीमती आऊदा को कुछ इतमीनान नहीं था। लेकिन, फिर भी ३५०० मील का सवाल था।

पहिले कुछ दिन सफर के दौरान में श्रीमती आऊदा फॉग साहब से और ज्यादा निकट हो गई। हर मौके पर वे उनका बहुत शुक्रिया अदा करतीं। गम्भीर-प्रकृति सज्जन उनकी बातें सुन लेते, कम-से-कम दिखावे के तौर पर, बड़ा उदासीनता से। एक भी हरकत या हाव-भाव से असलियत का पता नहीं चलता था। उन्होंने देखा कि उनमें किसी चीज की कमी नहीं था। कभी-कभी फॉग साहब बराबर उनके पास आते, अगर बात करने के लिए नहीं तो कम-से-कम उनकी बात सुनने के लिए ही। उन्होंने उनके साथ बड़ा विनम्रता का व्यवहार किया। उन्होंने आश्चर्यजनक रीति से अपना आन्त-

िक भावनाओं को छिपाये रक्खा। श्रीमती आऊदा नहीं जानती थीं कि उनके विषय में क्या खयाल किया जाये लेकिन पासेपार्टाऊट ने थोड़ा बहुत अपने मालिक के सनकी स्वभाव का हाल बतला दिया था। उसने युवती को बता दिया था कि किस प्रकार की शर्त उनसे संसार को परिक्रमा करवा रही थी। श्रीमती आऊदा मुस्करा पड़ी थीं। लेकिन, फिर भी, उन्हीं की बदौलत उनको अपना जीवन प्राप्त हुआ था।

श्रीमती आऊदा ने चालक द्वारा वर्णित अपने प्रभावपूर्ण इतिहास की ताईद की। दरअसल वे उस जाति की थीं जो देश-वासियों में एक अव्वल स्थान रखती है। भारत में बहुत से पारसी व्यापारियों ने रूई के रोजगार में अपनी हैसियत बना ली। उनमें से एक, सर जीजीभाई को अँग्रेजी सरकार ने 'सर' का खिताब दिया था। श्रीमतो आऊदा इसी व्यक्ति की रिश्तेदार थीं जो बम्बई में रहते थे। दरअसल, इन्हीं के एक चचेरे भाई, माननीय जीजी थे, जिनके पास हाँग-काँग में वे जाना चाहती थीं। क्या इन्हें उनके यहाँ आश्रय और सहायता मिलेगी? इसके विषय में यह निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकती थीं। इस सम्बन्ध में फॉग साहब ने कहा कि उन्हें परेशान होने की कोई बात नहीं थी। हर चीज का बड़े हिसाबी ढंग से इन्तजाम कर दिया जायेगा।

क्या युवती ने उस भयंकर क्रियाविश्लेषण को समझा? हम नहीं कह सकते। फिर भी, उनकी बड़ी आँखें फॉग साहब पर ही टिकी थीं, बड़ी आँखें जो हिमालय की पवित्र झीलों के समान थीं। लेकिन सदैव की भाँति गम्भीर, किसी के प्रभाव में न आनेवाले मिस्टर फॉग उस प्रकार के व्यक्ति नहीं दिखाई देते थे जो उन झीलों में डूब जाये।

'रंगून' जहाज की यात्रा का प्रथम भाग उत्तम परिस्थितियों में

सम्पादित हुआ। मौसम औसत दर्जे का था। जहाज की चाल के अनुकूल ही बंगाल की विशाल खाड़ी थी। शीघ्र ही 'रंगून' जहाज ने अण्डमन का टापू देखा। यह टापू उस द्वीपसमूह का प्रमुख टापू है। जहाजी २४०० फुट ऊँचे 'सैडिल पीक माउण्टेन' से ही बड़ी दूर से इस टापू को पहिचान लेते हैं।

वे तट के खूब पास चल रहे थे। टापू के जंगली पापुअन लोग नहीं दिखाई पड़े। यह लोग बहुत नीच होते हैं जिन्हें नरभक्षी गलत कहा गया है।

इस टापू का दृश्य बहुत उत्तम था। अग्रभूमि में ताड़ के पेड़ों, बाँसों, सागौन के पेड़ों, विशाल छुई मुई के वृक्षों आदि के बड़े जंगल थे। पार्श्वभूमि में ऊँचे-नीचे सुन्दर पर्वत थे। किनारे पर हजारों की संख्या में वे अबाबील पक्षी थे जिनके खाये जाने योग्य घोंसलों की बड़ी माँग होती है। अण्डमन टापुओं का यह सब तरह का दृश्य शीघ्र ही गुजर गया। 'रंगून' जहाज तेजी से मलका के जल-डमरू-मध्य की ओर चला। यहीं से चीनी समुद्रों को जाना था।

इस सफर के समय जासूस फिक्स क्या कर रहे थे? यह बद-किस्मती से ही संसार के चारों ओर घसीटे जा रहे थे। कलकत्ता छोड़ते समय, वारण्ट आने पर उसे हाँग-काँग भेज देने के आदेश देने के उपरान्त, वे 'रंगून' पर पहुँचने में सफल हुए। उस समय पासेपार्टाऊट ने उन्हें नहीं देख पाया। उन्होंने आशा की थी कि जहाज आने तक वे अपने को छिपा रक्खेंगे। दर असल, बिना पासेपार्टाऊट के मन में शक उत्पन्न किये ही, उनको जहाज पर अपनी मौजूदगी का कारण बताना कठिन हो जाता क्योंकि पासे-पार्टाऊट समझता था कि वे बम्बई में ही थे। लेकिन उस अच्छे व्यक्ति से फिक्स साहब अपनी जान-पहिचान फिर चालू करना

चाहते थे जिसके लिए उन्हें परिस्थितियों के तर्क का सहारा लेना पड़ता।

जासूस की सारी आशाएँ, सारी इच्छाएँ अब संसार के एक ही बिन्दु, हाँग-काँग पर केन्द्रित थीं क्योंकि जहाज सिंगापुर में इतनी कम देर रुकता था कि उस को शहर में काम करना कठिन था। तब तो हाँग-काँग में ही चोर की गिरफ्तारी होनी चाहिए थी, नहीं तो वह ऐसा भागेगा कि फिर बनाये नहीं बनेगा।

सचमुच, हाँग-काँग अब भी अँगरेजी जमीन थी। इस रास्ते पर यही आखिरी अँगरेजी अमलदारी थी। चीन और जापान से परे अमरीका में फॉग साहेब को एक अच्छा आश्रय मिलेगा। हाँग-काँग में, अगर उसे वारण्ट मिला, तो फिक्स मिस्टर फॉग को गिरफ्तार करके स्थानीय पुलिस को सौंप देगा। वहाँ परेशानी ही क्या थी। लेकिन हाँग-काँग के बाद एक सादा गिरफ्तारी का वारण्ट काम नहीं देगा। एक खास हुक्म की जरूरत पड़ेगी। फिर देर-सबेर और तमाम अड़चनें थीं जिनका फायदा चोर उठा सकता था अगर उसे हाँग-काँग में सफलता न मिली तो फिर कोशिश करना अगर असम्भव नहीं तो मुश्किल जरूर था।

'तब,' अपने कमरे में गुजारे हुए अनेक घंटों के बीच उसने दोहराया, 'तब, या तो वारण्ट हांग-कॉंग में होगा और मैं अपने असामी को कैद करूँगा या यह वहाँ नहीं होगा। अब की, तमाम खतरों का सामना करते हुए, मैं उसकी रवानगी में देर करवा दूँगा। मैं बम्बई में असफल हुआ हूँ, मैं कलकत्ते में असफल हुआ हूँ! अगर हाँग-काँग में भी चूक गया, तो मेरी बदनामी होगी। चाहे जो कुछ हो, मुझे सफल होना ही चाहिए। लेकिन, अगर आवश्यकता हुई, तो इस कम्बख्त फॉग की रवानगी में देर करवाने के लिए मुझे क्या करना होगा?'

आखिरी चारे के तौर पर फिक्स ने पासेपार्टाऊट से सब कुछ कह देने का इरादा किया, उसे यह बताने का कि जिस मालिक की वह नौकरी कर रहा था वह कैसे थे और यह भी कि वह अपने मालिक की हरकतों में शामिल नहीं था। इस रहस्योद्घाटन से प्रसन्न होकर, समझौता करने से डरता हुआ, यक़ीनन उसकी तरफ हो जायेगा। परन्तु यह था बड़ा खतरनाक रास्ता जो कि बिल्कुल आखिरी दर्जे पर ग्रहण किया जा सकता था। मालिक से पासेपार्टाऊट का एक शब्द ही मामले पर समझौता करने के लिए काफी होगा।

तब जासूस बहुत ज्यादा बेचैन हो गया जब 'रंगून' जहाज पर श्रीमती आऊदा के साथ फिलियास फॉग की उपस्थिति ने उसे विचार के नये कोण दिये।

यह औरत कौन थी? परिस्थितियों के किस संयोग ने इसे इनका साथी बनाया है? यह संयोग अवश्य ही बम्बई और कलकत्ते के बीच हुआ होगा। लेकिन यह प्रायद्वीप के किस स्थल पर हुआ? क्या इत्तफाक से ही इन दोनों का मिलन हुआ है? इसके विपरीत, क्या फॉग की प्रायद्वीप के पार यात्रा ही तो इस सुन्दर प्राणी से मिलने का कारण नहीं है? वह सुन्दर जरूर थी। कलकत्ता की जजी अदालत के बड़े कमरे में फिक्स ने उसका अच्छा अवलोकन किया था।

जासूस किस हद तक जा सकता था, यह हम सोच सकते हैं। उसने सोचा कि क्या इस मामले में लड़की भगाये जाने का जुर्म आयद नहीं हो सकता। हाँ, यह अवश्य होगा। एक बार यह विचार उसके दिमाग में आया कि उसने तुरन्त इससे प्राप्त लाभ को जान लिया। यह स्त्री चाहे विवाहिता हो या अविवाहिता, भगाई जरूर गई थी और हाँग-काँग में इस औरत भगानेवाले को

ऐसी परेशानी में डाला जा सकता है कि रुपया देने पर भी छुटकारा न पा सके।

हाँग-काँग में 'रंगून' की पहुँच का इन्तजार करने की आवश्यकता नहीं थी। इस फॉग को एक जहाज से दूसरे जहाज में कूदने की घृणय आदत थी। मामला चलाये जाने से पहिले वह कहाँ का कहाँ होगा।

सबसे जरूरी चीज अँगरेज अधिकारियों को सूचित करने की थी और 'रंगून' को उसकी पहुँच से पहिले ही सिगनल देना भी। अब कुछ करना आसान नहीं था, क्योंकि जहाज सिंगापूर में ठहरेगा जो कि चीनी समुद्र-तट से तार द्वारा सम्बन्धित है।

लेकिन, काम शुरू करने से पहिले और अधिक निश्चित होने के लिये, फिक्स ने पासेपार्टाउट से पूछने का इरादा किया। वही जानता था कि उस जवान से बात करवाना कठिन नहीं था, और उसने अब तक रक्खा हुआ छद्मवेश उतार फेंकने का निश्चय किया। अब समय बहुत कम था। ३० अक्टूबर की तारीख थी और दूसरे ही दिन 'रंगून' को सिंगापूर पहुँचना था।

आज ३० अक्टूबर को अपना कमरा छोड़ते हुए, फिक्स ऊपर बरामदे पर गया। उसका इरादा सबसे पहिले पासेपार्टाऊट से मिलने का था। उस समय उसे महान् आश्चर्य होगा। नौकर जहाज के अग्र भाग में टहल रहा था। उसी समय उसकी ओर झपटते हुए फिक्स ने चिल्ला कर कहा,—

'अच्छा, तुम्हीं हो इस 'रंगून' जहाज पर ?'

'श्रीमान् फिक्स जहाज पर !' बहुत चकित सा पासेपार्टाऊट ने जवाब दिया और 'मंगोलिया' पर की पुरानी मुलाकात पहिचान ली।

'मैंने तो आपको बम्बई में छोड़ा था ! अब हाँग-काँग के रास्ते पर फिर आपको पाता हूँ ! क्या आप भी संसार का भ्रमण कर रहे हैं ?'

'नहीं, नहीं,' फिक्स बोला, 'मैं हाँग-काँग में कम-से-कम कुछ, दिनों ठहरना चाहता हूँ।'

'ओह!' पासेपार्टाऊट ने, जो थोड़ी देर के लिए बहुत चकित हुआ, कहा। 'लेकिन कलकत्ते से चलने के समय आप क्यों नहीं दिखाई दिये?'

'बात यह है कि, मैं बीमार था। कुछ समुद्री बीमारी से मैं कमरे में पड़ा रहता था। बंगाल की खाड़ी में मैं उतना ठीक नहीं रहा जितना कि हिन्द महासागर में था। आपके मालिक, फॉग साहब का क्या हाल है?'

'खूब चंगे हैं और उतने ही नियमित जितनी उनकी डायरी! एक दिन भी पीछे नहीं। अरे! जनाब आप जानते नहीं हैं। हमारे साथ एक जवान सुन्दरी भी है।'

'क्या कहा, जवान सुन्दरी!' जासूस ने उत्तर दिया, जिसने मुस्तैदी से काम किया जैसे कि वह समझता ही नहीं था कि उसका साथी क्या कह रहा था।

लेकिन पासेपार्टाऊट ने शीघ्र ही उसे समस्त कथा का सूत्र दे दिया। उसने बम्बई के पैगोडा की घटना सुना दी और यह भी जिस प्रकार सती को बचाया गया, भगाया गया, कलकत्ते में सजा हुई और जमानत पर छूट हुई। फिक्सने, जो इन घटनाओं के अन्तिम भागों से परिचित था, ऐसा जाहिर किया मानो वह कुछ जानता ही न हो। पासेपार्टाऊट को क्या चाहिए, एक श्रोता जो किस्से में इतनी दिलचस्पी दिखा रहा था। पासेपार्टाऊट ने कथा सुना दी।

'लेकिन,' फिक्स ने पूछा,' 'क्या तुम्हारे मालिक इस औरत को योरुप ले जाना चाहते हैं?'

'नहीं, बिलकुल नहीं, श्रीमान् फिक्स बिल्कुल नहीं। हम तो

केवल उसे हाँग-काँग में के उसके एक संबंधी के हाथ में सौंपने जा रहे हैं।'

'यहाँ कुछ नहीं हो सकता,' जासूस ने अपने से कहा। उसने अपनी निराशा को छिपाया। 'मिस्टर पासेपार्टाऊट, एक गिलास जिन लीजियेगा न ?'

"खुशी से, श्रीमान् फिक्स। इससे कम अपने इस मिलन के समय 'रंगून' पर क्या पिया जाये।"

(१७)

इस दिन के बाद पासेपार्टाऊट और फिक्स अक्सर मिलते लेकिन फिक्स अपने साथी के समक्ष खूब नियंत्रित रहता और उसने उससे बात करवाने की कोशिश नहीं की। एक या दो बार उसको फिक्स की एक-आध झलक दिखाई पड़ी जो 'रंगून' के शानदार सैलून में रुके रहने में ही मस्त था। या तो वह श्रीमती आऊदा के साथ रहता था या ताश खेलता रहता था जैसी कि उसकी रोज की आदत थी।

अब रहा पासेपार्टाऊट। उसने उस अजीब संयोग पर गम्भीरता से विचार किया—जिसने एक बार फिर फिक्स को उसके मालिक के पीछे लगा दिया था। और सचमुच यह आश्चर्य की बात थी भी। यह सज्जन बड़े मधुर स्वभाव के थे। निस्सन्देह इनसे वे लोग सबसे पहिले स्वेज में मिले जो 'मंगोलिया' जहाज पर सवार हुआ, बम्बई में उतरा। यहाँ उसने कहा कि वह ठहरेगा। यही हजरत फिर 'रंगून' जहाज पर दिखाई दिये जो कि हाँग-काँग जा रहा था। संक्षेप में, मिस्टर फॉग द्वारा ग्रहण किये हुए रास्ते पर कदम-ब-कदम पीछा करते हुए यह सज्जन इस योग्य अवश्य थे कि इनके विषय में सोचा जाये। इस सब, कम-से-कम एक विचित्र

इत्तेफाक जरूर था। इसमें फिक्स को दिलचस्पी ही क्या हो सकती थी ? पासेपार्टाऊट अपनी जूतियों की बाजी लगाने जा रहा था कि फिक्स उसी जहाज पर और ठीक उसी समय हाँग-काँग से चल देगा जब वे लोग चलेंगे। फिक्स का कोई आशय अवश्य ही होगा।

अगर पासेपार्टाऊट एक शताब्दी तक सोचता तो भी जासूस का इरादा न जान पाता। वह कभी नहीं सोच सकता था कि फिलियास फॉग का एक डाकू की तरह पीछा किया जा रहा था। चूँकि हर बात के कोई-न-कोई माने निकाल लेना मनुष्य का स्वभाव होता है, यकायक सूझ पाकर इसका मतलब यह लगा बैठा कि यह जो फिक्स महाशय पीछे लगे हैं वह महज इसलिए कि रिफार्म क्लब के सदस्यों ने उसे भेजा होगा कि वह पोशीदा तौर पर फॉग साहब का पीछा करे और देखे कि बदी हुई शर्त के अनुसार वे यात्रा कर रहे हैं या नहीं।

'यह तो सादी बात है! यह तो सादी बात है!' इस ईमानदार व्यक्ति ने अपने मन में दोहराया। इसको अपनी पैनी दृष्टि पर गर्व था। 'यह एक जासूस है जिसे क्लब के सज्जनों ने हमारे पीछे लगा दिया है! यह तो शोभनीय नहीं है। इतने आदरणीय और न्यायप्रिय व्यक्ति मिस्टर फॉग का पीछा एक जासूस करे! ओह! रिफार्म क्लब के महाशयो! तुम्हें इसका अच्छा भुगतान देना पड़ेगा।'

अपनी खोज पर आनन्दित पासेपार्टाऊट ने यह सब मालिक से न कहने का इरादा किया। उसे भय था कि मालिक को इस पर ठीक ही दुःख होगा कि उनके साथियों ने उन पर विश्वास नहीं किया। लेकिन उसने अपने से ही यह वायदा किया कि मौका मिलते ही वह फिक्स का मजाक उड़ायेगा और खुद कोई भेद न खोलेगा।

३० अक्टूबर, बुधवार को दोपहर 'रंगून' जहाज मलक्का के जलडमरू-मध्य में दाखिल हुआ जो उसी नाम के प्रायद्वीप को सुमात्रा से पृथक् करता है। इस बड़े द्वीप के दृश्य को पहाड़ी और चट्टानी छोटे-छोटे द्वीपों ने यात्रियों से छिपा दिया।

दूसरे दिन प्रात: ४ बजे 'रंगून' आधे दिन पहिले ही सिंगापुर पहुँच गया। यहाँ उसे कोयला लेना था।

फ़िलियास फ़ॉग ने इस बचत को उपयुक्त स्तम्भ में दर्ज कर लिया। अब की वे जहाज से उतर पड़े, क्योंकि श्रीमती आऊदा ने कुछ घंटे टहलने की इच्छा प्रकट की।

फ़िक्स को फ़ॉग की हर बात संदिग्ध लगती थी। वह अपने को छिपाता हुआ उनके पीछे हो लिया। पासेपार्टाऊट अपनी साधारण खरीद करने जा रहा था। वह फ़िक्स की इस हरकत पर हँसा।

सिंगापुर का टापू न तो बड़ा है और न आकर्षक। यहाँ पहाड़ों की कमी है। फिर भी यह आकर्षक है, यद्यपि यहाँ कमियाँ हैं। अच्छी सड़कोंवाला यह एक पार्क-सा है। एक शानदार गाड़ी में श्रीमती आऊदा और फ़ॉग साहब बैठ गये। गाड़ी में सुन्दर घोड़े जुते थे। ऐसे घोड़े न्यू हालैण्ड से आते हैं। मजबूत ताड़, चमकीली पत्तियों, और अनेक प्रकार के वृक्षों में से गाड़ी चल रही थी। योरुपीय देशों की झाड़ियों के बजाय वहाँ मिर्च के पेड़ थे। चारों ओर खुशबू फैली थी। जंगलों में मुँह बनाते हुए बन्दरों की कमी नहीं थी। शेर भी थे। अगर किसी को यह जानकर आश्चर्य हो कि इस छोटे से द्वीप में ऐसे भयानक और मांसभक्षी पशु मार कर खत्म नहीं किये गये तो हम यही उत्तर दे सकते हैं कि यह जानवर जलडमरू-मध्य तैर कर मलक्का से आये थे।

वहाँ लगभग दो घण्टों तक गाड़ी में सैर करके नगर को

वापिस आये जिन्होंने कुछ अधिक नहीं देखा। नगर में भारी, चपटे से मकान थे जो सुन्दर बगीचों से घिरे थे। इन बगीचों में आम, सेब तथा संसार के सर्वोत्तम फल लगे थे।

दस बजे वे जहाज पर लौट आये। उन्हें यह शक भी नहीं हुआ कि छिपे-छिपे जासूस उनका पीछा कर रहा है। जासूस ने भी गाड़ी का किराया खर्च किया था।

'रंगून' जहाज के बरामदे पर पासेपार्टाऊट उनका रास्ता देख रहा था। इसने साधारण सेबों जैसे कुछ दर्जन आम खरीदे थे। यह आम ऊपर से गहरे भूरे और अंदर से लाल सुर्ख थे और उनका सफेद गूदा मुँह में घुल जाता था जो एक सच्चे चटोरे को अतुलित आनन्द देता है। पासेपार्टाऊट ने बड़ी प्रसन्नता से यह आम श्रीमती आऊदा को भेंट किये जिन्होंने उसे बहुत धन्यवाद दिया।

११ बजे पूरा कोयला लेकर जहाज चल दिया। कुछ घंटों बाद ही मलका के ऊँचे पहाड़ यात्रियों की दृष्टि से ओझल हो गये। यहाँ के जंगलों में संसार के सबसे सुन्दर शेर पाये जाते हैं।

सिंगापूर से हाँग-काँग लगभग १३०० मील दूर है। यह एक छोटी अँगरेजी अमलदारी है जो चीनी तट से अलग है। इसे फ़िलियास फ़ॉग ६ दिनों में पूरा करना चाहते थे ताकि जापान के एक प्रमुख बन्दरगाह याकोहामा को हाँग-काँग से जानेवाला जहाज उन्हें ६ नवम्बर को मिल जाये।

'रंगून' जहाज खूब भरा था। बहुत से यात्री सिंगापुर में सवार हुए थे—हिन्दू, लंकावासी, चीनी, मलायावाले और पुर्त्तगाली। अधिकतर यात्री दूसरी श्रेणी के थे।

इस समय तक आसमान खूब खुला था। यह अब बदल गया था। समुद्र आन्दोलित था। कभी-कभी आँधी उठती लेकिन भाग्य से दक्षिण-पूर्व से उठती जो जहाज की चाल के अनुकूल था। जब सम्भव होता, तो कप्तान जहाज के बादबान गिरा देता। जहाज

कभी-कभी अपने दो ऊपरी और अगले बादबानों से चलता और भाप तथा बादबानों की दोहरी शक्ति के कारण उसकी रफ्तार बढ़ जाती थी। इस प्रकार जहाज छोटे और कभी-कभी शिथिल हुए सागर पर चलता था। इसका रास्ता अनाम और कोचीन-चीन के तटों के बराबर-बराबर था।

लेकिन यात्रियों को अपनी बीमारी और थकान के लिए बजाय सागर के 'रंगून' जहाज को दोषी ठहराना होगा।

वास्तव में चीन की सेवा में पेनिनसुलर कम्पनी के जहाज बनावट के खयाल से त्रुटिपूर्ण हैं। पूरे लदे हुए जहाज को जितना पानी खींचना चाहिए उसके अनुपात की गणना गलत की गई थी। इसी कारण से वे समुद्र को कठिनता से सह पाते थे। जहाजरानी के शब्दों में वे 'डूब जाते हैं' और इसके फलस्वरूप डेक पर फेंकी हुई लहरों को, उनकी रफ्तार कम करने के लिए, नहीं लेते। इस प्रकार यह जहाज बड़े घटिया होते हैं।

खराब मौसम में बड़ी होशियारी रखनी पड़ती है। कभी-कभी धीरे-धीरे चलना पड़ता है। समय की यह हानि फ़िलियास फॉग को कुछ प्रभावित करती नहीं दिखाई दी लेकिन पासेपार्टाऊट इस पर अधिक अनमना था। उसने कप्तान को दोष दिया, इन्जीनियर को दोषी ठहराया और उन सब ही को कोसा जिनका संबंध यात्रियों को भेजने से था। सैविल रो वाले मकान में अब तक उसी के खर्च पर जलनेवाली बत्ती भी उसकी इस बेचैनी का एक बड़ा कारण थी।

'क्या हॉंग-कॉंग पहुँचने की तुम्हें बहुत जल्दी है?' एक दिन जासूस ने उससे पूछा।

'बहुत जल्दी' पासेपार्टाउट ने उत्तर दिया।

'क्या तुम्हारा खयाल है कि मिस्टर फॉग को याकोहामावाले जहाज पकड़ने की जल्दी है?'

'बहुत ज्यादा।'

'तब क्या तुम इस विचित्र पृथ्वी-परिक्रमा में विश्वास रखते हो?'

'पूर्णतया। और आप, श्रीमान् फिक्स?'

'मैं? मुझे इसमें विश्वास नहीं।'

'तुम धूर्त हो,' पासेपार्टाऊट ने उस पर आँख मारते हुए कहा।

इस पर जासूस विचार में पड़ गया। वह अच्छी तरह समझ ही नहीं पाया कि इस विशेषण ने उसे क्यों विचलित कर दिया। क्या इस फ्रांसीसी ने इसका उद्देश्य जान लिया था? वह यह नहीं समझ पाया कि क्या सोचा जाये। पासेपार्टाऊट ही केवल यह जानता था कि उसने कैसे यह जान लिया कि फ़िक्स एक जासूस था। इस प्रकार उससे बात करते हुए सचमुच पासेपार्टाऊट ने इस पर सोच-विचार किया।

दूसरे दिन यह अच्छा व्यक्ति कुछ और आगे खुला। उसके लिए यह बहुत था; वह अब और अधिक अपनी जुबान न बन्द कर सका।

'देखें, श्रीमान् फ़िक्स,' उसने अपने साथी से धूर्तता से पूछा, 'हम हाँग-काँग पहुँचकर तुम्हें वहाँ छोड़कर इतने भाग्यहीन हो सकेंगे?'

'अरे!' बहुत उद्विग्न से होते हुए फ़िक्स ने जवाब दिया, 'मैं नहीं जानता? शायद—'

'अरे!' पासेपार्टाऊट ने कहा, 'मैं बड़ा प्रसन्न हूँगा अगर आप हमारे साथ चलेंगे! देखें, आपके समान पेनिनसुलर कम्पनी का एजेण्ट भला रास्ते में ही कैसे रुक सकता है! आप केवल बम्बई तक ही जा रहे थे, और अब आप शीघ्र ही चीन में होंगे। अमरीका भी कोई दूर नहीं और अमरीका से योरुप तो एक ही कदम पर है!'

फिक्स ने ध्यान से अपने साथी को देखा, जिसका चेहरा उस समय संसार के सबसे अधिक आनन्दित चेहरे के समान था और वह उसके साथ हँसना चाहता था। साथी ने, जो इस समय हँसी-मजाक के मूड में था, पूछा कि क्या वे काम के सिलसिले में जा रहे थे ?

'हाँ और नहीं,' बिना भौं सिकोड़े हुए फिक्स ने जवाब दिया। 'बहुत से भाग्यशाली और भाग्यहीन कारोबार होते हैं। लेकिन शायद आप समझते हैं कि मैं अपने खर्च पर सफर नहीं करता !'

'ओह ! इसका मुझे पूरा यकीन है,' और जोर से हँसते हुए पासेपार्टाऊट ने जवाब दिया।

वार्तालाप समाप्त हो गया। फिक्स अपने कमरे में वापिस चला गया और बैठकर सोचने लगा। प्रत्यक्ष ही उस पर शक किया गया था। कैसे ही क्यों न हो, फ्रांसीसी को यह मालूम हो गया था कि वह जासूस था। लेकिन क्या उसने अपने मालिक को आगाह कर दिया था ? इस सब में वह कौन सा पार्ट अदा करेगा ? क्या वह भी इसमें शरीक हो सकता है ? क्या उनको मामले का पता चल गया है ? क्या परिणामतः सब समाप्त था ? जासूस ने परेशानी के कुछ घंटे वहाँ व्यतीत किये। कभी सोचता कि किस्सा ही खत्म था। कभी सोचता कि फॉग को कुछ खबर ही नहीं थी। अन्त में वह यह न जान सका, कि अब कौन-सा रास्ता पकड़ा जाये।

इतने में उसका दिमाग कुछ शान्त हुआ और उसने खुल्लम-खुल्ला पासेपार्टाऊट से बात करने का इरादा किया। अगर हाँग-काँग में, फॉग को गिरफ्तार करने का साधन न हुआ और अगर फॉग अँगरेजी अमलदारी को छोड़ देने को तैयार हुआ तो वह पासेपार्टा-ऊट को सब कुछ बता देगा। या तो नौकर भी मालिक से मिला

था और मालिक सब कुछ जानता था या चोरी में नौकर की कोई शिरकत नहीं थी। ऐसी हालत में वह नौकर डाकू को छोड़ देगा।

इन दो व्यक्तियों की यह हालत थी और उनके ऊपर फ़िलियास फॉग को कुछ पता नहीं था। वे इतमीनान से अपनी परिक्रमा कर रहे थे और चारों तरफ आकर्षित सितारों से जरा भी परेशान नहीं थे।

फिर भी, पड़ोस में ही, खगोलशास्त्रियों के मतानुसार एक अशुभ नक्षत्र भी था जिसके कारण इस सज्जन पुरुष के हृदय में एक आन्दोलन होना चाहिए था। लेकिन नहीं! श्रीमती आऊदा का आकर्षण काम नहीं कर सका। इससे पासेपार्टाऊट को आश्चर्य हुआ। अगर बाधायें थीं तो उनकी गणना उरानस की बाधाओं से अधिक कठिन थीं जिनके बाद नेपचून सितारे की खोज हुई।

हाँ! प्रत्येक दिन पासेपार्टाऊट के लिए यह एक आश्चर्य था जिसने अपने स्वामी के प्रति अगाध कृतज्ञता उस युवती की आँखों में पाई।

फ़िलियास फ़ॉग के पास बहादुराना कामों के लिए ढेर-सा दिल था, लेकिन प्रेम के लिए जरा भी नहीं! जहाँ तक उन विचारों का संबंध है, जिन्हें यात्रा के अवसरों ने उनके हृदय में पैदा कर दिया होगा, वहाँ एक भी नहीं था। पासेपार्टाऊट बराबर खोया सा रहता था। एक दिन इंजन के कमरे के छज्जे से टिका हुआ वह शक्तिशाली इंजन को देख रहा था जो कभी बड़ी तेजी से चलने लगता था।

'यह वाल्व्स ठीक से चार्ज नहीं किये गये हैं!' उसने चिल्लाकर कहा। 'हम जा नहीं रहे हैं। ओह, यह अँगरेज! अगर हम एक अमरीकी जहाज में होते, तो हम उड़ जाते, लेकिन तब, शायद, हम और तेजी से जाते।'

(१८)

यात्रा के कुछ आखिरी दिनों में मौसम बहुत खराब रहा। हवा बड़ी प्रचण्ड हो गई। उत्तर-पश्चिम में ही रहने के कारण इसने जहाज की चाल को लँगड़ा कर दिया था। 'रंगून' जहाज पहिले से ही बड़ा डाँवाडोल था। अब और भी हिलने-डुलने लगा। दूर पर हवा द्वारा उत्पन्न लम्बी और थका देनेवाली लहरों पर यात्री खीज उठे।

तीसरी और चौथी नवम्बर के दरम्यान तो तूफान ही सा आ गया। जहाज जोर से हिला। आधे दिन तक 'रंगून' जहाज को अपनी चाल धीमी करनी पड़ी। सब पर्दे लपेट दिये गये थे, फिर भी तूफान का हंगामा मचा था।

जैसा कि सोचा जा सकता है, जहाज की तेजी बहुत कम हो गई थी और यह अन्दाज लगा लिया गया था कि वह हाँग-काँग पहुँच जायेगा कम-से-कम बीस मिनट देर से। अगर तूफान कम न हुआ तो और देर भी हो सकती थी।

फ़िलियास फ़ॉग ने आन्दोलित समुद्र के इस दृश्य को ध्यान से देखा। उन्हें ऐसा लगा मानो तूफान खुद उन्हीं से संघर्ष कर रहा हो। एक क्षण को भी उनकी त्योरी नहीं चढ़ी जब कि बीस मिनटों का विलम्ब उनकी यात्रा में बाधक हो सकता था। इस प्रकार याको-हामा जहाज भी छूट सकता था। लेकिन इस व्यक्ति को न तो बेचैनी ही हुई और न आक्रोश। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि यह तूफान भी उनके कार्यक्रम का एक भाग हो जो पहिले से ही जान लिया गया था। श्रीमती आऊदा ने इस बदक़िस्मती पर अपने साथी से बात की और उन्हें पूर्ववत् ही शान्त पाया।

फ़िक्स ने इन चीजों पर उस रूप से विचार नहीं किया। इसके प्रतिकूल इस तूफान से वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसके संतोष की सीमा

न रहती, अगर उस प्रचण्ड तूफ़ान के समय 'रंगून' जहाज हार मान जाता। इन तमाम विलम्बों से उसे संतोष हुआ जिसकी वजह यह थी कि फ़िलियास फॉग को इनके कारण हाँग-काँग में कुछ दिनों ठहरना पड़ता। तूफ़ान और आँधी उसके मित्र हो गये। यह सच है कि वह कुछ अस्वस्थ था मगर इससे क्या बनता बिगड़ता था। उसने बीमारी की परवाह न की और जब समुद्री बीमारी के कारण उसका शरीर ऐंठ रहा था, उसकी आत्मा संतोष की साँस ले रही थी।

जहाँ तक पासेपार्टाऊट का प्रश्न है, यह सोचा जा सकता है कि उस समय उसका क्रोध कितना दबा रहा होगा। उस समय तक हर चीज ठीक चलती रही। पृथ्वी और आकाश उसके स्वामी के कदम चूमते से लगते थे। जहाज और रेल उनकी आज्ञा मानते थे। वायु और भाप मिलकर उनकी यात्रा के पक्ष में थे। क्या त्रुटियों का समय अब ठीक हो गया था? पासेपार्टाऊट अब बिलकुल प्रसन्न नहीं था जैसे कि २०००० का दाँव उसी की जेब से जा रहा हो। इस तूफान से वह क्रोधित हो गया, इस आँधी ने उसे आग-बबूला कर दिया और अगर उसका वश चलता तो वह समुद्र के कोड़े लगाता। बेचारा! फ़िक्स ने उससे अपना संतोष छिपाया और अच्छा ही हुआ क्योंकि पासेपार्टाऊट ने फ़िक्स के छिपे हुए आनन्द को अगर जान लिया होता तो फ़िक्स की शामत आ जाती।

पूरे तूफान के समय पासेपार्टाऊट 'रंगून' जहाज के बरामदे पर ही बना रहा। वह नीचे कैसे रह सकता था? वह मस्तूलों पर चढ़ गया। उसने जहाज के कर्मचारियों को चकित कर दिया और एक बन्दर की फुर्ती से हर बात में मदद की। सौ बार उसने कप्तान, मल्लाहों और अफसरों से प्रश्न किये जो उसकी इस लबतुलहवास दशा पर हँसे बगैर न रह सके। पासेपार्टाऊट निश्चित रूप से

जानना चाहता था कि तूफान कब तक रहेगा। उन्होंने उसे मौसम बतानेवाले यंत्र के पास भेजा जो बिलकुल ही अनुकूल होनेवाला नहीं था। लेकिन कुछ नहीं हुआ; न तो हिलाने से और न उस गैरजिम्मेदार यंत्र पर अनादर की बौछार करने से।

आखिरकार तूफ़ान ठण्डा पड़ा। चौथी नवम्बर को समुद्र अधिक शांत हुआ। हवा ने कुछ जोर बाँधा मगर फिर अनुकूल हो गई।

मौसम के साथ ही पासेपार्टाऊट का दिमाग भी दुरुस्त हुआ। ऊपरी और निचले बादबान खोले जा सकते थे और 'रंगून' जहाज आश्चर्यजनक गति से अपने रास्ते पर बढ़ने लगा।

लेकिन समय की जो हानि हुई थी वह पूरी नहीं की जा सकती थी। उनके पास कोई चारा नहीं था और छः तारीख को पाँच बजे प्रातःकाल से पहिले धरती के दर्शन नहीं हुए। फ़ॉग साहेब की डायरी में जहाज की पहुँच पाँच तारीख को दर्ज थी। जहाज पहुँचा छः तारीख को। इस प्रकार २४ घण्टों की हानि हुई थी और अब यक़ीनन याकोहामा जहाज छूट जायेगा।

छः बजे जहाज का चालक 'रंगून' जहाज पर आया और जहाज का निर्देशन करने बैठ गया।

पासेपार्टाऊट इस आदमी से यह पूछने के लिए मरा जा रहा था कि क्या हाँग-काँग से याकोहामा जानेवाला जहाज चल चुका था या नहीं। लेकिन उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। उसने अंत तक एक आशा बनाये रखने को ज्यादा अच्छा समझा। उसने अपनी व्यग्रता फिक्स को बता दी थी। चालाक फिक्स ने यह कहकर उसे ढाढ़स दिया कि फ़ॉग साहब को समय पर ही दूसरा जहाज मिल जायेगा। इस बात से पासेपार्टाऊट के क्रोध की सीमा नहीं रही। अगर पासेपार्टाऊट ने जहाज के चालक से पूछने की हिम्मत नहीं की तो फ़ॉग साहेब ने, टाइमटेबुल देखने के उपरान्त

अपने सीधे तरीके से जहाज-चालक से पूछा कि क्या उसे मालूम है कि याकोहामा के लिए हाँग-काँग को जहाज कब जाता है।

'कल प्रातःकाल,' चालक ने जवाब दिया।

'अह,' मिस्टर फॉग ने बिना किसी आश्चर्य के कहा।

पासेपार्टाऊट, जो वहाँ मौजूद था, उस चालक का आलिंगन करना पसन्द करता मगर फिक्स को उसकी गर्दन दबाने में आनन्द होता।

'जहाज का नाम क्या है?' फॉग ने पूछा।

'कर्नाटक,' चालक ने कहा।

'क्या वह कल जानेवाला नहीं था?'

'हाँ श्रीमान्, लेकिन उनको अपना एक ब्वायलर ठीक करना है और कल तक उसकी रवानगी स्थगित हो गई है।'

'धन्यवाद,' श्री फॉग ने जवाब दिया और अपने नये कदमों से अपने कमरे में चले गये।

पासेपार्टाऊट ने जहाज-चालक का हाथ पकड़ लिया और उसे बड़े तपाक से दबाते हुए कहा,—

'चालक, तुम बड़े अच्छे आदमी हो!'

चालक सचमुच यह नहीं समझ सका कि उसके जवाबों में ऐसी क्या बात थी जो उसके साथ ऐसी दोस्ताना बातचीत की गई। एक सीटी बजी और वह फिर जहाज के पुल पर चला गया।

एक घण्टे में जहाज प्लेटफार्म पर था और यात्री उतर पड़े।

यह मानना पड़ेगा कि इस परिस्थिति में संयोग ने विचित्रता से फिलियास फॉग की सेवा की थी। ब्वायलर को दुरुस्त करने की जरूरत के बगैर कर्नाटक पाँच ही नवम्बर को चल देता और जापान जानेवाले यात्रियों को दूसरे जहाज का एक हफ्ते तक इन्तजार करना पड़ता। यह सच है कि फॉग साहब समय से २४ घण्टे पीछे थे लेकिन शेष यात्रा के लिए इस देर से कोई हानि नहीं थी।

वास्तव में, उस जहाज का, जो प्रशान्त महासागर को याकोहामा से सैन फ्रैनसिसको तक पार करता है, हॉंग-कॉंग वाले जहाज से सीधा संबंध था। और याकोहामावाला जहाज बगैर हॉंग-कॉंग वाले जहाज के आये छूट नहीं सकता था। प्रत्यक्षतः याकोहामा में वे २४ घण्टे देर से पहुँचेंगे। प्रशान्त महासागर के पार २२ दिनों की यात्रा में समय की यह हानि पूरी की जा सकती थी।

चूँकि 'कर्नाटक' जहाज दूसरे दिन सुबह ५ बजे तक नहीं छूट रहा था, फॉग के पास अपना काम करने के लिए पूरे १६ घण्टे थे। यह काम उस युवती के संबंध में था। जहाज से उतरने पर उन्होंने श्रीमती आऊदा को अपनी बाँह का सहारा देकर उतारा और एक पालकी में बैठा दिया। पालकीवालों से उन्होंने एक होटल का पता पूछा। उन्होंने क्लब होटल का नाम बता दिया। पालकी चल दी जिसके पीछे पासेपार्टाऊट चला। २० मिनटों में वे अपनी मंजिल पर पहुँच गये।

युवती के लिए एक कमरा ठीक किया गया और फिलियास फॉग ने उनके आराम का खयाल रक्खा। तब उन्होंने श्रीमती आऊदा से कहा कि वे तुरन्त ही उनके उस संबंधी की खोज में जा रहे थे जिनके हाथ में इन्हें सौंपना था। इसी समय उन्होंने पासेपार्टाऊट से होटल में रुके रहने को कहा, उस समय तक जब तक वे वापिस न आ जायें ताकि युवती अकेली न रहे।

सज्जन पुरुष को इक्सचेञ्ज का रास्ता बता दिया गया। वहाँ उन्हें माननीय जीजी मिलेंगे जो शहर के सबसे अमीर व्यापारियों में समझे जाते थे।

जिस दलाल से मिस्टर फॉग ने पूछा था वह वास्तव में उस पारसी व्यापारी को जानता था। दो बरसों से वह चीन में नहीं था। अपनी स्थिति बना लेने के बाद वे योरुप में रहने चले गये

थे, शायद हालैण्ड में। इसका पता उन लम्बी खतकिताबत से चलता है जो उस देश और इनके दरम्यान हुई थी।

फ़िलियास फ़ाग क्लब होटल वापिस आ गये। वे फ़ौरन श्रीमती आऊदा से मिले और बिना किसी भूमिका के उन्हें बताया कि माननीय जीजी अब हाँग-काँग में नहीं रहते हैं। वे शायद अब हालैण्ड में रहते हैं।

पहिले श्रीमती आऊदा ने कुछ जवाब नहीं दिया। अपने माथे पर अपना हाथ फेरते हुए उन्होंने थोड़ी देर सोचा और तब अपनी मीठी आवाज में कहा,—

'अब मुझे क्या करना चाहिए, मिस्टर फ़ॉग ?'

'यह तो बड़ी सरल बात है,' सज्जन पुरुष ने कहा।

'योरुप चली चलिए।'

'लेकिन मैं गलत फायदा उठाना नहीं चाहती—'

'आप गलत फायदा कहाँ उठाती हैं ? आपकी उपस्थिति से मेरे कार्यक्रम में कोई बाधा भी तो नहीं पड़ती। पासेपार्टाऊट !'

'श्रीमान् उसने उत्तर दिया।

'कर्नाटक' जहाज पर जाओ और तीन कमरे तय कर लो। युवती के साथ यात्रा करने की आशा से आनन्दित फॉग तुरन्त ही क्लब होटल चल दिया। युवती उसके प्रति बड़ी कृपालु थी।

(१९)

१८४२ के युद्ध के बाद नैन्किंग की सन्धि में हाँग-काँग का यह छोटा टापू इँगलैण्ड को मिला था। कुछ वर्षों में इँगलैण्ड के उपनिवेश-संस्थापन-कौशल ने वहाँ एक महत्त्वपूर्ण नगर स्थापित कर दिया था और विक्टोरिया नाम का एक बन्दरगाह बनाया था। कैन्टन नदी के मुहाने पर यह नगर स्थित है और दूसरे किनारे पर बसे हुए पुर्तगाली शहर माकाओ से केवल ६० मीलों के फासले

पर है। व्यापारिक दौड़ में हाँग-काँग माकाओ से आगे निकल जायेगा। अब चीन का यातायात इसी अँगरेजी शहर के द्वारा होता है। बन्दरगाहों, अस्पतालों, प्लैटफार्मों, गोदामों, एक गोथिक गिरजे, सुन्दर सड़कों और एक सरकारी भवन को देखकर कोई भी यह विश्वास कर लेगा कि केन्ट या सरे के व्यापारिक नगरों में से एक पृथ्वी को पार करके चीन की धरती पर बस गया है।

विक्टोरिया बन्दरगाह की तरफ जेब में हाथ डाले पासेपार्टाऊट टहल रहा था। वह पालकियों को देख रहा था जिनका इस्तेमाल आज भी ब्रिटिश साम्राज्य में होता है। वह सड़क पर जाते हुए तमाम चीनियों, जापानियों और यूरोपियनों को देख रहा था। उसे कुछ बातें बम्बई, कलकत्ते या सिंगापुर जैसी लगीं। इस प्रकार अँगरेजी नगर सारे संसार में फैले थे।

पासेपार्टाऊट विक्टोरिया बन्दरगाह पर पहुँच गया। वहाँ कैन्टन नदी के मुहाने पर अँगरेज, फ्रान्सीसी, अमरीकी, डच आदि जातियों के जहाजों के झुण्ड थे जिनमें युद्धपोत और तिजारती जहाज भी थे। पानी पर तैरते हुए जापानी और चीनी तमाम प्रकार के जहाज थे। आगे टहलते हुए पासेपार्टाऊट ने पीले वस्त्र पहिने हुए कुछ प्रौढ़ व्यक्तियों को देखा जो वहीं के रहनेवाले थे। वह एक चीनी नाई की दूकान में हजामत बनवाने गया। उसने दूकान में फ़िगारो से यह सुना कि यह पुराने व्यक्ति ८० वर्ष के थे और उस बड़ी अवस्था में भी उनको उस शाही रंग के कपड़े पहिनने का विशेषाधिकार था। नाई काफी अच्छी अँगरेजी बोलता था। बिना कारण समझे हुए पासेपार्टाऊट को यह सब बड़ा हास्यात्मक प्रतीत हुआ।

दाढ़ी बन जाने के बाद वह प्लैटफार्म पर आ गया जहाँ से 'कर्नाटक' जहाज को छूटना था। वहाँ उसने फ़िक्स को चहल-

कवमी करते देखा और इस पर उसे आश्चर्य भी नहीं हुआ। जासूस के चेहरे पर महान् आश्चर्य के चिह्न थे।

'ठीक!' पासेपार्टाऊट ने मन में कहा; 'रिफ़ार्म क्लब वालों के लिये यह कुछ अच्छा नहीं होगा!'

उसने अपनी मुस्कराहट से फ़िक्स को सम्बोधित किया, बिना यह जाहिर किये हुए कि उसने उसकी परेशानी देख ली है।

अब तो अपनी बदकिस्मती पर सोच-विचार करने का उसके पास यथेष्ट कारण था। दुर्भाग्य तो उसके पीछे पड़ा था। कोई वारण्ट नहीं! यह तो साफ़ था कि वारण्ट उसके पीछे आ ही रहा था और अगर कुछ दिनों वह इस शहर में रुक जाये तो यह उसे मिल ही जायेगा। उस रास्ते पर हाँग-काँग अँगरेजों की आख़िरी अमलदारी थी और इस प्रकार फ़ॉग साहब अन्त में भाग ही निकलेंगे अगर उसने उन्हें वहाँ रोकने का प्रयत्न न किया।

'अच्छा, श्रीमान् फ़िक्स, क्या अमरीका तक हमारे साथ चलने का आपने इरादा किया है?' पासेपार्टाऊट ने पूछा।

'हाँ,' दाँत भींचे हुए वह बोला।

'अच्छा तब!' हँसी से चीखते हुए पासेपार्टाऊट ने कहा। 'मैं अच्छी तरह जानता था कि तुम हम लोगों से पृथक् न रह सकोगे। आइये, अपनी जगह का प्रबन्ध कर लीजिये, आइये!'

दोनों टिकटघर में गये और चार आदमियों के लिए कमरे कर लिये। लेकिन बाबू ने उन्हें बताया कि 'कर्नाटक' की मरम्मत हो गई थी और जहाज आठ बजे शाम को चल देगा, दूसरे दिन सुबह नहीं, जैसा कि घोषित किया गया था।

'बहुत अच्छा!' पासेपार्टाऊट ने उत्तर दिया, 'यह हमारे लिए अच्छा रहेगा। मैं मालिक को बताने जा रहा हूँ।'

इस समय फ़िक्स ने एक बेढब कदम उठाया। उसने पासेपार्टा-

ऊट से सब कुछ कह देने का इरादा किया। शायद फिलियास फॉग को हाँग-काँग में रोके रहने का यही एकमात्र साधन था।

दफ्तर से चलने के बाद फ़िक्स ने अपने साथी को एक भोजनालय में आमंत्रित किया। पासेपार्टाऊट के पास समय था। उसने फ़िक्स का निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

जहाज़ के सामान उतारने और चढ़ाने के स्थान पर एक भोजनालय था। यह बड़ा आकर्षक था। दोनों अन्दर गये। यह एक बड़ा कमरा था और खूब सजा था जिसके पिछले भाग में एक सफरी बिछौना था। इस पर गद्दे बिछे थे। इन बिस्तरों पर बहुत से लोग पड़े सो रहे थे।

बड़े कमरे में तीस के लगभग लोग छोटी मेजों के सामने बैठे थे जिन पर रकाबियों में रोयेंदार हरे पदार्थ रक्खे थे। कुछ लोग बियर, पोर्टर, एल इत्यादि अँगरेजी शराब पी रहे थे और कुछ लोगों के सुरापात्रों में लीकर, जिन, ब्राण्डी इत्यादि ढल रही थी।

इसके अतिरिक्त इनमें से बहुत लोग लाल रंग के मिट्टी के बने पाइप पी रहे थे। इन पाइपों में गुलाब की रूह में सुगन्धित अफ़ीम की छोटी-छोटी गोलियाँ थीं। तब समय-समय पर कुछ पीनेवाले, नशे के प्रभाव में, मेजों के नीचे लुढ़क पड़ते थे। दूकान के खिदमतगार उनके सर और पैर पकड़कर एक दूसरे की बगल में बिछौनों पर सुला देते थे। पशुत्व की अन्तिम श्रेणी पर पहुँचे हुए ऐसे २० नशेड़ी एक दूसरे की बगल में लेटे हुए थे।

फ़िक्स और पासेपार्टाऊट ने समझा कि वे एक धूम्र-पानवाले कमरे में आ गये थे जो इन बदकिस्मत, नशे में धुत्त, दुबले, मूर्ख व्यक्तियों से भरा हुआ था। इन लोगों के हाथ इँगलैण्ड के व्यापारी प्रति वर्ष चालीस लाख पाउण्ड अफ़ीम बेचते थे। यह चीज बड़ी प्राणघातक होती है। अफ़सोस होता है इन लाखों पर

जो मनुष्यों के अत्यन्त विनाशकारी दुर्व्यसनों पर व्यय किये जाते हैं।

चीनी सरकार ने इस कोढ़ को हटाने के लिए बड़ा प्रयत्न किया है परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। पहिले अमीरों के ही लिए अफीम का प्रयोग मान्य था। बाद में यह निम्न वर्ग के लोगों में भी फैल गया और इसके विस्तार को रोका नहीं जा सकता। अफीम हर जगह पाइप में रखकर पी जाती है, खास तौर से साम्राज्य के मध्य में। क्या मर्द, क्या औरतें सभी इस दुःखद नशे के शिकार हो जाते हैं। एक बार इसकी आदत पड़ जाने पर फिर वे इसके बिना रह नहीं सकते। इसे छोड़ देने पर उनके पेट में ऐंठन-सी होने लगती है। बीहड़ पीनेवाला एक दिन में आठ पाइप तक पी जाता है; लेकिन पाँच वर्षों से अधिक वह नहीं जी पाता।

हाँग-काँग में भी ऐसे अफीमखाने थे और ऐसे ही एक अफीमखाने में पासेपार्टाऊट और फिक्स अपने को तरो-ताजा करने के लिए आये थे। पासेपार्टाऊट के पास पैसे तो थे नहीं, उसने खुशी से अपने साथी का विनम्र निमंत्रण स्वीकार कर लिया। इसका बदला वह उपयुक्त स्थान और समय पर देने के लिए तैयार था।

उन्होंने पोर्ट शराब की दो बोतलें मँगाईं जिनका उस फ्रान्सीसी ने अच्छा उपयोग किया। फिक्स, जो अधिक संयमित था, अपने साथी को गौर से देखने लगा। उन्होंने इधर-उधर की गप हाँकी। फिक्स का 'कर्नाटक' पर सफर करने का इरादा भी खूब था। बोतलें अब खाली हो गई थीं। पासेपार्टाऊट अपने मालिक को यह बतलाने उठा कि जहाज घोषित समय से कई घण्टे पहिले ही चल देगा।

फिक्स ने इसे रोक लिया।

'ज़रा देर,' वह बोला।

'आप क्या चाहते हैं, श्रीमान् फ़िक्स ?'

'मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।'

'ज़रूरी बातें ?' पासेपार्टाऊट चिल्ला उठा, अपने गिलास में शराब की चन्द बची हुई बूँदें खाली करते हुए। 'बहुत अच्छा, हम इन बातों पर कल बात करेंगे। आज मेरे पास वक्त नहीं है।'

'रुकिये तो,' फ़िक्स ने उत्तर दिया। 'मामला आपके मालिक का है।'

इस जुम्ले पर पासेपार्टाऊट ने अपने प्रश्नकर्ता की ओर देखा।

फ़िक्स के चेहरे का भाव उसे विचित्र प्रतीत हुआ। वह फिर बैठ गया।

'आपको क्या कहना है ?' उसने पूछा। फ़िक्स ने अपना हाथ अपने साथी की बाँह पर रक्खा और धीमी आवाज में पूछा—

'तुमने जान लिया है न, कि मैं कौन था ?'

'यकीनन !' मुस्कराते हुए पासेपार्टाऊट बोला।

'तब मैं तुम्हें सब कुछ बताने जा रहा हूँ।'

'मेरे मित्र, अब तो मैं सब कुछ जान ही गया हूँ। ओह ! मामला है पेचीदा ! लेकिन कहिए। लेकिन पहिले मैं यह बता दूँ कि इन लोगों ने बेकार इतना खर्च उठाया है।'

'बेकार ?' फ़िक्स बोला। 'क्या आप विश्वासपूर्वक कह रहे हैं ? शायद तुम्हें यह नहीं मालूम है कि रकम है कितनी !'

'लेकिन मैं जानता तो हूँ,' पासेपार्टाऊट ने कहा, 'बीस हजार पाऊण्ड !'

'पचपन हजार !' फ्रान्सीसी का हाथ पकड़ते हुए फ़िक्स ने जवाब दिया।

'क्या कहा !' पासेपार्टाऊट चिल्लाया। 'श्रीमान् फ़ॉग पचपन हजार तक की हिम्मत करते ! अच्छा, अच्छा। तब तो मुझे एक क्षण की भी देर नहीं करनी चाहिए।' वह उठ पड़ा।

'पचपन हजार पाउण्ड !' फ़िक्स ने उत्तर दिया और पासेपार्टाऊट को फिर बैठने को बाध्य किया। उसने शराब और लाने की आज्ञा दी। 'अगर मैं सफल हुआ तो मुझे दो हजार पाउण्ड का पुरस्कार मिलेगा। मेरी सहायता करने के बदले में क्या इनमें से पाँच सौ तुम लेना स्वीकार करोगे ?'

'तुम्हारी सहायता !' पासेपार्टाऊट ने चिल्लाकर कहा। उसकी तो आँखें फट-सी गईं।

'हाँ, मिस्टर फ़ॉग को हाँग-काँग में कुछ दिनों तक रोके रखने में मेरी सहायता करना होगा।'

'छी' ! पासेपार्टाऊट ने कहा, 'आप कह क्या रहे हैं ? मेरे मालिक का पीछा करने से आपको सन्तोष नहीं हुआ ? ये सज्जन मालिक की वफादारी का विश्वास न करते हुए अब इनके रास्ते में रोड़ा क्यों अटका रहे हैं ? मुझे उन पर शर्म आती है।'

'अरे ! इससे तुम्हारा मतलब क्या है ?' फ़िक्स ने प्रश्न किया।

'मेरा मतलब यह है कि यह निरी नासमझी है। इसका मतलब यह हुआ कि श्रीमान् फ़ॉग को कंगाल करके सब रुपया इनकी जेबों में भर दिया जाय।'

'अरे ! इस बात पर तो हम आ ही रहे हैं।'

'लेकिन यह तो एक जाल है।' पासेपार्टाऊट ने चिल्लाकर कहा। वह अब उस ब्राण्डी के नशे में मस्त हो उठा था जो फ़िक्स उसे पिला रहा था और वह इसे बेतहाशा पिये जा रहा था—'एक सच्चा जाल ! सज्जनो ! साथियो !'

फ़िक्स उलझ गया।

'साथियो !' पासेपार्टाऊट चिल्लाया, 'रिफार्म क्लब के सदस्यो ! तुम्हें जानना चाहिए, श्रीमान् फिक्स, कि मेरे मालिक एक ईमानदार व्यक्ति हैं और जब इन्होंने बाजी लगाई है तो वे इसे ईमानदारी से ही जीतने का इरादा करते हैं।'

'लेकिन आप समझते हैं मैं कौन हूँ ?' फिक्स ने पासेपार्टाऊट को घूरते हुए कहा।

'यकीनन ! रिफार्म क्लब के सदस्यों के एक एजेण्ट ही तो जो मेरे मालिक की यात्रा में बाधा डालने की नियत रखते हैं। यह तो अजीब चोट पहुँचानेवाली बात है। इसलिए, यद्यपि मुझे आपका इरादा जाने हुए थोड़ा ही समय हुआ है, मैंने श्रीमान् फॉग से यह सब न कहने का खूब खयाल रक्खा है।'

'क्या वे बिल्कुल कुछ नहीं जानते ?' फिक्स ने शीघ्रता से पूछा।

'कुछ नहीं,' एक बार अपना गिलास पुनः खाली करते हुए पासेपार्टाऊट ने कहा।

एजेण्ट ने अपना हाथ अपने मत्थे पर रक्खा। अब वार्तालाप जारी रखने में उसे हिचक हुई। उसे क्या करना चाहिए ? पासेपार्टाऊट का भ्रम सच्चा था। इससे उसकी योजना और अधिक मुश्किल हो गई थी। यह साफ था कि यह जवान आदमी पूरी वफादारी और विश्वास से बात कर रहा था। जैसा कि उसे भय था, वह अपने मालिक से उसकी हरकतों में मिला भी नहीं था।

'अच्छा,' उसने मन में कहा, 'चूँकि यह मालिक का हिस्सेदार नहीं है, यह मेरी मदद करेगा।'

जासूस को दूसरी बार आशा की किरण दिखाई दी। इसके अतिरिक्त उसके पास अब इन्तजार करने के लिए और समय

नहीं था। कुछ भी हो, फ़ॉग को हाँग-काँग में गिरफ्तार करना ही होगा।

'सुनो,' फ़िक्स ने एकदम से कहा, 'सुनो और ध्यान दो। जो तुम ख्याल कर रहे हो, मैं वह नहीं हूँ। यानी मैं रिफार्म क्लब के सदस्यों का एजेण्ट नहीं हूँ।'

'अच्छा!'

'मैं एक पुलिस का जासूस हूँ और मेट्रोपोलिटन सरकार के काम से हूँ।'

'तुम—एक जासूस!'

'हाँ, और मैं इसे साबित भी कर दूँगा,' फ़िक्स ने उत्तर दिया। 'यह रहा मेरे नाम सरकारी आदेश।'

अपनी जेब से एक कागज निकालते हुए एजेण्ट ने अपने साथी को दिखाया जिस पर सेण्ट्रल पुलिस के कमिश्नर के हस्ताक्षर थे। पासेपार्टाऊट के होश गुम हो गये और उसके मुह से बात तक नहीं निकली। वह फ़िक्स को देखता रह गया।

फ़िक्स ने कहा, 'मिस्टर फ़ॉग की बाजी एक बहाना है जिसने तुमको बुद्धू बना दिया और साथ ही रिफार्म क्लब के साथियों को भी। उसका इसमें फायदा था कि वह तुम्हारी साझेदारी पर यकीन करता रहे और ऐसी साझेदारी जिसका तुम्हें पता न हो।'

'लेकिन क्यों?' पासेपार्टाऊट चिल्लाया।

'तो सुनो। पिछली २८ सितम्बर को बैंक आफ इंगलैण्ड में पचपन हजार पाउण्डों की चोरी हुई थी। यह काम एक अकेले व्यक्ति का था जिसका विवरण पुलिस ने प्राप्त कर लिया था। अब इस विवरण को देखो। यह हू-बहू मिस्टर फ़ॉग से मिलता है।'

'ढोंग!' पासेपार्टाऊट चिल्ला उठा और अपनी बँधी हुई मुट्ठी

मेज पर पटक दी। 'मेरे मालिक संसार के सबसे ईमानदार व्यक्ति हैं !'

'तुमको कैसे मालूम हुआ ?' फ़िक्स ने जवाब में पूछा। 'तुम तो उनसे परिचित तक नहीं हो। उनके प्रस्थान के समय ही तुम उनके पास नौकर हुए हो। वे एक व्यर्थ का बहाना लेकर तुरन्त चल पड़े थे। साथ बक्स भी नहीं थे। हाँ, बैंक नोटों के रूप में धन जरूर काफी था और तुम यह कहने की हिम्मत करते हो कि वे एक ईमानदार व्यक्ति हैं।'

'हाँ, हाँ !' बेचारे ने मशीन की तरह दोहराया।

'क्या तुम चाहते हो कि तुम उनके साझेदार की हैसियत से गिरफ्तार कर लिये जाओ ?'

पासेपार्टाऊट ने सिर पीट लिया। वह अब पहिचाना नहीं जाता था। उसने जासूस की तरफ नहीं देखा। आऊदा के रक्षक, बहादुर और उदार फ़िलियास फ़ॉग एक डाकू हैं। पासेपार्टाऊट ने उन सब शकों को दूर हटाने की कोशिश की जो उसके दिमाग में घुस आते। वह अपने मालिक के अपराध पर कभी विश्वास नहीं करेगा।

कोशिश करके वह जासूस से बोला, 'बात खतम हो। आप बताइए, मुझसे चाहते क्या हैं ?'

'देखो,' फ़िक्स बोला। 'मैंने यहाँ तक मिस्टर फ़ॉग का पीछा किया है मगर मुझे अभी तक गिरफ्तारी का वारण्ट नहीं मिल सका है। इसके लिए मैंने लण्डन सूचना भी भेजी थी। तुम अपने मालिक को हाँग-काँग में रोके रखने का काम करो।'

'मैं ! तुम्हारी सहायता करूँ !'

'बैंक ऑफ इँगलैण्ड द्वारा घोषित दो हजार पाउण्डों के इनाम में मैं तुम्हें हिस्सा भी दूँगा !'

'कभी नहीं !' पासेपार्टाऊट ने जवाब दिया। उसने उठना चाहा लेकिन वह उठ नहीं सका और उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसकी युक्तियाँ और शक्तियाँ जवाब दे रही हों।

'श्रीमान् फ़िक्स !' लड़खड़ाती ज़ुबान से उसने कहा, 'अगर तुम्हारी सब बातें सच भी हों, अगर मेरे मालिक वही चोर हों जिनकी तुम्हें तलाश है और जिसे मैं मानता भी नहीं, तो भी संसार की सारी दौलत के लिए भी मैं उनके साथ विश्वासघात नहीं करूँगा। मैं उनका नौकर हूँ। मैंने उनकी उदारता और उनकी दया देखी है। मैं वह गुड़ नहीं हूँ जो चींटे खा जायँ।'

'तो तुम अस्वीकार करते हो ?'

'हाँ, अस्वीकार करता हूँ।'

'अच्छा, समझ लो जैसे मैंने कुछ कहा ही नहीं', फ़िक्स ने जवाब दिया। और 'आओ कुछ पिया जाये।'

'बहुत ठीक, आइये पियें।'

पासेपार्टाऊट पर अब नशा खूब सवार हो रहा था। फ़िक्स हर तरह का खतरा लेकर भी उसे उसके मालिक से पृथक् करना चाहता था। उसने उसे खतम ही कर देना चाहा। मेज पर अफ़ीम से भरे हुए कुछ पाइप पड़े थे। फ़िक्स ने उनमें से एक उसके हाथ में थमा दिया जिसे उसने ले लिया, ओठों से लगाया, सुलगाया, कुछ कश खींचे और अफ़ीम के कारण सिर में चक्कर आने से वह लुढ़क पड़ा।

'कम-से-कम' फ़िक्स ने कहा, 'पासेपार्टाऊट का खतरा तो जाता रहा,' 'मिस्टर फ़ॉग को अब जहाज के छूटने का सही वक्त न मालूम हो सकेगा, और अगर वे चल देते हैं तो उनका नौकर यहीं रह जायेगा !'

तब दाम चुकाकर वे चल दिये।

(२०)

इस दृश्य के समय मिस्टर फ़ॉग श्रीमती आऊदा के साथ इस अँगरेजी नगर की सड़कों पर टहल रहे थे। इस दृश्य से उनके भविष्य का अमंगल हो सकता था। जबसे श्रीमती आऊदा ने मिस्टर फ़ॉग के साथ योरप चलना स्वीकार कर लिया था, उन्हें अब इस लम्बे सफर की प्रत्येक बात पर ध्यान देना था। एक अँगरेज व्यक्ति एक थैला लेकर संसार की यात्रा कर सकता था मगर एक स्त्री उन परिस्थितियों में ऐसा नहीं कर सकती थी। अत: यात्रा के लिए जरूरी वस्तुओं और कपड़ों के खरीदने की आवश्यकता थी। मिस्टर फ़ॉग ने बड़े इतमीनान से यह सब किया और उन्होंने युवती के तमाम बहानों और एतराज़ात का बखूबी जवाब दिया। युवती इस ढेर-सी मेहरबानी के बोझ से कुछ खोई सी थी।

'यह मेरी यात्रा के लाभ की बात है। यह मेरे कार्यक्रम के अन्तगत है।'

वस्तुएँ खरीद चुकने के बाद युवती और मिस्टर फ़ॉग होटल वापस आ गये और भोजन किया। तब कुछ थकी सी श्रीमती आऊदा अपने कमरे में चली गई। जाते समय अँगरेजी कायदे के अनुसार उन्होंने अपने अत्यन्त सौम्य उद्धारकर्त्ता से हाथ मिलाया।

मिस्टर फ़ॉग शाम को सारे समय 'दि टाइम्स' और 'इलस्ट्रेटेड लण्डन न्यूज' पढ़ते रहे।

अगर वे हर एक बात पर आश्चर्य करनेवाले मनुष्य होते तो सोते समय यह जरूर देख लेते कि उनका नौकर वहाँ नहीं था। यह जानकर कि याकोहामा जानेवाला जहाज हाँग-काँग से दूसरे दिन प्रात:काल तक नहीं चलेगा, उन्होंने इस बात पर अपने को परे-

शान नहीं किया। दूसरे दिन प्रातःकाल फॉग साहब की पुकार पर पासेपार्टाऊट नहीं आया।

यह कोई नहीं कह सकता था कि नौकर के वापस न आने पर फॉग साहब के मन में कौन से विचार उठे होंगे। श्रीमती आऊदा को पुकारते हुए, हाथ में अपना थैला लेकर उन्होंने एक पालकी बुलवाई।

उस समय आठ बजे थे और सागर अनुकूल था। 'कर्नाटक' को इसी का फायदा उठाना था।

जब होटल के द्वार पर पालकी आ गई तो उस सुखद गाड़ी में श्रीमती आऊदा और फॉग साहब बैठ गये, और उनका सामान एक ठेलिया पर रख दिया गया।

आध घण्टे बाद यात्री प्लेटफार्म पर उतरे और वहाँ मिस्टर फॉग को पता चला कि 'कर्नाटक' पिछली शाम को ही रवाना हो गया था।

मिस्टर फॉग को इसी समय जहाज और नौकर, दोनों को पाने की आशा थी। अब वे दोनों से वंचित थे। उनके चेहरे पर निराशा का एक भी चिह्न नहीं था। जब श्रीमती आऊदा ने बेचैनी से उनकी तरफ देखा तो उन्होंने इस प्रकार जवाब देते हुए अपने को सन्तुष्ट किया,—

'श्रीमती, यह एक घटना है, और कुछ नहीं।' उसी समय एक व्यक्ति, जो उनको गौर से देख रहा था, उनके पास आया। यह वही जासूस फ़िक्स था जो उनकी तरफ घूमा और बोला,—

'क्या आप भी मेरी तरह 'रंगून' जहाज के यात्री हैं जो कल ही यहाँ आया था ?'

'हाँ, श्रीमान्' मिस्टर फॉग ने रुखाई से उत्तर दिया, 'लेकिन मुझे यह सौभाग्य नहीं प्राप्त है कि—'

'क्षमा कीजिएगा, लेकिन मैंने सोचा कि आपका नौकर यहाँ होगा ही।'

'क्या तुम जानते हो वह कहाँ है ?' युवती ने शीघ्रता से पूछा।

'क्या कहा !' फ़िक्स ने आश्चर्य का स्वाँग करते हुए कहा, 'क्या वह आपके पास नहीं है ?'

'नहीं,' श्रीमती आऊदा ने उत्तर दिया। 'वह कल से वापस नहीं आया। क्या हमारे बगैर ही वह 'कर्नाटक' जहाज से चला गया ?'

'आपके बगैर, श्रीमती ?' फ़िक्स ने उत्तर दिया। 'लेकिन मेरे इस सवाल के लिए क्षमा कीजिएगा। तब तो आप उस जहाज से जाना चाहती होंगी ?'

'हाँ श्रीमान्।'

'मैं भी जाना चाहता था। मुझे तो घोर निराशा हुई है। 'कर्नाटक' की मरम्मत का काम खत्म ही हो गया था। अतः वह बारह घण्टे पहिले ही रवाना हो गया था। उसने किसी को इसकी सूचना भी नहीं दी थी। अब तो दूसरे जहाज के लिए हमें एक हफ्ते तक रास्ता देखना पड़ेगा ?'

फ़िक्स को ऐसा लगा मानो इन शब्दों को कहने में उसका हृदय आनन्द से उछल रहा हो, 'एक हफ्ता'। एक हफ़्ते तक फ़ॉग हाँग-काँग में रुका रहेगा ! गिरफ्तारी का वारण्ट पाने के लिए काफी समय था। मौका आखिरकार उसके पक्ष में हो ही गया।

आप सोच सकते हैं कि उसे कैसा सर चकरा देनेवाला धक्का लगा होगा जब फ़ॉग साहब को उसने यह कहते हुए सुना,—

"लेकिन 'कर्नाटक' के अलावा और जहाज भी तो हैं, जहाँ तक मेरा खयाल है हाँग-काँग के बन्दरगाह में।"

तब मिस्टर फ़ॉग श्रीमती आऊदा की तरफ अपनी बाँह

बढ़ाते हुए एक दूसरे जहाज की तलाश में बन्दरगाह की तरफ चल दिये।

बौखलाया-सा फ़िक्स पीछे चल दिया। यह कहा जा सकता है कि एक तागा इसको फ़ॉग साहब से बाँधे हुए था।

फिर भी भाग्य उसे अब सचमुच धोखा दे रहा था। अब तक तो ठीक ही निपटी थी। तीन घण्टों तक फ़िलियास फ़ॉग ने हर तरफ बन्दरगाह की परिक्रमा की। उन्होंने, अगर जरूरत हुई तो, याकोहामा ले जानेवाले किसी जहाज को किराये पर करने का इरादा किया। परन्तु उन्होंने सामान लादने और उतारने वाले जहाज ही देखे जो कि कहीं जा नहीं सकते थे। फ़िक्स को फिर आशा होने लगी।

लेकिन फ़ॉग निराश नहीं हुए। वे माकाओ तक जहाज की तलाश में जा रहे थे। उसी समय पुश्ते पर खड़े हुए एक मल्लाह ने उन्हें सम्बोधित किया।

'श्रीमान् शायद किसी नाव की तलाश में हैं ?' अपनी टोपी उतारते हुए उसने कहा।

'क्या तुम्हारी कोई नाव रवाना होनेवाली है ?' श्री फ़ॉग ने पूछा।

'हाँ श्रीमान्, ४३ नम्बरवाली पाइलॉट नाव जो यहाँ सबसे अच्छी है।'

'क्या तुम्हारी नाव तेज चलती है?'

'आठ या नौ जहाजी मील प्रतिघंटा इसकी चाल है बल्कि नौ जहाजी मील प्रतिघण्टा कहिए। क्या आप उसे देखेंगे ?'

'अवश्य।'

'श्रीमान् सन्तुष्ट हो जायेंगे। क्या सैर-सपाटे के लिए चाहिए ?'

'नहीं, एक अच्छे-खासे समुद्री सफर के लिए।'

'समुद्री सफर ?'

'तुम्हें मुझे याकोहामा ले चलना होगा।'

इन शब्दों पर मल्लाह बाँहें फैलाकर खड़ा रह गया और उसकी आँखें निकली-सी पड़ रही थीं।

'श्रीमान् आप तो मजाक कर रहे हैं!' उसने कहा।

"नहीं, मुझे 'कर्नाटक' पकड़ने में देर हुई और वह छूट गया। ज्यादा से ज्यादा मुझे याकोहामा १४ तारीख तक पहुँच ही जाना चाहिए ताकि मैं सैनफ्रांसिसको जानेवाला जहाज पकड़ सकूँ।"

'मुझे अफसोस है,' नाव-चालक ने उत्तर दिया, 'लेकिन यह तो असम्भव है।'

'मैं तुम्हें सौ पाउण्ड प्रतिदिन देता हूँ और अगर समय पर पहुँच गया तो २०० पाउण्डों का इनाम भी।'

'क्या आप सच ही कह रहे हैं ?' नाव-चालक ने पूछा।

'बहुत ज्यादा सच,' मिस्टर फ़ॉग ने उत्तर दिया।

नाव-चालक जरा एक तरफ गया। उसने समुद्र की ओर देखा। प्रत्यक्ष ही उसके हृदय में एक लम्बी रकम पाने और इतना बड़ा खतरा उठाने के बीच एक संघर्ष मचा था। फिक्स उस समय मरणांतक द्विविधा में पड़ा था।

उसी समय फ़ॉग साहब श्रीमती आऊदा के पास चले आये थे।

'श्रीमती! आप डरेंगी तो नहीं ?' उन्होंने पूछा।

'आपके साथ—नहीं, मिस्टर फ़ॉग,' युवती ने जवाब दिया।

नाव-चालक फिर फॉग महोदय के पास आ गया था और अपनी टोपी अपने हाथों में मरोड़ रहा था।

'अच्छा, नाव-चालक ?' श्री फॉग बोले।

'श्रीमान्, मुश्किल से २० टन की नाव में ऐसे समय कोई

समुद्री यात्रा करके मैं अपने को, अपने आदमियों को और आप को खतरे में नहीं डाल सकता। इसके अतिरिक्त हम समय पर नहीं पहुँच पायेंगे क्योंकि हाँग-काँग से याकोहामा १६५० मील दूर है।

'केवल १६००,' श्री फॉग ने कहा।

'इतने से क्या फर्क पड़ता है?'

फिक्स ने इत्मीनान की लम्बी साँस ली।

'लेकिन इसे और तरह भी किया जा सकता है।'

अब फिक्स ने साँस नहीं ली।

'कैसे?' फॉग साहब ने पूछा।

'११०० मील दूर जापान के सुदूर दक्षिण में नागासाकी जाकर या यहाँ से केवल ८०० मील पर शंघाई तक। इस अन्तिम यात्रा में हम चीनी समुद्र-तट से दूर नहीं रहेंगे। इससे बड़ा लाभ होगा। और फिर प्रवाह भी उत्तर की ही ओर होगा।'

'चालक,' फिलियास फॉग ने उत्तर दिया, 'मुझे याकोहामा में अमरीकी डाक के जहाज को पकड़ना ही होगा, शंघाई या नागासाकी में नहीं।'

'क्यों नहीं?' चालक ने उत्तर दिया 'सैनफ्रैंसिसको जहाज याकोहामा से नहीं चलता। वह नागासाकी में ठहरता है, लेकिन उसके रवाना होने का बन्दरगाह शंघाई है।'

'क्या तुम निश्चयपूर्वक कह रहे हो?'

'बिल्कुल'।

'और शंघाई से जहाज चलता कब है?'

'११ तरीख को शाम के ७ बजे। इस तरह हमारे पास चार दिन बचते हैं। चार दिन, यानी ९६ घण्टे। आठ जहाजी मील प्रति घण्टे की औसत रफ्तार से हम शंघाई तक ८०० मील का सफर कर सकते हैं। अगर भाग्य ने साथ दिया, हवा दक्षिण-पूर्व की रही और समुद्र शान्त रहा तो सफर जरूर हो जायेगा।'

'और तुम चल सकते हो—'

'एक घण्टे में। अपनी जिन्स खरीदने और बादबान खोलने के लिए इतना समय काफी है।'

'यह एक सौदा है—तुम जहाज के मालिक हो।'

'हाँ, मेरा नाम जॉन बन्सबी है और मैं 'टंकादरे' जहाज का मालिक हूँ।'

'क्या कुछ पेशगी रुपया लोगे?'

'अगर श्रीमान् को असुविधा न हो तो।'

'यह रहे दो सौ पाउण्ड, श्रीमान्' फिक्स की तरफ मुड़ते हुए फ़ॉग ने कहा, 'अगर तुम लाभ उठाना चाहो—।'

'श्रीमान्,' फिक्स ने दृढ़ता से उत्तर दिया, 'मैं आपसे इस कृपा के लिए कहने ही जा रहा था।'

'ठीक, आध घंटे में हम नाव पर होंगे।'

'लेकिन यह बेचारा—' श्रीमती आऊदा ने कहा जिन्हें पासेपार्टाऊट की गैरहाजिरी खल रही थी।

'मैं उसे तलाश करने का प्रयत्न करने जा रहा हूँ।' फ़ॉग ने उत्तर दिया।

और उधर जब घबराया-सा, रोगी-सा और क्रोधित फिक्स नाव में गया, दूसरे दोनों जने हाँग-काँग पुलिस चौकी को गये। वहाँ पासेपार्टाऊट का हुलिया फ़ॉग ने दे दिया और उसे ढूँढ़ने के निमित्त काफी धन भी। यही कार्यवाही फ्रेञ्च कॉन्सुलर एजेण्ट के यहाँ भी कर दी गई। पालकियों में यह लोग सामान लेकर बाहरी पुश्ते पर आ गये।

तीन बज गये। अपने खलासियों और जिन्स से लैस पाइलट नाव नम्बर ४३ चलने को तैयार थी।

यह 'टंकादरे' नाव २० टन की एक आकर्षक वस्तु थी जिसमें आगे पानी चीरनेवाला यंत्र बड़ा तेज था। इसकी शक्ल बड़ी

सुन्दर थी। इसे दौड़ की नाव कहा जा सकता था। इसकी चमकदार ताँबे की छत, उसके लोहे के अंग, उसके हाथीदाँत-जैसे उज्ज्वल बरामदे यह जाहिर करते थे कि मास्टर जॉन बन्सबी अच्छी तरह जानता था कि उसे किस प्रकार अच्छी हालत में रखना चाहिए। उसके दो मस्तूल थोड़ा पीछे की ओर झुके थे। इनमें कई प्रकार के बादबान थे। उसे अच्छी तरह चलना ही था। वास्तव में उसने कई एक नाव की दौड़ों में पुरस्कार प्राप्त किये थे।

'टंकादरे' पर मालिक जॉन बन्सबी के अतिरिक्त चार आदमी और थे। वे उन मजबूत मल्लाहों में से थे जो अपने कार्य में दक्ष थे और बड़े साहसी भी। जॉन बन्सबी ४५ वर्षों का फुर्तीला, हँस-मुख, खूब धूप से तपा, आत्मविश्वासी व्यक्ति था जिसका रोजगार जमा हुआ था। यह बड़े डरपोक व्यक्तियों को भी उत्साह और विश्वास से परिपूर्ण कर देना था।

फ़िलियास फ़ॉग और श्रीमती आऊदा नाव पर गये। फ़िक्स पहिले से ही वहाँ था। वे सीढ़ियों से नाव के पिछले भाग में गये जहाँ चौकोर कमरा था जिसकी दीवारें एक गोल सोफे के ऊपर चारपाइयों के रूप में निकली हुई थीं। बीच में एक मेज थी जो एक लटकते हुए लैम्प से प्रकाशित थी। कमरा छोटा मगर साफ था।

'मुझे अफसोस है कि आपको कुछ इससे अधिक अच्छा स्थान नहीं दे सकता।' श्री फॉग ने फ़िक्स से कहा जिसने बिना जवाब दिये हुए सर झुका दिया।

इस प्रकार मिस्टर फ़ॉग की मेहरबानी से फायदा उठाते हुए फ़िक्स को कुछ पीड़ा सी हुई।

'यकीनन,' 'उसने सोचा, 'यह बड़ा विनम्र बदमाश है, लेकिन बदमाश तो है ही।'

तीन बजकर दस मिनटों पर नाव के पर्दे खोल दिये गये। जहाज के आमोदगृह पर अँग्रेजी झंडा लहरा रहा था। यात्री बरामदे में बैठे थे। मिस्टर फ़ॉग और श्रीमती आऊदा ने पासे-पार्टाऊट को देखने की अन्तिम आशा से प्लैटफार्म की ओर देखा।

फ़िक्स के मन में भी चोर था। संयोग उस भाग्यहीन प्राणी को वहाँ ला सकता था जिसके साथ उसने इतनी अभद्रता का बर्ताव किया था। उस समय जवाब पूछा जाता और तब वह पचड़े में पड़ जाता लेकिन फ्रान्सीसी न दिखाई दिया। निश्चित था कि वह अब भी अफीम के नशे के ही कारण वहाँ रुका था।

आखिरकार मास्टर जॉन बन्सबी ने चलने का हुक्म दिया। 'टंकादरे' अपने पर्दों में हवा भरकर उछलता हुआ समुद्र में उड़ चला।

(२१)

मुख्यत: वैसे मौसम में, बीस टन की एक नाव में ८०० मील की यात्रा वाकई साहस का काम था। चीनी समुद्र आम तौर पर खराब रहते हैं जहाँ भयानक आँधियाँ चलती हैं।

याकोहामा तक अपने यात्रियों को ले आने में प्रत्यक्ष ही नाव-चालक का फ़ायदा था क्योंकि प्रतिदिन उसका पारिश्रमिक बहुत था। लेकिन ऐसी दशाओं में ऐसी यात्रा करना उसकी बड़ी बेव-कूफी होती। काम साहस का था जिसे उजड्डी का काम नहीं कहा जा सकता। शंघाई तक जाना खेल नहीं था। जॉन बन्सबी को अपने टंकादरे पर भरोसा था। यह तो लहरों पर समुद्री पक्षी के समान उड़ता था।

उस दिन के अन्तिम घण्टों में 'टंकादरे' हॉंग-कॉंग के तुनुक-

मिजाज सकड़े सागरों में चला और हर तरफ की हवाओं में भी उसकी चाल बहुत उत्तम रही।

जहाज जब खुले समुद्र में आया तो फॉग साहब ने कहा, 'चालक, मैं समझता हूँ कि मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस समय कठिन परिश्रम से काम लेना होगा और तुम शायद कोई कसर उठा भी नहीं रक्खोगे।'

'श्रीमान् मुझ पर भरोसा करें', जॉन ने जवाब दिया। 'जहाँ तक जहाज़ के पर्दों का सवाल है, मेरे पास काफी हैं जितनों की हवा हमें आज्ञा देगी।'

'यह तुम जानो। मुझे इसमें कहना ही क्या है। और रही विश्वास और भरोसे की बात, सो तो मैं रखता ही हूँ।'

फ़िलियास फॉग एक मल्लाह की तरह खड़े लहराते हुए समुद्र को देख रहे थे। उनका शरीर तना हुआ और पैर चौड़े फैले हुए थे। उस समय वे जरा भी नहीं लड़खड़ाये। श्रीमती आऊदा जहाज़ के पिछले भाग की तरफ बैठी थीं। सागर की ओर देखती हुई वे काफी प्रभावित थीं। गोधूलिवेला जैसे अँधेरे से सागर पहिले ही अंधकारमय हो चला था। ऐसे सागर का मुकाबला वह एक नाजुक से जहाज में कर रही थीं। उनके सर के ऊपर सफेद जहाजवाले पर्दे फैले हुए थे जो शून्य में विशाल पंखों के समान लगते थे। हवा के जोर से आगे भागता हुआ वह छोटा जहाज उड़ता हुआ प्रतीत होता था।

रात हो गई। चाँद अपने प्रथम चतुर्थांश में प्रवेश कर रहा था। उसकी धीमी रोशनी शीघ्र ही क्षितिज पर इकट्ठे कोहरे से मिट गई। पूर्व की ओर से बादल उठ रहे थे। उन्होंने पहिले ही आकाश के एक भाग को ढक लिया था।

नाव-चालक ने अपनी रोशनियों को उपयुक्त स्थान पर लगा दिया था। ऐसा करना इन समुद्रों में अनिवार्य होता है जिनमें

पृथ्वी की ओर आनेवाले जहाज चलते रहते हैं। जहाजों के टकरा जानेवाली दुर्घटनाओं की भी कमी नहीं थी और जिस रफ्तार से वह लघु पोत उड़ा जा रहा था उसमें तो जरा से धक्के पर ही उसकी धज्जियाँ उड़ सकती थीं।

आगे बैठा हुआ फिक्स स्वप्नलोक में विचरण कर रहा था। उसने अपने को अलग ही रक्खा। उसे मालूम था कि फॉग साहब ज्यादा बातूनी नहीं थे। इसके अतिरिक्त, वह उनसे बात करना भी घृणय समझता था जिनका औदार्य वह स्वीकार कर चुका था। वह आगे की बात सोच रहा था। उसे यह निश्चित जान पड़ा कि फॉग साहब याकोहामा में नहीं ठहरेंगे और वे तुरन्त ही सैन फ्रैन्सिसको जाने वाले जहाज को पकड़ेंगे ताकि अमरीका पहुँच जायें। वहाँ उस विस्तृत क्षेत्र में वे सुरक्षित हो जायेंगे। उसे लगा कि मिस्टर फॉग की योजनायें साधारण नहीं थीं।

अमरीका जाने के लिए इँगलैण्ड में न उतरकर, जैसा कि एक साधारण बदमाश करता, इस फॉग ने शानदार भ्रमण किया है और अमरीका पहुँचने के लिए पृथ्वी के ३/४ हिस्से की परिक्रमा की है। वहाँ अमरीका में वह इत्मीनान से उस लम्बी रकम को खर्च करेगा जिसे उसने पुलिस की आँखों में धूल झोंककर बैंक से चुराया था। लेकिन अगर ये अमरीका की भूमि पर पहुँच गये तो फिर वह (फिक्स) क्या करेगा? क्या इस अपने शिकार को जाने देगा? नहीं, हजार बार नहीं! जब तक उसे यह आज्ञा-पत्र नहीं मिल जायेगा कि विदेशी भगेड़ू अपराधी को उचित अधिकारियों के हाथ में सौंप दिया जाये, वह फॉग का पीछा एक पल के लिए भी नहीं छोड़ेगा। यह तो उसका कर्त्तव्य था जिसका पालन वह अन्त तक करेगा। एक घटना का सुखद परिणाम तो हुआ था। पासेपार्टाऊट अब अपने मालिक के साथ नहीं था

और खास तौर पर फिक्स को फॉग का विश्वासपात्र बन जाने के बाद तो यह जरूरी था कि मालिक और नौकर कभी एक दूसरे से न मिलें।

फिलियास फॉग निरन्तर अपने नौकर के विषय में सोच रहे थे जो रहस्यमय ढंग से गायब हो गया था। हर चीज पर गौर करने के पश्चात् उन्हें यह असम्भव नहीं लगा कि पासेपार्टाऊट आखीर वक्त पर किसी भ्रम के वश में होकर 'कर्नाटक' जहाज पर चढ़ गया होगा। श्रीमती आऊदा का भी यही खयाल था। इनको इस अच्छे नौकर के लिए बड़ा पश्चात्ताप था जिसके प्रति यह इतनी कृतज्ञ थीं। हो सकता था, वे उसे याकोहामा में पुनः प्राप्त कर लें। अगर 'कर्नाटक' जहाज उसे वहाँ ले गया होगा तो उसे तलाश कर लेना कठिन न होगा।

दस बजे हवा ताजी होने लगी। शायद पर्दे उतार देना बुद्धिमानी का काम होगा लेकिन नाव-चालक ने भली भाँति आसमान की हालत देखने के बाद पर्दों को वैसा ही रहने दिया। इसके अतिरिक्त 'टंकादरे' बादबानों को उत्तमता से लिये जा रहा था।

आधी रात को फिलियास फॉग और श्रीमती आऊदा कमरे में गये। फिक्स उनके पहिले चला गया था। वह एक चारपाई पर लेटा था। अब रहा नाव-चालक, वह मय अपने आदमियों के सारी रात डेक पर रहा।

दूसरे दिन, ८ नवम्बर को, सूर्योदय के समय लघु पोत ने सौ मील से अधिक सफर कर लिया था। उसकी चाल का औसत आठ और नौ जहाजी मील प्रति घण्टे था। 'टंकादरे' के सब पर्दे लगे थे और उसकी चाल की तेजी अधिकतम थी। अगर वैसी ही हवा रही तो अवसर अवश्य ही उसके पक्ष में होंगे।

सारे दिन 'टंकादरे' तट से दूर नहीं रहा। किनारे की धारायें उसके लिए उपयुक्त थीं। पृथ्वी की तरफ से आती हुई हवा तेज

नहीं थी और जहाज के लिए यह सौभाग्य की बात थी क्योंकि कम टनवाले जहाजों को आन्दोलित सागर से सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचता है। आन्दोलित सागर उसकी चाल में बाधक होता है बल्कि मल्लाहों की भाषा में इसको मार डालता है।

दोपहर को हवा कुछ कम पड़ी और दक्षिण-पूर्व से चलने लगी। चालक ने अपने मस्तूल ऊँचे किये लेकिन दो घण्टों के बाद ही उन्हें नीचे झुकाने की जरूरत हुई क्योंकि हवा फिर ताजी हो गई थी।

मिस्टर फॉग और श्रीमती आऊदा पर सौभाग्य से समुद्री बीमारी का प्रभाव नहीं हुआ था। उन्होंने रुचि से रक्खा हुआ खाना और जहाज पर मिले हुए बिस्कुट खाये। फिक्स को भी उसमें शरीक होने का निमंत्रण दिया गया। वह स्वीकार करने पर बाध्य हो गया, यह जानते हुए कि जहाजों की तरह पेट में कुछ-न-कुछ झोंकना तो था ही लेकिन इससे उसे परेशानी भी हुई। इस व्यक्ति के खर्चे से सफर करना, उसका ही भोजन करना वास्तव में उसके उसूल के खिलाफ था। उसने सूक्ष्म भोजन किया लेकिन किया तो।

खैर, खाना समाप्त हुआ। उसने फॉग को अलग ले जाकर बताया—

'श्रीमान—'

ऐसा शब्द कहते समय उसके ओठ झुनझुना उठे और उसने अपने को काबू में रक्खा ताकि कहीं उनसे हाथापाई न कर बैठे।

'श्रीमान्, अपने जहाज पर मुझे जगह देकर आपने वास्तव में बड़ी कृपा की है। यद्यपि मेरी औकात उतनी फय्याजी से खर्च करने की नहीं है जितनी आप करते हैं, फिर भी मैं अपने जिम्मे खर्च हुआ हिस्सा देना चाहता हूँ।'

'श्रीमान् इसका तो जिक्र ही न कीजिये,' श्री फ़ॉग ने उत्तर दिया।

'लेकिन अगर मैं आग्रह करूँ—'

'नहीं, श्रीमान्' फ़ॉग ने दोहराया जिसकी ऐसी आवाज कि फिर उसके जवाब की जरूरत ही नहीं थी। 'यह सब आम खर्च में पड़ जायेगा'।

फ़िक्स ने सर झुका दिया। उसको मालूम हुआ जैसे उसकी साँस रुक रही हो। वह जाकर पड़ रहा और दिनभर कुछ नहीं बोला।

उसी समय वे तेजी से बढ़े जा रहे थे। जॉन बन्सबी को बड़ी आशायें थीं। उसने कई बार फ़ॉग से कहा कि वे शंघाई ठीक समय पर पहुँच जायेंगे। श्री फ़ॉग सरलता से यही उत्तर देते कि उन्हें उस पर भरोसा था। सारे खलासी जान तोड़ मेहनत कर रहे थे। पुरस्कार का इन भले व्यक्तियों के लिए आकर्षण था। कोई पर्दा ऐसा नहीं था जो कायदे से लगा न हो। कोई ढील ऐसी नहीं थी जिसके लिए उन लोगों को दोषी ठहराया जाये। रॉयल लॉट क्लब के 'रिगाट्टा' ऐसे उत्कृष्ट जहाज पर भी वे इतनी लगन और फुर्ती से काम न कर सकते।

शाम को चालक ने देखा कि जहाज के गतिमापक यंत्र पर २२० मील थे। फ़िलियास फ़ॉग आशा कर सकते थे कि याकोहामा पहुँचकर उन्हें अपनी डायरी में कोई विलम्ब दर्ज नहीं करना होगा। इस प्रकार लगडन से चलने के बाद पहिली मुसीबत जो उन्हें उठानी पड़ी, उसका उनकी यात्रा पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

रात को, भोर होने के करीब 'टंकादरे' बिना किसी परेशानी के फोकिएन के जलडमरू-मध्य में दाखिल हुआ। यह चीनी समुद्र-तट से फारमूसा के विशाल टापू को पृथक् करता है। जहाज ने कर्क रेखा पार की। इन स्थानों पर समुद्र बड़ा खराब था और विरोधी

धाराओं से बने हुए भँवरों से यह स्थान भरे थे। लघुपोत जी-तोड़ परिश्रम कर रहा था। छोटी लहरें उसका रास्ता खंण्डित कर देती थीं। डेक पर खड़ा होना बहुत कठिन हो गया था।

दिन निकलने पर हवा और ताजी हो गई। आसमान पर तूफान के चिह्न थे। इसके अलावा, ऋतु-निर्देशक यंत्र ने शीघ्र ही मौसम बदल जाने की सूचना दी। इसकी दैनिक चाल बड़ी अनियमित थी और पारा शीघ्र घूम जाता था। दक्षिण पूर्व की ओर सागर ऊँचा उठता हुआ दिखाई पड़ा जिससे एक आँधी का आभास मिलता था। सूरज डूब गया था और उसकी वजह से तूफान की धुंध लाल हो गई थी।

बड़ी देर तक नाव-चालक ने आसमान के डरावने दृश्य को देखा और अस्पष्टता से दाँतों के बीच बड़बड़ाया। अपने को अपने यात्री के समीप पाते हुए एक मौके पर उसने धीमी आवाज में कहा,—

'क्या मैं श्रीमान् से स्वतंत्रतापूर्वक बात कर सकता हूँ ?'

'हाँ, तुम कर सकते हो,' फॉग साहब ने उत्तर दिया।

'अब तो तूफान उठ रहा है।'

'यह दक्षिण से आयेगा या उत्तर से ?'

'दक्षिण से'। उसने इशारा करते हुए कहा, 'देखिए वह आँधी आ गई।'

'आँधी दक्षिण से उठी है, यह तो अच्छा है क्योंकि यह हमें सीधे ठीक दिशा में भेज देगी।' फॉग महोदय ने उत्तर दिया।

'अगर आप इसे इस रूप में लेते हैं तो मुझे फिर और कुछ नहीं कहना है।'

जॉन बन्सबी की आशंका गलत नहीं थी। साल के प्रारम्भिक मौसम में एक प्रसिद्ध ऋतुविज्ञान के ज्ञाता के कथनानुसार यह

आँधी चमकती हुई विद्युत् की लपटों की तरह गायब हो जाती लेकिन जाड़े के मौसम में, जब सूरज विषुवत रेखा को पार करता है और रात-दिन बराबर होते हैं, इसके भयंकरता से उमड़ पड़ने की आशंका थी।

नाव-चालक ने पहिले से ही सावधानी रक्खी थी। उसने लघु-पोत के सब पर्दे हटवा दिये थे और पर्दे लटकानेवाले रस्से सब डेक पर रखवा दिये। मस्तूल हटा दिये गये थे। डेक पर बने हुए, नावें उतारनेवाले सब सूराख मजबूती से बन्द कर दिये गये। नाव की पेंदी में तब पानी की एक बूँद भी नहीं जा सकती थी। एक मजबूत किरमिच का बना हुआ तिकोना पर्दा तान दिया गया ताकि वह हवा से जहाज़ को पीछे रोके रहे। अब वे इन्तजार करने लगे।

जॉन बन्सबी ने अपने यात्रियों से प्रार्थना की कि वे नीचे कमरे में चले जायें। नीचे उस हवा से रहित सकड़े स्थान में रहना तो जेल में रहने के समान था। लहरों के कारण वह स्थान हिलता-डुलता भी बहुत था। न तो मिस्टर फ़ॉग, न श्रीमती आऊदा और न फ़िक्स डेक छोड़ने पर राजी थे।

आठ बजने पर हवा और वर्षा के तूफान ने डेक पर टक्कर मारी। केवल तिकोने पर्देवाला 'टंकादरे' जहाज हवा के जोर से पत्ते की तरह उठ गया। उस समय हवा की शक्ति का शब्दों द्वारा वर्णन करना कठिन है। अगर उस हवा की रफ्तार की तुलना पूरी ताकत से भागते हुए रेल के इंजन की चौगुनी रफ्तार से की जाये तब भी असलियत बयान न हो सकेगी।

पूरे दिन जहाज इसी प्रकार उत्तर की तरफ चलता रहा। बड़ी-बड़ी लहरें उसे ढकेलती रहीं। लहरों की रफ्तार के समान की जहाज की रफ्तार हो गई। बीसों बार लहरों के इन पहाड़ों में जहाज डूब-सा जाता था। पानी पीछे से उस पर चढ़ आता था।

चालक ने बड़ी कुशलता से जहाज की दिशा बदलनेवाले पहिये को घुमाकर मुसीबत टाल दी। कभी-कभी यात्री पानी की फुहार से ढक जाते थे। जल की इस हरकत को यात्री बड़ी दार्शनिकतापूर्वक ग्रहण करते थे। फ़िक्स ने यह पसन्द नहीं किया परन्तु निर्भय आऊदा अपने साथी को ही देखती रही जिसकी स्थिरता की वह केवल प्रशंसा ही कर सकी। आऊदा अपने साथी मिस्टर फॉग के योग्य ही साबित हुई और उसके पड़ोस में बैठी हुई तूफान का सामना बहादुरी से करती रही। जहाँ तक फॉग साहब का प्रश्न है, वे तो यहा जाहिर कर रहे थे मानो यह तूफान उनके कार्यक्रम का एक अंग था।

अब तक 'टंकादरे' लगातार उत्तर की ही ओर चलता रहा था। शाम होने पर, जैसी कि आशंका की जा सकती थी, हवा उत्तर-पश्चिम से चल पड़ी। लघु पोत अब जोर से हिल उठा। जहाज को समुद्र की ऐसी जोर की टक्कर लगी कि कोई भी व्यक्ति देखकर डर जाता जो यह नहीं जानता कि जहाज का हर हिस्सा कितनी मजबूती से जुड़ा होता है।

रात होने पर आँधी ने उग्रतम रूप धारण कर लिया। अँधेरे आया जानकर और साथ ही तूफान का बढ़ा हुआ जोर देखकर जॉन बन्सबी को बड़ी घबराहट हुई। उसने सोचा कि क्या कहीं रुका नहीं जा सकता था। उसने अपने आदमियों से भी राय ली।

राय ले चुकने पर जॉन बन्सबी मिस्टर फॉग के पास गया और उनसे कहा :—

'मैं समझता हूँ, श्रीमान् कि अच्छा हो अगर हम कहीं किनारे पर ठहर जायें।'

'मैं भी ऐसा ही समझता हूँ,' फॉग साहब ने उत्तर दिया।

'ओह !' नाव-चालक बोला, 'लेकिन किस किनारे पर ?'

'मुझे केवल एक ही मालूम है,' श्री फ़ॉग ने चुपचाप जवाब दिया।

'और वह है—।'

'शंघाई !'

पहिले तो कुछ क्षणों तक चालक समझ ही नहीं पाया कि इस उत्तर का अर्थ क्या था और इसमें कितना अड़ियलपन और जिद्दत थी। तब वह जोर से बोला—'

'अच्छा, हाँ ! श्रीमान् ठीक कहते हैं। आगे शंघाई को !'

और 'टंकादरे' का रुख मजबूती से उत्तर की ओर किया गया।

निस्सन्देह यह एक भयानक रात थी। यह एक जादू ही था जो वह छोटा जहाज लौटा नहीं। दो बार वह धँसा और डेक पर की हर चीज बह गई होती अगर बँधे हुए रस्से टूट जाते। श्रीमती आऊदा थक गई थीं। मगर उनके मुँह से शिकायत का एक शब्द भी नहीं निकला। कई बार मिस्टर फ़ॉग को दौड़कर उन्हें सँभालना पड़ा था।

दिन का प्रकाश फिर दिखाई दिया। अब भी बड़े जोर से तूफान चल रहा था। खैर, हवा फिर दक्षिण-पूर्व में हो गई। यह परिवर्त्तन अनुकूल था और 'टंकादरे' अपने रास्ते पर चलता रहा। हवा की परिवर्त्तित दिशा से उत्पन्न लहरें उस सागर की लहरों से टकराईं जहाँ जहाज चल रहा था। तब बड़े जोर का धक्का लगा जो एक कम मजबूत जहाज को चूर-चूर कर देता।

कभी-कभी खण्डित कोहरे में से किनारा दिख जाता था लेकिन कोई जहाज नजर नहीं आया। उस समय 'टंकादरे' अकेला ही समुद्र की रखवाली कर रहा था।

दोपहर को शान्ति के कुछ चिह्न दिखाई दिये। सूर्यास्त तक यह चिह्न और अधिक प्रत्यक्ष हुए।

अधिक जोर होने के कारण ही आँधी अधिक समय नहीं रही। थके होने के कारण यात्री अधिक खा पी न सके। उन्होंने थोड़ा आराम किया।

रात को और अधिक शान्ति रही। नाव-चालक ने कम ऊँचाई पर पर्दे फिर फैलवा दिये। जहाज की चाल काफी थी। दूसरे दिन ११ तारीख को, प्रातःकाल, किनारा दिखाई पड़ ही रहा था। जॉन बन्सबी यह कह सका कि वे लोग शंघाई से सौ मीलों से कम ही दूर थे।

सौ मीलों का फासला और समय केवल वही एक दिन! उसी दिन शाम को मिस्टर फॉग को शंघाई पहुँच जाना था ताकि याकोहामा जानेवाला जहाज जरूर मिल जाये। इस तूफान में उनके कई घण्टे बर्बाद हुए थे। अगर यह तूफान न आता तो वे शंघाई से ३० मील भी दूर न होते।

हवा कम पड़ी, लेकिन सौभाग्य से समुद्र भी शान्त हो गया। जहाज किरमिच से ढक गया। सब पर्दे लगा दिये गये। जहाज के पेंदे के नीचे समुद्र फेना उठाने लगा।

दोपहर को, 'टंकादरे' शंघाई से ४५ मीलों से अधिक दूर नहीं था। याकोहामा जानेवाले जहाज के छूटने से पहिले वहाँ पहुँचने के लिये उसके पास छः घण्टे और थे।

भय सबको बहुत था। किसी भी क़ीमत पर उनको वहाँ पहुँचना ही था। सबके हृदय बेसब्री से धड़कने लगे। हाँ, फ़िलियास फ़ॉग की बात और थी। लघु पोत को नौ जहाजी मील प्रति घण्टे की औसत चाल रखनी ही थी। हवा का प्रकोप निरन्तर कम हो रहा था। हवा समान नहीं थी। कभी-कभी तट की ओर से झोंके आते थे। झोंके कम हुए और तुरन्त ही समुद्र और अधिक शान्त हो गया।

लेकिन जहाज इतना हल्का था और उसके पर्दे इतने बारीक थे कि उनमें ढेर-सी हवा भर जाती थी। प्रवाह उनके पक्ष में था ही। वे अब शंघाई नदी से केवल दस मील ही दूर थे क्योंकि खुद शंघाई नगर ही नदी के मुहाने से बारह मील आगे था।

सात बजे वे अब भी शंघाई से तीन मील की दूरी पर थे। नाव-चालक के मुँह से एक भयानक आह निकली। यह प्रत्यक्ष था कि दो सौ पाउण्डों का इनाम हाथ से निकला जा रहा था। उसने मिस्टर फ़ॉग को देखा। फ़ॉग साहब पर चिन्ता और दुःख का कोई प्रभाव नहीं था गो उनका सारा भविष्य खतरे में था।

इस समय भी, धुआँ उगलती हुई एक काली लम्बी चिमनी जल के किनारे पर दिखाई पड़ी। नियमित समय पर जाता हुआ यह एक अमरीकी जहाज था।

'परमात्मा उसका भला करे!' पतवार को जोर से पीछे करते हुए जॉन ने चिल्लाकर कहा।

'उसे इशारा करो।' फॉग साहब ने सरलता से कहा।

'टंकादरे' के आगेवाले डेक पर एक छोटी पीतल की तोप थी। खराब और कोहरे से भरे हुए मौसम में यह खतरे की सूचना देने का काम करती थी।

तोप भरी हुई थी। जिस समय नाव-चालक इसमें एक लाल गर्म अंगारा लगाने जा रहा था, मिस्टर फॉग ने कहा—

'अपना झण्डा फहरा दो।'

झंडा आधे डण्डे तक फहरा दिया गया। यह आपत्ति की सूचना थी। आशा थी कि अमरीकी जहाज इसे देखकर कुछ देर के लिए अपना रास्ता बदलकर इस लघु पोत की सहायता अवश्य करेगा।

'तोप दागो!' मिस्टर फॉग ने कहा।

लघु तोप की गरज वायुमण्डल में गूँज उठी।

(२२)

छः नवम्बर को 'कर्नाटक' जहाज हाँग-काँग से चल दिया था, लगभग साढ़े छः बजे शाम को। वह पूरी रफ्तार से जापानी तट की ओर चल दिया था। इस जहाज पर सामान और यात्रियों का पूरा बोझ था। दो कमरे आगे की तरफ खाली थे। यह मिस्टर फिलियास फॉग के लिए रोके गये थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल जहाज के अगले भागवाले यात्रियों ने देखा कि बोझिल आँखोंवाला, उलझे बाल लिये हुए, लड़खड़ाते कदमों से आता हुआ एक यात्री डेक पर बैठ गया।

यह यात्री खुद पासेपार्टाऊट ही था। जो कुछ हुआ था वह यह है :—

फिक्स के धूम्रपान-गृह छोड़ने के कुछ ही मिनटों बाद दो खिदमतगारों ने पासेपार्टाऊट को उठाया जो कि गहरी निद्रा में निमग्न था। उन्होंने उसे एक बिस्तरे पर लिटा दिया जो कि धूम्रपान-कर्त्ताओं के लिए ही था। लेकिन तीन घण्टों के बाद वह फिर जाग गया। स्वप्न में भी उसका केवल एक ही विचार था। जागकर उसने अफ़ीम के प्रभाव से टक्कर लेनी चाही। सौंपे हुए काम के अधूरे रह जाने के खयाल ने उसकी तन्द्रा को झकझोर दिया। उसने उन नशेड़ियों के बिस्तरे को छोड़ दिया। अन्त में झूमता हुआ, गिरता-पड़ता, दीवार का सहारा लिये हुए वह उस नरककुण्ड से बाहर आया। उस समय स्वप्न में वह 'कर्नाटक'! 'कर्नाटक!' चिल्ला रहा था।

जहाज वहाँ था ही, चलने के लिए तैयार। पासेपार्टाऊट को कुछ ही कदम चलना था। वह तख्ते पर दौड़ा, उसे पार किया, और आगे डेक पर बेहोशी की हालत में गिर पड़ा। उसी समय जहाज लंगर उठा रहा था।

इस प्रकार के दृश्यों को देखने के अभ्यस्त कुछ मेहरबान मल्लाहों ने उसे उठाकर एक कमरे में कर दिया जहाँ वह दूसरे दिन प्रातःकाल ही जागा। अब तक जहाज चीनी समुद्रतट से १५० मील आगे बढ़ आया था।

इसी लिए पासेपार्टाऊट आज सुबह डेक पर पाया गया। वह ताजी समुद्री हवा का आनन्द जी भरकर उठा रहा था। ताजी हवा से उसे फायदा हुआ। उसने अपने विचारों को एकत्रित करने की कोशिश की लेकिन उसे बड़ी कठिनाई से सफलता मिली। आखिरकार उसे पिछले दिन की बातें याद आने लगीं, फिक्स के आश्वासन, धूम्रपान-गृह इत्यादि।

'यह खुली बात है,' उसने मन में सोचा, 'कि मैंने पी खूब है। अब फॉग साहब क्या कहेंगे? कुछ भी हो, जहाज तो मिल ही गया है और मुख्य बात तो यही है।

तब फिक्स के विषय में सोचते हुए उसने मन में कहा,—

'जहाँ तक उसका सवाल है, शायद अब हम उससे छुटकारा पा चुके हैं। उसने मुझसे जो कुछ भी कहा था उसके बाद शायद उसने 'कर्नाटक' जहाज पर हमारा पीछा करने की हिम्मत नहीं की। मेरे मालिक का पीछा एक पुलिस का जासूस करे और वह भी बैंक ऑफ इँगलैण्ड में चोरी करने के कारण! लानत है! मिस्टर फॉग का चोर होना उतना ही सही है जितना कि मेरा एक खूनी होना!'

क्या पासेपार्टाऊट को यह सब बातें अपने मालिक से बतानी चाहिए? क्या उन्हें यह बताना ठीक होगा कि फिक्स इस मामले में क्या कर रहा है? क्या उनके लण्डन वापिस आने तक इसका इन्तजार नहीं करना चाहिए? क्या लण्डन में ही यह बताना ठीक नहीं होगा कि लण्डन की पुलिस का एक कार्यकर्त्ता उनके पीछे लगा था और तब इस पर बड़ी हँसी होगी। हाँ, निस्सन्देह।

कुछ भी हो, यह मामला गौर-तलब था। सबसे जरूरी चीज तो उस समय फॉग के पास जाकर उनसे अपनी अक्षम्य गुस्ताखी के लिए क्षमा माँगनी थी।

पासेपार्टाऊट तब उठ पड़ा। समुद्र की हालत खराब थी और जहाज खूब हिल रहा था। भला आदमी किसी प्रकार जहाज के बरामदे तक पहुँचा। उसके पैर अब भी ठीक नहीं पड़ते थे।

उसने डेक पर किसी को नहीं देखा जो मिस्टर फॉग या श्रीमती आऊदा से मेल खाता।

'ठीक है,' वह बोला, 'इस समय तक अभी श्रीमती आऊदा उठी नहीं हैं और मिस्टर फॉग ? उन्हें शायद कोई ताश का साथी मिल गया है और वे अपनी आदत के अनुसार—।'

ऐसा कहते हुए पासेपार्टाऊट सैलून में गया। वहाँ मिस्टर फॉग नहीं थे। उसे अब एक ही बात करनी थी। जहाज के मुनीम से यह पूछना कि मिस्टर फॉग किस कमरे में हैं। मुनीम ने यह बताया कि उस नाम के किसी व्यक्ति को वह नहीं जानता।

'क्षमा कीजियेगा', पासेपार्टाऊट ने कहा और जिद की, 'जिस व्यक्ति की बात मैं कह रहा हूँ वे लम्बे से, शान्त, कम-सखुन आदमी हैं जिनके साथ एक जवान स्त्री भी है—।'

'इस जहाज पर कोई रमणी नहीं है,' मुनीम ने उत्तर दिया। 'तुम्हारी दिलजोई के लिए, यह देखो यात्रियों की तालिका। तुम तो ठीक से देख सकते हो।' पासेपार्टाऊट ने तालिका देख डाली लेकिन उसके मालिक का नाम कहीं दिखाई नहीं दिया। वह घबरा उठा। तब उसे एक बात सूझी।

'अरे ! देखिये तो ! क्या मैं 'कर्नाटक' पर ही हूँ ?' उसने चिल्लाकर कहा।

हाँ,' मुनीम ने जवाब दिया।

'और यह याकोहामा ही जा रहा है ?'

'बिल्कुल।'

थोड़ी देर के लिए पासेपार्टऊट को खयाल हुआ कि कहीं वह गलती से किसी दूसरे जहाज पर तो नहीं आ गया। लेकिन अब वह 'कर्नाटक' पर ही था यद्यपि उसके मालिक उस पर नहीं थे।

पासेपार्टऊट एक आराम कुर्सी पर लुढ़क पड़ा। उसके लिए वज्र-पात ही था। तुरन्त एक आशा की रोशनी दिखाई दी। उसे याद आया कि 'कर्नाटक' जहाज के छूटने का बदला हुआ समय मालूम हो गया था जिसे उसको अपने मालिक को बताना था और वह वैसा न कर सका था। तब तो यह उसी की गलती का कुफल था कि मिस्टर फॉग और श्रीमती आऊदा 'कर्नाटक' को नहीं पकड़ सके।

उसकी गलती ! हाँ, लेकिन उससे ज्यादा उस गद्दार की गलती थी जो उसको उसके स्वामी से अलग करना चाहता था ताकि स्वामी हाँग-काँग में ही रुके रहें। अपने इसी कुत्सित मनोरथ की सिद्धि के लिए उसने उसे खूब शराब पिलाई थी। अन्त में वह जासूस की चाल समझा। अब तो मिस्टर फॉग बर्बाद हो जायेंगे, बाजी तो जायेगी ही, गिरफ्तारी और शायद जेल भी हो जाये ! इस विचार पर पासेपार्टऊट ने अपना सर पीट लिया। ओह ! अगर फिक्स कभी उसके हाथ में आया तो ऐसा हिसाब-किताब होगा कि बस !

अन्त में, घबराहट के प्रथम क्षणों के बाद, पासेपार्टऊट जरा ठंडा हुआ और उसने परिस्थिति पर गौर किया। फ्रान्सीसी जापान के पथ पर था और यह कोई प्रलोभन की बात नहीं थी। वहाँ पहुँच जाना तो निश्चित था ही, मगर अब छुटकारा कैसे होगा। उसकी जेब तो खाली थी। एक कानी कौड़ी भी नहीं थी उसमें। फिर भी, जहाज पर का सारा खर्च—खाना और किराया, पहिले ही

चुकाया जा चुका था। किसी निर्णय पर पहुँचने के लिए उसके पास पाँच या छः दिन थे। यात्रा के समय उसने कैसे खाया पिया, यह बयान नहीं किया जा सकता। उसने अपने मालिक और श्रीमती आऊदा के लिए ही खाया। उसने खाया मानो जापान, जहाँ वह जा रहा था समस्त खाद्य पदार्थों से रहित एक बंजर भूमि हो।

१३ तारीख को 'कर्नाटक' ने याकोहामा के बन्दरगाह में प्रवेश किया।

प्रशान्त महासागर में यह एक महत्त्वपूर्ण रुकने का स्थान है। यहाँ पर उत्तरी अमरीका, चीन, जापान और मलाया द्वीपों के बीचवाले सभी डाक और यात्रियों के जहाज रुकते हैं। याकोहामा जेदो की खाड़ी पर बसा है जो कि उस नगर से थोड़ी ही दूर है। यह नगर जापानी साम्राज्य का दूसरे नम्बर की राजधानी है। पहिले यहाँ घरेलू सम्राट् टाईकून का निवास स्थान था। यह नगर मिआको नगर का प्रतिद्वंद्वी है। मिआको एक बड़ा नगर है जहाँ देवताओं के वंशज धार्मिक सम्राट् मिकाडो रहते हैं।

याकोहामा में प्लेटफार्म के किनारे बन्दरगाह के उतरनेवाले चबूतरों के पास 'कर्नाटक' जहाज रुका। वहीं पर चुंगीघर था। चारों तरफ अनेक राष्ट्रों के जहाज थे।

पासेपार्टाऊट उतर पड़ा। उसको कोई उत्साह नहीं था, यद्यपि अत्यन्त विचित्र यह सूर्य-पुत्रों की भूमि थी। उसके पास शहर की सड़कों पर जाने की हिम्मत करने और किसी राह बतानेवाले की तलाश करने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं था।

सर्व प्रथम पासेपार्टाऊट ने अपने को एक पूर्ण विलायती नगर में पाया। यहाँ नीचे मकान थे जिनको बरामदों से सज्जित किया गया था। इन बरामदों में सुन्दर खम्भे थे। नगर अपनी सड़कों, चौराहों, बन्दरगाहों और गोदामों से आच्छादित था। यहाँ भी

हाँग-काँग और कलकत्ते की तरह अमरीकन, अँगरेज, चीनी, डच इत्यादि लोगों के झुण्ड थे। सौदागर हर प्रकार का सामान बेचते और खरीदते थे। उन सबके मध्य वह फ्रान्सीसी ऐसा अजनबी लग रहा था मानो वह हॉटेनटाट देश में फेंक दिया गया हो।

वास्तव में पासेपार्टऊट के पास केवल एक ही साधन था। यह साधन था कि वह फ्रान्सीसी या अँगरेज कॉनसुलर एजेण्ट के यहाँ जाये जो याकोहामा में थे। लेकिन उसे अपनी कहानी बताने में घृणा होती थी जिसका निकट सम्बन्ध उसके स्वामी से था जिसका ऐसा करने से पहिले वह और सब साधनों का प्रयोग करना चाहता था।

तब वह उस विलायती नगर में घूमा और यहाँ किसी अवसर ने उसकी सहायता नहीं की। फिर वह जापानी बस्ती में घुसा और, अगर जरूरत हुई तो, जिद्दो तक जाने का इरादा किया।

याकोहामा की इस घरेलू बस्ती का नाम बेन्टेन है जो सागर की देवी के नाम पर है। इस देवी की पूजा पड़ोस के टापुओं में होती थी।

वहाँ रास्तों के दोनों तरफ शानदार चंदन के पेड़ थे, आलीशान इमारतों के पूज्य फाटक थे, बाँसों और नरकुलों से आधे छिपे हुए पुल थे। पुराने चंदन के पेड़ों की छाया में मन्दिर थे और ऐसे विश्रामस्थल थे जहाँ बौद्धधर्म के पुरोहितों और कन्फ्यूशियस के धर्म के अनुयायियों ने साधना की थी। भीड़-भाड़वाली सड़कें थीं जहाँ गुलाबी रंग के लाल गालों वाले बच्चे जमा थे। यह खेलते हुए बच्चे बड़े प्यारे थे।

सड़कों पर अविराम आते-जाते मनुष्यों के झुंड थे। पुरोहित जुलूस में गुजर रहे थे और अपनी नीरस ढपलियाँ बजा रहे थे। गश्त करनेवाले सिपाही, चुंगी या पुलिस के अफसर अपनी पेटियों में दो-दो तलवारें लटकाये और बेल लगी हुई ऊँची टोपियाँ

पहिने घूम रहे थे। नीली सूती वर्दियों में सिपाही भी थे। इनकी वर्दियों पर सफेद धारियाँ पड़ी थीं और पास में बन्दूकें थीं। मिकाडो के अंगरक्षक रेशमी वर्दियों में कवच पहिने हुए थे और हर श्रेणी के दूसरे सैनिक लोग भी थे। जापान में एक सिपाही का पेशा आदर की वस्तु है और चीन में घृणा की। तब फकीर लोग, लम्बे वस्त्र पहिने हुए यात्री, सादे नागरिक थे। इनके चमकीले बाल बहुत काले थे। सर बड़े, सीने चौड़े, टाँगें पतली, कद छोटे और ताँबे के गहरे रंग से लेकर सफेद तक रंगवाले लोग भी थे। चीनियों की तरह इनका रंग पीला नहीं था क्योंकि चीनियों से जापानी नितान्त भिन्न होते हैं। अन्त में गाड़ियों, पालकियों, घोड़ों, कुलियों, पर्देवाली ठेलियों, नारीमनों और कैंनगासों के बीच कुछ सुन्दर स्त्रियाँ भी घूम रही थीं जिनके नेत्र खिंचे हुए, सीने धँसे हुए और समय के फैशन के अनुसार दाँत काले थे। यह स्त्रियाँ अपने छोटे पैरों से छोटे-छोटे कदम उठा रही थीं। पैरों में किरमिच के जूते थे या भूसे और लकड़ी के खड़ाऊँ। कीरीमान नाम का राष्ट्रीय लिबास भी वे पहिने थीं। यह एक प्रकार का लम्बा लबादा सा था जिस पर रेशमी रूमाल आर-पार बँधा था। इसकी चौड़ी पेटी पीछे फैली थी जिसमें गाँठ बँधी थी। आज की पैरिसवाली स्त्रियों ने जापानियों से ही इस प्रकार का फैशन सीखा जान पड़ता है।

पासेपार्टाऊट कुछ घण्टों तक इस चारखानों जैसी भीड़ में चलता रहा। वह अमीर और विचित्र दूकानों को देखता था। वहाँ के बाजारों में जापानी जवाहरातों के ढेर थे। तमाम भोजनालय और चाय-पान के गृह थे। इन गृहों में चावल से खिंची हुई शराब के साथ गरम और खुशबूदार चाय पी जाती थी। धूम्रपान के सुखद गृह भी थे जहाँ उम्दा किस्म की ही तम्बाकू पी जाती थी, अफीम नहीं। अफीम का प्रयोग जापान में नहीं होता था।

तब पासेपार्टाऊट खेतों में आया जहाँ धान के खूब पौधे थे। वहाँ सदाबहार फूलों के पेड़ थे जिनके फूलों से अन्तिम सुगन्धि आ रही थी। पुष्पों का दृश्य मनोरम था। बाँसों के झुरमुटों में बेर, आड़ू, सेब इत्यादि के पेड़ थे जिन्हें वहाँ के निवासी फलों के लिए नहीं बल्कि फूलों के लिए ही लगाते थे। दाँत निकाले हुए नकली पुतले इनकी रक्षा गौरैयों, कबूतरों, कौओं और दूसरी लालची चिड़ियों से करते थे। कोई आलीशान चंदन का वृक्ष नहीं था जो किसी बड़ी चील को आश्रय न देता हो।

उदासी में डूबे एक पैर से बगुले वृक्षों की पत्तियों में ढके बैठे हुए थे। सब तरफ बत्तखें, बाज, जंगली हंस और बहुत बड़ी संख्या में वे सारस थे जिन्हें जापानी लोग 'लाट साहब' समझते हैं और जो उनके लिए लम्बी उम्र तथा सौभाग्य के प्रतीक हैं।

इस प्रकार घूमते हुए पासेपार्टाऊट ने घास में बैंगनी रंग के फूलों को देखकर कहा, 'वाह ! यह है मेरा नाश्ता।'

लेकिन उन्हें सूँघने पर उसे उनमें कोई खुशबू नहीं मिली।

'कर्नाटक' से चलने के पहिले उस भले आदमी में जी भरकर नाश्ता कर लेने की दूरदर्शिता थी। अब सारे दिन घूमने के बाद उसे लगा जैसे कि उसका पेट बिल्कुल ही खाली हो गया हो। उसने देखा था कि भेड़ें, बकरियाँ या सुअर कसाइयों की दूकानों पर बिल्कुल ही नहीं थे। जैसा कि उसे मालूम था कि केवल खेती के काम के लिए पाले हुए जानवरों का मारना पाप था, उसने यह नतीजा निकाला कि जापान में गोश्त की कमी थी। उसका विचार गलत नहीं था, लेकिन कसाई के गोश्त के बजाय वह हिरन, जंगली सुअर, तीतर, बटेर, मुर्गी या मछली से पेट भर सकता था जिन्हें जापानी खूब खाते हैं। उसे बदकिस्मती का मुकाबला करने के लिए बड़ी दिलेरी की जरूरत थी। उसने अपने लिए खाने-पीने की परवाह को दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दिया।

रात हो गई। पासेपार्टाऊट घरेलू बस्ती में आया और कई रंगों की लालटेनों के मध्य घूमने लगा। वह नाचनेवालों की टोलियों को देखता था जो अपनी फुर्तीली मुद्राओं के प्रदर्शन में रत थे। ज्योतिषी लोग लोगों को जमा कर रहे थे। तब उसे बन्दरगाह फिर दिखाई दिया जहाँ अपनी मशालों की रोशनी में मछुये मछली मार रहे थे।

अन्त में सड़कें खाली हो गईं। भीड़ की जगह गश्त करनेवालों के चक्कर लगने लगे। अपनी शानदार पोशाकों में यह अफसरान ऐसे लगते थे जैसे कि अनेक देशों के राजदूत हों। पासेपार्टाऊट ने कई बार आनन्द से दोहराया,—

'वाह, वाह! योरुप के लिए प्रस्थान करता हुआ एक दूसरा जापानी दूतों का दल।'

(२३)

दूसरे दिन थका और भूखा पासेपार्टाऊट सोचने लगा कि उसे खाना मिलना ही चाहिए, चाहे जो हो। जहाँ तक हो जल्दी ही मिले तो अच्छा है। घड़ी बेचकर काम चलाने का साधन उसके पास था मगर घड़ी बेचना उसे मंजूर न था चाहे उसे भूखों ही क्यों न मरना पड़े। वही समय था उसे अपनी स्वाभाविक सबल आवाज का फायदा उठाने का। अगर उस समय उसने ऐसा न किया तो फिर कभी न कर सकेगा।

उसे कुछ फ्रान्सीसी और अँगरेजी तानें मालूम थीं जिन्हें आजमाने की उसने कोशिश की। जापानी जरूर संगीत के प्रेमी होंगे क्योंकि उनका हर काम बाजों की ध्वनि पर होता था और वे एक विलायती संगीतज्ञ के गुणों को अवश्य ही पसंद करेंगे।

लेकिन शायद संगीत की टोली के प्रबन्ध के लिए अभी जरूरत

नहीं थी। अप्रत्याशित रूप से ललित-कला के प्रति प्रेम जाग जाने पर कोई भी व्यक्ति गायक को मिकाडो का सिक्का न देता।

पासेपार्टऊट ने तब कुछ घण्टों तक इन्तजार करने का इरादा किया लेकिन घूमते-घूमते उसे यह विचार आया कि वह अच्छे कपड़े पहिने हुए था। गश्ती-कलाकार की तरह नहीं दिखाई पड़ रहा था। उसने अपने कपड़े बदलकर ऐसे कपड़े पहिनने की बात सोची जो उसकी हैसियत के अनुकूल हों। इस परिवर्तन से कुछ पैसा भी पैदा होगा जिससे वह अपनी भूख की ज्वाला शान्त कर सकेगा।

ऐसा प्रस्ताव सोचने के बाद अब उस पर अमल करना बाकी था। बहुत तलाश के बाद ही वह एक देशी वस्त्र बेचनेवाले की तलाश कर सका जिसे उसने अपनी जरूरत बताई। विलायती कपड़ों से कपड़ेवाला खुश हुआ और उसे बदले में एक पुराना जापानी लबादा दे दिया। पासेपार्टऊट ने सिर पर एक प्रकार की पगड़ी भी पहिन ली जो मौसमी मार से मैली हो गई थी। उसके साथ उसकी जेब में कुछ जापानी छोटे सिक्के भी झनझना उठे।

'ठीक है,' उसने सोचा। 'मैं समझूँगा कि हम एक कार्नीवाल में हैं!'

इस प्रकार अपना जापानीकरण करने के बाद उसने सबसे पहले पेट-पूजा की परवा की। वह एक अच्छे चायपान-गृह में गया और वहाँ कुछ मुर्ग के टुकड़ों और चावल की कुछ मुट्ठियों का ऐसा नाश्ता किया कि भोजन की जरूरत पूरी करने का प्रश्न बना ही रहा। 'अब,' मन भर के नाश्ता करने के उपरान्त उसने मन में कहा, 'सवाल पागल हो जाने का नहीं है। इस लिबास के बदले अब दूसरा लेने का साधन तो है नहीं। अब मुझे जल्दी से जल्दी

सूर्य के इस देश से भागने की बात सोचनी है, जिसकी दुखद याद मेरे मस्तिष्क में सुरक्षित रहेगी।

पासेपार्टाऊट ने तब उन सब जहाजों को देखना चाहा जो अमरीका जाने को तैयार थे। उसने रसोइये या नौकर की हैसियत से काम करने की बात सोची और बदले में केवल खाना तथा किराया। सैनफ्रैन्सिस्को में एक बार वह फिर देखेगा कि वह किस तरह अपनी उस भद्दी मुसीबत से छुटकारा पाता है। सबसे बड़ी बात तो जापान और अमरीका के बीच फैले हुए ४७०० मीलों का सफर तय करना था।

पासेपार्टाऊट उस किस्म का व्यक्ति नहीं था जो एक विचार आने पर उसे पड़ा रहने देते हैं। वह तुरन्त ही याकोहामा के बन्दरगाह पर गया। जैसे ही वह बन्दरगाह के पास पहुँचा, उसकी योजनाएँ, जो पहिले सरल प्रतीत हुई थीं, और अधिक मुश्किल लगने लगीं। उन लोगों को अमरीकी जहाज पर रसोइये या नौकर की आवश्यकता ही क्या थी, और वैसा स्वाँग बनाये हुए वह विश्वास ही कौन-सा उत्पन्न करेगा ? कौन-सी सिफारिश वह लाये ? कौन-से हवाले वह दे ?

जब वह इस प्रकार सोच-विचार में डूबा था, उसकी निगाह एक बड़े इश्तहार पर पड़ी जिसे एक प्रकार का विदूषक याकोहामा की सड़कों पर घुमा रहा था। नीचे दिया हुआ कार्यक्रम उस पर अँगरेजी में लिखा था।

माननीय विलियम बाटुलकार का जापानी नटों का दल। अपने अमरीका जाने से पहले उनकी लम्बी नाकों का अन्तिम प्रदर्शन।

देवता टिंगाऊ की एकमात्र सुरक्षा में महान् आकर्षण।

'अमरीका,' पासेपार्टाऊट चीख पड़ा, 'यही तो मैं चाहता था !'

उसने इश्तेहारवाले के पीछे चलना शुरू किया। इस प्रकार वह शीघ्र ही फिर जापानी बस्ती में दाखिल हो गया। १५ मिन्टों के बाद वह एक बड़े मकान के सामने रुका जो जहाजों की कतारों से घिरा हुआ था। उसकी दीवारों पर बाजीगरों की एक पूरी टोली अङ्कित थी। चित्रों में दृष्टिक्रम नहीं था।

यह माननीय बादुलकार की कम्पनी थी। बादुलकार अमरीकी बारनम की तरह का था। यह बाजीगरों, विदूषकों, नटों, शरीर साधनेवालों, कसरत करनेवालों का निर्देशक था। इश्तेहार के मुताबिक सूर्य के साम्राज्य को छोड़कर संयुक्त राष्ट्र जाने से पहिले यह अपना अन्तिम प्रदर्शन कर रहा था।

मकान के सामने बरसाती में पासेपार्टाऊट घुसा और मिस्टर बादुलकार से मिलना चाहा। वे स्वयम् वहाँ आये। उसे पहिले देशी व्यक्ति समझकर उन्होंने पासेपार्टाऊट से कहा, 'तुम क्या चाहते हो ?'

'क्या आपको किसी नौकर की जरूरत है ?' पासेपार्टाऊट ने पूछा।

'एक नौकर,' वह चिल्लाकर बोला, अपनी घनी भूरी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ जो एक बोझ के समान उसकी ठुड्डी से नीचे लटक रही थी। 'मेरे पास दो वफादार और आज्ञाकारी नौकर हैं जिन्होंने मुझे कभी नहीं छोड़ा। वे सिर्फ खाने पर हैं और अपनी दो बलिष्ठ बाहों की तरफ इशारा करते हुए उसने कहा, 'यह रहे वे दो नौकर।'

'तो मैं आपके कोई काम नहीं आ सकता ?'

'हाँ।'

'शैतान कहीं का। तुमसे दूर रहना मेरे लिए अच्छा होगा।'

'अरे, मैं देखता हूँ कि तुम उतने ही जापानी हो जितना मैं बंदर हूँ !' बादुलकार ने फिर पूछा, 'तुम ऐसे कपड़े क्यों पहिने हो ?'

'जिस तरह के कपड़े कोई पहिन सकता है, पहिनता है।'

'बहुत ठीक। क्या तुम फ्रान्सीसी हो?'

'हाँ, पेरिसनिवासी।'

'तब तो तुम जानते होगे कि मुँह किस प्रकार चिढ़ाये और बनाये जाते हैं?'

'निस्सन्देह,' अपनी जाति के विषय में ऐसा प्रश्न सुनकर परेशान होते हुए पासेपार्टाऊट ने उत्तर दिया।

'हम फ्रान्सीसी लोग मुँह बनाना और चिढ़ाना जानते हैं, यह सच है, मगर अमरीकनों से अच्छा नहीं।'

'बिल्कुल ठीक। अच्छा नौकर की तरह तो नहीं, एक विदूषक की जगह पर मैं तुमको रख सकता हूँ। समझे, भले आदमी? फ्रान्सवाले विदेशी विदूषकों का प्रदर्शन करते हैं अपने देश में, लेकिन बाहर फ्रान्सीसी विदूषकों का।'

'ओह!'

'तुम तो ताकतवर हो। हो न?'

'खास तौर पर खाने की मेज पर।'

'गाना भी जानते हो?'

'हाँ।' उसने जवाब दिया क्योंकि बाजारू गानों की टोलियों में वह गा चुका था।

'लेकिन क्या तुम उस समय भी गा सकते हो जब तुम सिर के बल उल्टे खड़े हो और तुम्हारे बायें पैर के तले पर एक लट्टू नाच रहा हो और दाहिने पैर के तले पर एक तलवार टिकी हो?'

'वाह!' अपनी जवानी के दिनों की कसरतों को याद करते हुए पासेपार्टाऊट ने जवाब दिया।

'तब तो, तुम देखते हो कि सब ठीक ही है।' माननीय बाटुलकार ने जवाब दिया।

वहीं, तुरन्त, नौकरी पक्की हो गई।

आखिरकार पासेपार्टाऊट की एक हस्ती हो गई। उससे उस प्रसिद्ध जापानी दल में हर काम लिया गया। यह काम कुछ अच्छा तो था नहीं, लेकिन एक हफ्ते के अन्दर ही यह सैन-फैन्सिसको तो जा सकेगा।

माननीय बाटुलकार द्वारा जोर-शोर से घोषित कार्यक्रम तीन बजे प्रारम्भ होनेवाला था और शीघ्र ही जापानी वाद्य-मण्डली के बाजे दरवाजे पर बज उठे। हम अच्छी तरह समझते हैं कि पासेपार्टाऊट अपने किसी पाठ का अध्ययन न कर सका होगा मगर मनुष्यों द्वारा बनाये हुए पिरामिड में उसे अपने बलिष्ठ कंधों का सहारा देना था। यह प्रदर्शन टिंगाऊ की लम्बी नाकों का था।

तीन बजे के पहिले उस बड़ी इमारत में दर्शकों की भीड़ जमा हो गई थी। स्टेज के सामनेवाली जगहों और बेंचों पर यूरोपियन लोग, देशी लोग, चीनी और जापानी आदमी, औरतें और बच्चे दौड़ पड़े। संगीतज्ञ अंदर आ गये थे और ढपलियों, ढोलों, बाँसुरियोंवाले पूरे वाद्य-दल ने काम करना शुरू कर दिया।

प्रदर्शन वैसे ही थे जैसे कि इन नटों की नुमाइशों में होते हैं। यह मानना पड़ेगा कि जापानी संसार में सबसे अच्छे बदन साधनेवाले होते हैं। एक ने अपने पंखे और कागज के छोटे टुकड़ों से तितलियों और फूलों की सुन्दर चालाकियाँ दिखाईं। दूसरे ने अपने पाइप के सुगन्धित धुएँ से ऊपर हवा में तेजी से कुछ नीले शब्द बनाये जिनसे दर्शकों के लिए एक शुभ कामना बन गई। बादवाले व्यक्ति ने जलती मोमबत्तियों से अपनी बाजीगरी दिखाई। मोमबत्तियाँ, जब उसके ओठों के पास से गुजरीं, तो उसने उनको क्रम से बुझा दिया। उनको उसने बिना अपनी

बाजीगरी में एक क्षण की भी बाधा डाले हुए एक के बाद दूसरी को फिर जला दिया। पहिलेवाले व्यक्ति ने नाचते हुए लट्टुओं से आश्चर्यजनक करतब दिखाये। उसके हाथों में अनन्त समय तक नाचनेवाले लट्टुओं में उनका ख़ुद का एक जोवन सा दिखाई देता था। यह नाचते हुए लट्टू पाइप की नलियों, तलवार की धारों, बाल से बारीक, स्टेज के एक किनारे से दूसरे किनारे तक तने हुए, तारों पर नाचते थे। वे शीशे के भारी बर्तनों के चारों तरफ गये, बाँस की सीढ़ियों पर चढ़े-उतरे और सब कोनों में फैल गये। इन्होंने बड़ा विचित्र प्रभाव पैदा किया। बाजीगरों ने इन्हें उछाला, वे हवा में नाचे, जुलाहों की किश्तियों के समान फेंके गये मगर नाचते रहे। उन्होंने इन्हें जेबों में भी डाल लिया और जब बाहर निकाला तो भी वे नाचते रहे और उस समय तक नाचते रहे जब तक कि एक ढीली कमानी ने उन्हें एक चीनी पेड़ नहीं बना दिया।

यहाँ उस दल के नटों और कसरती जवानों के आश्चर्यजनक खेलों का वर्णन करना व्यर्थ है। सीढ़ियों, खम्भों, गेंदों, ढोलों पर घूमना बहुत उत्तमता से दिखाया गया। खेलों का मुख्य आकर्षण उन आश्चर्यजनक शरीर साधनेवाले लम्बी नाकवालों का प्रदर्शन था जिनसे योरुप अभी परिचित नहीं है।

इन लम्बी नाकोंवाले व्यक्तियों की खास टोली थी जिसका सरदार टिंगाऊ था। मध्य युग के वीरों की तरह कपड़े पहिने हुए वे अपने कंधों पर पंखों का शानदार जोड़ा लगाये हुए थे। उनकी विचित्रता, जो उन्हें दूसरों से पृथक् करती थी, उनकी लम्बी नाकें थीं। वे लोग इन नाकों का प्रयोग भी करते थे। यह नाकें, ५,६ या १० फुट लम्बी थीं। नाकें क्या बाँस थे। कुछ नाकें सीधी, कुछ घूमी हुई थीं। वक्र नाकें चिकनी थीं और सीधी नाकों पर बतौड़ियाँ-सी थीं। इन्हीं पर उनके तमाम खेल होते थे। टिंगाऊ के इन

व्यक्तियों में से एक दर्जन पीठ के बल लेट जाते थे और उनके साथी इनकी नाकों पर खेल करते थे, कूदना-उछलना इत्यादि।

उन्होंने खास तौर पर जनता में यह घोषित किया था कि उनके ५० लम्बी नाकवाले जवान आदमियों का पिरामिड बनाएंगे जो जगन्नाथजी के रथ को बतलाएगा। इन पिरामिडों को बनाते समय बजाय कंधों से सहारा देने के इन लोगों ने अपनी नाकों का प्रयोग किया। अब, उनमें से एक, जो पिरामिड के नीचे रहता था चला गया है। उसकी जगह काम करने के लिए पासेपार्टाऊट चुना गया क्योंकि वह काफी मजबूत था।

भला आदमी बड़ा रंजीदा हुआ।' जब उसने मध्य-युगीन वह वस्त्र पहिने जो पंखों से सज्जित थे और जब छ: फुट लम्बी नाक उसके चेहरे पर लगाई गई। लेकिन इस नाक से उसकी रोटी चलती और यही सोचकर उसने अपना अभिनय किया।

पासेपार्टाऊट स्टेज पर गया और अपने साथियों के साथ जगह ली जो जगन्नाथजी के रथ का निचला भाग बनानेवाले थे। सब लोग जमीन पर लम्बे हो गये और उनकी नाकें ऊपर छत की तरफ उठ गईं। इन लम्बी नाकों पर दूसरी टोली के लोग लेट गये जिसके ऊपर तीसरी टोली के लोगों ने एक मंजिल बनाई। इसके बाद चौथी टोली चढ़ी। इसी प्रकार आदमियों की एक समाधि-सी बन गई जो थियेटर की कार्निसों तक पहुँच गया।

अब बड़ी शाबासी हुई और वाद्य दल के वाद्य बादल की गड़गड़ाहट के समान बज उठे। पिरामिड हिला, सधाव खण्डित हुआ, नीचे की एक नाक लापता हो गई और समाधि ताश के पत्तों के मकान की तरह गिर पड़ी।

यह पासेपार्टाऊट की गलती थी जो अपनी जगह छोड़कर बिना अपने पंखों की सहायता के दहिने हाथ की तरफ ऊपर गैलरी पर

चढ़ गया था। वह एक दर्शक के पैरों पर यह चिल्लाता हुआ गिर पड़ा,—

'ओह ! मेरे मालिक ! मेरे मालिक !

'तुम यहाँ ?'

'जी मैं !'

'अच्छा, तब जहाज पर जाओ।' पासेपार्टाउट बाहर झपटा और उसके पीछे मिस्टर फॉग और श्रीमती आऊदा चल दीं। वहाँ बाहर उन्होंने माननीय बाटुलकार को खड़े पाया जो नुकसान का हरजाना माँग रहे थे। फ़िलियास फॉग ने उनके सामने मुट्ठी भर बैंक नोट फेंककर उनका गुस्सा शान्त किया। मिस्टर फॉग और श्रीमती आऊदा ने अमरीकी जहाज पर कदम रक्खा। उनके पीछे पासेपार्टाऊट था जिसके कपड़ों पर पंख लगे थे और चेहरे पर छः फुट लम्बी नाक जिसे वह हटा नहीं पाया था।

(२४)

जो कुछ शंघाई में हुआ वह तो छिपा हुआ है। टंकादरे ने जो इशारे किये थे उनको याकोहामा जानेवाले जहाज ने देख लिया था। कप्तान ने आधे डण्डे तक गिरे हुए झण्डे को देखकर उस लघुपोत की तरफ अपना जहाज मोड़ दिया था। कुछ मिनटों के बाद, फ़िलियास फॉग ने समझौते के अनुसार मास्टर जॉन बन्सबी की जेब में ५५० पाउण्ड डाल दिये। तब फॉग साहब, श्रीमती आऊदा और फ़िक्स जहाज के डेक पर चढ़ गये जो तुरन्त ही नागासाकी और याकोहामा के लिए रवाना हो गया।

१४ नवम्बर को समय पर ही पहुँचकर फ़िलियास फॉग 'कर्नाटक' पर गये। उधर उन्होंने फ़िक्स को जाने दिया ताकि वह अपना अगर कोई काम हो तो कर सके। 'कर्नाटक' पर फ़िलियास फॉग को पूछने पर ज्ञात हुआ कि पासपार्टाऊट नाम का फ्रान्सीसी

सचमुच वहाँ एक दिन पहिले आ गया था। इस बात से श्रीमती आऊदा को अत्यन्त हर्ष हुआ और शायद फॉग साहब को भी, यद्यपि उन्होंने इसे जाहिर नहीं होने दिया।

फ़िलियास फॉग को सैनफ्रैन्सिसको के लिए इसी दिन शाम को रवाना होना था। वे तुरन्त ही अपने नौकर की तलाश में चल दिये। अँगरेजी और फ्रान्सीसी कॉन्सुलर-एजेण्टों के यहाँ उन्होंने पूछ-ताछ की मगर कुछ न हुआ। याकोहामा की सड़कों पर बेकार दौड़-धूप करने के बाद उन्हें पासेपार्टाऊट के फिर मिलने की कोई आशा न रही। फिर संयोग से वे माननीय बाटुलकार के थियेटर में दाखिल हुए। वे अपने नौकर को वाकई उस विचित्र और मक्कारों जैसी पोशाक में कभी न पहचान पाते अगर जमीन पर पीठ के बल लेटे हुए नौकर ने उन्हें पहिचानकर 'मालिक', 'मालिक' न चिल्लाया होता। वह अपनी नाक न सँभाल पाया और संतुलन बिगड़ गया। इसके बाद जो हुआ, वह तो मालूम ही है।

यह किस्सा पासेपार्टाऊट ने श्रीमती आऊदा से सुना जिन्होंने बताया कि किस प्रकार हाँग-काँग से याकोहामा की यात्रा एक सज्जन फ़िक्स के साथ हुई, एक लघुपोत 'टंकादरे' में।

फ़िक्स के नाम पर पासेपार्टाऊट के चेहरे पर शिकन नहीं आई। उसने सोचा कि मालिक को सारी कथा सुनाने का समय अभी नहीं आया था। अतः उस कहानी में, जो पासेपार्टाऊट ने अपने विषय में बताई, यही था कि वह अपनी बेवक़ूफ़ी और बदकिस्मती से, एक अफ़ीम के धूम्रपान-गृह में घुस गया था जहाँ वह नशे में पड़ा रहा।

श्री फ़ॉग ने ठंडे दिल से यह बयान सुना और कुछ उत्तर नहीं दिया। तब उन्होंने नौकर को उधारखाते में कुछ रुपया दिया ताकि वह अधिक उपयुक्त वस्त्र ले सके। एक घंटा भी

नहीं गुजरा था कि उस भले आदमी ने अपनी नाक काटकर अलग की और पंखों को दूर फेंका। अब उसके पास कुछ भी नहीं रह गया था जो देवता टिंगाऊ के अनुयायी की याद दिलाता।

याकोहामा से सैनफ्रैंसिसको जानेवाला जहाज पैसीफिक मेल स्टीमरशिप कम्पनी का था जिसका नाम 'जेनरल ग्रॉएट' था। यह २५०० टन का एक विशाल पोत था जो पूर्णरूप से सुसज्जित था और जिसकी चाल बहुत तेज थी। एक विशाल चलता हुआ शहतीर डेक पर उठता और गिरता था। इसके एक सिरे पर पिस्टन-रॉड था और दूसरे पर संयुक्त करनेवाला डण्डा। इसका घुमाव एक सीधी रेखा से एक गोल रेखा तक था और सीधा पहियों से लगा था। 'जेनरल ग्रॉएट' तीन मस्तूलों का जहाज था जिसमें बहुत से पर्दे थे। यह पर्दे उसकी भापजनित शक्ति को बढ़ाते थे। एक घंटे में बारह मील चलकर जहाज को पैसीफिक पार करने में इक्कीस दिन लगते। तब फिलियास फॉग के पास यह विश्वास करने के यथेष्ट कारण थे कि सैनफ्रैन्सिसको में २ री दिसम्बर को उतरकर वे ग्यारह तारीख को न्यूयार्क में होंगे और लण्डन में बीस को। इस प्रकार इक्कीस दिसम्बर की प्राणघातक तारीख को वे कुछ घंटे बचत के पा जायँगे।

जहाज पर अनेक प्रकार के यात्री थे—कुछ अँगरेज, अनेक अमरीकन, अमरीका जानेवाले कुली और भारतीय सेना के कुछ अफसरान जो अपनी छुट्टियों का लाभ उठाते हुए संसार का भ्रमण कर रहे थे।

इस समुद्री यात्रा में कोई जहाजी घटना नहीं हुई। काफी बाद-बानोंवाला यह जहाज बहुत कम डाँवाँडोल हुआ। पैसीफिक महासागर ने अपने नाम के उपयुक्त ही व्यवहार किया। मिस्टर

फ़ॉग हमेशा की तरह शान्त और कमसखुन बने रहे। उनकी जवान संगिनी कृतज्ञता की अपेक्षा दूसरे बन्धनों के कारण इनके प्रति अधिकाधिक आकर्षित होती गई। फ़ॉग साहब के इस शान्त स्वभाव ने उन पर उनकी आशा के प्रतिकूल अधिक प्रभाव डाला।

इसके अतिरिक्त श्रीमती आऊदा मिस्टर फ़ॉग की योजनाओं में दिलचस्पी रखती थीं। यात्रा में बाधा डालनेवाली परिस्थितियों पर वे व्याकुल हो जाती थीं। वे अक्सर पासेपार्टाऊट से बात करती थीं जो फौरन् ही उनके हृदय की भावनाओं को जान जाता था। इस बड़े भले व्यक्ति को अपने मालिक पर बड़ा विश्वास था। वह अपने मालिक की ईमानदारी, उदारता और भक्ति की प्रशंसा करते नहीं थकता था। तब वह श्रीमती आऊदा को यात्रा के विषय में विश्वास दिलाता हुआ कहता कि यात्रा का सबसे कठिन भाग समाप्त हो गया था। उसने यह भी बताया कि वे अब चीन और जापान के रंगीले देशों से दूर निकल आये थे और अब वे सभ्य देशों को वापस हो रहे थे, और अन्त में सैनफ्रैन्सिसको से न्यूयार्क और न्यूयार्क से लिवरपूल तक रेल तथा जहाज की यात्राएँ निश्चित समय में ही संसार की इस असम्भव यात्रा को समाप्त करने के लिए काफी होंगी।

नौ दिनों बाद जब वे याकोहामा से चल दिये थे, फ़िलियास फ़ॉग ठीक आधी पृथ्वी की परिक्रमा कर चुके थे।

वास्तव में, २३ नवम्बर को 'जेनरल ग्राण्ट' काफी चक्कर लगा चुका था। फ़ॉग साहब ८० दिनों में से ५२ दिनों का प्रयोग कर चुके थे और अब केवल २८ दिन ही शेष रह गये थे। लेकिन हमें देखना चाहिए अगर फ़ॉग साहब ने सूर्य की उच्चतम ऊँचाई से फर्क के कारण यह मालूम किया कि वे संसार की आधी परिक्रमा कर चुके थे तो वास्तव में उन्होंने दो तिहाई ही परिक्रमा की थी। अब

तक रास्ते की तमाम अड़चनों के कारण फ़िलियास फ़ॉग को बड़ी परेशानी उठानी पड़ी और १२००० मील का फ़ासला तय करने के लिए, यातायात के साधनों की तुनुकमिजाजी के कारण, २६००० से अधिक मील का चक्कर लगाना पड़ा। २३ नवम्बर तक वे लगभग ७५०० मील का सफ़र कर चुके थे। अब रास्ता सीधा था और अड़चन डालनेवाला फ़िक्स भी अब वहाँ नहीं था।

इसी २३ नवम्बर को पासेपार्टाऊट ने एक बहुत ही आनन्दपूर्ण खोज की। यह तो याद ही होगा कि उसने अपनी खानदानी घड़ी का लण्डन टाइम ही रखने की जिद की थी और जिस-जिस देश में उसने भ्रमण किया वहाँ के समय को गलत खयाल किया। अब आज, यद्यपि उसने अपनी घड़ी घटाई-बढ़ाई नहीं थी, वह ठीक जहाज के समय-सूचक यंत्रों से मिलती थी।

पासेपार्टाऊट की विजय सोची जा सकती है। वह जानना चाहता था कि अगर फ़िक्स वहाँ होता तो क्या कहता।

'बदमाश! सूर्य की उच्चतम ऊँचाई, सूर्य और चन्द्र के विषय में उसने कैसी कहानी सुनायी थी!' पासेपार्टाऊट ने कहा। 'धत्त तेरे की! अगर ऐसे व्यक्तियों की बातें लोग सुनने लगें तो उम्दा किस्म की घड़ियों की कमी न रहे! मुझे पूरा यक़ीन है कि एक-न-एक दिन सूर्य जरूर अपनी चाल मेरी घड़ी के अनुसार ठीक करने का इरादा करेगा।

पासेपार्टाऊट को यह बात नहीं मालूम थी कि अगर इटली की घड़ियों के समान उसकी घड़ी के ऊपरी भाग पर बजाय १२ घण्टे के २४ घण्टे के निशान होते तो उसे अपनी विजय पर गर्व करने की जरूरत न होती। उस दशा में उसकी घड़ी की सुइयाँ उस समय शाम के नौ बजातीं जब कि जहाज पर सुबह के १२ बजे होते।

लेकिन अगर फ़िक्स इस साधारण भौतिक तथ्य को समझाता

तो शायद पासेपार्टाऊट इसे न मान सकता, समझ भले ही जाता। किसी भी घटना में अगर फ़िक्स वहाँ जहाज पर आ जाता तो यह सम्भव था कि पासेपार्टाऊट उससे एक दूसरे ही विषय पर घृणा-पूर्वक बातें करता और वह भी एक भिन्न रूप में।

अच्छा तो फिक्स महोदय इस समय थे कहाँ ? वह सचमुच 'जेनरल ग्राण्ट' जहाज पर ही थे।

वास्तव में, याकोहामा पहुँचने पर फिक्स फ़ॉग साहब को छोड़कर अँगरेजी कॉन्सल गया था। उसने सोचा कि वह फ़ॉग साहब से दिन में फिर मिल ही लेगा। वहाँ उसने आखिरकार गिरफ्तारी का वारण्ट पाया जो कि बम्बई से उसके पीछे भागता हुआ अब ४० दिन पुराना हो चुका था। यह वारण्ट हॉंग-कॉंग से उसके पास भेजा गया था उस 'कर्नाटक' जहाज पर जिस पर उसकी उपस्थिति सोच ली गई थी। जासूस की निराशा सोची जा सकती है ? वारण्ट बेकार हो गया था। मिस्टर फ़ॉग अँगरेजी अमलदारी से बाहर हो चुके थे। अब तो उनकी गिरफ्तारी के लिए एक विशेष आज्ञा-पत्र की आवश्यकता थी।

'होने दो ऐसा ही ?' क्रोध के प्रथम आवेश के बाद फिक्स ने मन में कहा, 'अब यहाँ वारण्ट कुछ काम न देगा। इँगलैण्ड में देखूँगा जहाँ यह कारगर हो सकेगा।

देखने से तो पता चलता है कि यह बदमाश स्वदेश लौट रहा है और यह खयाल करता है कि इसने पुलिस को धता बता दिया। अच्छा, मैं वहाँ तक इसका पीछा करूँगा। रह गया धन, अगर ईश्वर ने चाहा तो शायद वहाँ तक कुछ बच जाये ! क्या सफर के इनाम, क्या जमानत, क्या जुर्माना, क्या हाथी की खरीद और क्या हर प्रकार के दूसरे खर्च, मेरा असामी सब मिलाकर ५००० पाउण्ड से अधिक अब खर्च कर चुका है !'

अपने इरादे को पक्का कर लेने के बाद वह तुरन्त ही 'जेनरल ग्राण्ट' जहाज पर गया और जब वहाँ पहुँचा तो मिस्टर फ़ॉग और श्रीमती आऊदा वहाँ पहुँच गये थे। उसे महान् आश्चर्य हुआ जब उसने उन विचित्र कपड़ों में पासेपार्टाऊट को पहिचान लिया। उसने तुरन्त ही अपने को अपने कमरे में छिपा लिया ताकि बात खुल न जाय और सब कुछ चौपट हो जाय। धन्यवाद था यात्रियों की संख्या को जो उसे पासेपार्टाऊट ने देख नहीं लिया। आज प्रातःकाल उसका उससे डेक के अगले भाग में आमना-सामना हो गया।

पासेपार्टाऊट ने उछलकर फ़िक्स की गर्दन पकड़ ली और कुछ अमरीकी व्यक्तियों को आनन्द प्रदान करते हुए उस भाग्यहीन जासूस को गिन-गिनकर ऐसे हाथ मारे कि फ्रान्सीसी घूँसेबाजी के आगे अँगरेजी घूँसेबाजी दब गयी। अमरीकन व्यक्तियों ने दाँव तक लगा दिये।

जब पासेपार्टाऊट उसकी मरम्मत कर चुका तो शान्त और स्वस्थ हुआ। अधमरा-सा फ़िक्स उठा और अपने दुश्मन को रुखाई से देखता हुआ बोला,—'बस हो गया?'

'हाँ, फिलहाल।'

'मुझे तुमसे कुछ कहना है।'

'लेकिन मैं—।'

'तुम्हारे मालिक के फायदे की बात है।'

पासेपार्टाऊट इस नरमी से मानो प्रभावित होकर जासूस के पीछे चल दिया। दोनों जहाज के अग्र भाग में बैठ गये।

'तुमने मुझे मारा तो है,' फिक्स ने कहा, 'अच्छा है। मैं इसी की आशा करता था। अब मेरी बात सुनो। अब तक तो मैं तुम्हारे मालिक का शत्रु था, लेकिन अब मैं उनके साथ हूँ।'

'आखिरकार,' पासेपार्टाऊट ने चिल्लाकर कहा, 'तुमने उन्हें एक ईमानदार व्यक्ति माना तो।'

'नहीं, फ़िक्स ने रुखाई से कहा। 'मैं उन्हें एक धूर्त समझता हूँ। उत्तेजित न होना। मुझे बात कर लेने दो। जब तक मिस्टर फॉग अँगरेजी अमलदारी में थे उन्हें, वारण्ट का इन्तजार करते हुए, रोक रखने में मेरा स्वार्थ था। उसके लिए, जो कुछ मैं कर सका, मैंने किया। मैंने उनके खिलाफ बम्बई के पुरोहितों को भेजा, मैंने तुम्हें हाँग-काँग में शराब पिलाई, तुम्हें तुम्हारे मालिक से जुदा किया, उनसे याकोहामा जहाज छुड़वाया।'

पासेपार्टाऊट की मुट्ठियाँ बँध गईं और उसी दशा में उसने यह सब सुना।

'अब, फिक्स फिर बोला, 'मिस्टर फॉग इँगलैण्ड वापस होते दिखाई देते हैं। मैं उनका पीछा वहाँ करूँगा लेकिन अब आगे से मैं उतनी ही सावधानी और उतने ही उत्साह से उनके रास्ते की बाधाओं को हटाऊँगा जितनी सावधानी और जितने उत्साह से मैंने उन्हें उनके रास्ते में डाला था। तुम देखते हो कि मेरा दाँव अब बदल गया है और ऐसा इसलिए हुआ है कि मेरा स्वार्थ इसे चाहता है। तुम्हारा स्वार्थ भी कुछ मेरा जैसा ही है। तुम केवल इँगलैण्ड ही में जान सकोगे कि तुम एक मुजरिम के अनुचर हो या एक ईमानदार व्यक्ति के!'

पासेपार्टाऊट ने फिक्स की बातें बड़े ध्यान से सुनीं और उसे विश्वास हो गया कि वह बिल्कुल विश्वास और भरोसे की बातें कह रहा था।

'क्या हम मित्र हैं?' फिक्स ने पूछा।

'मित्र, नहीं।' पासेपार्टाऊट ने उत्तर दिया, 'साथी, हाँ और वह भी इस शर्त पर कि जरा भी धोखा हुआ नहीं कि मैंने तुम्हारी गर्दन मरोड़ी।'

'मंजूर,' जासूस ने खामोशी से कहा।

ग्यारह दिनों बाद, तीसरी दिसम्बर को, 'जेनरल ग्राएट' जहाज गोल्डेन गेट की खाड़ी में दाखिल हुआ और सैनफ्रैन्सिसको पहुँच गया।

मिस्टर फॉग को न तो एक भी दिन की बचत हुई थी और न हानि।

(२५)

उस समय सुबह के सात बजे थे जब मिस्टर फॉग, श्रीमती आऊदा और पासेपार्टाऊट ने अमरीका के महाद्वीप पर कदम रक्खा। अगर यह नाम उस तैरते हुए प्लैटफार्म को दिया जा सकता है जहाँ वे लोग उतरे। लहरों के साथ उठते और गिरते हुए यह प्लैटफार्म जहाजों के सामान लादने और उतारने के काम को आसान कर देते थे। सब नापों और सब राष्ट्रों के जहाज वहाँ थे और स्क्रामेएटो तथा उसकी सहायक नदियों पर तैरते हुए कई बरामदोंवाले जहाज भी थे। वहाँ मेक्सिको, पेरू, चिली, ब्राजील, योरुप, एशिया और प्रशान्त महासागर के सभी टापुओं तक विस्तृत व्यापार का बहुत-सा माल भी इकट्ठा था।

पासेपार्टाऊट को आखिरकार अमरीका की भूमि का स्पर्श करके बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने सोचा कि नीचे धरती पर उतरते समय वह एक खतरनाक उछाल अपने निजी शानदार तरीके से मारेगा। लेकिन जब वह प्लैटफार्म पर गिरा तो वह उसमें घुस-सा गया क्योंकि प्लैटफार्म के कुछ तख्ते कीड़ों के खाये हुए थे। नये महाद्वीप की धरती पर जिस प्रकार वह उतरा था उससे बहुत ज्यादा कुंठित और खिन्न होकर वह भयंकरता से चिल्लाया। इस चिल्लाहट ने उन असंख्य पक्षियों के झुण्ड को उड़ा दिया जो इन हिलते-डुलते प्लैटफार्म के हमेशा के निवासी हैं।

उतरते ही मिस्टर फॉग ने यह दरयाफ्त किया कि न्यूयार्क जानेवाली रेल सबसे पहले कै बजे छूटती थी। उस समय शाम के छः बजे थे। उनके पास तब कैलीफोर्निया की राजधानी में व्यय करने के लिए एक पूरा दिन था। उन्होंने अपने और श्रीमती आऊदा के लिए एक गाड़ी मँगवाई। पासेपार्टाऊट ऊपर बाक्स पर बैठ गया और तीन डालर के किराये पर गाड़ी इन्टरनेशनल होटल की तरफ चल दी।

इस ऊँचे स्थान से, जहाँ पासेपार्टाऊट बैठा था, उसने बड़ी जिज्ञासा से अमरीकन नगर को देखा। इसकी आँखों के सामने से चौड़ी सड़कें, नीचे लगातार बने हुए मकान, ऐंग्लो-सेक्सन गोथिक गिरजे और मंदिर, बड़े बन्दरगाह, आलीशान गोदाम, कुछ लकड़ी के और कुछ ईंटों के, सड़क पर की अनेक गाड़ियाँ, मोटरलारियाँ और घोड़ागाड़ियाँ गुजरीं। भीड़-भाड़वाले फुटपाथों पर अमरीकन और यूरोपियन ही नहीं बल्कि चीनी और जापानी भी थे। वहाँ की २ लाख से अधिक आबादी के यह लोग विशेष अंग थे।

पासेपार्टाऊट ने जो कुछ भी देखा उस पर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। अब भी वह १८४६ के नगर में था जो कि डाकुओं, आग लगानेवालों और वहाँ के अपार स्वर्ण के पीछे दौड़नेवाले खूनियों का नगर था। वहाँ सब प्रकार के लुटेरों का जमघट था जो सोने के बुरादे से जुआ खेलते थे और जिनके एक हाथ में पिस्तौल और दूसरे में चाकू होता था। लेकिन यह लाजवाब समय गुजर गया था। अब तो सैनफ्रैन्सिसको एक बड़ा कारोबारी नगर था। इन तमाम सड़कों और कुंजों के ऊपर सिटी-हॉल की मीनार दिखाई देती थी। यह सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं जिनके बीच-बीच चौकोर पार्क थे। एक चीनी बस्ती भी थी। ऐसा मालूम होता था कि ब्रिटिश साम्राज्य से

वह बस्ती एक बक्स में रखकर वहाँ भेज दी गई हो। खानों में काम करनेवालों जैसी लाल कमीजें, या पर लगाये हुए इण्डियन नहीं दिखाई दिये। हाँ, रेशमी हैट और काले कपड़े पहिने हुए बड़े फुर्तीले सज्जन पुरुष दिखाई दिये। मान्टगोमरी स्ट्रीट, रीजेण्ट स्ट्रीट लण्डन, पेरिस की बुलेवर्ड डेस इटैलियन्स आफ पेरिस, न्यूयार्क की ब्राडवे, शिकागो की स्टेट स्ट्रीट की तरह यहाँ की बहुत सी सड़कों के किनारे ऐसी दुकानें थीं जहाँ की खिड़कियों में सारे संसार की वस्तुएँ रक्खी थीं।

जब पासेपार्टऊट इन्टरनेश्नल होटल आया तो उसे लगा जैसे कि वह लण्डन से कहीं गया ही न हो। होटल की निचली मंजिल में एक बड़ा मदिरालय था, एक भोजनालय में रक्खी हुई आलमारी या मेज के समान जो उधर से गुजरनेवाले हर व्यक्ति के लिए मुफ्त थी। सूखा गोश्त, घोंघे, शोरबा, बिस्कुट, और पनीर मुफ्त दिये जाते थे। ग्राहक को केवल अपनी शराब का दाम देना पड़ता था। यह पासेपार्टऊट को बिल्कुल अमरीकन ही जँचा।

होटल का भोजनालय बड़ा सुखद था। मिस्टर फॉग और श्रीमती आऊदा एक मेज के सामने बैठ गये। काले-कलूटे हब्शियों ने छोटी-छोटी रकाबियों में उनके सामने अनेक खाद्य पदार्थ चुन दिये।

नाश्ते के बाद फिलियास फॉग श्रीमती आऊदा के साथ होटल से चल दिये और अँगरेजी कॉन्सल के दफ्तर में गये ताकि उनके पासपोर्ट पर हस्ताक्षर हो जायँ। चबूतरे पर उन्हें अपना नौकर मिला जिसने पूछा कि क्या, पैसेफिक रेल पर सवारी करने से पहले, कुछ एनफील्ड की बन्दूकें और कोल्ट के पिस्तौल खरीद लेना बुद्धिमत्ता न होगी। पासेपार्टऊट ने सिआऊक्स और पानीज के विषय में बहुत कुछ सुन रक्खा था जो साधारण स्पेन के डाकुओं की तरह रेलगाड़ियों को रोक देते थे। मिस्टर फॉग ने उत्तर दिया

कि इस प्रकार की सावधानी बेकार थी, लेकिन उन्होंने उसे इस बात की स्वतंत्रता दे दी कि वह जैसा मुनासिब समझे वैसा करे। तब वे कॉन्सल के दफ्तर में गये।

फ़िलियास फ़ॉग अभी दो सौ कदम भी नहीं गये थे कि बड़ी-से-बड़ी दुर्घटना के समान उन्हें फ़िक्स मिला। फ़िक्स ने बड़ा आश्चर्य प्रकट किया। खूब! मिस्टर फ़ॉग और उसने साथ-साथ प्रशान्त महासागर को पार किया और वे एक दूसरे से जहाज पर मिले भी नहीं! फिर भी उस व्यक्ति से मिलकर फ़िक्स को सम्मान ही प्राप्त होना चाहिए था जिसका उसके ऊपर इतना एहसान लदा था। चूँकि उसका काम योरुप में लगा था, उसे मिस्टर फ़ॉग की मधुर टोली में यात्रा करने में आनन्द प्राप्त होगा।

मिस्टर फ़ॉग ने जवाब दिया कि सम्मानित तो वे ही हुए थे। फ़िक्स, जिसने उन्हें आँख से ओझल न होने देने का इरादा कर लिया था, बोला, 'चलिए हम लोग सैर करें।' प्रस्ताव स्वीकृत हो गया।

मिस्टर फ़ॉग, श्रीमती आऊदा और फ़िक्स सड़कों पर घूमे। शीघ्र ही वे मांगटगोमरी स्ट्रीट पर आये जहाँ बड़ी भीड़ थी। किनारे पटरियों पर, बीचोबीच सड़क पर, घोड़ागाड़ी की पटरियों पर, गाड़ियों और मोटर-लारियों के अविराम चलने पर भी, सड़कों की सीढ़ियों पर, सब मकानों की खिड़कियों पर और यहाँ तक कि छतों पर भी बड़ी भीड़ इकट्ठा थी। इश्तहार लिये हुए लोग घूम रहे थे। हवा में झण्डे और फीते लहरा रहे थे। हर तरह आवाजें उठ रहीं थीं—

'कैमरफील्ड की जय!'
'मन्डीब्वाय की जय!'

यह एक राजनीतिक सभा थी। कम-से-कम फ़िक्स ने ऐसा ही सोचा और उसने यह कहते हुए अपने विचार मिस्टर फ़ॉग पर प्रकट किये—

'अच्छा हो, श्रीमान्, अगर हम इस भीड़ में न पड़ें। वहाँ धक्कों के अलावा और कुछ नहीं मिलेगा।

'वास्तव में', फ़िलियास फ़ॉग ने जवाब दिया, 'धक्के, अगर वे राजनीतिक धक्के हैं, तो वे धक्के नहीं कहे जायँगे।'

इस बात पर फ़िक्स बिना हँसे नहीं रह सका, और देखने के लिए श्रीमती आऊदा, मिस्टर फॉग और वह खुद तीनों एक सीढ़ी पर चढ़ गये जो एक चबूतरे के ऊपर तक पहुँचती थी। यह चबूतरा माण्टगोमरी स्ट्रीट के ऊपरी सिरे पर था। सड़क के दूसरी तरफ उनके सामने, एक स्थानीय कोयले के सौदागर के चट्टे और एक पेट्रोल बेचनेवाले के गोदाम के बीच वहाँ खुली हवा में एक बड़ा प्लैटफार्म था। उसकी तरफ ही भीड़ों के जत्थे-के-जत्थे दौड़े जा रहे थे।

यह सभा हो किसलिए रही थी? इसके करने का प्रयोजन क्या था? फ़ॉग साहब यह सब नहीं जानते थे। क्या यह किसी बड़े सैनिक या घरेलू अफसर को मनोनीत करने के लिए था या किसी गवर्नर या कॉंग्रेस के सदस्य को मनोनीत करने के लिए। ऐसा माना जा सकता था, शहर को आन्दोलित करनेवाली इस तीव्र उत्तेजना को देखकर।

इस समय भीड़ में बड़ी हलचल हुई। हर एक का हाथ ऊपर उठा था। कुछ की मजबूती से मुट्ठियाँ बँधी हुई थीं, और जो तेजी से ऊपर उठते और गिरते थे। मत प्रदान करने के लिए आवाजें उठ रही थीं। भीड़ पीछे हटी। झण्डे हिले। वे थोड़ी देर के लिए गायब हुए और फिर चिथड़ों के रूप में दिखाई दिये। भीड़ का रेला बढ़ा। हर एक सिर ऊपर-नीचे उठा और गिरा मानो समु

में यकायक तूफान आ गया हो। काली टोपियों की संख्या कम हुई और उनमें से बहुतों की ऊँचाइयाँ कम हो गईं।

'यह तो एक सभा ही है' फिक्स ने कहा, 'और जिस समस्या को लेकर यह की गई है, वह अवश्य ही उत्तजक समस्या होगी। मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर वे लोग अब भी अलाबामा मामले पर बहस कर रहे होंगे, यद्यपि वह अब तय हो चुका है।'

'शायद,' मिस्टर फॉग ने सरलता से उत्तर दिया।

'हर हालत में,' फिक्स ने जवाब दिया, 'दो खिलाड़ी आमने-सामने हैं, एक मिस्टर कैमरफ़ील्ड और दूसरे मिस्टर मन्डीब्वाय।'

मिस्टर फॉग की बाहु पर झुकी हुई श्रीमती आऊदा ने इस हंगामे को आश्चर्य से देखा। फिक्स अपने पड़ोसी से पूछने जा रहा था कि उस जोशीले उफान का कारण क्या था, कि और जोर का हंगामा हुआ। अपमान-मिश्रित जय जयकार की चिल्लाहटें और बढ़ गईं। झण्डों के डण्डे लाठियों में बदल गये। हाथों की जगह हर तरफ घूँसे चल रहे थे। अपने रास्तों में भीड़ के कारण रुकी हुई बसों और गाड़ियों की छतों से खूब जोर की हाथा-पाई हुई। हर चीज का इस्तेमाल हथियारों के रूप में हुआ। ऊपर हवा में जूतों ने वक्र-रेखाएँ बनाईं और ऐसा प्रतीत हुआ मानो कुछ पिस्तौलों ने अपनी राष्ट्रीय आवाजों को भीड़ की चिल्लाहटों के साथ मिला दिया था।

भीड़ सीढ़ियों की ओर बढ़ी और नीचे के ओटों पर टूट पड़ी। दो दलों में से एक पिछाड़ दिया गया था, यह तय था मगर निष्पक्ष तमाशबीन यह न जान सके की मिस्टर मन्डीब्वाय जीते थे या कैमरफ़ील्ड।

'मैं समझता हूँ कि अब हम लोगों के यहाँ से चल देने म ही बुद्धिमानी है' फिक्स ने कहा जो अपने असामी का जख्मी होना

या किसी फसाद में फँस जाना नहीं चाहता था। 'अगर यह एक अँगरेज का सवाल है अगर हम पहिचान लिये गये तो इस मेले में हम लोगों की अच्छी दुर्गति होगी।'

'एक अँगरेज नागरिक—'फिलियास फॉग ने जवाब दिया।

लेकिन वह भद्र पुरुष अपना वाक्य न समाप्त कर सका। उनके पीछे, सीढ़ियों के ऊपर चौतरे पर बड़ी चीख-पुकार मची हुई थी। वे चिल्ला रहे थे 'मन्डीब्राय की जय! मन्डीब्राय की जय!' यह सहायता के लिए आता हुआ मतदाताओं का एक दल था जो कैमरफील्ड के दल पर आक्रमण कर रहा था।

मिस्टर फॉग, श्रीमती आऊदा और फिक्स ने अपने को भयंकर परिस्थिति में पाया। अब भाग जाने का समय नहीं था। मूठवाले बेतों और डण्डों से हथियारबन्द आदमियों के इस रेले को रोकना कठिन था। फिलियास फॉग और फिक्स ने युवती को बचाने का प्रयत्न किया मगर इस प्रयत्न में इनका कचूमर निकल गया। हमेशा की तरह गम्भीर श्री फॉग ने इन हथियारों से अपनी रक्षा करने की कोशिश की जो कुदरत ने हर अँगरेज की बाँहों के सिरों पर दिये हैं, लेकिन कोई नतीजा नहीं हुआ। लाल दाढ़ी, चौड़े कंधों, तमतमाये चेहरेवाले एक उजड्ड भीमकाय पुरुष ने मिस्टर फॉग को मारने के लिए अपना बेढब घूँसा ताना और उनको बहुत जख्मी कर देता अगर फिक्स ने बीच में पड़कर घूँसा अपने ऊपर न ले लिया होता। यह दैत्य अपने गिरोह का सरदार मालूम देता था। फौरन् ही फिक्स की रेशमी टोपी के नीचे एक गुलुम-सा उठ आया और उसकी रेशमी टोपी एक साधारण टोपी में बदल गई।

'याँन्की कहीं का! अपने शत्रु पर गहरी घृणा की नजर डालते हुए मिस्टर फॉग ने कहा।

'अँगरेज !' दूसरे ने जवाब दिया। 'हम दोनों फिर कभी निबटेंगे।'

'जब तुम चाहो।'

'तुम्हारा नाम ?'

'फिलियास फॉग, और तुम्हारा ?'

'कर्नल स्टैम्प प्रॉक्टर।

तब फिक्स को नीचे ढकेलती हुई भीड़ निकल गई। वह उठा। उसके कपड़े फट गये थे लेकिन उसका हृदय उद्विग्न नहीं था। उसका सफरी ओवरकोट दो असम भागों में विभाजित हो गया था और उसकी पतलून कुछ भारतवासियों की पतलूनों के समान हो गई। संक्षेप में कहा जा सकता है कि श्रीमती आऊदा बच गई थीं। जो कुछ बीती वह फिक्स ही पर बीती।

'धन्यवाद' जैसे ही वे भीड़ से बाहर हुए, मिस्टर फॉग ने कहा।

'धन्यवाद की क्या जरूरत है,' फिक्स ने कहा, 'लेकिन अब मेरे साथ आइये।'

'कहाँ ?'

'दर्जी के यहाँ।'

निस्सन्देह यह प्रस्ताव अच्छा था। फिलियास फॉग और फिक्स के कपड़े चिथड़े हो गये थे मानो यह दोनों सज्जन श्रीमान् मन्डीब्वाय और कैमरफील्ड के लिए लड़े हों।

एक घण्टे बाद उनके पास इज्जत के कपड़े और टोपियाँ थीं। तब वे इन्टरनेशनल होटल वापिस आये।

पासेपार्टाऊट वहाँ अपने मालिक का इन्तजार कर रहा था और आधे दर्जन तेज मारवाले, छः नली के पिस्तौल लिये हुए था। जब उसने फिक्स को मिस्टर फॉग के साथ देखा तो उसका माथा सिकुड़ गया। श्रीमती आऊदा ने संक्षेप में सारी घटना

बतायी जिसे सुनकर वह फिर शांत हो गया। फिक्स अब वाकई में शत्रु नहीं बल्कि मददगार ही लगता था। वह अपने वचनों का पालन कर रहा था।

भोजन के बाद यात्रियों और उनके सामान को स्टेशन तक पहुँचाने के लिए एक गाड़ी आई। जब वे गाड़ी में चढ़ रहे थे तो मिस्टर फॉग ने फिक्स से कहा,—

'क्या आपको कर्नल प्रॉक्टर फिर दिखाई दिये थे?'

'नहीं' फिक्स ने जवाब दिया।

'मैं उसे पाने के लिए अमरीका फिर आऊँगा' मिस्टर फॉग ने रुखाई से कहा। 'एक अँगरेज नागरिक अपने साथ ऐसा बर्ताव होना पसन्द नहीं करेगा।'

जासूस मुस्कराया और कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन यह देखा गया है कि मिस्टर फॉग उन अँगरेजों में से थे जो घर पर तो द्वन्द्व-युद्ध पसन्द नहीं करते मगर विदेश में अवश्य लड़ते हैं और ऐसा वे उस समय करते हैं जब उनको अपने सम्मान की रक्षा करनी होती है।

पौने छः बजे यात्री स्टेशन पहुँच गये और देखा कि गाड़ी छूटनेवाली थी।

जिस समय मिस्टर फॉग डिब्बे में चढ़ने जा रहे थे, उन्होंने एक कुली को पुकार कर पूछा,—

'क्या आज यहाँ सैनफ्रैन्सिसको में कोई गड़बड़ थी?'

'यह एक राजनीतिक सभा थी, श्रीमान्,' कुली ने उत्तर दिया।

'लेकिन मेरा खयाल है कि मैंने सड़कों पर लोगों में कुछ आवेश देखा था।'

'एक चुनाव के लिए संघटित यह एक सभा थी।'

'शायद किसी नेता के पद का चुनाव था?' फॉग साहब ने प्रश्न किया।

'नहीं, श्रीमान्, शान्ति के न्यायाधीश के लिए।' इस उत्तर पर फिलियास फॉग उछलकर डब्बे में चढ़ गये और गाड़ी पूरी रफ्तार से चल दी।

(२६)

'सागर से सागर तक'—ऐसा अमरीकन लोग कहते हैं और यही चार शब्द 'ग्राण्ड ट्रंक' के नाम के लिए उपयुक्त हैं। 'ग्राण्ड-ट्रंक' 'संयुक्तराष्ट्र' को उस जगह पार करती है जहाँ सबसे ज्यादा चौड़ाई है; लेकिन वास्तव में पैसिफिक रेल रोड दो स्पष्ट भागों में विभाजित है। एक भाग सेन्ट्रल पैसिफिक है जो सैनफ्रैन्सिसको से ऑग्डेन तक है और दूसरा भाग यूनियन पैसिफिक है जो ऑग्डेन से ओमाहा तक है। उस बिन्दु पर पाँच स्पष्ट रेखाएँ मिलती हैं। इस प्रकार ओमाहा और न्यूयार्क में एक सम्बन्ध-सा हो गया है।

इसलिए अब न्यूयार्क और सैनफ्रैन्सिसको एक अटूट धातु के फीते द्वारा जुड़ गये हैं जिसकी लम्बाई ३७८६ मीलों से कम नहीं है। ओमाहा और पैसिफिक के दरम्यान रेल की पटरी देश के उस भूभाग को पार करती है जहाँ अब भी इण्डियन और जंगली जानवर पाये जाते हैं। यह एक विस्तृत क्षेत्र है जिसको १८४५ में मार-मांस ने उपनिवेश के रूप में बसाना शुरू किया था। इसके बाद इलीनोइस ने उन्हें भगा दिया था।

पहले, बड़ी अनुकूल परिस्थितियों में, न्यूयार्क से सैनफ्रैन्सिसको जाने में छः महीने लगते थे। अब आजकल इसमें सात दिन लगते हैं।

१८६२ में, दक्षिणी कॉंग्रेस के विरोध के बावजूद भी रेल का रास्ता ४१वीं और ४२वीं समानान्तर रेखाओं के मध्य स्थित किया गया था। प्रेसीडेण्ट लिङ्कन, जिनकी याद में लोग रोते हैं,

वही व्यक्ति हैं जिन्होंने खुद ओमाहा के शहर में, नवीन रेल की पटरियाँ बिछाने का काम प्रारम्भ किया था और इस काम को कार्यरूप में उसी अमरीकन स्फूर्ति से परिणत किया था जो न तो धीमी है और न बँधे हुए दैनिक कार्य के समान। कार्य-संचालन की तेजी ने किसी भी प्रकार उसकी सम्पूर्णता को क्षति नहीं पहुँचाई। वृक्षहीन घास के मैदानों में डेढ़ मील प्रतिदिन की रफ्तार से काम चालू हुआ। कल बिछाई हुई पटरियों पर चलता हुआ रेल का इंजन दूसरे दिन के लिए पटरियाँ ले जाता था और उन पर उसी समानुपात में दौड़ता था जिसमें वे बिछाई गई थीं।

आईओआ के राष्ट्र में पैसिफिक रेलरोड की उसी रास्ते पर अनेक शाखाएँ हैं—कॉनसॉस, कोलोरैडो और ओरेगॉन। ओमाहा को छोड़कर यह रास्ता प्लेट नदी के बायें किनारे नार्थ फोर्क के मुहाने तक जाता है। फिर साउथ फोर्क की तरफ जाता है, लारमाइन प्रदेश को पार करता है। वाहसैच पहाड़ों को पार करता है, साल्ट लेक घूमता है, मॉरमान्स की राजधानी साल्टलेक नगर पहुँचता है, टुइला की घाटी में डूब जाता है और अमरीकन रेगिस्तान पार करता है। इसके बाद सिडार और हम्बोल्ट पहाड़ों को, हम्बोल्ट नदी को, सीरिया नेवादा को पार करता है और सैक्रामेण्टो होकर पैसिफिक पर पुनः उतरता है। यह रेल-पथ रॉकी पहाड़ों को भी पार करने में १२० फुट प्रतिमील से ज्यादा रफ्तार नहीं रखता।

लम्बी नस के समान यह रास्ता ऐसा ही था जिसे रेलें सात दिनों में तय कर डालेंगी और जो फ़िलियास फ़ॉग के लिए यह सम्भव कर देंगी कि वे न्यूयार्क में ११ तारीख को लिवरपूल जाने-वाला जहाज पा जायँ। ऐसा ही फ़ॉग साहब भी सोचते थे।

जिस डिब्बे में, फ़ॉग साहब बैठे थे वह एक लम्बी बस के समान था जो दो ठेलों पर टिका हुआ था। हर एक ठेले में चार पहिये

थे। अन्दर विभाग नहीं थे। दोनों तरफ बैठनेवाली जगहों की दो कतारें थीं। हर डिब्बे में श्रृंगार करनेवाले और दूसरे कमरे थे। पूरी गाड़ी एक प्लैटफार्म द्वारा सम्बन्धित थी और मुसाफिर गाड़ी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक आ जा सकते थे। उनके लिए इस प्रकार छज्जों, भोजनगृहों, धूम्रपानगृहों इत्यादि में लाना सुलभ था। कमी सिर्फ एक नाटकवाले डिब्बे की थी। शायद कभी यह कमी भी पूरी हो जाये।

प्लैटफार्मों पर पुस्तक और अखबार बेचनेवाले लगातार फेरी लगाते रहते थे और अपना सामान बेचते थे। शराब, खाद्य पदार्थों और सिगार बेचनेवालों को ग्राहकों की कमी नहीं थी।

यात्री ओकलैण्ड स्टेशन से छः बजे चले। रात हो ही गई थी, ठण्डी और वीरान। मेघाच्छन्न आकाश हिमपात का भय दिखा रहा था। गाड़ी बड़ी तेज चाल से नहीं चल रही थी। रुकने के क्षणों का शुमार करते हुए इसकी रफ्तार २० मील प्रतिघण्टा से अधिक नहीं थी।

डिब्बे में उन्होंने बात चीत नहीं की। शीघ्र ही यात्री सो गये। पासेपार्टाऊट जासूस के पास बैठा लेकिन उसने उससे बात नहीं की। पिछली घटनाओं से उनके सम्बन्ध कुछ ठण्डे पड़ गये थे। कोई सहानुभूति या प्रगाढ़ता नहीं रह गई थी। फिक्स ने अपना तरीका बदल दिया था लेकिन पासेपार्टाऊट ने पूर्ण अलगाव रक्खा। जरा भी शक होने पर वह अपने पुराने दोस्त का गला दबाने को तैयार था।

गाड़ी चलने के घण्टे भर बाद बारीक बर्फ गिरना शुरू हो गई जो कि सौभाग्य से रेलगाड़ी की चाल में बाधा न डाल सकी। खिड़कियों से सिवाय एक बड़ी सफेद चादर के और कुछ नहीं दिखाई पड़ता था। इस चादर के खिलाफ इंजन का धुआँ सुरमई मालूम पड़ता था।

आठ बजे एक नौकर डिब्बे में यह बताने आया कि सोने का समय हो गया था। यह शयन करनेवाला डिब्बा था। होशियारी से बँधे हुए बिस्तरे एक निराले ढंग से खुल गये। कुछ ही क्षणों में बैठनेवाली जगहें आप से आप हट गईं और हर एक यात्री के पास एक सुखद बिस्तरा हो गया जिन्हें मोटे पर्दों ने भद्दी निगाहों से बचा लिया। चादरें साफ थीं और तकिये मुलायम थे। अब लेटने और सोने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना था जिसे हर एक ने किया। मालूम होता था मानो वह किसी जलपोत का एक सुखद कमरा हो। उधर कलीफोर्निया के प्रान्त को रेलगाड़ी पूरी रफ्तार से पार कर रही थी।

सैनफ्रैन्सिसको और सैक्रामेण्टो के उस दरम्यानी भाग में जमीन बहुत पहाड़ी नहीं है। रेलपथ का यह भाग सेन्ट्रल पैसिफिक कहलाता है। पहले इसके रवाना होने का स्थान सैक्रामेण्टो था, सैनफ्रैन्सिसको से कैलीफोर्निया की राजधानी तक रास्ता सीधा उत्तर पूर्व को जाता था, उस अमरीकन नदी के किनारे होकर जो सैनपैबलो की खाड़ी में गिरती है। इन दो प्रसिद्ध शहरों के बीच १२० मीलों का फासला छः घण्टे में तय किया जाता था। आधी रात को जब यात्री अपनी पहली नींद ले रहे थे, यात्री सैक्रामेण्टो से गुजरे। उन्होंने उस बड़े शहर का कुछ भी नहीं देखा जो कि कैलीफोर्निया की सरकार की राजधानी थी। न तो इसके सुन्दर प्लैटफार्मों को देखा, न इसकी चौड़ी सड़कों, शानदार होटलों, चौराहों और गिर्जों को।

सैक्रामेण्टो को छोड़ने के बाद गाड़ी ने रासलिन जङ्क्शन, आबर्न और कोलफैक्स स्टेशनों को पार किया। इसके बाद उसने सीरिया नेवादा में प्रवेश किया। प्रातःकाल सात बजे सिस्को स्टेशन पड़ा। एक घण्टे बाद मुसाफिर लोग जागे और वह शयनकक्ष फिर एक साधारण डिब्बे में परिवर्तित हो गया। यात्री लोग इस पहाड़ी

देश के नयनाभिराम दृश्य की झलक खिड़कियों में से पा सकते थे। सीरिया के घुमाव-फिरावबाले रास्तों का रेल के रास्ते ने अनुसरण किया, कहीं पहाड़ों से सटा हुआ, कहीं ढालू पहाड़ों के ऊपर लटका हुआ। रास्ता बहुत घुमाव का था। रेल का इंजन एक पीछा किये जानेवाले जानवर की तरह फुफकारता हुआ जा रहा था जिसकी चिमनी से भयानक रोशनी निकल रही थी। सीटी तेजी से बज रही थी और इंजन के आगे जानवर हटानेवाली वस्तु पंखे के समान फैली हुई थी। रेल की आवाज झरनों और जलधाराओं की आवाजों में मिल जाती थी। इंजन का धुआँ पेड़ों की शाखाओं में बिंध जाता था।

वहाँ उस रास्ते पर पुल या सुरंगें नहीं थीं। रेलपथ पहाड़ों को घूम-घूमकर जाता था और एक जगह से दूसरी जगह जल्दी पहुँचने के लिए सीधी रेखा के समान नहीं जाता था। इस प्रकार रास्ता प्रकृति की हत्या भी नहीं करता था।

लगभग नौ बजे, रेल नेवादा के राज्य में दाखिल हुई। बीच में कारसन घाटी पड़ी। रेल बराबर उत्तर-पूर्व का ही रुख किये रही। दोपहर को यह रीनो से चली जहाँ नाश्तापानी के लिए यात्रियों को बीस मिनट मिले।

इस स्थान से रेलपथ ने हम्बोल्ट नदी का चक्कर लगाकर कुल मीलों तक उत्तर दिशा में अपना रुख रक्खा तब वह पूर्व की ओर मुड़ा और चश्मे का साथ उस समय तक नहीं छोड़ा जब तक हम्बोल्ट नहीं पहुँच गया। यहीं से नदी निकलती है।

नाश्ता करने के बाद मिस्टर फॉग, श्रीमती आऊदा और उनके साथी फिर गाड़ी में अपनी जगहों पर बैठ गये। फिलियास फॉग, श्रीमती आऊदा, फिक्स और पासेपार्टाऊट आराम से अपनी जगहों पर बैठ गये। अपनी आँखों के सामने गुजरते हुए उन्होंने

इस निराले देश को देखा। विस्तृत वृक्षहीन घास के मैदान, क्षितिज पर दिखाई पड़नेवाले पर्वत, नीचे झुकी हुई चट्टानें और फेना उगलते हुए स्वच्छ पानी के ढेर तथा इसी प्रकार की अनेक दूसरी वस्तुओं का दृश्य बड़ा मनोरम था। कभी-कभी दूर पर इकट्ठे होते हुए बड़े बिसन बैलों के झुण्ड चलते-फिरते बाँधों के समान प्रतीत होते थे। चरते हुए जानवरों की यह असंख्य सेनाएँ रेलपथ पर अलंघ्य बाधाएँ डाल देती हैं। रेलपथ पर ऐसे हजारों जानवर घण्टों तक घूमते हुए देखे गये हैं और वे भी खूब सटे हुए। ऐसी हालत में इंजन को उस वक्त तक रुके रहना पड़ता है जब तक रास्ता फिर साफ नहीं हो जाता।

इस मौके पर भी वही बात घटित हुई। लगभग ३ बजे दोपहर को दस या बारह हजार जानवरों के एक झुण्ड ने रेल के रास्ते को छाप लिया। अपनी चाल धीमी करके इंजन ने अपना अग्रिम पंखा इस विशाल झुण्ड में घुसेड़ देने का प्रयत्न किया लेकिन इस अभेद्य ढेर के सामने इंजन को रुकना ही पड़ा।

उन्होने इन भैंसों को देखा। अमरीकन इन्हें भैंसों के गलत नाम से ही पुकारते हैं। यह जानवर अपनी मुस्तैद चाल से घूम रहे थे और अक्सर भयानक रूप से फुफकार उठते थे। योरुप के बैलों से ज्यादा बड़े उनके शरीर थे। टाँगें छोटी थीं। पूँछें भी छोटी थीं। उन पर उभरी हुई एक गद्दी-सी थी जो एक मांसल कूबड़-सी बन गई थी। सींग जड़ के पास अलग-अलग थे। उनके सरों, गर्दनों और कन्धों पर रूखे बाल थे। इन चलते-फिरते ढेरों को रोकने की कोई तरकीब नहीं सोची जा सकी। यह बिसन बैल जब कोई रास्ता पकड़ लेते थे तो कोई भी इन्हें वहाँ से हिला नहीं सकता था, न उन्हें ठीक-ठाक ही कर सकता था। वे तो जिन्दा मांस के वे सोते थे जिन्हें कोई बाँध रोक नहीं सकते थे।

प्लैटफार्मों पर बिखरे हुए मुसाफिरों ने इस विचित्र दृश्य को देखा। फिलियास फॉग, जिन्हें सबसे ज्यादा जल्दी होनी चाहिए थी, अपनी जगह पर ही बैठे रहे और दार्शनिकता से विचार करते रहे उस समय तक जब तक स्वयम् उन बैलों की ही मर्जी रास्ता साफ कर देने की न हो जाये। जानवरों के झुण्डों के कारण इस विलम्ब पर पासेपार्टाऊट आगबबूला हो गया था। वह सब पिस्तौल उन पर दाग देना चाहता था।

'अजब मुल्क है!' वह चिल्लाया। 'सिर्फ ढोर रेल रोक लेते हैं और जुलूस में चलते हैं और वह भी इस इत्मीनान से मानो वे यात्रा में कोई अड़चन ही नहीं डाल रहे हैं। क्या खूब! मैं यह जानना चाहूँगा कि मिस्टर फॉग ने अपने प्रोग्राम में ऐसी बे मौके आ पड़नेवाली अड़चनों का भी अन्दाज लगा लिया था या नहीं! और तो और, इंजन-ड्राइवर भी अजीब है, जो अड़चन डालनेवाले जानवरों के इस ढेर में अपना इंजन झोंक देने का साहस नहीं करता!'

इंजन-ड्राइवर ने बाधा को दूर करने या उस पर विजय पाने का प्रयत्न नहीं किया था और ऐसा करने में उसने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था। वह अवश्य ही अगले पंखे से कुछ जानवरों को कुचल डालता; लेकिन इंजन ताकत से भरा तो था ही, तुरन्त रुक जाता और रेल के डिब्बे पटरी से गिरकर चूर हो जाते।

सबसे अच्छा रास्ता उस समय सब्र से इन्तजार करना था। रेल की रफ्तार की कमी उसे ज्यादा तेज करके पूरी की जा सकती थी। पूरे तीन घण्टे तक जानवर रास्ता रोके रहे और इतने में रात हो गई। इस समय झुण्ड की आखिरी कतारें पटरियों को पार कर रही थीं। पहली कतारें दक्षिणी क्षितिज के नीचे विलीन हो रही थीं।

उस समय तब आठ बजे थे जब रेल ने हम्बोल्ट शैलमाला की घाटियों को पार किया। साढ़े नौ बजे वह ऊटाह प्रदेश में दाखिल हुई। यही मारमोन देश की ग्रेट साल्ट लेक का भूभाग था।

(२७)

पाँच और छः तारीख के दरम्यान रात को रेल ने दक्षिण-पूर्व में पचास मील का सफर किया और तब उतनी ही दूर उत्तर की ओर चली। गाड़ी ग्रेट साल्ट लेक पहुँच रही थी।

लगभग नौ बजे प्रातःकाल पासेपार्टाऊट प्लैटफार्म पर हवा खाने गया। मौसम ठंडा था, आसमान ऊदा और हिमपात रुक गया था। कोहरे के कारण सूर्य का गोला बड़ा हो गया था और सोने के एक बड़े टुकड़े समान लगता था। पासेपार्टाऊट इसके मूल्य का अन्दाज पाउण्डों में लगा रहा था। उसी समय एक विचित्र महोदय की उपस्थिति ने उसके उस लाभदायक कार्य से उसका ध्यान हटाया।

यह महापुरुष एल्को स्टेशन पर रेल में बैठा था। इसका कद लम्बा, रंग भूरा, मूँछें, मोजे, सिल्क की टोपी, वास्कट, पतलून, सब काले रंग के थे। इसका गुलूबंद सफेद और दस्ताने कुत्ते की खाल के थे, जिनका रंग भी काला था। उसे एक पादरी समझा जा सकता था। वह गाड़ी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक गया और हर दरवाजे पर एक सूचना चिपका दी।

पासेपार्टाऊट ने इन सूचनाओं में से एक को जाकर पढ़ा जिसमें लिखा था कि एल्डर विलियम हिच, अड़तालिस नम्बर रेलगाड़ी पर अपनी उपस्थिति का फायदा उठाते हुए ग्यारह बजे से बारह बजे तक एक सौ सत्रह नम्बर के डब्बे में मारमोन धर्म पर भाषण करेंगे। वे उन तमाम लोगों को अपना भाषण सुनने के

लिए आमंत्रित करते हैं जो 'लैटर डे सेन्ट्स' के धर्म के सम्बन्ध में शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हैं।

'निस्सन्देह मैं जाऊँगा' पासेपार्टाऊट ने मन में कहा। पासे-पार्टाऊट मारमोन धर्म के विषय में कुछ नहीं जानता था। उसे इतना ही मालूम था कि धर्म में बहुपत्नीत्व या बहुपतित्व की प्रथा है और यह मारमोन समाज की नींव है।

सूचना तेजी से सारी गाड़ी में फैल गई। रेल में लगभग १०० मुसाफिर थे। इसमें से, कम-से-कम तीस व्यक्ति सभा की सूचना से प्रभावित हुए। यह लोग ११७ नम्बर डब्बे में ११ बजे जमा हो गये। पासेपार्टाऊट इन वफादार व्यक्तियों की पहली पंक्ति में बैठा था। न तो उसके मालिक ने और न फिक्स ने ही वहाँ जाने की तकलीफ गवारा की।

नियत समय पर एल्डर विलियम हिच खड़े हुए और बड़े उत्तेजक स्वर में चिल्लाये मानो बोलने से पहिले ही उनकी दलीलें काट दी गई हों—

'मैं आपको बताता हूँ कि जो स्मिथ एक शहीद है। उसका भाई हिराम एक शहीद है। संयुक्त राष्ट्र की सरकार का पैगम्बरों के प्रति अत्याचार ब्रीघैम यंग के रूप में एक और शहीद पैदा कर देगा। कौन है जो इसका खण्डन करने की हिम्मत कर सकता है?'

प्रचारक का खण्डन करने की हिम्मत किसी को नहीं हुई। उसके चेहरे की शान्त मुद्रा उसके भाषण की उत्तेजना से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी। लेकिन, 'निस्सन्देह उसके क्रोध को यूँ समझा जा सकता है कि अब मारमोन धर्म पर कुठाराघात हो रहा था। संयुक्त राष्ट्र की सरकार ने बड़ी कठिनाई से इन स्वतंत्र अन्धविश्वासियों को कम कर दिया था। सरकार ने ऊटाह प्रदेश को कब्जे में कर लिया था और संघ के नियम उस पर लागू कर दिये थे। इसी सिलसिले में

विद्रोह और बहुपत्नीत्व या बहुपतित्व के अपराध में ब्रीघैम यंग को जेल में डाल दिया था। उस काल से उस पैगम्बर के चेलों ने बड़े प्रयत्न किये और कार्य रूप में नहीं बल्कि मौखिक रूप में काँग्रेस की माँगों का विरोध किया।

हम देख रहे हैं कि एल्डर विलियम हिच रेल पर भी लोगों को बरगलाकर अपने धर्म में परिवर्तित करने का प्रयत्न कर रहे थे।

तब उन्होंने बयान किया और अपने बयान को अपनी तेज आवाज और अपने जोरदार अंग-संचालन से बल दिया। उन्होंने बाईबिल के समय से मारमोन धर्म के इतिहास का वर्णन किया,—

'किस प्रकार इजरायल में जोज़फ़ के कबीले के एक मारमोन पैगम्बर ने नवीन धर्म का इतिहास प्रकाशित किया और उसे वसीयत के रूप में अपने पुत्र मोरोम को दे दिया। किस प्रकार, कई शताब्दियों बाद इस नायाब पुस्तक का जोज़फ़ स्मिथ ने मिस्र की लिपि में अनुवाद किया। यही व्यक्ति, लो वारमॉण्ट प्रदेश का एक किसान था, १८२५ में एक अवतारी पैग़म्बर के रूप में प्रकट हुआ। किस प्रकार अन्त में एक स्वर्गीय दूत उसके पास आया और उसको भगवान् का इतिहास दे दिया।'

उसी क्षण उनके कुछ श्रोतागण वहाँ से चले गये क्योंकि वे उनके इस भाषण में दिलचस्पी न ले सके जिसमें सब पुराने राँझे के सिवाय कुछ नहीं था। विलियम बयान करते रहे कि कैसे स्मिथ ने अपने पिता, अपने दो भाइयों और कुछ शिष्यों को लेकर लैटर डे सेन्ट्स के धर्म की स्थापना की। यह धर्म अमरीका में ही नहीं, अपितु इंगलैण्ड, स्कैन्डिनेविया, और जरमनी में भी फैल गया। इसके अनुयायियों में कारीगर और सभ्य उद्योगों में लगे हुए अनेक व्यक्ति हैं; कि किस प्रकार ओहियो में एक उपनिवेश

कायम हुआ, किस प्रकार दो लाख डॉलर की कीमत से एक मंदिर बनाया गया और कर्कलैण्ड में एक नगर की स्थापना हुई; कि किस प्रकार स्मिथ एक प्रयत्नशील महाजन हो गया और एक बहुत दिनों से सुरक्षित रक्खी हुई लाश से कागज का एक लपेटा हुआ चोंगला प्राप्त किया जिसमें अब्राहम और दूसरे प्रसिद्ध मिस्री लोगों का लिखा हुआ एक विवरण था।

भाषण लम्बा हो रहा था और श्रोताओं की संख्या कम होती जा रही थी। अब सुननेवाले केवल बीस रह गये।

लेकिन लोगों के इस प्रकार उठकर चले जाने से व्याख्यानदाता एल्डर विचलित नहीं हुआ। उसने बयान जारी रखते हुए कहा,—'कि कैसे जो स्मिथ १८३७ में दिवालिया हो गया, कैसे उसके बर्बाद हुए असामियों ने उसे तारकोल से पोत दिया और फिर उस पर पर चिपका दिये। कैसे वह और अधिक सम्मानित रूप में फिर प्रकट हुआ। कैसे, कुछ वर्षों बाद, मिसौरी में एक उन्नतिशील सम्प्रदाय का मुखिया हुआ जिसके ३००० से कम चेले नहीं हुए। कैसे जेन्टाइल लोगों की घृणा ने उसे खदेड़ा और कैसे वह सुदूर पश्चिम को चला गया।'

दस श्रोता अब भी वहाँ जमे थे जिनमें ईमानदार पासेपार्टाऊट भी था जो बड़े ध्यान से सुन रहा था। उसे मालूम हुआ कि 'कैसे, बहुत अत्याचार के बाद, स्मिथ इलीनोइस में प्रकट हुआ और १८३९ में मिसीसिपी नदी के तट पर एक सुन्दर नगर नाऊवू स्थापित किया जिसकी आबादी बढ़कर २५००० हो गई। कैसे स्मिथ वहाँ की नगरपालिका का अध्यक्ष हुआ, प्रधान न्यायाधीश और प्रधान सेनापति हुआ। कैसे १८४३ में उसने संयुक्त राष्ट्र के सभापति के पद के लिए अपने को उम्मीदवार घोषित किया और अन्त में कैसे वह कारथेज में एक झाड़ी में घसीटा गया, जेल में डाला गया और नक़ाबपोश लोगों द्वारा कत्ल कर दिया गया।'

इस समय डब्बे में अकेला पासेपार्टाऊट ही सुननेवालों में रह गया था। एल्डर ने उसके चेहरे की तरफ देखते हुए, उसे अपने शब्दों से आकर्षित करते हुए उसे बताया कि स्मिथ के कत्ल के दो वर्षों बाद उसके उत्तराधिकारी, उत्साहित पैगम्बर ब्रीघैम यंग ने नाऊवू छोड़ दिया और सॉल्ट लेक के किनारे बस गया। उस शानदार प्रदेश में, उस उपजाऊ देश के मध्य एक नई बस्ती उस सड़क पर आबाद हो गई जो ऊटाह से कैलीफोर्निया जाती है। इसके लिए मारमोन धर्म के बहुपत्नीत्व या बहुपतित्व के उसूलों को धन्यवाद दिया जा सकता है।

'और इसी कारण कॉंग्रेस को हम लोगों से ईर्ष्या हो गई है! संयुक्तराष्ट्र के सिपाहियों ने ऊटाह की भूमि पर क्यों आक्रमण किया! क्यों, न्याय को हटाकर, हमारे सरदार ब्रीघैम यंग को कैद किया गया! क्या हम जोर और जुल्म सहन कर लेंगे? कभी नहीं। वरमाण्ट से भगाये गये, इलीनोइस से भगाये गये, ओहियो से भगाये गये, मिसौरी से भगाये गये, ऊटाह से भगाये गये, फिर भी हम जहाँ डेरा डालेंगे वहाँ एक स्वतंत्र अमलदारी कायम करेंगे। और तुम, मेरे भाई, क्या हमारी छत्रछाया में रहोगे?

'नहीं', पासेपार्टाऊट ने उत्तर दिया और तब उस अंधविश्वासी को रेगिस्तान में प्रचार करते हुए छोड़कर चल दिया।

लेकिन इस बातचीत के दरम्यान, गाड़ी तेज चल रही थी और लगभग साढ़े बारह बजे यह ग्रेट सॉल्ट लेक के उत्तर-पश्चिम कोने के पास पहुँची। वहाँ से इस अन्द्रूनी झील के दृश्य को एक विस्तृत परिधि में समेटा जा सकता था। इस झील का नाम डेड सी (मृतक सागर) भी था जिसमें अमरीकन जोर्डन गिरती थी। यह झील बड़ी सुन्दर है जो चारों तरफ चौड़ी चट्टानों से घिरी थी। इन चट्टानों पर नमक की पर्तें थीं। पहिले इसका जलीय धरातल एक

बड़े क्षेत्र को ढके हुए था परंतु समय पाकर इसके किनारे धीरे-धीरे ऊँचे हुए, ऊपरी क्षेत्रफल को कम कर दिया और झील की गहराई को बढ़ा दिया।

लगभग ७० मील लम्बी, ३५ मील चौड़ी यह झील समुद्र की सतह से ३००८ फुट ऊँची है। एस्फलाएट झील से यह भिन्न है जिसकी गहराई समुद्र से १२०० फुट नीचे है। इसमें काफी नमक घुला हुआ है और पानी की तौल का १ चौथाई ठोस पदार्थ है। इसका आपेक्षिक घनत्व ११७० है और स्रवित जल का १००० होता है। इसमें मछलियाँ नहीं रह सकतीं। जो मछलियाँ जोर्डन, वेबर और दूसरी नदियाँ या चश्मे बहा लाती हैं वे मर जाती हैं। लेकिन यह सत्य नहीं है कि इसके जल की गहराई इतनी है कि मनुष्य इसमें गोता नहीं लगा सकता।

झील के चारों तरफ के देश में खेती की हुई थी। मारमोन लोगों को खेती-बाड़ी का धन्धा मालूम था। उनके यहाँ पालतू जानवर भी थे। गेहूँ और दूसरे अनाजों के खेत भी थे। घास के मैदान, जिनमें खूब घास उगी हुई थी, बहुत थे। अनेक प्रकार के फूल भी थे। ऐसा दृश्य वहाँ छः महीने बाद दिखाई देता, लेकिन इस समय वहाँ की जमीन बर्फ की एक पतली तह से ढकी थी जो उस पर धीरे-धीरे उतर रही थी।

दो बजे यात्री ऑग्डेन में उतर पड़े। गाड़ी छः घण्टे रुकने को थी। मिस्टर फॉग, श्रीमती आऊदा और उनके दो साथियों के पास सेन्ट्स के शहर को देखने के लिए काफी समय था। ऑग्डेन से ब्रांच लाइन वहाँ जाती थी। इस बिल्कुल ही अमरीकन नगर को देखने के लिए दो घण्टे काफी थे। राष्ट्र के सभी शहरों के नमूनों पर यह शहर बना था जहाँ शतरंज के बोर्ड जैसी रूखी धारियाँ बनी थीं। विक्टर ह्यूगो के शब्दों में इसे समकोणों की धुँधली संजीदगी कहा जा सकता है। इस शहर के संस्थापक के दिमाग से मुकाबिले की

एकरूपता का विचार विलीन न हुआ होगा। एंग्लो सैक्सन लोगों की तो यह विशेषता है। इस विचित्र देश में, जहाँ कि लोग अपनी संस्थाओं के स्तर से गिरे हुए हैं, हर चीज चौकोर बनी है; शहर, मकान और मूर्खताएँ भी।

तीन बजे, यात्री शहर की सड़कों पर टहल रहे थे। यह नगर वहसाच पहाड़ों (Wah satch Mauntains) और जोर्डन नदी के बीच बना था। वहाँ बहुत कम क्या बिल्कुल ही गिरजाघर नहीं थे। हाँ, स्मारक के रूप में पैगम्बर का मकान, दरबार और किला अवश्य थे। नीली ईंटोंवाले मकान भी थे जिनमें बरामदे और बरसातियाँ बनी थीं। इन मकानों के चारों तरफ फुलवारियाँ भी थीं जिनमें भाँति-भाँति के फूल और ताड़ थे। १८५३ में बनी हुई मिट्टी और छोटे-छोटे दरियाई पत्थरों से बनी हुई दीवार से नगर घिरा हुआ था। मुख्य सड़क पर, जहाँ बाजार है, कुछ होटल थे जो बैठनेवाले सायबानों से सुसज्जित थे। एक सॉल्ट लेक हाउस भी था।

मिस्टर फॉग और उनके साथियों ने देखा कि नगर घना बसा हुआ नहीं था। सड़कें लगभग वीरान सी थीं। हाँ, मन्दिर के पास कुछ भीड़ जरूर थी जहाँ वे लोग सेठों के बने बाड़ों से घिरे मकानों को पार करके पहुँचे। औरतें बहुत थीं। इसका कारण मारमोन लोगों की गृहस्थियों की रचना थी जो बड़ी विचित्र हुआ करती थी। फिर भी यह न समझ लेना चाहिए कि सब ही मारमोन लोग अनेक पत्नियाँ रखनेवाले होते हैं। वे स्वतंत्र हैं, लेकिन यह कहना ठीक होगा कि ऊटाह की सब स्त्रियाँ विवाह करना चाहती हैं क्योंकि, देश के धर्म के अनुसार, अविवाहित स्त्रियाँ स्वर्ग में जाने का आशीर्वाद नहीं पा सकतीं। यह गरीब प्राणी न तो सम्पन्न ही थे और न प्रसन्न। उनमें से कुछ, जो अमीर थीं, छोटा, ऊँचा, काली रेशम का वस्त्र पहिने थीं और ऊपर एक शाल पड़ी थी। दूसरी स्त्रियाँ भारतीयों की तरह वस्त्र पहिने थीं।

एक विश्वास करनेवाले व्यक्ति की तरह पासेपार्टाऊट ने जरा भय से इन स्त्रियों को देखा जिन पर एक अकेले मारमोन को प्रसन्न रखने की जिम्मेदारी थी। अपनी समझ में उसने पति को अधिक दयनीय समझा। जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव के मध्य एक ही समय में इतनी बीबियों को लेकर चलना उसके लिए बड़ा भयंकर प्रतीत हुआ। उन्हें इन स्त्रियों को एक जत्थे की शक्ल में मारमोन लोगों के स्वर्ग में इस आशा से ले जाना होगा कि वे अनन्त काल तक गौरवशाली स्मिथ का सहवास प्राप्त करेंगी जो कि इस आनन्दागार का आभूषण होनेवाला था। निस्सन्देह पुकारा जाना उसने महसूस नहीं किया और उसने सोचा कि सॉल्ट लेक नगर की स्त्रियों ने उसे बड़ी व्यग्रता से देखा। बड़े सौभाग्य से, उसको सेन्टूस के उस नगर में अधिक देर नहीं रुकना पड़ा। चार बज के कुछ मिनटों पर यात्री फिर स्टेशन आ गये और डब्बे में अपनी जगहों पर बैठ गये।

सीटी बजी लेकिन पटरियों पर फिसलते हुए इंजन के कल-संचालित पहियों ने ज्योंही गाड़ी को कुछ गति प्रदान की 'रोको!' 'रोको!' की आवाज सुनाई पड़ी।

वे लोग अभी रवाना हुई रेलगाड़ी रोकते नहीं है। जिस सज्जन ने वह आवाज की थी वह प्रत्यक्ष ही एक मारमोन था जिसे देर हो गई थी। वह दौड़ने के कारण हाँफ रहा था। भाग्य से उसके लिए स्टेशन ने कोई फाटक या रोक नहीं रक्खी थी। अतः वह पटरियों पर दौड़ रहा था। वह आखिरी डब्बे के ओटों पर कूदकर चढ़ गया और बेदम होकर एक बैठने की जगह पर गिर पड़ा। पासेपार्टाऊट ने बड़े भावात्मक ढंग से यह उछल-कूद का करतब देखा। वह उस काहिल व्यक्ति को देखने उसके पास गया जिसमें उसे कुछ दिलचस्पी हो गई थी। उसे मालूम हुआ कि घर में किसी काण्ड के हो जाने के कारण ही वह इस प्रकार भागा था।

जब मारमोन कुछ ठीक हुआ, पासेपार्टाऊट ने नम्रतापूर्वक उससे यह पूछने का साहस किया कि उसके अपनी कै बीबियाँ थीं। जिस प्रकार वह भागकर आया था उससे उसने यही सोचा कि उस व्यक्ति के बीस से कम बीबियाँ न होंगी।

'एक, श्रीमान्!' मारमोन ने जवाब दिया। उसने अपनी बाँह, ऊपर आकाश की ओर उठाते हुए कहा, 'एक ही, और वह काफ़ी था।'

(२८)

ग्रेट साल्टलेक और ऑग्डेन का स्टेशन छोड़ने के बाद रेल एक घण्टे तक उत्तर की ओर वेबर नदी तक चली। अब तक सैनफ्रैन्सिसको से गाड़ी लगभग ९०० मील चली आई थी। इस स्थान को छोड़कर वाहसाच पहाड़ों की चट्टानी पहाड़ियों को पार करके गाड़ी फिर पूर्वी दिशा में चलने लगी थी। इन पहाड़ों और अपने नाम के उपयुक्त ही रॉकी माउन्टेन्स के बीचवाले प्रदेश में ही अमरीकन इन्जीनियरों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। रास्ते के इस भाग पर संयुक्तराष्ट्र की सरकार का प्रति मील ४८००० डॉलर खर्च हुआ था, जब कि मैदानी भाग में केवल १६००० डॉलर ही खर्च हुआ। लेकिन, जैसा कि पहिले कहा जा चुका है, इन इन्जीनियर लोगों ने प्रकृति की हत्या नहीं की थी। परीशानियाँ उठाते हुए, उन्होंने उसके साथ खेला था। उस विशाल तराई में पहुँचने के लिए सारे रेलपथ पर १४००० फुटलम्बी केवल एक ही सुरंग बनाई गई थी।

साल्टलेक पर पथ अपनी सबसे ज्यादा ऊँचाई पर पहुँच गया था। इस बिन्दु से बड़ा लम्बा घुमाव था जो कि बिटर क्रीक वैली की ओर उतरता था। वहाँ से एटलान्टिक और पैसिफ़िक महासागरों के बीच जल को विभाजित करनेवाली चट्टान पर फिर

चढ़ता था। इस पहाड़ी इलाके में चश्मे बहुत थे। मडी, ग्रीन तथा दूसरे चश्मों को पुलियों पर पार करना जरूरी था। जब यात्रा का अन्त करीब हुआ तो पासेपार्टाऊट अधिक बेचैन हुआ। इस ऊबड़-खाबड़ देश से निकलने में फिक्स को बड़ी प्रसन्नता होती। उसे विलम्बों का डर था, दुर्घटनाओं का डर था और वह अँगरेजी भूमि पर पैर रखने को फ़िलियास फॉग से भी ज्यादा उत्सुक था!

रात के दस बजे गाड़ी फोर्ट ब्रिडगर स्टेशन पर रुकी और तुरन्त ही वहाँ से चल दी। बीस मील आगे चलकर वाइओमिंग प्रदेश पड़ा। गाड़ी को तमाम बिटर क्रीक की घाटी का चक्कर करना पड़ा।

दूसरे दिन, ७वीं दिसम्बर को ग्रीन रिवर स्टेशन पर १५ मिनट गाड़ी रुकी। रात भर खूब बर्फ गिरती रही लेकिन वर्षा के कारण बर्फ आधी घुली हुई थी और इसी कारण रेलगाड़ी की गति में कोई बाधा नहीं पड़ी। इस खराब मौसम के कारण पासेपार्टाऊट बराबर बेचैन रहा क्योंकि बर्फ के जमा होकर पहियों को जाम कर देने की आशंका थी जिससे यात्रा खतरे में पड़ सकती थी।

'जाड़े के मौसम में सफर करने का अजीब खब्त है मालिक को!' पासेपार्टाऊट ने सोचा। 'क्या वे खुले मौसम तक इन्तिजार नहीं कर सकते थे? उस हालत में उनकी यात्रा और अधिक सुलभ हो सकती थी।'

लेकिन उसी समय, जब यह भला आदमी केवल आकाश की दशा और तापमान के गिरने की बात सोचने में लगा था, श्रीमती आऊदा अधिक गम्भीर खतरों की बात सोच रही थीं जिनकी उपज के और ही कारण थे।

कुछ मुसाफिर डब्बों के बाहर उतर गये थे और ग्रीन रिवर स्टेशन के प्लैटफार्म पर टहल रहे थे। वे रेल चलने का इन्तेजार कर रहे थे। युवती ने खिड़की के शीशे में से देखते हुए कर्नल स्टैम्प

प्रॉक्टर को पहिचान लिया जिसने सैनफ्रैन्सिसको में राजनीतिक सभा के समय मिस्टर फॉग के साथ बड़ी अभद्रता का व्यवहार किया था। कहीं उन्हें वह देख न ले, श्रीमती आऊदा पीछे हट गईं।

इस परिस्थिति ने श्रीमती आऊदा पर एक सजीव प्रभाव डाल दिया। वे उस व्यक्ति के प्रति आकर्षित थीं जिन्होंने प्रत्येक दिन उन्हें भक्ति के उपहार दिये थे, भले ही उन्होंने देते समय कुछ रुखाई दिखाई हो। निस्सन्देह वे उस भावना की सम्पूर्ण गहराई को नहीं सोच सकीं जिसे उनके रक्षक ने उनमें उकसा दी थी, और अब तक उस भावना को वे कृतज्ञता का ही नाम दे सकी थीं। यद्यपि उन्हें मालूम नहीं था, यह भावना कृतज्ञता से कुछ ज्यादा ही थी। इसीलिए उनके हृदय में उस असभ्य पुरुष को देखकर मरोड़ सी हुई जिससे मिस्टर फॉग कभी-न-कभी अपने जी की हविस निकालते। प्रत्यक्षतः यह संयोग की ही बात थी कि कर्नल प्रॉक्टर उस गाड़ी में था। वह वहाँ तो था ही, किसी-न-किसी प्रकार मिस्टर फॉग को अपने शत्रु को देखने से रोकना ही था।

जब गाड़ी फिर चल दी, श्रीमती आऊदा ने थोड़ी देर के लिए फॉग साहब की निद्रित अवस्था से लाभ उठाया और फिक्स तथा पासेपार्टाऊट को परिस्थिति से अवगत कराया।

'वह प्रॉक्टर यहाँ गाड़ी में है?' फिक्स ने चिल्लाकर कहा। 'अच्छा, घबराइये नहीं श्रीमती; फॉग साहब से निपटने के पहिले उसे मुझसे निपटना होगा! मुझे मालूम होता है कि इस सारे मामले में सबसे ज्यादा अपमान तो मेरा ही हुआ है!'

'और इसके अतिरिक्त,' पासेपार्टाऊट ने कहा, 'मैं उनका ख्याल रक्खूँगा, कर्नल है न'।

'मिस्टर फिक्स,' श्रीमती आऊदा ने कहा, 'मिस्टर फॉग यह कभी नहीं चाहेंगे कि कोई भी व्यक्ति उनका बदला ले। उन्होंने कहा

ही है कि इस बदमाश को समझाने के लिए उन्हें अमरीका फिर आना पड़ेगा। अब, अगर यह कर्नल प्रॉक्टर को देख लेते हैं तो मारपीट होकर रहेगी जिसे कोई न रोक सकेगा और जिसका परिणाम दुखद हो सकता है। अतः इन्हें उसे नहीं देखना चाहिए।

'आप ठीक कहती हैं, श्रीमती,' फ़िक्स ने उत्तर दिया; 'मुठभेड़ सब कुछ बिगाड़ सकती है। जीतें चाहे हारें, मिस्टर फॉग की यात्रा में बाधा तो पड़ जायेगी, उन्हें देर होती जायेगी, और—'

'और,' पासेपार्टाऊट ने बात पूरी की; 'इससे रिफार्म क्लब के सज्जनवृन्द बाजी भी जीत जायेंगे। चार दिनों में हम न्यूयार्क में होंगे! अच्छा, तब, अगर मेरे मालिक चार दिनों तक डब्बे से बाहर नहीं होते, तो हम आशा कर सकते हैं कि इस कमीने अमरीकन से उनकी मुठभेड़ होने का मौका ही न आयेगा। अब हम आसानी से उन्हें रोक सकते हैं—'

बातचीत रुक गई। फॉग साहब जाग गये थे और बर्फ से धुँधले हुए खिड़की के शीशे में से देश का दृश्य देख रहे थे। बाद में, बिना अपने मालिक या श्रीमती आऊदा को जताये हुए पासेपार्टाऊट ने जासूस से कहा,—

'क्या सचमुच ही तुम उनके लिए लड़ोगे?'

'मैं उन्हें जिन्दा योरुप ले जाने के लिए सब कुछ करूँगा!' फ़िक्स ने सरलता से उस लहजे में कहा जिससे न टूटनेवाला इरादा व्यक्त होता था।

पासेपार्टाऊट ने एक कँपकँपी महसूस की, मगर अपने मालिक की ईमानदारी पर उसका विश्वास डाँवाँडोल नहीं हुआ।

और अब, क्या कोई ऐसे साधन थे जिनके द्वारा मिस्टर फॉग को इस डब्बे में रोका जा सकता था ताकि उनमें और उस कर्नल में मुठभेड़ न हो जाये? यह कठिन नहीं था, क्योंकि यह महोदय चंचल या जिज्ञासु नहीं थे।

हर हालत में, जासूस ने सोचा कि उसे यह साधन मिल गया था, क्योंकि कुछ क्षणों के बाद उसने फ़िलियास फ़ॉग से कहा : 'गाड़ी में समय बड़ा धीमा और लम्बा होता है।'

'वाकई में,' फ़ॉग साहब ने जवाब दिया, 'लेकिन समय व्यतीत तो होता ही है।'

'जहाजों पर,' जासूस बोला, 'आप तो ताश खेला करते थे ?'

'हाँ,' फ़िलियास फ़ॉग ने जवाब दिया, 'लेकिन यहाँ वह जरा कठिन होगा। न तो मेरे पास ताश हैं और न खेलनेवाले साथी।'

'ओह! जहाँ तक ताशों का प्रश्न है, हम आसानी से उन्हें खरीद लेंगे। अमरीका में सब रेलगाड़ियों पर ताश बिकते हैं। रही साथियों की बात, श्रीमती—'

'अवश्य, श्रीमान,' शीघ्रता से युवती ने उत्तर दिया, 'मैं खेलना जानती हूँ। यह तो अँगरेजी शिक्षा का अंग है।'

'और मैं,' फ़िक्स बोला, 'खेल में कुछ दखल रखता हूँ। अब, तीन हम लोग हुए और एक नकली या फर्जी साथी—'

'जैसी आपकी मर्जी, श्रीमान्,' फ़िलियास फ़ॉग ने जवाब दिया जो कि रेल पर भी अपने प्रिय खेल को चालू करने में बड़े आनन्दित थे।

पासेपार्टाऊट को रेल के खिदमतगार की तलाश में भेज दिया गया था। वह शीघ्र ही दो गड्डी ताश और कपड़े से ढकी हुई एक मेज ले आया। अब क्या कमी थी ? खेल शुरू हो गया। श्रीमती आऊदा ताश खेलना खूब जानती थीं। कभी-कभी श्री फ़ॉग उनकी सराहना भी करते थे। जासूस तो उस्ताद था ही और फॉग साहब के मुकाबले का था।

'अब', पासेपार्टाऊट ने मन में कहा, 'अब हम इन्हें यहाँ रोक सकेंगे। अब यह हिलेंगे नहीं!'

ग्यारह बजे सुबह गाड़ी दो महासागरों को विभाजित करने-वाली चट्टान को पहुँच गई थी।

ब्रिडगर के दर्रे की उँचाई ७५२४ अँगरेजी फुट थी। रॉकी माऊन्टेन्स के पार जाते हुए रास्ते पर यही सबसे ऊचा बिन्दु था। लगभग २०० मील चलने के बाद, यात्री उन बड़े मैदानों में पहुँचे जो एटलान्टिक तक फैले हुए थे और रेलपथ बनाने के लिए जिन्हें प्रकृति ने इतना उपयुक्त बनाया था।

एटलान्टिक की तराई की ढाल पर चश्मे दिखाई दिये और उत्तरी प्लेट रिवर की सहायक नदियाँ भी। उत्तरी और पूर्वी क्षितिज पूरा का पूरा एक अर्द्धवृत्ताकार पर्दे से ढका था जो रॉकी माऊन्टेन्स का दक्षिणी भाग बनाता है जिसमें सबसे ऊँची चोटी लारमाइन की है। रास्ते की पटरियों और इस घुमाव के बीच विस्तृत और बहुतायत से सिंचित मैदान थे। रास्ते के दाहिनी तरफ पहाड़ी ढेर से प्रथम सिलसिला निकला था और घूमता हुआ अरकानसास नदी के उद्गम तक दक्षिण की तरफ गया था। यह नदी मिसीसिपी नदी की एक बड़ी सहायक नदी थी।

साढ़े बारह बजे, यात्रियों ने क्षणमात्र के लिए हालेक को देखा जो इस इलाके पर रोब ग़ालिब किये है। कुछ घण्टों के बाद ही रॉकी माऊन्टेन्स पार हो जाते। आशा थी कि उस कठिन भूमि में कोई दुर्घटना न होगी। बर्फ गिरना बन्द हो गया था। मौसम ठण्डा और शुष्क हो गया था। दूर पर रेल के इंजन से भयातुर, बड़ी-बड़ी चिड़ियाँ उड़ रही थीं। मैदान में कोई हिरन या रीछ या भेड़िया नहीं दिखाई दिया। यह बिलकुल ही उजाड़ प्रदेश था।

आराम से नाश्ता करने के बाद, मिस्टर फॉग और उनके साथियों ने कभी न खतम होनेवाला ताश का खेल शुरू कर दिया था। उधर तेज सीटियाँ बजीं और गाड़ी रुक गई।

पासेपार्टाऊट ने अपना सर दरवाजे के बाहर निकाला लेकिन गाड़ी के रुक जाने का कोई कारण उसे नहीं दिखाई दिया। कोई स्टेशन भी वहाँ नहीं था।

श्रीमती आऊदा और फिक्स को कुछ भय हुआ कि फॉग साहब कहीं बाहर पटरियों पर जाने की बात न सोच बैठें, लेकिन उस भद्र पुरुष ने अपने नौकर से यह कहते हुए अपने को संतुष्ट किया,—

'जाओ, देखो तो मामला क्या है।'

पासेपार्टाऊट झपटकर डब्बे के बाहर गया। लगभग ४० मुसाफिर उठकर बाहर निकल पड़े थे जिनमें कर्नल स्टैम्प प्रॉक्टर भी था।

गाड़ी एक लाल सिगनल के सामने रुक गई थी जिसने रास्ता रोक रक्खा था। रेल का इन्जीनियर और कॉन्डक्टर, दोनों ने उतरकर एक सिगनलमैन से जरा गर्मी से बहस की। इस सिगनल-मैन को अगले स्टेशन मेडिसिन बो के स्टेशन मास्टर ने पहिले से ही वहाँ भेज दिया था। कुछ यात्री भी वहाँ पहुँच गये और उस बहस में हिस्सा लेने लगे। इनमें तेज आवाज और शाहाना चाल-ढालवाला कर्नल प्रॉक्टर भी था।

पासेपार्टाऊट ने वहाँ पहुँचकर सिगनलमैन को यह कहते सुना,—'नहीं। जाने का अब और कोई साधन नहीं है। मेडि-सिन बोवाला पुल कमजोर है और रेलगाड़ी का बोझ उठा न सकेगा।'

जहाँ गाड़ी रुकी थी वहाँ से एक मील पर उपरोक्त पुल था। तेज धाराओं पर यह पुल झूले के समान लटका हुआ था। सिग-नलमैन के कथनानुसार पुल कमजोर था और गिर सकता था। इसमें लगे हुए बहुत से तार टूट गये थे। वैसी हालत में उस पर

गाड़ी ले जाने का खतरा नहीं उठाया जा सकता था। सिगनलमैन ने कोई बात बढ़ाकर नहीं कही थी। उसका यह कहना भी ठीक था कि पुल पर जाना खतरे से खाली नहीं था। और इसके अतिरिक्त अमरीकन लोग बड़े लापरवाह थे और इसीलिए उनके से बुद्धिमान् होना अगर हम चाहें तो हमारी मूर्खता होगी।

पासेपार्टाऊट, दाँत भींचे, बुत बना सुनता रहा मगर यह हिम्मत न हुई कि मालिक से जाकर सब हाल बता दे।

'ओह! वाकई,' कर्नल प्रॉक्टर ने चिल्लाकर कहा, 'मैं समझता हूँ हम यहाँ रुक नहीं सकते और न यहाँ पड़े-पड़े बर्फ में जम ही सकते हैं!'

'कर्नल', कॉन्डक्टर ने जवाब दिया, 'हमने ओमाहा को दूसरी गाड़ी के लिए तार दे दिया है लेकिन मेडिसिन बो स्टेशन तक तार पहुँचने में कम-से-कम छः घण्टे लगेंगे।'

'छः घण्टे!' पासेपार्टाऊट चीख उठा।

'इसमें क्या शक,' कॉन्डक्टर ने जवाब दिया। 'इसके अतिरिक्त उतने समय में हम वहाँ तक पैदल ही पहुँच जायँगे।'

एक यात्री बोल उठा, 'लेकिन स्टेशन तो यहाँ से एक ही मील है।' 'जरूर एक मील है लेकिन नदी के उस पार।'

'और नदी क्या नाव द्वारा पार नहीं की जा सकती?' कर्नल ने पूछा।

'असम्भव। नदी की धारा वर्षा के कारण खूब बढ़ रही है। यह एक तेज धारा है और एक उथले स्थान को पाने के लिए हमें दस मील का चक्कर लगाना पड़ेगा अगर हम नदी पार ही करना चाहते हैं।'

कम्पनी और कॉन्डक्टर पर गालियों की बौछार करते हुए कर्नल का चेहरा तमतमा आया। क्रोधावेश में होने के कारण पासेपार्टाऊट भी उससे भिन्न न रह सका। वहाँ एक भौतिक बाधा

थी जिसके खिलाफ उसके मालिक के तमाम बैंक नोट भी अबकी बार काम न दे सकेंगे।

सभी यात्री निराश थे जिन्होंने विलम्ब की बात पर तो ज्यादा ध्यान नहीं दिया; हाँ, यह जरूर देखा कि बर्फ से ढके हुए मैदान को पन्द्रह मील चलकर पार करने के लिए वे बाध्य थे और वह भी पैदल। वहाँ बड़ा गुलगपाड़ा हुआ। अगर फ़िलियास फ़ॉग अपने खेल में न लगे होते तो जोर की चिल्लाहटें जरूर उनका ध्यान आकर्षित करतीं।

पासेपार्टाऊट मालिक को वाकयात की सूचना देने के लिए मजबूर था और गर्दन झुकाये हुए वह डब्बे की तरफ चल दिया। उसी समय फ़ार्स्टर नाम के एक असली याङ्की ने अपनी आवाज तेज करते हुए कहा,—

'सज्जनो! उस पार जाने का एक साधन हो सकता है।'

'पुल पर से?' एक यात्री ने पूछा।

'हाँ, पुल पर से ही।' रेल के इन्जीनियर फ़ार्स्टर ने जवाब दिया।

'मय गाड़ी के?', कर्नल ने पूछा।

'मय गाड़ी के।'

पासेपार्टाऊट रुक गया और इन्जीनियर के शब्द उसके दिल पर नक्श हो गये।

'लेकिन पुल तो गिरने की धमकी दे रहा है!' कॉन्डक्टर ने कहा।

'इससे क्या,' फार्स्टर ने कहा। 'मेरा विश्वास है कि अपनी पूरी स्पीड से पुल पर गाड़ी ले चलने से पार हो जाने की कुछ सम्भावना हो सकती है।'

'शैतान कहीं का!' पासेपार्टाऊट ने चिल्लाकर कहा। लेकिन

कुछ यात्री इन्जीनियर के प्रस्ताव से प्रभावित हो गये। मुख्यतः कर्नल प्रॉक्टर को इससे बड़ी प्रसन्नता हुई। उस जल्दबाज को यह कार्य बड़ा आसान प्रतीत हुआ। उसे ख्याल हो आया कि इन्जीनियर लोग बिना पुल के ही एक दूसरे से सटी हुई रेल गाड़ियाँ लिये हुए नदियों को पार करने का विचार रखते थे और उस समय गाड़ी की रफ्तार ज्यादा से ज्यादा कर देते थे। अन्त में सभी लोग, जो जल्दी पहुँचने के इच्छुक थे, इन्जीनियर के पक्ष में हो गये।

'हमारे पास ५० प्रतिशत पार हो जाने की सम्भावना है।' एक ने कहा।

'साठ प्रतिशत।' दूसरे ने कहा।

'अस्सी ! नब्बे प्रतिशत !'

पासेपार्टाऊट अजीब उलझन में था। यद्यपि मेडिसिन जल-धारा को पार करने के लिए वह हर चीज आजमाने को प्रस्तुत था, लेकिन वह प्रयत्न उसे कुछ अमरीकन ढंग का ही लगा।

'इसके अलावा', उसने सोचा, 'इससे कहीं आसान एक चीज है जो की जा सकती है। यह लोग उसे कभी सोच भी नहीं सकते—जनाबेआली,' उसने एक यात्री से कहा, 'इन्जीनियर द्वारा बताया हुआ रास्ता मुझे जरा खतरनाक मालूम होता है लेकिन—'

'अस्सी प्रतिशत सम्भावना !' उसकी तरफ पीठ घुमाते हुए यात्री बोला।

'मैं खूब जानता हूँ,' पासेपार्टाऊट ने उत्तर दिया। दूसरे सज्जन की तरफ मुँह करते हुए वह फिर बोला, 'लेकिन जरा विचार तो कीजिये—',

'कुछ विचार नहीं करना है। व्यर्थ है !' उस अमरीकन ने अपने कंधे हिलाते हुए कहा जिससे यह बात कही गई थी,

'इन्जीनियर तो हमें यकीन दिला ही रहा है कि हम पार हो जायेंगे !'

'बेशक,' पासेपार्टाऊट ने कहा, 'हम पार हो जायेंगे, लेकिन शायद यह अधिक बुद्धिमानी की बात होगी कि—'

'क्या बुद्धिमानी होगी ?' कर्नल प्रॉक्टर ने चीखते हुए और इत्तेफाक से उस शब्द को सुनकर उस पर उछलते हुए कहा, 'आपको बताया तो गया है कि पूरी रफ्तार से गाड़ी जायेगी! समझे कि नहीं ? पूरी रफ्तार से !'

'मैं जानता हूँ—मैं समझता हूँ,' पासेपार्टाऊट ने दोहराया, जिसे कोई भी बात पूरी करने देना नहीं चाहता था; 'लेकिन अधिक बुद्धिमानी न सही तो अधिक स्वाभाविक ही सही अगर वे शब्द ही आपको तकलीफ देते हैं—'

'कौन ? क्या ? कैसे ? उस आदमी को क्या हो गया है ?' यह प्रश्न चारों ओर सुने गये।

बेचारा पासेपार्टाऊट जान ही नहीं सका कि किससे बात की जाये।

'क्या तुम डरते हो ?' कर्नल प्रॉक्टर ने उससे पूछा। 'अच्छा, ऐसा ही हो ! मैं यह इन लोगों को बता दूँगा कि एक फ्रान्सीसी वैसा ही अमरीकन हो सकता है जैसे वे !'

'सब गाड़ी में बैठ जायें ! सब गाड़ी में बैठ जायें !' कॉन्डक्टर ने जोर से कहा।

'हाँ, सब गाड़ी में बैठ जायें,' पासेपार्टाऊट ने कहा; 'सब गाड़ी में बैठ जायें ! लेकिन यह सोचने से मुझे कोई नहीं रोक सकता कि पुल को पैदल पार करना अधिक स्वाभाविक होता और गाड़ी को बाद में ले जाना !'

किसी ने इस बुद्धिमानी के खयाल को नहीं सुना और न कोई इसे न्यायोचित ही मानता।

यात्री फिर डब्बे में अपनी जगहों पर बैठ गये। पासेपार्टाऊ भी अपनी जगह पर बैठ गया और जो कुछ हुआ था उसका कोई ज़िक्र नहीं किया। खिलाड़ी पूर्णतया अपने खेल में मस्त थे।

इंजन ने जोर से सीटी दी। इन्जीनियर ने इसका इंजन पलट दिया, लगभग एक मील तक गाड़ी को पीछे ले गया और कूदने को तैयार खड़े हुए एक कूदनेवाले की तरह गाड़ी को वापिस ले आया।

तब दूसरी सीटी पर उन्होंने आगे बढ़ना शुरू कर दिया। रफ्तार बढ़ा दी गई थी जो शीघ्र ही बड़ी भयङ्कर हो उठी। इंजन की एक ही फुफकार सुनी गई; पिस्टन एक सेकेण्ड में बीस बार चले और धुरों से धुँवा निकलने लगा। लोगों को ऐसा लगा मानो एक घण्टे में सौ मील की रफ्तार से जाती हुई गाड़ी पटरियों पर चल ही नहीं रही थी। रफ्तार ने बोझ को बेकार कर दिया था।

और वे पार हो गये! यह सब बिजली की चमक के समान हो गया। उन्होंने पुल देख ही नहीं पाया। हम कह सकते हैं कि रेल एक किनारे से दूसरे किनारे कूद-सी गई और इन्जीनियर स्टेशन के बाद पाँच मील तक गाड़ी रोक ही नहीं सका।

गाड़ी ने अभी पुल पार ही किया था कि पहिले से ही गिरने-वाला पुल मेडिसिन बो में धड़धड़ाकर गिर पड़ा।

(२६)

उस दिन शाम को रेल अबाध गति से चलती रही। वह फोर्ट सैन्डर्स से गुजरी। उसने चीईनी का दर्रा पार किया और इवान्स के दर्रे पर पहुँची। यहाँ, रेलपथ रास्ते की सबसे ऊँची ऊँचाई पर था, यानी समुद्र की सतह से ८०११ फुट ऊपर। अब यात्रियों को एटलान्टिक के उन असीम मैदानों पर उतरना था जिन्हें प्रकृति ने चौरस बनाया था।

ग्रान्ड ट्रन्क से डेन्वर शहर तक शाखा-लाइन जाती थी। यह कोलोरडो का एक प्रधान नगर था। यह इलाका सोने और चाँदी की खानों से सम्पन्न था। ५० हजार से अधिक व्यक्ति वहाँ आबाद हो चुके हैं।

इस समय सैन फ्रैन्सिसको से १३८२ मील की दूरी पर गाड़ी थी जिसे तय करने में तीन दिन और तीन रातें लगी थीं। अगर कोई बाधा न आये तो चार दिन और चार रातें न्यूयार्क तक पहुँचने के लिए जरूरी थीं। अब भी फ़िलियास फ़ॉग अपने हिसाब से समय के अन्दर ही थे।

रात में वे कैम्प वालबाच के पूरब पहुँचे। रास्ते के समानान्तर लॉज पोल क्रीक चल रही थी। वाइओमिंग और कोलोरडो इलाकों के बीच सीधी चहारदिवारी का अनुसरण उसने किया। ग्यारह बजे वे सेजविक के पास से गुजरते हुए नेब्रास्का में दाखिल हुए। प्लेट-रिवर के साउथ फोर्क नामक स्थान का उन्होंने स्पर्श किया।

इसी जगह २३ अक्टूबर, १८६७ को यूनियन पैसिफ़िक रोड का उद्घाटन हुआ था। उद्घाटन करनेवाले इसके प्रधान इन्जीनियर जेनरल जी० एम० डौज थे। आमंत्रित अभ्यागतों के नौ डब्बों को खींचते हुए दो इंजन वहाँ रुके थे। इन अभ्यागतों में सड़क के उप-सभापति, थामस सी० डुरैन्ट प्रमुख थे। तीन बार जय-जयकार हुई थी। यहाँ सिआऊक्स और पानीज लोगों ने एक भारतीय युद्ध का स्वाँग किया था। आतिशबाजी छोड़ी गई थी। अन्त में वहाँ 'रेलवे प्वायनियर' का प्रथम अंक भी छापा गया था। इस प्रकार इस महान् रेल-पथ का उद्घाटन हुआ था। यह रेलपथ उन्नति और सभ्यता का औजार था जो रेगिस्तान के आरपार डाल दिया गया था और जिसे आगे बसाये जानेवाले नगरों और शहरों को एक सूत्र में पिरो देने का काम करना था।

एम्फीएन के बाजे से अधिक जोरदार रेल के इंजन की सीटी को अमरीकन भूमि से ऐसे शब्द पैदा करने थे।

आठ बजे प्रातःकाल फोर्ट एम 'फरसन' गुजर गया था। यह स्थान ओमाहा से ३५७ मील दूर था। बाईं ओर नदी के साउथ फोर्क के तुनुकमिजाज घुमाओं का रेलपथ ने अनुसरण किया। नौ बजे ये लोग नार्थ प्लेट के प्रसिद्ध नगर को पहुँचे जो कि मुख्य धारा की दो शाखाओं के बीच आबाद था। यह शाखायें नगर को घेरकर मिल जाती थीं और एक ही नस-सी बनाती हुई एक सहायक नदी हो जाती थीं। इनका जल ओमाहा के कुछ ऊपर मिसौरी में मिल जाता था।

मिस्टर फॉग और उनके साथी ने खेल फिर प्रारम्भ कर दिया था। उनमें से किसी ने भी रास्ते की लम्बाई की शिकायत नहीं की— यहाँ तक कि नकली साथी ने भी नहीं। पहिले मिस्टर फिक्स ने कुछ गिन्नियाँ जीतीं जिन्हें उसे इमानदारी से हारना था। मिस्टर फॉग से वह कुछ कम दिलचस्पी नहीं रखता था। प्रातःकाल भाग्य ने उसका साथ दिया था। तुरुप उसके हाथ में आते ही गये। एक मौके पर, बहादुरी से चाल चलकर वह स्पेड खेलने जा रहा था, कि पीछे से एक आवाज सुनाई दी—'

'मैं तो डायमण्ड खेलूँगा।'

मिस्टर फॉग, श्रीमती आऊदा और फिक्स ने अपने सर उठाये। कर्नल प्रॉक्टर उनके करीब था।

स्टैम्प प्रॉक्टर और फिलियास फॉग ने तुरन्त एक दूसरे को पहिचान लिया।

'अरे, तुम, अँग्रेज,' कर्नल ने चिल्लाकर कहा; तुम ही स्पेड खेलने जा रहे थे ?'

'और जो इसे खेलता है,' उसी रंग का दहला डालते हुए रुखाई से फॉग साहब ने कहा।

'अच्छा, मुझे तो डायमण्ड खेलना ज्यादा भाता है,' कर्नल प्रॉक्टर ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

उसने ऐसी हरकत की मानो चला हुआ पत्ता उठा रहा हो। उसने फिर कहा—'

'आप इस खेल के बारे में कुछ नहीं जानते।'

'शायद मैं किसी दूसरे खेल खेलने में ज्यादा निपुण साबित होऊँ।' फ़िलियास फॉग ने उठते हुए कहा।

'आपको अभी इसकी कोशिश ही करनी है, जॉनबुल के बेटे!' उजड्ड व्यक्ति ने जवाब दिया।

श्रीमती आऊदा का चेहरा फक हो गया। कलेजा मुँह को आ गया। उन्होंने फ़िलियास फॉग की बाँह पकड़ ली और उन्होंने उन्हें बड़े ही सहारे से पीछे हटा दिया। पासेपार्टाऊट कर्नल पर झपट पड़नेवाला था, जो अपने शत्रु को बड़ी घृणा से घूर रहा था। फिक्स उठ पड़ा था और कर्नल प्राक्टर के पास जाता हुआ उससे बोला—'

"आपको शायद याद नहीं है कि आपको मुझसे निपटना है; मुझसे ही जिसे आपने बेइज्जत नहीं किया बल्कि मारा भी है।

'मिस्टर फ़िक्स,' मिस्टर फॉग ने कहा, 'मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। यह तो मेरा अपना ही मामला है। इस बात पर जोर देकर कि मैं स्पेड खेलने की गलती कर रहा था, कर्नल ने मुझे फिर नये सिरे से बेइज्जत किया है और ये मेरी दिलजोई करेंगे।'

'जब आप चाहें, जहाँ आपकी मर्जी हो,' अमरीकन ने जवाब दिया, 'और जिस हथियार से आप चाहें, उसी से।'

'श्रीमती आऊदा ने फॉग साहब को रोकने का बेकार प्रयत्न किया। उधर जासूस ने भी झगड़ा अपने मत्थे लेना चाहा मगर सफल न हो सका। पासेपार्टाऊट कर्नल को दरवाजे से बाहर फेक देना चाहता था, लेकिन उसके मालिक के एक इशारे ने उसे रोक

दिया। फॉग साहब डब्बे के बाहर गये, और अमरीकन उनके पीछे प्लैटफार्म पर चल दिया।

'श्रीमान्,' मिस्टर फॉग ने अपने शत्रु से कहा, 'मैं योरुप लौट जाने की जल्दी में हूँ और किसी भी प्रकार का विलम्ब मेरे मतलब को हानि पहुँचा सकता है।'

'ठीक, लेकिन उससे मुझे क्या?' कर्नल प्राक्टर ने जवाब दिया।

'श्रीमान्,' मिस्टर फॉग ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया, 'हम लोगों की सैन फ्रैन्सिसको वाली भेंट के बाद, मैंने आपको प्राप्त करने के लिए अमरीका लौटकर आने का इरादा किया था, जैसे ही मैं अपने विलायत लौटने के कार्य से छुट्टी पाता।'

'बहुत अच्छे!'

'क्या छः महीनों में किसी समय आप मेरा सामना करने के लिए कोई समय निर्धारित करेंगे?'

'छः सालों में क्यों नहीं?'

'मैं तो छः महीनों की बात कह रहा हूँ,' मिस्टर फॉग ने जवाब दिया, 'और मैं आपके मुकाबिले के लिए सदैव तत्पर रहूँगा।'

'सब बहाने हैं!' स्टैम्प प्राक्टर ने चिल्लाकर कहा। 'जो कुछ होना है, अभी होगा, नहीं तो कभी नहीं।'

'बहुत अच्छा,' मिस्टर फॉग ने जवाब दिया। 'आप क्या न्यूयार्क जा रहे हैं?'

'नहीं।'

'शिकागो को?'

'नहीं।'

'ओमाहा को?'

'इससे तो आपको कोई मतलब नहीं ! क्या आप प्लम क्रीक स्टेशन जानते हैं ?'

'नहीं,' मिस्टर फॉग ने जवाब दिया।

'यही अगला स्टेशन है। एक घण्टे में गाड़ी वहाँ पहुँच जायेगी। दस मिनटों तक वहाँ रुकेगी। दस मिनटों में हम अपने पिस्तौलों से एक दूसरे पर दो-चार गोलियाँ तो चला ही सकते हैं।'

'चलने दो, यही सही,' मिस्टर फॉग ने उत्तर दिया। 'मैं प्लम क्रीक में रुक जाऊँगा।'

'और मुझे विश्वास है कि तुम वहाँ रुके भी रहोगे !' बेमिसाल गुस्ताखी से अमरीकन बोला।

'कौन जानता है, श्रीमान् ?' मिस्टर फॉग ने जवाब दिया और हमेशा की तरह ठण्डे दिल से डब्बे में चढ़ गये।

उन्होंने श्रीमती आऊदा को दिलासा देना शुरू किया कि गुण्डों से कभी नहीं डरना चाहिए। तब उन्होंने फ़िक्स से कहा कि जो मुठभेड़ होने जा रही है उसमें उन्हें उनके दुसरिहा का काम करना है। फ़िक्स इन्कार न कर सका और मिस्टर फॉग ने चुपचाप खेल फिर शुरू कर दिया और बड़ी शान्ति तथा गम्भीरता से स्पेड खेलने लगे।

ग्यारह बजे रेल की सीटी ने घोषित किया कि वे प्लम क्रीक स्टेशन के करीब थे। मिस्टर फ़ॉग उठे और प्लैटफार्म पर पहुँच गये। उनके पीछे फिक्स भी था। पासेपार्टाऊट एक जोड़ा पिस्तौल लेकर उनके साथ गया। श्रीमती आऊदा डब्बे में बैठी रहीं लेकिन वे मुर्दे से भी ज्यादा बेकार और निर्जीव थीं।

उसी समय दूसरे डब्बे का दरवाजा खुला और कर्नल प्रॉक्टर भी उसी प्रकार अपने पीछे अपना दुसरिहा लिये हुए प्लेटफार्म

पर पहुँचे। इनका दुसरिहा इन्हीं के कैंडे का एक यात्री था। जिस समय दोनों प्रतिद्वन्द्वी रेल से उतर रहे थे, कॉन्डक्टर दौड़कर उनके पास आया और कहा,—

'आप लोग उतर नहीं सकते।'

'क्यों नहीं?' कर्नल ने पूछा।

'हम बीस मिनट पिछड़ गये हैं, अतः यहाँ अब गाड़ी रुकेगी नहीं।'

'लेकिन मैं तो इस भद्र पुरुष से पिस्तौलबाजी करने जा रहा हूँ।'

'मुझे अफ़सोस है,' कॉन्डक्टर ने उत्तर दिया, 'हम तो अभी रवाना होने जा रहे हैं। देखते नहीं हो, घंटी बज रही है?'

घंटी बज रही थी और गाड़ी चल दी।

'मुझे वाकई बड़ा दुःख है,' कॉन्डक्टर ने कहा। 'और कोई परिस्थिति होती तो मैं अवश्य ही आपकी सहायता करता। लेकिन, फिर भी, चूँकि आपके पास यहाँ युद्ध करने के लिए समय नहीं है, तो मना कौन करता है? आप चलती गाड़ी में निपट सकते हैं।'

'शायद इसको यह सज्जन न पसन्द करें!' कर्नल प्रॉक्टर ने मजाक उड़ाते हुए कहा।

'मुझे खूब पसन्द आएगा,' फ़िलियास फॉग ने उत्तर दिया।

'अच्छा, हम हैं तो अमरीका में ही!' पासेपार्टाऊट ने सोचा, 'और यह कॉन्डक्टर है बड़ा भला आदमी!'

यह कहकर वह अपने मालिक के पीछे चल दिया। दोनों प्रतिद्वन्द्वी कॉन्डक्टर के पीछे-पीछे गाड़ी के सबसे पिछले भाग में गये और जाते समय वे डब्बों में से गुजरे। आखिरी डब्बे में केवल दस या बारह यात्री थे। कॉन्डक्टर ने यात्रियों से कहा कि आर

वे उन दो सज्जनों के लिए थोड़ी देर के लिए कुछ जगह खाली कर देने की कृपा करें तो अच्छा है। सज्जनों की इज्जत का सवाल था जिसे उन्हें तय करना था।

'क्यों नहीं ?' यात्री ऐसी बात के लिए बड़ी खुशी से सहमत हो गये और गाड़ी के आगे बने हुए प्लैटफार्म पर चले गये।

पचास फुट लम्बा डब्बा इस कार्य के लिए बहुत उपयुक्त था। दोनों शत्रु डब्बों के बीच बने हुए रास्ते पर एक दूसरे को पिस्तौल का निशाना बना सकते थे। इससे ज्यादा आसानी से पिस्तौल-बाजी के युद्ध का प्रबन्ध नहीं किया जा सकता था। मिस्टर फॉग और कर्नल, दोनों छः गोलियोंवाले पिस्तौल से लैस होकर, मय अपने दुसरिहों के डब्बे में दाखिल हुए। बाहर खड़े हुए दुसरिहों ने दोनों शत्रुओं को बन्द कर दिया। रेल की पहिली सीटी पर, उन्हें गोली चलाना शुरू करना था। तब दो ही मिनटों के बाद दो सज्जनों का जो कुछ बच रहेगा वह डब्बे के बाहर कर दिया जायेगा। सचमुच, इससे सरलतर चीज क्या हो सकती थी। आसान तो इतना था कि फ़िक्स और पासेपार्टाऊट, दोनों का हृदय फटा जा रहा था।

वे लोग तय की हुई सीटी का इन्तजार कर रहे थे। यकायक जंगलीपने की चिल्लाहटें हुईं। इसके बाद धायँ-धायँ। यह धायँ-धायँ उस डब्बे से नहीं आई जो पिस्तौलबाजी के लिए नियुक्त था। यह आवाज पूरी गाड़ी में फैल गई। डब्बों के अन्दर से भय की आवाजें आईं।

कर्नल प्रॉक्टर और मिस्टर फ़िलियास फ़ॉग हाथों में पिस्तौल लिये हुए तुरन्त ही डब्बों के बाहर हुए, और आगे उस जगह झपटे, जहाँ धाँय-धाँय और चिल्लाहटें बहुत ज्यादा गूँज रही थीं।

उन्होंने समझा कि सिआउक्स लोगों के गिरोह ने गाड़ी पर हमला कर दिया है।

इन साहसी आदिम निवासियों का यह पहला ही प्रयास नहीं था। एक से अधिक बार वे रेलगाड़ियों को रोक चुके थे। अपनी आदत के अनुसार, बिना गाड़ी के रुकने का इन्तजार किये हुए, रेल की पैंकड़ियों पर सौ की संख्या में झपटते हुए रेल के डब्बों में उस प्रकार चढ़ गये थे जैसे सरकस में विदूषक पूरी रफ्तार से दौड़ते हुए घोड़े पर चढ़ जाता है।

यह सिआऊक्स लोग बन्दूकों से लैस रहते थे। इसीलिए गोली दगने की वे आवाजें हुईं थीं जिनका जवाब लगभग सभी हथियारबन्द मुसाफिरों ने अपनी पिस्तौलों से दिया। सबसे पहिले आदिमवासी इंजन पर झपटे। उनकी बन्दूकों की चोटों से इन्जीनियर और कोयला झोंकनेवाले अधमरे हो गये थे। एक सिआऊक्स सरदार ने रेल रोकने की कोशिश की लेकिन चालक यंत्र के हैण्डिल को घुमाना उसे मालूम नहीं था। उसने भाप का वाल्व बजाय बन्द करने के पूरा खोल दिया और इंजन अधिकार से बाहर होकर भयंकर तेजी से भागने लगा।

उसी समय, सिआऊक्स डब्बों में घुस आये। वे क्रोधित बन्दरों की तरह छतों पर दौड़े, दरवाजों में घुसकर उन्होंने आमने-सामने यात्रियों से हाथापाई की। सन्दूक तोड़ डाले गये और लूट लिये गये। माल रखनेवाले डब्बों से सामान बाहर सड़क पर फेंक दिया गया। चिल्लाहटें और बन्दूक की आवाजें बन्द नहीं हुईं।

यात्रियों ने बहादुरी से अपनी रक्षा की। चलते-फिरते किलों की तरह कुछ सुरक्षित डब्बों ने हमले को रोका।

जब से हमला शुरू हुआ, श्रीमती आऊदा ने बहादुरी से काम लिया था। हाथ में पिस्तौल लिये हुए उन्होंने वीरता से अपने को बचाया और जब कोई जंगली हमलावर अन्दर आया तो उन्होंने

उसके अन्दर आने के पहिले ही खिड़की के टूटे हुए शीशों में से उस पर पिस्तौल चलाई। लगभग बीस सिआऊक्स लोग जख्मी होकर पथ पर गिर पड़े और जो वहाँ से सरककर पटरियों पर आ गये थे, उन्हें गाड़ी के पहियों ने कीड़ों की तरह कुचल दिया था।

बहुत से यात्री गोलियों या डन्डों की मार से जख्मी होकर सीटों पर पड़े थे।

अब यह सब खतम होना ही चाहिए था। यह मारदहाड़ दस मिनटों तक होती रही और सिआऊक्स के पक्ष में समाप्त हो जाती अगर गाड़ी न रुक जाती। वास्तव में फोर्ट किआरने स्टेशन दो मील भी नहीं था। वहाँ पर एक सैनिक स्थान था। अगर वह सैनिक स्थान गुजर जाता तो पूरी गाड़ी सिआऊक्स लोगों के कब्जे में हो जाती।

कॉन्डक्टर मिस्टर फॉग की ओर लड़ रहा था। उसके एक गोली लगी और वह गिर पड़ा। जैसे ही वह गिरा, उसने चिल्लाकर कहा : 'अगर पाँच मिनटों के अन्दर ही गाड़ी न रुकी तो हम लोग मिट जायेंगे!'

'गाड़ी रोक दी जायेगी!' डब्बे से बाहर दौड़ पड़नेवाले मिस्टर फॉग ने कहा।

'ठहरिये, श्रीमान्', पासेपार्टाऊट ने चिल्लाकर कहा। 'वह काम मेरा है।'

उस साहसी जवान को रोकने का समय फॉग साहेब के पास नहीं था। वह, आदिम-निवासियों से अपने को छिपाकर और एक दरवाजा खोलकर डब्बे के नीचे सरक गया। जब कि लड़ाई चल रही थी और गोलियाँ एक दूसरे के सर पर से गुजर रही थीं, अपनी तेजी और विदूषकों जैसी फुर्ती संचित करते हुए वह डब्बों के नीचे जाने में सफल हो गया। जंजीरों को पकड़े हुए, खिड़कियों के चौखटों और ब्रेकों की सहायता लेते हुए, एक डब्बे से दूसरे

डब्बे पर चढ़ते हुए और आश्चर्यजनक कौशल दिखाते हुए वह रेल के सामने पहुँच गया। उसे कोई देख नहीं सका। कोई देख भी नहीं सकता था।

वहाँ, सामानवाले डब्बे और इंजन के पीछे लगे कोयलेवाले भाग के बीच एक हाथ से लटकते हुए उसने डब्बों को जोड़नेवाली जंजीर हटा दी। लेकिन झटके की वजह से वह जोड़नेवाला डन्डा कभी न खींचकर अलग कर सकता अगर इंजन के यकायक झटका लेने से डण्डा-उछलकर अलग न हो जाता। अलग होकर गाड़ी पीछे रह गई जब कि इंजन छुट्टा होने के कारण नई रफ्तार से उड़ चला।

प्राप्त की हुई ताकत के कारण चलनेवाली गाड़ी अब कुछ मिनटों तक चलती क्या लुढ़कती रही। अन्दर डब्बों से ब्रेक लगाये गये और गाड़ी आखिरकार रुक ही गई। जहाँ गाड़ी रुकी, वह स्थान किआरने स्टेशन से सौ कदमों से भी कम था।

किले के सिपाही, जो बन्दूकों की आवाज से आकर्षित हुए थे, गाड़ी पर दौड़ आये। सिआऊक्स ने उनका इन्तजार नहीं किया और गाड़ी के बिल्कुल रुक जाने के पहिले ही वे दल सहित भाग गये थे।

जब स्टेशन के प्लैटफार्म पर यात्रियों ने एक दूसरे को गिना तो देखा कि बहुत से गायब थे। वह फ्रांन्सीसी भी गायब था जिसकी दिलेरी और भक्ति ने उनको अभी-अभी बचाया था।

(३०)

पासेपार्टाऊट को मिलाकर तीन मुसाफिर गायब हो गये थे। तो क्या वे युद्ध में मार डाले गये? क्या सिआऊक्स ने उन्हें बन्दी बना लिया था? अभी तक इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया जा सका।

जख्मी काफी हुए थे, लेकिन मरा कोई नहीं था। बहुत अधिक जख्मी होनेवालों में एक कर्नल प्रॉक्टर था, जो बहादुरी से लड़ा था और जो पेट और जाँघ के बीच गोली लग जाने के कारण गिर पड़ा था। वह दूसरे मुसाफिरों के साथ स्टेशन पहुँचाया गया। इन लोगों की देखभाल की बहुत जरूरत थी।

श्रीमती आऊदा सकुशल थीं। फ़िलियास फ़ॉग ने अपने को मार-दहाड़ से अलग नहीं रक्खा था, मगर उनके एक खरोंच तक नहीं लगी थी। फिक्स की बाँह जख्मी हो गई थी, लेकिन जख्म मामूली ही था। लेकिन पासेपार्टाऊट गायब था, और युवती की आँखों से आँसू गिर रहे थे।

उसी समय सब मुसाफिर गाड़ी से उतर गये थे। गाड़ी के पहियों पर खून के दाग थे। पहियों के डण्डों और केन्द्रों में गोश्त के लोथड़े अरभे हुए थे। जहाँ तक नजर जाती थी, सफेद मैदान पर लम्बी लाल धारियाँ-सी दिखाई देती थीं। आदिमनिवासी तब रिपब्लिकन रिवर के तटों के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर गायब हो रहे थे।

अपनी बाहें जोड़े हुए मिस्टर फ़ॉग चुपचाप खड़े थे। उन्हें एक भयंकर फैसला करना था। उनके पास खड़ी श्रीमती आऊदा ने बिना बोले हुए उनकी तरफ देखा। वे इनकी निगाह पहिचान गये। अगर उनका नौकर गिरफ्तार हो गया था तो क्या हर चीज को खतरे में डालकर उन्हें उसे आदिम निवासियों के हाथों से बचाना नहीं चाहिए था?

'मैं उसे तलाश करूँगा, जिन्दा या मुर्दा,' उन्होंने सरलता से श्रीमती आऊदा से कहा।

'ओह! मिस्टर फ़ॉग—मिस्टर फॉग!' अपने साथी के हाथों को पकड़ते और अपने आँसुओं से भिगोते हुए श्रीमती आउदा ने कहा।

'जिन्दा !' फॉग साहेब बोले, 'अगर हम एक क्षण भी बर्बाद न करें !'

यह इरादा करके तो फॉग साहब ने अपने को बलिदान ही कर दिया। उन्होंने अपने सत्यानाश की बात अभी-अभी कही थी। एक दिन की भी देर हो जाने से न्यूयार्क से चलनेवाला जहाज छूट सकता था। उनकी बाजी चली जाती, लेकिन यह विचार आते ही कि 'यह उनका कर्तव्य था' वे जरा भी नहीं हिचकिचाये और अपने कर्तव्य का पालन करने के लिये पूरे तौर पर तैयार हो गये।

फोर्ट किआरने का कमाण्डर वहीं था। उसके सिपाही--लगभग सौ—बचाव के लिए प्रस्तुत हो गये, यह सोचकर कि कहीं सिआऊक्स स्टेशन पर हमला न कर दें।

'श्रीमान्', मिस्टर फॉग ने कप्तान से कहा, 'तीन यात्री गायब हो गये हैं।'

'मार डाले गये ?' कप्तान ने पूछा।

'मार डाले गये हों या कैद कर लिये गये हों', मिस्टर फॉग ने उत्तर दिया। 'यह तो एक अनिश्चित बात है जो खत्म होनी चाहिए। क्या सिआऊक्स का पीछा करने का इरादा आप का है ?'

'यह एक अहम मसला है। श्रीमान्', कप्तान ने कहा। 'यह आदिम निवासी आरकानसास के पार तक भाग कर जा सकते हैं। अपने को सौंपा हुआ किला मैं नहीं छोड़ सकता।'

'श्रीमान्', फ़िलियास फॉग ने उत्तर दिया, 'तीन प्राणियों के जीवन का सवाल है।'

'निस्सन्देह, लेकिन तीन को बचाने के लिए क्या मैं पचास की जान खतरे में डाल सकता हूँ ?'

'आप कर सकते हैं, या नहीं, यह मैं नहीं जानता, मगर करना आपको चाहिए।'

'श्रीमान्', कप्तान ने उत्तर दिया, 'यहाँ किसी को मुझे यह बताने का अधिकार नहीं है कि मेरा क्या कर्त्तव्य है।'

'ऐसा ही सही!' फ़िलियास फ़ॉग ने रुखाई से कहा, 'मैं अकेला ही जाऊँगा!'

'आप, श्रीमान्!' फ़िक्स ने चिल्लाकर कहा, जो वहाँ आ गया था, 'आदिमवासियों का पीछा अकेले ही!'

'तो क्या आप लोग यह चाहते हैं कि मैं इस व्यक्ति को नष्ट हो जाने दूँ जिसके कारण हममें से हर एक इस समय जिन्दा है? मैं अवश्य जाऊँगा।'

'अच्छा, नहीं, आप अकेले नहीं जायेंगे!' कप्तान ने चिल्लाकर कहा जो प्रतिकूल विचार रखते हुए भी द्रवित हो गया था। 'नहीं! आप वाकई बहादुर इन्सान हैं! तीस स्वयम् सेवक!' अपने सिपाहियों की तरफ़ मुखातिब होते हुए उसने कहा।

पूरा दल एक साथ चल पड़ा। कप्तान ने सिपाही छाँटकर दिये थे और उनके ऊपर एक बुड्ढा सार्जेण्ट।

'धन्यवाद, कप्तान साहब!' फ़ॉग साहब ने कहा।

'क्या आप मुझे भी साथ चलने की आज्ञा देंगे?' फ़िक्स ने पूछा।

'आप जैसा चाहें करें', फ़िलियास फ़ॉग ने उत्तर दिया। 'लेकिन अगर आप कुछ मेरी सहायता करना ही चाहते हैं, तो आप श्रीमती आऊदा के पास ही रहें। अगर मुझे कुछ हो जाये तो—'

एकाएक जासूस का चेहरा पीला पड़ गया। उस आदमी से अलग रहना, जिसका पीछा उसने अब तक इतनी मुस्तैदी से

कदम-ब-कदम किया था ! उन्हें रेगिस्तान में जोखिम उठाने देना। फ़िक्स ने बारीकी से फ़ॉग साहब को देखा, और उसने जो कुछ भी सोचा हो, अपने हृदय में होते हुए अंतर्द्वन्द्व के बावजूद भी उस सौम्य मूर्ति के सामने अपना शीश झुका लिया।

'मैं रुक जाऊँगा', उसने कहा।

कुछ क्षणों के बाद, मिस्टर फ़ॉग ने युवती का हाथ दबाया : तब उनकी निगरानी में अपना कीमती थैला देते हुए वे सारजेण्ट और उनकी टोली के साथ रवाना हो गये।

लेकिन रवाना होने के पहिले, उन्होंने सिपाहियों से कहा,—'मित्रो, अगर तुम कैदियों को बचा लोगे तो तुम्हारे लिए यह पाँच हजार डालर इनाम के हैं !'

उस समय बारह बजकर कुछ ही मिनट हुए थे।

श्रीमती आऊदा स्टेशन के एक विश्रामालय में चली गईं और वहाँ फ़िलियास फ़ॉग के, उनकी उदारता के, उनकी सरलता के और उनके साहस के विषय में सोचती हुई उनका इन्तजार करने लगीं। श्री फ़ॉग ने सर्वस्व त्याग दिया था और अब अपनी जान की बाजी लगाने जा रहे थे और यह सब बिना झिझक के, बिना कुछ कहे हुए, केवल कर्त्तव्य-पालन के लिए। उनकी निगाहों में मिस्टर फ़ॉग वीर थे।

जासूस फ़िक्स यह सब नहीं सोच रहा था। वह उठते हुए द्वन्द्व को नहीं रोक सका। वह स्टेशन पर बड़ी व्यग्रता से टहलने लगा। एक क्षण के बाद वह फिर स्वस्थ हुआ। फ़ॉग चले ही गये थे। उसने उन्हें चले जाने दिया, यही उसकी बड़ी मूर्खता थी और इस पर उसे अफ़सोस भी था। क्या ? उस व्यक्ति से अलग होने पर वह राजी हो गया जिसका पीछा करते हुए वह सारी दुनिया का चक्कर लगाता रहा। जासूस फ़िक्स की जगह स्वाभाविक फ़िक्स की

विजय हुई थी। उसने अपने को अपराधी पाया और स्वयम् को बरी भी कर दिया। उसे ऐसा लगा मानो वह राजधानी की पुलिस का कोई डायरेक्टर हो और किसी एजेण्ट को नासमझी और नातजुर्बेकारी के काम पर बुरा-भला कह रहा रहो।

'मैं भी अजीब गधा था!' उसने सोचा। उनके नौकर ने उन्हें बता दिया होगा कि मैं कौन हूँ! वह तो चले ही गये हैं और अब लौटेंगे भी नहीं। अब मैं उन्हें कहाँ पा सकता हूँ? लेकिन मैंने अपने को इतना प्रभावित होने ही क्यों दिया जब कि उनकी गिरफ्तारी का वारण्ट मेरी जेब में ही पड़ा है! मैं यकीनन केवल एक गधा हूँ।

इस प्रकार तर्क-वितर्क करके जासूस यह न समझ सका कि अब उसे क्या करना चाहिए। उधर उसकी मर्जी के खिलाफ समय पहाड़ हो गया था। कभी-कभी तो उसकी मर्जी होती थी कि वह श्रीमती आऊदा से जाकर सब कुछ कह दे। लेकिन उसे मालूम था कि युवती उसके साथ कैसे पेश आयेगी। आखिर वह कौन-सा रास्ता पकड़े? उन विस्तृत उजले मैदानों के पार उनकी तलाश में जाने के लिए वह बाध्य था। उन्हें पाना उसे असम्भव प्रतीत नहीं हुआ। भेजे गये सिपाहियों के पैरों के निशान अब भी बर्फ पर अंकित थे, लेकिन उन चरण-चिह्नों पर अब दूसरे चलनेवालों के पैर पड़ने से उनके मिट जाने की सम्भावना थी।

फ़िक्स निराश हो गया। वहाँ से चल देने की उसे अदम्य इच्छा हुई। उसी समय किआरने स्टेशन छोड़कर उतनी भयंकर यात्रा करने का पथ उसके सामने खुला पड़ा था।

लगभग दो बजे दोपहर, जब कि बर्फ खूब गिर रही थी, पूरब से आती हुई जोर की सीटियाँ सुनाई पड़ीं। एक चमकदार रोशनी के पीछे एक विशाल छाया दिखाई दी। कोहरे के कारण वह छाया

और बड़ी हो गई और धीरे-धीरे आगे बढ़ती हुई दिखाई दी। कोहरे ने छाया को विचित्र रूप दे दिया था।

पूरब से कोई गाड़ी आनेवाली नहीं थी। तार द्वारा जो सहायता माँगी गई थी, वह अभी नहीं आई थी और ओमाहा से सैनफ्रैन्सिसको जानेवाली गाड़ी रात से पहिले नहीं आती। शीघ्र ही रहस्योद्घाटन हुआ। भाप के एक छोटे ढेर के नीचे चलता हुआ यह इंजन बड़े जोर की सीटी दे रहा था। यह वही इंजन था जो पासेपार्टाऊट ने गाड़ी से अलग कर दिया था और जो इस भयानक रफ्तार से रास्ता तय कर रहा था। बेहोश इन्जीनियर और कोयला झोंकनेवाले उस पर पड़े थे। यह कई मील चल चुका था और कोयले की कमी की वजह से इंजन की आग बुझ गई थी, भाप ठण्डी हो रही थी। एक घण्टे बाद धीरे-धीरे रफ्तार कम हो गई और किआरने स्टेशन के बीस मील उस पार जाकर आखिरकार इंजन रुक गया।

इन्जीनियर और कोयला झोंकनेवाले मरे नहीं थे। लम्बी बेहोशी के बाद वे होश में आये।

इंजन रुक गया था। जब उसने अपने को रेगिस्तान में और इंजन को बिना डब्बों के देखा तो इन्जीनियर की समझ में सारी घटना आ गई। वह यह नहीं समझ पाया कि इंजन गाड़ी से कैसे अलग कर दिया गया था। वह यह जरूर समझ गया कि पीछे छूट जानेवाली गाड़ी मुसीबत में जरूर पड़ी होगी।

इन्जीनियर ने यह तय करने में देर नहीं की कि उसे क्या करना चाहिए। ओमाहा की तरफ बढ़ते जाने में बुद्धिमानी थी और पीछे गाड़ी के पास वापिस जाना खतरनाक था क्योंकि डाकू जरूर ही गाड़ी को अभी लूट रहे होंगे। खैर, कोई बात नहीं। भट्टी में लकड़ियाँ और कोयला झोंक दिया गया। आग फिर दहक उठी। भाप ने फिर जोर पकड़ा, और करीब दो बजे दोपहर में इंजन फिर वापस हुआ।

वह किअारने स्टेशन की ओर तेजी से वापिस हो रहा था। इसी की सीटी को उन्होंने कोहरे में सुना था। गाड़ी में इंजन लगते हुए देखकर यात्रियों को बड़ा संतोष हुआ। वे अब अपनी यात्रा पुनः प्रारम्भ करने जा रहे थे जो इस प्रकार दुर्भाग्य से खण्डित हो गई थी।

इंजन आने पर, श्रीमती आऊदा स्टेशन के बाहर आईं और कॉन्डक्टर को सम्बोधित करके पूछा,—

'आप रवाना होने जा रहे हैं ?'

'अभी, तुरन्त, श्रीमती।'

'लेकिन कैदी—हमारे भाग्यहीन साथी—'

'मैं यात्रा में बाधा नहीं डाल सकता', कॉन्डक्टर ने उत्तर दिया। 'हम पहिले ही तीन घण्टे पिछड़ गये हैं।

'और सैनफ्रैन्सिसको से आनेवाली गाड़ी कब यहाँ पहुँचती है ?'

'कल शाम को, श्रीमती।'

'कल शाम को ! यह तो बड़ी देर हो जायेगी। हमें इन्तजार करना ही होगा—'

'असम्भव', कॉन्डक्टर ने उत्तर दिया। 'आप चल रही हैं, तो सवार हो जाइये।'

'मैं नहीं जाऊँगी', युवती ने उत्तर दिया। फिक्स ने यह वार्तालाप सुना। कुछ क्षणों पहिले जब रेल की सवारी का कोई साधन नहीं था, उसने किअारने से चल देने का इरादा कर लिया था। अब, चूँकि रेल वहाँ तैयार खड़ी थी और उसे केवल डिब्बे में बैठने की देर थी, एक अदम्य शक्ति ने उसे जमीन से हिलने नहीं दिया। स्टेशन का प्लेटफार्म उसके पैर झुलसाये दे रहा था। वह वहाँ से हिल न सका। उसके अन्दर एक द्वन्द्व शुरू हो गया। उसे अपनी असफलता पर क्रोध आया मगर यह क्रोध उसका गला घोटे दे रहा था।

उसी समय सब यात्री और कुछ आहत व्यक्ति भी डिब्बों में बैठ गये थे। इनमें कर्नल प्रॉक्टर भी था। इन लोगों की दशा चिन्ता-जनक थी। अधिक गर्म हुए ब्वायलर की सूँ-सूँ सुनाई देती थी। भाप खूब निकल रही थी। इन्जीनियर ने सीटी दी, गाड़ी चल दी और शीघ्र ही आँखों से ओझल हो गई। इंजन का सफेद धुआँ बर्फ के साथ एकाकार हो रहा था।

जासूस फ़िक्स रुक गया था। मौसम बड़ा खराब था, सर्दी बहुत ज्यादा। स्टेशन की बेंच पर फ़िक्स मूर्तिवत् बैठा था। यह माना जा सकता था कि वह सो रहा था। तूफान के होते हुए भी, श्रीमती आऊदा बार-बार कमरे से बाहर जाती थीं। वे प्लेटफार्म के अन्त तक गईं, बर्फ की आँधी के पार देखने का प्रयत्न करती हुई। उन्होंने कोहरे को चीर कर देखने की कोशिश की और सुनने की भी कि शायद कोई आवाज सुनाई पड़ जाय। वहाँ कुछ नहीं था। तब वे अन्दर आ गईं, सर्दी से ठिठुरी हुईं और कुछ क्षणों के बाद फिर बाहर जाने के लिए जो हर बार व्यर्थ हो जाता था।

शाम हुई। सिपाहियों का भेजा हुआ छोटा दल वापिस नहीं हुआ। इस समय वह कहाँ था? क्या इसे आदिम निवासियों को पकड़ने में सफलता प्राप्त हुई थी? क्या वहाँ युद्ध हुआ था या यह सिपाही कोहरे में गुमराह हो गये थे? फोर्ट किआरने का कप्तान बड़ा बेचैन था यद्यपि वह अपनी बेचैनी जाहिर नहीं होने देना चाहता था।

रात हुई। बर्फ गिरना कुछ कम हुआ, लेकिन सर्दी की ठिठुरन बढ़ गई। निर्भय-से-निर्भय दृष्टि भी उस विशाल, धुँधले क्षेत्र को बिना भय के नहीं देख सकती थी। मैदान पर सम्पूर्ण निस्तब्धता छाई हुई थी।

किसी पक्षी की फड़फड़ाहट या जंगली जानवर के चलने की आवाज ने उस शान्ति को भंग नहीं किया।

सारी रात, श्रीमती आऊदा मैदान में घूमती रहीं। मस्तिष्क आशंकाओं से पूर्ण था और हृदय में वेदना थी। उनके खयालात उन्हें दूर तक ले गये और उन्हें अनेक आशंकाओं ने घेर लिया। उनकी उन लम्बे क्षणों की दशा का वर्णन ही नहीं हो सकता।

उसी स्थान पर बिना हिले-डुले बैठा हुआ फ़िक्स सो नहीं सका। एक आदमी उसके पास आया और उससे बोला मगर जासूस ने उसे एक नकारात्मक इशारे का उत्तर देकर हटा दिया।

इस प्रकार रात्रि व्यतीत हुई। प्रात:काल सूरज का आधा छिपा हुआ गोला धूमिल क्षितिज पर दिखाई दिया। फिर भी निगाह दो मीलों तक जा सकती थी। फ़िलियास फ़ॉग और सिपाहियों की टुकड़ी उत्तर की तरफ गई थी। दक्षिण बिल्कुल उजाड़ था। उस समय सुबह के सात बजे थे।

बहुत ही चिन्तित कप्तान समझ नहीं सका कि क्या करना चाहिए। 'क्या उसे पहिली टुकड़ी की सहायता के लिए दूसरी भेजना चाहिए था ? क्या उसे पहिले ही बलिदान हुए व्यक्तियों की रक्षा के लिए नये और ताजे सिपाहियों का बलिदान करना होगा, और वह भी उस समय जब कि सफलता की आशा बहुत कम थी ?' उसकी झिझक अधिक देर नहीं रही। उसने अपने एक लेफ्टिनेन्ट को पुकारते हुए उत्तर दिशा को सहायता भेजने का आदेश दिया। उसी समय गोलियों के दगने की आवाज सुनाई पड़ी। क्या यह एक सूचना थी ? सिपाही किले के बाहर दौड़ पड़े और आध मील के फासले पर उन्होंने एक छोटे दल को अच्छी दशा में लौटते हुए देखा।

सबसे आगे फ़िलियास फ़ॉग थे और उन्हीं के पास पासेपार्टाऊट और दो यात्री। यात्रियों को सिआऊक्स लोगों की कैद से छुड़ा लिया गया था।

किश्रारने के किले से दस मील दक्षिण की ओर एक युद्ध हुआ था। पासेपार्टाऊट और उसके दो साथी पहिले से ही अपने पकड़नेवालों से लड़ रहे थे। अपने घूंसे से फ्रान्सीसी ने तीन को धराशायी कर दिया था। उसी समय उसके मालिक और सिपाही उनकी सहायता को दौड़ पड़े।

रक्षक और रक्षित, सब का स्वागत आनन्द के नारों से किया गया और फ़िलियास फॉग ने घोषित किया हुआ पुरस्कार सिपाहियों में बाँट दिया। पासेपार्टाऊट ने ठीक ही दोहराया—

'मुझे जरूर तस्लीम करना चाहिए कि मैं अपने मालिक को बड़ा महँगा पड़ रहा हूँ।'

बिना एक शब्द कहे हुए फ़िक्स ने मिस्टर फॉग को देखा और उस पर पड़े हुए प्रभाव की व्याख्या करना कठिन होता।

जहाँ तक श्रीमती आऊदा का सवाल है, उन्होंने फॉग साहब का हाथ अपने हाथ में लेकर दबा दिया लेकिन एक शब्द भी उनकी जुबान से निकल नहीं सका।

उसी समय पासेपार्टाऊट ने आते ही रेल की खोज की। उसने सोचा कि रेल वहाँ स्टेशन पर होगी ही और ओमाहा जाने को तैयार होगी। उसे आशा थी कि वे लोग खोये हुए समय की पूर्ति कर लेंगे।

'रेल! रेल!', वह चिल्लाया।

'चली गई।' फ़िक्स ने उत्तर दिया।

'और अब दूसरी गाड़ी कब आयेगी?' फ़िलियास फॉग ने पूछा।

'आज शाम से पहिले नहीं।'

'ओह!' उस सदैव शान्त और अविचलित रहनेवाले व्यक्ति ने केवल इतना ही कहा।

(३१)

फ़िलियास फ़ॉग ने देखा कि वे बीस घण्टे पिछड़ गये थे। अनिच्छा से इस देर को करनेवाला पासेपार्टाऊट पश्चात्ताप और ग्लानि की अग्नि में जल उठा। निस्सन्देह वही अपने मालिक के विनाश का कारण था!

इसी समय जासूस मिस्टर फ़ॉग के पास आया और गौर से उनके चेहरे को देखता हुआ बोला,—

'क्या वाकई आप बड़ी जल्दी में हैं, श्रीमान्?'

'वाकई', फ़ॉग साहब ने उत्तर दिया।

'मैं आग्रह करता हूँ', फ़िक्स बोला। 'आप के लिए ११ तारीख को न्यूयार्क में होना बहुत जरूरी है, और वह भी नौ बजे शाम से पहिले ही, क्योंकि वही लिवरपूल जानेवाले जहाज के छूटने का समय है।'

मेरा बहुत ही जरूरी काम है।'

'और अगर इस आदिम निवासियों के हमले ने आपकी यात्रा में बाधा न डाली होती, तो आप ११ की सुबह को ही न्यूयार्क पहुँच गये होते।'

'हाँ, जहाज छूटने के १२ घण्टे पहिले ही।'

'अच्छा, अब आप बीस घण्टे पिछड़े हैं। बीस और बारह का अन्तर आठ है। अब तो आठ ही घन्टों की कमी पूरी करनी है। क्या आप यह कमी पूरी करना चाहेंगे?'

'पैदल?' फ़ॉग साहब ने पूछा।

'नहीं, बर्फ पर चलनेवाली गाड़ी (Sledge) पर', फ़िक्स ने उत्तर दिया, 'बादबान वाली स्लेज पर। एक व्यक्ति ने मुझे इस सवारी का जरिया बताया है।'

यह वह व्यक्ति था जो जासूस के पास जाकर उससे बोला था और जिसकी राय उसने नहीं मानी थी।

फ़िलियास फ़ॉग ने फ़िक्स की बात का उत्तर नहीं दिया। फ़िक्स ने उस आदमी को फ़ॉग साहब को दिखा दिया था। वे उसके पास गये। एक क्षण बाद फ़िलियास फ़ॉग और यह मज नामक अमरीकन फोर्ट किआरने के नीचे बनी हुई एक झोपड़ी में दाखिल हुए।

वहाँ मिस्टर फ़ॉग ने एक बड़ी विचित्र गाड़ी देखी। दो लम्बी बल्लियों पर एक चौखटा रक्खा था जो आगे जरा उठा हुआ था। उस पर पाँच या छः व्यक्तियों के बैठने की जगहें थीं। चौखटे के आगे एक बहुत ऊँचा डण्डा लगा था जिसमें एक बड़ा और दो डण्डों वाला पर्दा लगा था। जिस खम्भे में पर्दा बँधा था वह धातु के कब्जों से जड़ा था। पीछे गाड़ी चलानेवाली एक पतवार थी। यह एक स्लेज थी। जाड़े के दिनों में जब रेलें बर्फ के कारण अवरुद्ध हो जाती थीं तो बर्फ़ीले मैदानों पर एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक यह गाड़ियाँ बड़ी तेजी से दौरा करती थीं। उनके पास भारी पर्दे होते थे और हवा के सहारे यह गाड़ियाँ मैदानों के धरातल पर एक एक्सप्रेस गाड़ी की रफ़्तार से फिसलती थीं।

कुछ क्षणों में मिस्टर फ़ॉग और इस पृथ्वीपोत के मालिक में सौदा तय हो गया। हवा अच्छी थी। यह जोरों से पश्चिम दिशा से चल रही थी, बर्फ सख्त हो गई थी, और मज को यक़ीन था कि वह कुछ ही घण्टों में मिस्टर फ़ॉग को ओमाहा पहुँचा देगा। वहाँ कई गाड़ियाँ आती-जाती हैं और शिकागो तथा न्यूयार्क जानेवाले रास्ते भी अनेक थे। खोये हुए समय को पूरा करना असम्भव नहीं था। प्रयत्न करने में हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

मिस्टर फ़ॉग श्रीमती आऊदा को खुले मैदान में सफर करने की तकलीफें नहीं देना चाहते थे। इन तकलीफों को गाड़ी की

रफ्तार और भी असहनीय कर देगी। उन्होंने श्रीमती आऊदा से कहा कि वे किआरने स्टेशन पर पासेपार्टाऊट की निगरानी में रुक जायँ। वहा ईमानदार व्यक्ति उन्हें सहूलियत के साथ एक अच्छे रास्ते से और अनुकूल दशा में योरुप पहुँचा देगा।

श्रीमती आऊदा ने फॉग साहब से अलग रहना स्वीकार नहीं किया और इस इरादे पर पासेपार्टाऊट बहुत प्रसन्न हुआ। चूँकि फ़िक्स साथ जा रहा था अत: अपने मालिक को छोड़कर अकेले रहने के लिए संसार की कोई शक्ति उसे बाध्य नहीं कर सकती थी।

इस समय जासूस ने क्या सोचा, यह कहना कठिन होगा। क्या फ़ॉग साहब के वापिस आ जाने से वह विश्वास और मत डगमगा गये थे, या उसने उन्हें एक बहुत होशियार बदमाश समझा जो संसार की परिक्रमा पूरी करने के बाद यह समझते कि वे इँगलैण्ड में सुरक्षित रहेंगे? शायद फ़िलियास फ़ॉग के सम्बन्ध में फ़िक्स के विचारों में सुधार हुआ था। फिर भी अपने कर्त्तव्य का पालन वह छोड़ ही नहीं सकता था। इसके अतिरिक्त उन सबसे ज्यादा वह इस बात का इच्छुक था कि वह जल्दी-से-जल्दी इँगलैण्ड पहुँच जाये।

आठ बजे स्लेज चलने के लिए तैयार हो गई। यात्री अपनी जगहों पर बैठ गये और अपने शरीरों को सफरी लबादों से खूब ढक लिया। विशाल बादबान फैला दिये गये और हवा का दबाव पाकर गाड़ी चालीस मील प्रति घण्टे की रफ्तार से कठोर बर्फ के धरातल पर फिसलने लगी।

फोर्ट किआरने और ओमाहा का दरम्यानी फासला, सीध में, ज्यादा-से-ज्यादा २०० मील था। अगर हवा चलती रहे तो यह फासला पाँच घण्टे में तय किया जा सकता था। अगर कोई दुर्घटना न हुई तो स्लेज एक बजे तक ओमाहा पहुँच जायगी।

क्या सफर था! एक दूसरे से गुँथे हुए यात्री बोल नहीं सके। रफ्तार के कारण बढ़ी हुई सर्दी उनके शब्दों को काट देती थी। स्लेज उतनी ही सरलता से मैदान के धरातल पर चल रही थी जितनी सरलना से पानी के धरातल पर जलपोत। जब जमीन को छूती हुई आँधी चली तो मालूम होता था कि पर्दों ने गाड़ी को जमीन से ऊपर उठा लिया है। पर्दे विशाल डैनों के समान लगते थे। गाड़ी जो गड्ढे कर देती थी उन्हें वह ठीक करता जाता था। सब पर्दे खुले हुए थे। एक छोटा पर्दा और तान दिया गया था जिसने गाड़ी की चाल कुछ और तेज कर दी थी। ठीक-ठीक तो हिसाब नहीं लगाया जा सकता था मगर गाड़ी की चाल चालीस मील प्रति घन्टे से कम नहीं थी।

'अगर कुछ टूटा-फूटा नहीं, तो हम पहुँच जायँगे'। मज ने कहा।

तय किये हुए समय पर पहुँचने में मज का फायदा था क्योंकि अपनी योजना पर टिके हुए, फॉग साहब ने एक बड़े इनाम की घोषणा से उसे उत्साहित कर दिया था।

वह मैदान, जिसे गाड़ी एक सीध में पार कर रही थी, समुद्र की तरह समतल था। उसे एक जमा हुआ तालाब कहा जा सकता था। अपने पूरे रास्ते भर रेल का रास्ता प्लेट-रिवर के दाहिने किनारे-किनारे चलता था। इस रास्ते को कम करते हुए स्लेज गाड़ी ने रेल-पथ द्वारा बने हुए चाप की जीवा को पकड़ा। मज डरा नहीं। फ्रीमॉण्ट के सामने छोटा घुमाव जमा हुआ था। तब रास्ता बिल्कुल ही निरापद था। फ़ॉग साहब केवल दो बातों को डरते थे:—गाड़ी की दुर्घटना या हवा का रुक जाना या बदल जाना।

लेकिन हवा कम नहीं हुई। इसके विपरीत वह और जोर से चलने लगी, यहाँ तक कि पर्दे की बिल्ली झुक गई जिसे धातु के कब्जे रोके रहे। एक सितार के तारों की तरह यह धातु के कब्जे

झनझना उठे मानो बेला के तारों से झनझनाहट पैदा हो गई हो।

'यह तार तो पाँच या आठ स्वरों के बाद का विराम दे रहे हैं। श्री फॉग ने कहा।

केवल यही शब्द उन्होंने उस यात्रा भर में कहे। श्रीमती आऊदा लबादों और रोयेंदार वस्त्रों में लिपटी बैठी थीं और जहाँ तक संभव था उनकी उस भयंकर शीत से रक्षा की जा रही थी।

पासेपार्टाऊट का चेहरा कोहरे में डूबते हुए सूरज के समान लाल था और सर्दी के मारे वह सिकुड़ा हुआ बैठा था। पासेपार्टाऊट अटूट विश्वास का आदमी था। उसे फिर आशा होने लगी। न्यूयार्क सुबह पहुँचने के बजाय वे वहाँ शाम को पहुँचेंगे। हो सकता है कि वे लोग लिवरपूल जहाज की रवानगी से कुछ पहिले ही वहाँ पहुँच जायँ।

पासेपार्टाऊट ने अपने सहायक फिक्स का हाथ पकड़ने की बड़ी ही शक्तिशाली इच्छा महसूस की। उसे यह नहीं भूला था कि जासूस ही के द्वारा उस विचित्र सवारी का प्रबन्ध हुआ था। अगर यह प्रबन्ध न होता तो समय पर ओमाहा पहुँचने का कोई साधन नहीं था। लेकिन किसी अज्ञात और धुधली आशा के कारण वह खामोश रहा।

हर हालत में, एक बात जो पासेपार्टाऊट कभी नहीं भूलेगा, यह थी कि सिआऊक्स के हाथ से उसे छुड़ाने में इन्होंने बिना हिचक उतनी रकम खर्च कर दी थी। उसके जैसे अदना नौकर के लिए उन्होंने अपने माल और अपनी जान की भी बाजी लगा दी थी। नहीं ! मिस्टर फॉग को वह कभी नहीं भूलेगा।

जब हर एक यात्री विचारों और कल्पनाओं के संसार में विचरण कर रहा था, स्लेजगाड़ी बर्फ की चादर पर उड़ी चली जा रही थी।

यात्री यह जान भी न पाये कि स्लेज कब चश्मों पर और कब लिटिल-ब्लू-रिवर की सहायक धाराओं पर गुजरी। एक-सी सफेदी के नीचे खेत और चश्मे सब छिप गये।

मैदान बिल्कुल उजाड़ था। यूनियन पैसिफिक रोड और किआरने तथा जोजेफ को मिलानेवाली ब्रांच-लाइन के बीच यह मैदान एक उजाड़, जनहीन द्वीप के समान था। न कोई गाँव, न स्टेशन, यहाँ तक कि कोई किला भी नहीं। समय समय पर उन्होंने दाँत निकाले से कुछ पेड़ देखे जो बिजली की चमक की तरह गुजर जाते थे। इन पेड़ों का सफेद ढाँचा हवा के कारण मरोड़-सा गया था। कभी-कभी जंगली चिड़ियों के झुण्ड उठते थे। कभी मैदानी भेड़ियों के बड़े-बड़े गिरोह दिखाई देते थे। यह भेड़िये भूख से दुर्बल, और भयंकर प्राकृतिक माँग से पीड़ित थे। इन्होंने स्लेजगाड़ी की चाल से मुकाबिला किया। पासेपार्टाऊट ने अपना पिस्तौल सँभाला और तैयार हो गया कि अगर भेड़िये पास आये तो गोली चला दू। अगर किसी दुर्घटना के कारण स्लेजगाड़ी रुक जाती तो इन मुसाफिरों पर वे खूँखार भेड़िये हमला कर देते और तब मुसाफिरों की जान खतरे में पड़ जाती। लेकिन गाड़ी अपने रास्ते पर चलती रही और शीघ्र ही भेड़ियों का गुर्राता हुआ दल पीछे छूट गया।

दोपहर को मज ने जमीन पर बने हुए कुछ निशानों से पहिचाना कि वे लोग उस समय प्लेटरिवर के ऊपर जमी हुई बर्फ पर चल रहे थे। उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसे पूरा यकीन था कि बीस मील चलने के बाद वह ओमाहा पहुँच जायेगा।

निस्सन्देह, एक घण्टे बाद इस कुशल चालक ने, पतवार छोड़कर, पर्दे खोल दिये और गाड़ी आध मील और फिसल गई। आखिरकार गाड़ी रुकी और बर्फ से सफेद हुए छतों के एक झुण्ड की ओर इशारा करते हुए मज ने कहा, 'हम आ गये।'

आ गये ! वाकई स्टेशन पर आ गये जो अनेक रेलपथों द्वारा संयुक्तराष्ट्र के विभिन्न भागों से सम्बन्धित था।

पासेपार्टाऊट और फ़िक्स जमीन पर कूद पड़े उन्होंने अपने अकड़े हुए अंगों को झिटका दिया। उन्होंने मिस्टर फ़ॉग और श्रीमती आऊदा को गाड़ी से उतरने में सहायता दी। फ़िलियास फ़ॉग ने मज को खुश कर दिया जिसका हाथ पासे पार्टाऊट ने पकड़-कर एक दोस्ताना ढँग से हिलाया। सब लोग स्टेशन की तरफ तेजी से चल दिये।

नेब्रास्का के इस महत्त्वपूर्ण शहर में पैसिफिक रेल रोड का जंक्शन था। इस प्रकार मिसीसिपी के आधार का सम्बन्ध पैसिफिक महासागर से था। ओमाहा से शिकागो जाने के लिए शिकागो, रॉक आईलैण्ड और पैसिफिक रोड पकड़नी पड़ती थी। यह सड़क सीधी पूर्व की ओर जाती थी और पचास स्टेशनों से गुजरती थी।

एक पूरी रेलगाड़ी जाने को तैयार खड़ी थी। फ़िलियास फ़ॉग और उनके साथियों को बस जल्दी से डब्बे में चढ़ जाने की देर थी। वे ओमाहा के दर्शन तक न कर सके। पासेपार्टाऊट ने मान लिया कि वाकई अगर वे ओमाहा नहीं देख सके तो कोई अफसोस की बात नहीं थी, क्योंकि वह कोई सैर-सपाटे के लिए किया गया भ्रमण नहीं था।

आईओवा के प्रान्त में रेल तेजी रफ्तार से चली। रास्ते में काऊन्सिल बफ्स, डेस मोइनेस और आईओवा शहर पड़ा। रात को गाड़ी ने डेवेनपोर्ट पर मिसीसिपी नदी पार की और रॉक आई-लैण्ड पर इलीनोइस में दाखिल हुई। दूसरे दिन दोपहर के बाद १० तारीख को लगभग चार बजे वे शिकागो पहुँच गये। यह नगर पहिले ही खण्डहरों से उठकर पहिले से अधिक शान-शौकत और गर्व से मिशीगन झील पर सौंदर्य बिखेर रहा था।

शिकागो से न्यूयार्क नौ सौ मील के फासले पर था। शिकागो में रेल-गाड़ियों की कमी नहीं थी। मिस्टर फॉग फौरन् ही एक गाड़ी से दूसरी में बैठ गये। पिट्सबर्ग, फोर्टवेने और शिकागो रेलवे के तेज इन्जन बेतहाशा भागे मानो वे समझते थे कि मिस्टर फॉग को बहुत जल्दी थी। गाड़ी ने इन्डिआना और ओहियो को पार किया। उस समय वे घनी आबादीवाले शहरों और लम्बे-चौड़े खेती-बाड़ी वाले क्षेत्रों से गुजरे और रास्ते में बहुत कम रुके। शिकागो से चलने के १६ घण्टे बाद गाड़ी ओहियो पहुँच गई।

नौ बजकर ३५ मिनट पर, ११ तारीख की शाम को, गाड़ी जरसी नगर के विशाल स्टेशन में दाखिल हुई। इस स्टेशन की दीवारों से हडसन नदी का जल छू रहा था। यहाँ से ५१ सवारी-गाड़ियाँ और ८१ मालगाड़ियाँ हर २४ घण्टे पर छूटती थीं और इतनी ही गाड़ियाँ आती थीं। रेलों का यह पूर्वी जंक्शन बहुत बड़ा था। बन्दरगाहों में जलपोत और बादबान वाली नावें कतार की कतार खड़ी थीं। बन्दरगाह के प्लेटफार्म रेलवे-स्टेशन के दोनों तरफ फैले हुए थे। न्यूयार्क के व्यापार में लगे हुए सभी प्रकार के जहाजों और लघु-पोतों से विशाल नदी भरी हुई थी। यात्री जैसे ही स्टेशन के सामने बने हुए चौड़े प्लेटफार्म पर उतरे, उन्हें सामने न्यूयार्क दिखाई दिया। यहीं पर रेल-रोड कम्पनी की विशाल नावें अपने असंख्य यात्रियों को चढ़ाती और उतारती हैं और वे अपने इस कार्य में कभी रुकती नहीं हैं।

रात को नौ बजकर ३५ मिनट पर गाड़ी स्टेशन पर उस जगह रुकी थी जहाँ कुनार्ड के जलपोतों की कतार थी। कुनार्ड का दूसरा नाम ब्रिटिश एण्ड नार्थ अमेरिकन रायल मेल स्टीम पैकिट कम्पनी था।

लिवरपूल जानेवाला जहाज 'चाईना' ३५ मिनट पहिले छूट चुका था।

(३२)

'चाईना' की रवानगी, मालूम पड़ता था, फ़िलियास फॉग की अन्तिम आशा को भी अपने साथ ले गई थी।

वास्तव में, अमरीका और योरुप के बीच सीधा सफर करने वाले फ्रेञ्च ट्रैन्स एटलान्टिक, ह्वाईट स्टार लाइन, इनमान कम्पनी, हैम्बर्ग लाइन के या और दूसरे जहाज फॉग साहब का काम नहीं बना सकते थे।

फ्रेञ्च एटलान्टिक कम्पनी का 'पैरिरे' जहाज १४ दिसम्बर से पहिले छूटनेवाला नहीं था। अलावा इसके, हैम्बर्ग कम्पनी की तरह यह जहाज सीधा लिवरपूल या लण्डन न जाकर हॉवर को जाता। उस हालत में हॉवर से साऊथम्पटन तक का यह अतिरिक्त चक्कर फॉग साहब के अन्तिम प्रयत्नों को विफल कर देता।

फॉग साहब ने अपना ब्रेडशा टाइम टेबुल देखा, जिसमें एक-एक दिन के योरुप जानेवाले जहाजों का विवरण दिया हुआ था।

पासेपार्टाऊट बर्बाद हो गया था। केवल ३५ मिनटों की देर के कारण जहाज छूट गया था। इस बात से वह मर्माहत था। उसी की गलती थी। हाँ, उसी की, जो बजाय अपने मालिक की सहायता करने के उनके रास्ते का रोड़ा बन गया था! जब उसने यात्रा की उन तमाम घटनाओं पर विचार किया, जब उसने खर्च हुई रकमों पर गौर किया, जो सिर्फ उसी पर खर्च हुई थीं, और जिनसे सिर्फ नुकसान ही हुआ था, जब उसने यात्रा के खर्चों पर सोच-विचार किया, उस बड़ी बाजी के २०,००० पाउण्डों की बात सोंची तो वह आत्मग्लानि से तड़प उठा।

मिस्टर फॉग ने पासेपार्टाऊट को आधी बात तक नहीं कही। जहाजों के पुश्ते से चलकर उन्होंने केवल इतना कहा,—

'आओ, कल देखा जायेगा।'

मिस्टर फॉग, श्रीमती आऊदा, फ़िक्स और पासेपार्टाऊट ने जरसी नगर में एक छोटी नाव द्वारा हडसन नदी पार की और एक गाड़ी में बैठ गये जो उन्हें ब्राडवे के सेण्ट निकोलस होटल ले गई। कमरे ले लिये गये और रात वहीं गुजारी गई जो मिस्टर फ़ॉग के लिए बहुत छोटी थी। वे खूब गहरी नींद सोये मगर उनके साथी रात भर करवटें बदलते रहे क्योंकि उनके अन्तर्द्वन्द्व ने उनको सोने नहीं दिया।

दूसरे दिन दिसम्बर की १२वीं तारीख थी। १२ तारीख को प्रातःकाल सात बजे से लेकर २१ तारीख को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट तक केवल नौ दिन १३ घण्टे और ४५ मिनट शेष रह गये थे। अगर फ़िलियास फ़ॉग पिछली रात कुनाड लाइन के सब से अच्छे जहाजों में एक, 'चाइना' द्वारा चलते तो वे लिवरपूल में और फिर लण्डन में मनोवांछित समय पर पहुँच जाते।

फ़िलियास फ़ॉग अकेले होटल से चल दिये और अपने नौकर से इन्तजार करने को कह गये। श्रीमती आऊदा से उन्होंने कहा कि वे किसी भी समय चल देने के लिए तैयार रहें।

फ़ॉग साहब हडसन नदी के किनारे गये। प्लेटफार्म पर रुके हुए या धारा में लंगर डाले हुए जहाजों में से उन्होंने उन जहाजों की तलाश की जो रवाना होनेवाले थे। बहुत से जहाजों ने चलने का सिगनल उठा लिया था और समुद्र में प्रवेश करने जा रहे थे। इस महान् बन्दरगाह में कोई दिन ऐसा नहीं होता था जब कि सैकड़ों जहाज संसार के प्रत्येक हिस्से के लिए रवाना न होते हों। अधिकतर जहाज बादबानवाले ही थे जिनसे फ़ॉग साहब का मतलब हल नहीं हो सकता था।

श्री फ़ॉग अपने आखिरी प्रयत्न में असफल होते दिखाई देते थे। उसी समय, थोड़े ही फ़ासले पर खड़ा हुआ, उन्हें एक सौदागरी जहाज दिखाई दिया। निकलते हुए धुएँ से जाहिर हो रहा था कि वह चलने ही वाला था।

फ़िलियास फ़ॉग ने एक नाववाले को पुकारा और उसमें बैठ गये। पतवार के दो-चार हाथ के बाद ही वे 'हेनरिटा' जहाज की सीढ़ी पर पहुँच गये। यह जहाज नीचे से लोहे का और ऊपर से लकड़ी का बना था।

'हेनरिटा' का कप्तान जहाज पर ही था। फ़िलियास फ़ॉग डेक पर गये। उन्होंने पूछा कि कप्तान कहाँ है। कप्तान तुरन्त वहाँ आ गया।

यह पचास वर्ष का बुड्ढा था, एक प्रकार का समुद्री भेड़िया और बहुत बड़बड़ानेवाला जिसके साथ निबाहना बड़ा कठिन लगता था।

उसकी बड़ी आँखें, ताँबे के समान रंग, लाल बाल, बड़ा सीना और कंधे जाहिर करते थे कि वह संसारी व्यक्ति नहीं था।

'कप्तान ?' फ़ॉग साहब ने पूछा।

'मैं ही कप्तान हूँ।'

'मैं लण्डन का फ़िलियास फ़ॉग हूँ।'

'और मैं कार्डिफ़ का एन्ड्रू स्पीडी।'

'आप रवाना होने जा रहे हैं ?'

'एक घण्टे में।'

'आप सामान लिये जा रहे हैं—?'

'बोर्डो को।'

'आप सामान कौन-सा लिये जा रहे हैं ?'

'डेक के नीचे बजरी और बालू वगैरह भरा है। और सामान नहीं है। मैं ऐसा ही वजनी बोझ ले जाता हूँ।'

'आपके जहाज पर यात्री तो हैं नहीं?'

'नहीं। हम कभी यात्री नहीं ले जाते। कह तो दिया कि हमारा जहाज सौदागरी है।'

'आपका जहाज तेज जाता है?'

'ग्यारह या बारह जहाजी मील प्रति घण्टे। मशहूर जहाज है हेनरिटा।'

'क्या आप कुछ मुसाफिर लिवरपूल तक ले जा सकते हैं? मैं हूँ और तीन व्यक्ति और हैं।'

'लिवरपूल को? चीन को क्यों नहीं?'

'मैं तो लिवरपूल की बात कह रहा हूँ।'

'नहीं!'

'कतई नहीं?'

'नहीं। मैं बोर्डो रवाना हो रहा हूँ, और वहीं जाऊँगा।'

'किसी कीमत पर नहीं?'

'किसी कीमत पर नहीं!'

कप्तान ने इस ढंग से कहा जिससे लगता था कि वह उस बात का जवाब नहीं चाहता।

'लेकिन 'हेनरिटा' के मालिक कौन हैं?' फ़ॉग साहब ने पूछा।

'हेनरिटा' का मालिक मैं हूँ।' कप्तान ने जवाब दिया, 'जहाज मेरा है।'

'मैं आपके लिए इसके लदान का जिम्मा ले लूँगा।'

'नहीं।'

'बिल्कुल?'

'कहिए कि आप इसे मुझसे खरीद लेंगे।' फ़िलियास फ़ॉग ने मुँह नहीं बनाया, लेकिन मामला टेढ़ा था। जैसा हाँगकाँग में हुआ, वैसा न्यूयार्क में नहीं हो सका या जैसी 'टंकादरे' के कप्तान से निबटी वैसी 'हेनरिटा' के कप्तान से नहीं। अब तक इन

महोदय के धन से सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली गई थी। अब की बार धन भी व्यर्थ साबित हुआ।

फिर भी एटलान्टिक को जहाज द्वारा पार करने का साधन तो मिलना ही चाहिए था। हाँ, यह बात दूसरी थी कि वे एक गुब्बारे में उस पार जाते जो बड़ा खतरनाक होता और जो सम्भव भी नहीं था।

फिर भी फ़िलियास फ़ॉग के दिमाग में, मालूम होता था, कोई विचार था जरूर, क्योंकि उन्होंने कप्तान से कहा,—

'अच्छा, क्या आप मुझे बोर्डो तक ले जा सकते हैं ?'

'नहीं।, अगर आप २०० डॉलर भी दें तो भी नहीं।'

'मैं आपको २००० देता हूँ।'

'एक आदमी का ?'

'एक आदमी का।'

'और आप चार आदमी हैं ?'

'चार ही हैं।'

कप्तान स्पीडी अपनी चाँद खुजलाने लगा मानो अपनी खाल ही खुच डालेगा। बिना रास्ता बदले हुए ८००० डालरों की आय हो रही थी। उस समय अपनी यात्रा-विरोधी दृढ़ राय को बदल डालने में ही लाभ था। २००० डालर प्रति यात्री क्या थे कीमती सामान थे।

'मैं नौ बजे चल दूँगा', कप्तान स्पीडी ने सरलता से उत्तर दिया, 'आप सब लोग यहीं आ जायें।'

'नौ बजे हम लोग जहाज पर आ जायँगे।' मिस्टर फॉग ने सरलता से उत्तर दिया।

साढ़े आठ बजे थे। 'हेनरिटा' से उतरना, गाड़ी में चढ़ना, सेण्ट निकोलस होटल जाना और अपने साथ श्रीमती आऊदा,

पासेपार्टाऊट, यहाँ तक कि अलग न रह सकनेवाले फ़िक्स को भी लाना बड़े इत्मीनान से हुआ, उसी इत्मीनान से जो प्रत्येक परिस्थिति में मिस्टर फ़ॉग में मौजूद रहता था।

'हेनरिटा' जहाज के चलने के समय पर चारों व्यक्ति वहाँ पहुँच गये थे।

जब पासेपार्टाऊट ने यह जाना कि आखिरी समुद्री-यात्रा कितनी महँगी पड़ रही थी, तो उसने लम्बी आहें लीं।

अब जासूस फ़िक्स का सवाल था। उसने सोचा कि बैंक ऑफ इँगलैण्ड को पूरी रकम तो वापिस मिलती नहीं। वास्तव में इँगलैण्ड पहुँचते-पहुँचते इस सफरी थैले में से ७००० पाउण्ड से अधिक निकल जायँगे, जब कि यह तय था कि मिस्टर फ़ॉग दो-चार मुट्ठी नोट समुद्र में नहीं फेंक देंगे!

(३२)

एक घण्टे बाद 'हेनरिटा' जहाज उस लघु तरणी के पास से गुजरा जो हडसन नदी के प्रवेश-द्वार पर थी। सैण्डी हुक प्वाइंट घूमकर जहाज ने समुद्र में प्रवेश किया।

दिन में उसने लाँग आइलैण्ड का चक्कर लगाया और शीघ्रता से पूर्व की ओर बढ़ चला।

दूसरे दिन दोपहर को, दिसम्बर की १३ तारीख को एक आदमी ने जहाज पर जाकर उसकी जिम्मेदारी ली। यह मान ही लेना चाहिए कि यह व्यक्ति कैप्टन स्पीडी था! लेकिन नहीं, यह फ़िलियास फॉग थे।

और कैप्टन स्पीडी? वे बड़े आराम से अपने कमरे में ताले से बंद थे। वे इस रफ्तार से गुर्रा रहे थे जो क्रोध प्रदर्शित करती थी। यह क्रोध क्षम्य था जो एक कराह में बदल गया था।

जो हुआ था, वह बहुत साधारण है। फ़िलियास फ़ॉग लिवर-पूल जाना चाहते थे और कप्तान उन्हें वहाँ ले जाने को राजी नहीं था। तब फ़ॉग साहब बोर्डो जाने को राजी हो गये थे। उन तीस घण्टों में, जिनमें वे जहाज पर रहे, उन्होंने अपने बैंक नोटों का इतना अच्छा उपयोग किया कि खलासी, मल्लाह और कोयला झोंकनेवाले तथा अतिरिक्त खल्लासी, जिनकी कप्तान से खटपट रहती थी, फ़ॉग साहब के हो गये। यही कारण था कि कैप्टन स्पीडी की जगह फ़िलियास फ़ॉग अफसरी कर रहे थे। उस समय वह अपने कमरे में कैद था। उधर जहाज बजाय बोर्डो के लिवर-पूल की तरफ भागा चला जा रहा था। मिस्टर फ़ॉग को देखकर यह जाहिर था कि वे एक मल्लाह या जहाज चलानेवाले रह चुके थे।

इस कार्य का जो फल होगा उसका तो बाद में ही पता चलेगा। श्रीमती आऊदा की बेचैनी कम नहीं हुई यद्यपि वे कुछ बोलीं नहीं। पहिले फ़िक्स दुःखित हुआ। पासेपार्टाऊट को तो यह सब बड़ा शानदार प्रतीत हुआ।

'ग्यारह या बारह जहाजी मील प्रति घण्टा' ही तो कैप्टन स्पीडी ने कहा था, और 'हेनरिटा' ने यह औसत रफ्तार निबाही भी थी।

अब और कितने 'अगर' थे?—अगर समुद्र बहुत आन्दोलित न हुआ, अगर हवा पूर्व से न चली, अगर जहाज की कोई दुर्घटना न हुई, इंजन में कुछ न हुआ, तो १२वीं दिसम्बर से २१वीं दिसम्बर तक शुमार करते हुए, नौ दिनों में 'हेनरिटा' जहाज न्यूयार्क से लिवरपूल तक ३००० मील की दूरी तय कर सकता था। यह सच है कि घूस ले लेने की वजह से 'हेनरिटा' जहाज फ़ॉग साहब को बन्दरगाह पर न उतारकर उनकी इच्छा के खिलाफ आगे दूर पर उतारता।

पहिले कुछ दिन यात्रा शान्तिपूर्वक होती रही। हवा ज्यादा खराब नहीं थी। वह उत्तर-पूर्व में शांत-सी थी। पर्दे लगा दिये गये थे और इनकी वजह से 'हेनरिटा' एटलान्टिक पार करनेवाले एक सच्चे जहाज की तरह चल रहा था।

पासेपार्टाऊट खुश था। उसके मालिक के अन्तिम साहसिक कार्य ने उसे जोश से भर दिया था। इस काम के परिणाम पर विचार करने की बात को उसने पसंद ही नहीं किया। खलासियों ने उससे ज्यादा रँगीला और फुर्तीला व्यक्ति नहीं देखा था। इसने मल्लाहों से खूब दोस्ती कर ली और उन्हें अपनी कलाबाजियों से चकित कर दिया। उसने उन्हें खूब शराब पिलाई। उसने सोचा, वे सब सज्जनों की तरह पेश आते थे और कोयला झोंकनेवाले बहादुरों की तरह कोयला झोंकते थे। उसके हास्य से वे सब बहुत प्रभावित हुए। वह पिछली परेशानियों, कठिनाइयों और क्लेशों को भूल गया। उसे अब केवल अन्त की चिन्ता थी जो अब करीब ही था। कभी तो वह बेसबरी से उबल उठता था मानो 'हेनरिटा' का भट्ठियों ने उसे गर्म कर दिया हो। अक्सर यह भला आदमी फिक्स के आस-पास घूम आता था। वह उसे शंका की नजर से देखता था लेकिन वह उससे बोला नहीं। अब इन दो पुराने मित्रों में कोई घनिष्ठता नहीं रह गई थी।

इसके अतिरिक्त, यह मानना पड़ेगा कि फिक्स यह सब नहीं समझता था। 'हेनरिटा' पर विजय, खलासियों को रुपये से बश में करना और फॉग साहब का एक सिद्धहस्त जहाजी की तरह काम करना फिक्स को एक बड़ी उलझनवाली बात लगी। वह यह नहीं जानता था कि अब क्या और कैसे सोचा जाये। लेकिन, फिर भी, पचपन हजार पाऊण्ड की चोरी से शुरू करके एक व्यक्ति एक जहाज चुराकर अन्त भी कर सकता था। अतः फिक्स का यह सोचना स्वाभाविक था कि वह 'हेनरिटा' जहाज लिवरपूल

नहीं जा रहा था बल्कि फ़ॉग द्वारा संचालित संसार के एक ऐसे कोने में जा रहा था जहाँ यह डाकू एक समुद्री डाकू बन जायेगा और अपने को सुरक्षित कर लेगा !

यह मानना पड़ेगा कि यह माना हुआ विचार इससे अधिक बुद्धिपूर्ण: नहीं हो सकता था और जासूस को इस मामले में हाथ डालने पर घोर पश्चात्ताप हुआ।

जहाँ तक कप्तान स्पीडी का सवाल है, वह अपने कमरे में गुर्राता रहा। पासेपार्टाऊट का यह काम था कि वह उसको खाना पहुँचाता रहे। उसने यह काम बड़ी सावधानी से किया यद्यपि वह बड़ा बलवान् था। फ़ॉग साहब को जहाज पर किसी कप्तान के मौजूद होने का शक तक नहीं हुआ।

१३ तारीख को वे न्यूफाउण्डलैंड के तटों से गुजरे। वे अक्षांश अच्छे नहीं हैं। जाड़े में वहाँ अक्सर कोहरा छाया रहता है, और झंझावात भयानक होता है। कल तक, यकायक गिरे हुए मौसम-निर्देशक यंत्र ने सूचित किया कि वातावरण में परिवर्तन होनेवाला था। वास्तव में, रात को तापमान बदला, सर्दी बढ़ी, और इसी समय हवा का रुख दक्षिण-पूर्व की तरफ हो गया।

यह दुर्भाग्य की बात थी। रास्ते से कहीं भटक न जायें, इस ख़याल से मिस्टर फ़ॉग को भाप बढ़ानी पड़ी और पर्दे समेटने पड़े। लेकिन समुद्र की दशा के कारण जहाज की प्रगति धीमी पड़ गई। समुद्र की लम्बी लहरें जहाज के पिछले भाग से टकरा रही थीं। जहाज जोर से हिल रहा था और इसी कारण इसकी चाल धीमी पड़ रही थी। हवा इतनी बढ़ी कि आँधी हो गई। यह सम्भव था कि 'हेनरिटा' जहाज लहरों से लड़ता हुआ अपने को सीधा न रख पाता। अब अगर तूफान के सामने से वह भागता तो पता नहीं क्या-क्या अज्ञात दुर्घटनाएँ हो जातीं।

उसी समय आसमान की तरह पासेपार्टाऊट का चेहरा अन्धकारपूर्ण हो गया। दो दिनों तक यह भला आदमी बहुत खौफ खाता रहा। लेकिन फ़िलियास फ़ॉग एक बहादुर मल्लाह साबित हुए जो जानते थे कि समुद्र से किस तरह लोहा लेना चाहिए। बिना भाप कम किये हुए वे अपने रास्ते पर चलते रहे। जब कभी लहरों के साथ जहाज उठ जाता था, वह उन्हें पार कर लेता था लेकिन एक किनारे से दूसरे किनारे तक उसका डेक जलमय हो जाता था। कभी-कभी जब बहुत ऊँची कोई लहर जहाज के पिछले भाग को पानी के ऊपर उठा देती थी तो हवा को अपने फलों से मारता हुआ स्क्रू पानी के ऊपर आ जाता था। जहाज फिर भी सीधा बढ़ा जा रहा था।

फिर भी हवा उतनी भयानक नहीं हुई जितनी की आशंका थी। हवा उन आँधियों की तरह नहीं थी जो ९० मील प्रति घण्टा की रफ्तार से चलती हैं। वह ताजगी से चलती रही लेकिन दुर्भाग्य यह था कि हवा केवल दक्षिण-पूर्व से ही चलने की जिद करती रही और पर्दे फैलाने नहीं दिये। फिर भी, जैसा कि हम देखेंगे, यह बहुत लाभदायक होता अगर पर्दे फैलाये जा सकते और उनसे भाप-शक्ति को सहायता मिल सकती।

१६वीं दिसम्बर लण्डन से चलने के दिन से पचहत्तरवाँ दिवस था। 'हेनरिटा' को अभी कुछ वैसी देर नहीं हुई थी। आधी यात्रा लगभग समाप्त हो चुकी थी और सबसे खराब स्थान गुजर चुके थे। गर्मी की ऋतु में, सफलता निश्चित होती। जाड़े में सफलता मौसम की दया पर निर्भर थी। पासेपार्टाऊट कुछ नहीं बोला। छिपे तौर पर उसने आशा की, और अगर हवा कारगर न हुई तो भाप का सहारा तो था ही।

अब आज जहाज का इन्जीनियर डेक पर आया, मिस्टर फ़ॉग से मिला, और बड़ी गम्भीरता से बात की।

बिना कारण जाने हुए, यकीनन किसी विचार के कारण ही पासेपार्टाऊट कुछ विचलित हुआ। उन दोनों की बात सुनने के लिए वह अपना एक कान तक दे सकता था। लेकिन अपने मालिक के वह यही शब्द सुन सका,—

'क्या आप निश्चित रूप से कह रहे हैं ?'

'बिलकुल निश्चित रूप से, श्रीमान्,' इन्जीनियर ने उत्तर दिया। 'यह न भूलिये कि जब से हम चले हैं, हमारी सभी भट्ठियाँ काम करती रही हैं। यद्यपि न्यूयार्क से बोर्डो तक जाने के लिए थोड़ी भाप के लिए हमारे पास काफी कोयला था मगर अधिक भाप के लिए न्यूयार्क से लिवरपूल तक जाने के लिए हमारे पास काफी कोयला नहीं है !'

'मैं मामले पर विचार करूँगा,' मिस्टर फ़ॉग ने उत्तर दिया।

पासेपार्टाऊट समझ गया। एक भयानक भय ने उसे धर दबाया।

कोयला समाप्त होनेवाला था।

'ओह ! अगर मेरे मालिक इस परेशानी पर विजय पा सके तो अवश्य ही वे एक महान् व्यक्ति होंगे ?' ऐसा विचार पासेपार्टा-ऊट के मन में उठा।

फ़िक्स से मिलकर वह इस परिस्थिति को बिना बताये न रह सका।

'तब,' जासूस ने जवाब दिया, दाँत भींचकर, 'क्या तुम्हें विश्वास है कि हम लिवरपूल जा रहे हैं ?'

'मुझे यकीनन विश्वास है !'

'बेवकूफ !' घूमकर अपने कंधों को हिलाते हुए जासूस ने जवाब दिया।

पासेपार्टाऊट इस विशेषण पर खीज उठनेवाला ही था, जिसका असली अभिप्राय वह समझ नहीं सका। उसने मन में कहा

कि भाग्यहीन फ़िक्स को बड़ी निराशा हुई होगी। उसे आत्मग्लानि भी हुई होगी कि बेकार एक बहस में पड़कर उसने इतने भद्दे तरीके से इसके मालिक का पीछा करते हुए संसार का भ्रमण किया।

और अब फ़िलियास फ़ॉग क्या करने जा रहे थे, यह सोचना कठिन था। लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि सदा गम्भीर और शान्त रहनेवाले मिस्टर फ़ॉग ने कुछ तय कर लिया था, क्योंकि उसी शाम को उन्होंने इन्जीनियर को बुलवाकर उससे कहा,—

'जब तक ईंधन बिलकुल ही न चुक जाय, आग बनाये रखिये और अपने रास्ते पर बढ़े जाइये।'

कुछ क्षणों के बाद, 'हेनरिटा' की चिमनी धुँआ उगल रही थी।

तब पूरी भाप पर जहाज चला, लेकिन, जैसा उसने कहा था, दो दिनों बाद, १८ तारीख को इन्जीनियर ने सूचना दी कि कोयला दोपहर तक ही चल पावेगा।

'आग बुझने न देना,' मिस्टर फ़ॉग ने जवाब दिया। 'बल्कि इसके विपरीत वाल्व भरे रखना।'

इसी दिन दोपहर को, जहाज की ठीक के जाँच-पड़ताल कर लेने के बाद, फ़िलियास फ़ॉग ने पासेपार्टाऊट को बुलवाया और कैप्टन स्पीडी को बुलवाने के लिए उसे भेजा। इस भले आदमी को ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी बँधे शेर को खोलने के लिए उसको हुक्म दिया गया था। वह नीचे कमरे में उतरा और मन में यह कहा कि निस्सन्देह वहाँ उसे एक पागल मिलेगा।

वास्तव में, कुछ क्षणों के बाद डेक पर एक बम-सा आ पड़ा और साथ ही चिल्लाहटें और लानत-मलामत भी सुनाई दीं। यह बम कैप्टन स्पीडी था। यह तय था कि यह अब फूटने जा रहा था।

'हम कहाँ हैं?' अपने भयंकर क्रोधावेश में उसने पहिले यही शब्द कहे। वाकई अगर वह भला आदमी पागलपन या फ़ालिज

का मारा हुआ होता तो उन बीमारियों से कभी न नजात पा सकता।

'हम कहाँ हैं?' नीले चेहरे से उसने फिर दोहराया।

'लिवरपूल से ७७० मील दूर।' उत्तेजनाहीन शांति से मिस्टर फ़ॉग ने जवाब दिया।

'समुद्री डाकू?' एन्ड्रू स्पीडी ने चिल्लाकर जवाब दिया।

'मैंने आपको बुलवाया है, श्रीमान्——'

'समुद्र मथनेवाले!'

'—श्रीमान्', फ़ॉग साहब ने कहा, 'यह पूछने के लिए कि आप जहाज मुझे बेच देने को राजी हैं या नहीं।'

'नहीं! कयामत तक नहीं।'

'मैं उसे जला देने पर मजबूर हो जाऊँगा।'

'क्या कहा? मेरा जहाज जलाने पर!'

'कम से कम उसका ऊपरी भाग, क्योंकि हमारे पास ईंधन चुक गया है।'

'मेरा जहाज जलाओगे!' कैप्टन स्पीडी ने उत्तर दिया जो मारे क्रोध के शब्दों का अब उच्चारण भी नहीं कर सकता था। 'एक जहाज, जहाज जो ५०,००० डालरों का होता है?'

'यह लो ६०,००० देता हूँ!' उसे बैंक नोटों का एक पुलिन्दा देते हुए फ़िलियास फ़ॉग ने कहा।

इसने एन्ड्रू स्पीडी पर जबर्दस्त प्रभाव डाला। कोई भी अमरीकन ६०,००० डालरों को देखकर बिना भावना में बहे नहीं रह सकता। कप्तान क्षणमात्र में अपना क्रोध, अपनी कैद और उस मुसाफिर के प्रति सारी शिकायतें भूल गया। उसका जहाज बीस वर्षों का पुराना था। सौदा बहुत खरा था। बम अब फटा नहीं। मिस्टर फॉग ने पलीता हटा लिया था।

'मुझे बचा हुआ लोहे का पेंदा तो मिलेगा ही,' उसने नरमी से कहा।

'लोहे का पेंदा और इंजन, श्रीमान्। क्या यह घाटा है?'

'घाटा है।'

बैंकनोटों को छीनकर गिनता हुआ एन्ड्रू स्पीडी चल दिया।

इस दृश्य के समय पासेपार्टाऊट जर्द पड़ गया था और फ़िक्स? उसे तो पागलपन का दौरा होते-होते बचा। लगभग २० हजार पाउण्ड खर्च हो गये थे, और फिर भी यह फ़ॉग जहाज बेचने वाले को पेंदा और इंजन भी दिये दे रहा था यानी पूरा जहाज ही! यह सच है कि बैंक का चुराया हुआ धन ५५००० पाउण्ड था!

जब एन्ड्रू स्पीडी रुपया जेब में रख चुका तो मिस्टर फ़ॉग ने उससे कहा,—

'श्रीमान्, आप इससे चकित न हों। आपको मालूम होना चाहिए कि अगर मैं २१ दिसम्बर को लण्डन न पहुँचा तो मेरे २०००० पाउण्ड चले जायँगे। आपने मुझे लिवरपूल ले जाने से इन्कार कर दिया था और उधर मेरा जहाज छूट गया था, मैं—'

'और कसम शैतान की, मैंने अच्छा किया' एन्ड्रू स्पीडी ने चिल्लाकर कहा, 'क्योंकि इससे मुझे कम से कम ४०००० डालर का नफा हुआ है।'

तब वह और शांतिपूर्वक बोला,—

'क्या आप एक बात जानते हैं, कप्तान—?'

'फॉग।'

'अच्छा, कप्तान फ़ॉग, आपमें कुछ याङ्कीपन है।'

और इस प्रकार अपने यात्री की प्रशंसा करके, क्योंकि उसने इसे प्रशंसा ही समझा, वह चला गया। इसी समय फ़ॉग साहब ने उसे पुकारकर कहा,—

'अब तो यह जहाज मेरा है ही ?'

'अवश्य, सब से निचले लकड़ी के ढाँचे से लेकर पर्दे बाँधनेवाली बल्लियों तक, सब लकड़ी, समझे।'

'बहुत अच्छा। सब अन्दरूनी ताम-झाम काट दो और मलवा जलने दो।'

यह जाना ही जा सकता है कि पूरी भाप बनाने के लिए कितनी सूखी लकड़ी की आवश्यकता होगी। उस दिन डेक, कमरे, तख्ते और खाली डेक, सब स्वाहा हो गये।

दूसरे दिन, १९वीं दिसम्बर को उन्होंने मस्तूल, पटरे और बल्लियाँ, सब जला दीं। उन्होंने मस्तूल काट डाले और कुल्हाड़ी की भेंट चढ़ा दी। खलासियों ने अदम्य जोश प्रदर्शित किया। पासेपार्टाऊट लकड़ियाँ काटते, चीरते और फाड़ते हुए दस आदमियों के बराबर काम कर रहा था। यह तो विनाश का सम्पूर्ण आक्रोश था।

दूसरे दिन, २० तारीख को, जँगले, बचाव के साधन और जहाज का पानी के ऊपर वाला पूरा भाग आग की नजर हो गये। अब 'हेनरिटा' जहाज़ कट-पिटकर मुण्डी नाव जैसा हो गया था।

लेकिन उसी दिन उन्हें आयरलैण्ड और फ़ास्टनेट लाइट के तट दिखाई पड़े।

फिर भी दस बजे शाम को जहाज क्वींसटाउन को पारकर रहा था। लण्डन पहुँचने के लिए अब फॉग साहब के पास केवल २४ घण्टे ही थे। इसी समय 'हेनरिटा' को पूरी रफ्तार से लिवरपूल पहुँचने की जरूरत थी। उधर भाप जवाब देनेवाली थी।

'श्रीमान्', कप्तान स्पीडी ने, फॉग साहब से कहा क्योंकि अब वह भी उनकी योजनाओं में दिलचस्पी लेने लगा था,—

'मुझे वाकई आप पर तरस आता है। हर बात आपके प्रतिकूल पड़ रही है। हम अभी क्वींसटाउन ही के सामने हैं।'

'ओह !' मिस्टर फ़ॉग ने कहा, 'वह क्वीन्स टाउन है, जहाँ हम वह रोशनी देख रहे हैं।'

'हाँ।'

'क्या हम बन्दरगाह में प्रवेश कर सकते हैं?'

'नहीं। तीन घण्टे तक तो नहीं।'

'इन्तजार कर लिया जाये,' फ़ॉग साहब ने कहा, बड़े इत्मीनान से। उन्होंने यह जाहिर नहीं होने दिया कि आखिरी उत्साह से वे एक बार फिर अपने प्रतिकूल भाग्य को जीतने का प्रयत्न करने जा रहे थे।

क्वीन्स टाऊन आयरलैण्ड के तट पर एक बन्दरगाह है। यहीं पर एटलान्टिक पार करके न्यूयार्क से आनेवाले जहाज डाक के थैले देते हैं। हमेशा तैयार रहनेवाली डाकगाड़ियाँ इन चिट्ठियों को डबलिन ले जाती हैं। वहाँ से तेज चलनेवाले जहाज यह चिट्ठियाँ लिवरपूल पहुँचाते हैं। इस प्रकार वे बहुत-सा समय बचा लेते हैं। ऐसा ही समय फ़ॉग साहब भी बचाना चाहते थे।

शाम को 'हेनरिटा' द्वारा लिवरपूल पहुँचने के बजाय वे दोपहर ही को वहाँ पहुँच जायँगे, और इसके परिणामस्वरूप समय से कुछ पहले लण्डन पहुँचने के लिए उनके पास काफी समय होगा।

दिन को एक बजे 'हेनरिटा' जहाज क्वीन्स टाउन बन्दरगाह में दाखिल हुआ। फ़िलीयास फ़ॉग से कैप्टन स्पीडी ने बड़े जोर से हाथ मिलाया। फ़ॉग साहब उसे जहाज के उस मुण्डे पेंदे पर छोड़कर चल दिये, जो अब भी पायी हुई रकम की आधी कीमत का था।

मुसाफिर तुरन्त उतर पड़े। फ़िक्स की जबर्दस्त इच्छा थी कि वह उस समय फ़ॉग साहब को कैद कर ले, फिर भी उसने ऐसा नहीं किया। क्यों? क्या द्वन्द्व उसके हृदय में मचा था? क्या

फॉग साहब के सम्बन्ध में उसने अपना इरादा बदल दिया था ? क्या आखिरकार उसे पता चल गया था कि वह गलती पर था। फिर भी फिक्स ने मिस्टर फॉग का पीछा नहीं छोड़ा। श्रीमती आऊदा, और पासेपार्टाऊट को लेकर वह क्वीन्स टाउन में रेल पर सवार हो गये। पासेपार्टाऊट को साँस लेने का समय नहीं था। यह लोग डेढ़ बजे रेल में सवार हुए। डबलिन सुबह होते ही पहुँच गये और तुरन्त ही उन जहाजों में से एक में चढ़ गये जिसका लौह भाग अत्यन्त प्रौढ़ था।

दोपहर के २० मिनट पहिले, २१वीं दिसम्बर को फिलियास फॉग अन्तत: लिवरपूल में उतरे। अब उन्हें लण्डन पहुँचने के लिए केवल छ: घण्टों की ही जरूरत थी।

लेकिन इसी समय फिक्स उनके पास आया, उनके कन्धे पर हाथ रक्खा, और उन्हें उनका वारन्ट दिखाते हुआ बोला,—

'क्या आप सचमुच फिलियास फॉग हैं ?'

'हाँ, श्रीमान्।'

'मैं आपको महरानी के नाम पर गिरफ्तार करता हूँ।'

(३४)

फ़िलियास फॉग जेल में थे। लिवरपूल के कस्टम हाउस में वे कैद थे जहाँ उन्हें रात गुजारनी थी। उन्हें इसका भी इन्तजार करना था कि उनका तबादला लण्डन को हो जाये।

उनकी गिरफ्तारी के समय, पासेपार्टाऊट की इच्छा थी कि वह जासूस पर टूट पड़े। एक पुलिस के आदमी ने उसे पकड़ लिया। इस कार्य की अमानुषिकता से श्रीमती आऊदा भयभीत हो गईं और इसके विषय में पूर्णतया अनभिज्ञ होने के कारण, कुछ न समझ सकीं। पासेपार्टाऊट ने उन्हें सारा मामला समझा दिया। यह मिस्टर फॉग, जिनकी बदौलत उन्होंने अपनी जिन्दगी

प्राप्त की थी, एक डाकू की तरह गिरफ्तार किये जायें। ऐसे अपराध के प्रतिकूल श्रीमती आऊदा ने विरोध किया। इनका हृदय घृणा से क्षुब्ध हो उठा और जब उन्होंने देखा कि वे अपने रक्षक को बचाने या बचाने की कोशिश करने में असमर्थ थीं, तो उनके नेत्रों से आँसू गिरने लगे।

और फ़िक्स? उसने उन्हें गिरफ्तार किया था क्योंकि उसके कर्त्तव्य ने उसे ऐसा करने के लिए बाध्य किया था, चाहे मिस्टर फ़ॉग दोषी हों या निर्दोष। इस बात का फैसला तो अदालत ही करेगी।

तब पासेपार्टऊट के मन में एक विचार उठा—यह भयंकर खयाल कि यह सब उसी की गलती के कारण हुआ था! निस्सन्देह उसने उस बात को मिस्टर फ़ॉग से क्यों छिपाया? जब फ़िक्स ने उसे साफ़-साफ़ बतला दिया था कि वह एक जासूस था, जो उसके मालिक को चोरी के जुर्म में गिरफ्तार करना चाहता था तो उसने अपने मालिक को क्यों नहीं आगाह किया था? अगर मालिक को सारी बात मालूम हो जाती तो वे अवश्य ही फ़िक्स को अपनी निर्दोषता का सबूत देते, उसे उसकी गलतफ़हमी बता देते। और फिर, सबसे बड़ी बात तो यह होती कि मालिक इस नालायक को अपने साथ रखने और उसके सारे खर्चों को बर्दाश्त करने की गलती न करते, जिसका पहिला कर्त्तव्य यही था कि वह जैसे ही अँगरेजी भूमि पर पैर रखते, वह उन्हें कैद कर लेता। अपनी गलतियों और अपनी मूर्खता पर सोचते हुए, बेचारा पश्चात्ताप की आग में झुलस उठा। वह रो उठा, जिसे उस समय देखना बड़ा कष्टदायक था। उसे ऐसा लगा मानो उसका सर उड़ा जा रहा हो।

भयानक शीत होते हुए भी श्रीमती आऊदा और वह वहीं कस्टम हाउस की बरसाती में रुके रहे। कोई भी वहाँ से हिलना

नहीं चाहता था। वे एक बार फिर मिस्टर फ़ॉग को देखना चाहते थे।

जहाँ तक हमारे उस सज्जन पुरुष का सवाल है, वे वास्तव में बर्बाद हो गये थे, और वह भी ठीक उस समय जब वे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने जा रहे थे। यह गिरफ्तारी उन्हें ऐसा बर्बाद कर देगी कि वे पनप न पायेंगे।

बारह बजने में २० मिनट कम पर, दोपहर को १२ दिसम्बर को लिवरपूल पहुँचने के बाद अब उन्हें पौने नौ बजे रात को रिफार्म क्लब में पहुँचना था—अर्थात् अभी नौ घण्टे और पाँच मिनट उनके पास थे जब कि उन्हें लण्डन पहुँचने के लिए केवल छः घण्टे की ही आवश्यकता थी। उस समय कोई भी व्यक्ति अगर कस्टम हाउस में जाता तो वह मिस्टर फ़ॉग को एक लकड़ी की बेंच पर मूर्तिवत्, क्रोधहीन और शान्त बैठा हुआ पाता। कोई उन्हें पराजित नहीं कह सकता था। कम-से-कम ज़ाहिरा तौर पर तो यह नहीं प्रतीत होता था कि इस आघात ने उन्हें विचलित कर दिया था। क्या वे अपने अन्दर गुप्त क्रोध के उन करिश्मों में से एक को आश्रय दे रहे थे जो यकायक भयानक रूप से प्रकट हो पड़ते हैं और वह भी इस प्रकार कि रोके या दावे नहीं जा सकते? यह हम कुछ नहीं कह सकते। हाँ, फिलियास फ़ॉग वहाँ थे जरूर—शान्त, इन्तज़ार करते हुए—किसका? क्या उन्हें कोई आशा थी? क्या अब उन्हें सफलता पर विश्वास था जब कि कैदखाने की दीवारें उनके चारों तरफ खड़ी थीं?

कुछ भी हो, मिस्टर फॉग ने सावधानी से अपनी घड़ी मेज पर रख दी और सुइयों की गति को देखने लगे। उनके मुख से एक भी शब्द नहीं निकला, लेकिन उनकी नज़र में एक विचित्र स्थिरता अवश्य थी।

हर हालत में मामला संगीन था और अगर उनके उस समय के विचार कोई पढ़ सकता तो वे इस तरह के होते :—

फ़िलियास फॉग जैसा ईमानदार व्यक्ति बर्बाद हो गया था। एक बेईमान व्यक्ति की तरह वे पकड़ लिये गये थे।

क्या उन्होंने भागने की बात सोची ? क्या उन्होंने वहाँ से भाग निकलने के किसी साधन पर विचार किया ? हम ऐसा खयाल करने के लालच में पड़ जायँगे, क्योंकि एक बार उन्होंने कमरे का चक्कर लगाया। लेकिन दरवाजा मजबूती से ताले द्वारा बन्द था और खिड़कियों में लोहे के सीकचे लगे थे। वे फिर बैठ गये। उन्होंने जेब से अपनी यात्रा की डायरी निकाली। उस पंक्ति पर, जहाँ यह लिखा था :—

'२१ दिसम्बर शनिवार के दिन लिवरपूल,' उन्होंने आगे लिखा,—

'अस्सीवाँ दिन, समय ११ बजकर ४० मिनट, दिन' और उन्होंने इन्तजार किया।

कस्टम हाउस की घड़ी ने एक बजाया। मिस्टर फॉग ने देखा कि उनकी घड़ी से दो घण्टे तेज थी।

दो घण्टे ! यह मानते हुए कि उन्हें उसी क्षण एक डाकगाड़ी में कूदकर बैठ जाना चाहिए, वे अब भी रिफ़ार्म क्लब लण्डन में शाम को पौने नौ बजे पहुँच सकते थे। उनके माथे पर एक हल्की सिकुड़न दिखाई दी।

दो बजकर ३३ मिनट पर बाहर एक शोर मचा, दरवाजे की खड़खड़ाहट। पासेपार्टाऊट की आवाज सुनाई दी और फिक्स की भी।

फिलियास फॉग की दृष्टि क्षणमात्र के लिए आलोकित हुई।

दरवाजा खुला, और उन्होंने पासेपार्टाऊट, श्रीमती आऊदा और फिक्स को अपनी तरफ झपटकर आते हुए देखा।

फिक्स का दम फूल रहा था। उसके सब बाल बिखरे हुए थे और वह बोल नहीं पाता था।

'श्रीमान्', उसने हकलाते हुए कहा, 'श्रीमान्—क्षमा—बड़ी अशुभ एकरूपता—तीन दिन हुए डाकू पकड़ लिया गया—आप —स्वतंत्र !—'

फ़िलियास फॉग आजाद थे। वे जासूस के पास गये। उसके चेहरे को गौर से देखा और एक फुर्ती से, जो उन्होंने कभी की थी या अपने जीवन में कभी करते, अपनी दोनों बाँहें पीछे कीं और तब, एक गुप्त शक्ति से, उन्होंने अपने दोनों घूसों से उस बदनसीब जासूस पर प्रहार किया।

'अच्छे पड़े !' पासेपार्टाऊट चिल्ला पड़ा, जो गालियों की बौछार करता हुआ, फिर बोला—'लानत है ! अँगरेजी घूसों का उत्तम प्रयोग इसी को कहते हैं।'

औंधा पड़ा हुआ फिक्स एक शब्द नहीं बोला। उसे वही मिला जिसका वह अधिकारी था। मिस्टर फ़ॉग, श्रीमती आऊदा और पासेपार्टाऊट तुरन्त कस्टम हाउस से चल दिये। वे गाड़ी में बैठकर शीघ्र ही स्टेशन आ गये।

फ़िलियास फ़ॉग ने पूछा—क्या कोई डाक गाड़ी लण्डन जाने को तैयार है ?

उस समय दो बजकर ४० मिनट हुए थे। डाक ३५ मिनट पहिले छूट गई थी।

फ़िलियास फ़ॉग ने तब एक स्पेशल रेलगाड़ी के लिए हुक्म दिया।

वहाँ तेज चालवाले बहुत से रेल के इंजन तैयार थे। बहुत अधिक ज़रूरत आ पड़ने के कारण वे तीन बजे से पहिले नहीं चल सकते थे।

तीन बजे, इन्जीनियर से एक इनाम की बात कहते हुए फ़ॉग साहब लगडन की तरफ रवाना हुए। उनके साथ वह युवती भी थी और उनका वफ़ादार नौकर भी।

लिवरपूल और लगडन के बीच का फ़ासला साढ़े पाँच घगटे में तय किया जा सकता था। जब रास्ता बिल्कुल साफ़ हो, तो बड़ी आसानी से ऐसा हो सकता था। लेकिन वहाँ अपरिहार्य विलम्ब हुए और जब वह भद्र पुरुष स्टेशन पहुँचा तो लगडन की सारी घड़ियों में नौ बजने में दस मिनट का समय था।

संसार की परिक्रमा कर चुकने के बाद फ़िलियास फ़ॉग को पाँच मिनटों की देर हो गई थी। वे बाजी हार गये थे।

(३५)

दूसरे दिन सैविल रो के रहनेवालों को बड़ा आश्चर्य होता अगर उन्हें यह बताया जाता कि फ़िलियास फ़ॉग अपने निवास-स्थान को लौट आये थे। खिड़कियाँ और सब दरवाजे बन्द थे। बाहर कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था।

स्टेशन से चलने के बाद फ़ॉग साहब ने पासेपार्टाऊट से कहा कि वह खाने का सामान खरीद ले। यह कहकर वे अपने घर में चले गये थे।

इस भद्र पुरुष ने दुःख और सुख में एक-सा रहनेवाली अपनी आदत के अनुसार इस वज्रपात को सहन कर लिया। बर्बाद! और उस कमीने जासूस के कारण! इस लम्बे सफर में वे हमेशा मुस्तैदी से कदम उठाते रहे और अनेक कठिनाइयों और अड़चनों का बड़ी बहादुरी से मुकाबिला करते रहे। यह सब होते हुए भी रास्ते में कुछ उपकार करने का भी समय निकाला। वे एक अमानुषिक कार्य के समक्ष पराजित हुए थे जिसे वे पहिले से जान न सके और जिससे वे बच नहीं सकते थे। वाकई यह सब बड़ा भयंकर था!

उनके पास अब उस अपार धन का एक नगण्य भाग बच रहा था जो वे यात्रा प्रारम्भ करते समय साथ ले गये थे। बेरिंग बन्धुओं के पास रक्खे हुए २०,००० पाउण्ड ही अब उनकी एकमात्र पूँजी थी और जो अब रिफार्म क्लब के मेम्बरों को देने थे। इतना धन खर्च करके अगर वे बाजी जीत जाते तो कोई धनी नहीं हो जाते। उन्होंने ऐसा विचार भी नहीं किया था क्योंकि वे उन व्यक्तियों में थे जो केवल इज्जत और गौरव के लिए ही बाजी लगाते हैं। अगर यह बाजी हार गये तो वे कहीं के न रहेंगे। जो कुछ उन्हें करना था, उन्होंने सोच लिया। वे जानते थे कि अब उनको क्या करना था।

मकान में एक कमरा श्रीमती आऊदा के लिए ठीक कर दिया गया। युवती बहुत खिन्न थी। फ़ॉग के कहे हुए कुछ शब्दों से युवती ने समझ लिया कि उनका कोई भयानक इरादा था।

यह मालूम है कि कभी-कभी किसी निश्चित विचार के दबाव से यह अँगरेज लोग किन दुःखद सीमाओं तक जा सकते हैं। इस प्रकार बिना यह जाहिर किये कि वह ऐसा कर रहा था, पासेपार्टाऊट ने अपने स्वामी को गौर से देखा।

सबसे पहिले यह भला आदमी अपने कमरे में गया और बत्ती बुझा दी जो अस्सी दिनों से जल रही थी। उसने लेटर-बाक्स में बत्ती की कम्पनी की एक सूचना पायी और उसने सोचा कि उस खर्चे को रोक देने के समय से यह ज्यादा था जिसके लिए वह जिम्मेदार था।

रात गुजर गई। मिस्टर फ़ॉग सोने चले गये थे मगर क्या वे सो सके थे? जहाँ तक श्रीमती आऊदा का प्रश्न है, वे एक क्षण के लिए भी सो न सकीं। पासेपार्टाऊट अपने मालिक के दरवाजे पर एक कुत्ते की तरह पहरा देता रहा।

दूसरे दिन मिस्टर फ़ॉग ने उसे बुलाया और बड़े संक्षेप में श्रीमती आऊदा के लिए नाश्ता तैयार करने को कहा।

और खुद ? उनके लिए एक कप चाय और एक टोस्ट डबल रोटी काफी थी। नाश्ते और भोजन पर उनकी अनुपस्थिति श्रीमती आऊदा क्षमा करेंगी, क्योंकि उनका सारा समय उनके तमाम मामलात को ठीक करने में लग जायगा। वे नीचे नहीं जायँगे। शाम को वे श्रीमती आऊदा से थोड़ी देर बात करने की आज्ञा उनसे चाहेंगे।

दिन भर का काम पा जाने के बाद पासेपार्टाऊट के पास सिवाय उसे करने के और कोई काम नहीं था। उसने अपने मालिक को देखा जो अब भी अविचलित थे। वह उनके कमरे से जाने का विचार न कर सका। उसका हृदय भर आया था और उसका अन्तःकरण पश्चात्ताप से बोझिल था क्योंकि उसने हमेशा से अधिक इस विपत्ति के लिए अपने को दोष दिया। हाँ, अगर उसने मिस्टर फॉग को आगाह कर दिया होता, अगर उसने जासूस फिक्स के भद्दे इरादे उन्हें बता दिये होते, तो मिस्टर फॉग उस जासूस फिक्स को लिवरपूल तक न घसीट लाते और वह भी अपने ही खर्चे पर। और तब—

पासेपार्टाऊट और अधिक सहन न कर सका। 'मेरे मालिक! श्रीमान् फॉग!' वह चिल्ला उठा, 'मुझे शाप दे दीजिये। यह मेरी गलती की ही वजह से हुआ कि—'

'मैं किसी को दोषी नहीं ठहराता', अत्यंत शान्त स्वर में मिस्टर फॉग ने कहा—'जाओ।'

पासेपार्टाऊट चल दिया। उसने जाकर श्रीमती आऊदा को मालिक के इरादे बता दिये।

'श्रीमती', वह बोला, 'मैं खुद कुछ नहीं कर सकता, कुछ नहीं। अपने स्वामी पर मेरा प्रभाव ही क्या। शायद, आप—'

'मेरा भला क्या प्रभाव होगा' श्रीमती आऊदा ने कहा। 'मिस्टर फॉग किसी के प्रभाव में नहीं हैं। क्या उन्होंने कभी समझा

है कि मेरी कृतज्ञता उनके प्रति उफनती रही है ? क्या उन्होंने कभी मेरे हृदय को पढ़ने की कोशिश की है ? मेरे दोस्त, तुम्हें उनके पास से एक क्षण के लिए भी विलग नहीं होना चाहिए। तुम कहते हो कि वे शाम को मुझसे कुछ कहना चाहते हैं।'

'हाँ, श्रीमती। निस्सन्देह यह आपके आराम के साथ इँगलैण्ड में रहने के सम्बन्ध की ही बात है।'

'देखें क्या होता है', युवती ने जवाब दिया जो बहुत विचार-मग्न थीं।

इस प्रकार, आज रविवार के दिन, सैविल रो का यह मकान ऐसा लगा मानो वहाँ कोई रहता ही नहीं था। जब से वह वहाँ आया था, यह पहिला ही मौका था कि मिस्टर फॉग रिफार्म क्लब नहीं गये थे।

और अब ये रिफार्म क्लब जाते ही क्यों ? उनके साथियों को उनके वहाँ पहुँचने की आशा नहीं थी। चूँकि फिलियास फॉग पिछली रात को रिफार्म क्लब नहीं गये थे, यानी २१वीं दिसम्बर को शनिवार के दिन उनकी उपस्थिति वहाँ नहीं हो सकी थी, उनकी बाजी चली गई। इसकी भी जरूरत नहीं थी कि वे बैंक की २०,००० पाउण्ड की रकम लेने जाते। उनके विरोधियों के पास उनका दस्तखत किया हुआ चेक था। बेरिंग बन्धु को एक मामूली सूचना ही भेजना काफी था और २०,००० पाउण्ड उनके खाते में जमा हो जाते।

इसलिए मिस्टर फॉग को बाहर जाने की कोई जरूरत ही नहीं थी। अपने काम-धाम को ठीक करते हुए फॉग साहब अपने कमरे में ही रहे। पासेपार्टाऊट बार-बार जीने के ऊपर-नीचे जाता था। उस गरीब का समय कटता ही नहीं था। उसने अपने मालिक के दरवाजे पर कान लगा कर सुना। ऐसा करने में उसने ज़रा भी नहीं

सोचा कि वह कोई मूर्खता कर रहा है। उसने चाभी के सूराख से देखा, और सोचा कि उसे इसका अधिकार था। प्रत्येक क्षण पासेपार्टाऊट को किसी विपत्ति के आ जाने का भय था। कभी उसने फ़िक्स की बात सोची, लेकिन उसके दिमाग में एक परिवर्तन हो गया था। उसकी नजर में जासूस अब दोषी नहीं था। कोई भी व्यक्ति फ़िक्स की ही तरह धोखा खा सकता था। मिस्टर फ़ॉग का पीछा करके और अन्त में उन्हें गिरफ्तार करके उसने केवल अपने कर्त्तव्य का पालन किया था। लेकिन उसने—। इस विचार ने उसे परेशान कर दिया और उसने अपने को सबसे बदकिस्मत इन्सान समझा।

जब पासेपार्टाऊट को एकाकीपन बहुत ज्यादा सताता था तो वह श्रीमती आऊदा का द्वार खटखटाता था, उनके कमरे में जाता था और बिना कुछ बोले हुए चुपचाप एक कोने में जाकर बैठ जाता था। वह श्रीमती आऊदा को खयाल में डूबी हुई नजर से देखता था।

शाम को लगभग साढ़े सात बजे, मिस्टर फ़ॉग ने श्रीमती आऊदा से पुछवाया कि क्या वे उस समय उनसे मिल सकती थीं। कुछ देर बाद ही दोनों व्यक्ति एक कमरे में एकान्त में थे।

फिलियास फ़ॉग ने एक कुर्सी ली और श्रीमती आऊदा के प्रतिकूल दिशा में अँगीठी के पास बैठ गये। उनके चेहरे पर कोई भावनाएं नहीं दिखाई देती थीं। फ़ॉग साहब जैसे जाते समय थे वैसे ही आते समय भी थे। वही शान्ति, वही सौम्य, वही सब प्रकार की परिस्थितियों में एक-सा रहने का स्वभाव।

वे बिना बोले हुए पाँच मिनटों तक बैठे रहे। तब, श्रीमती आऊदा की तरफ नजर उठाते हुए, उन्होंने कहा,—

'श्रीमती, क्या आप मुझे इसके लिए क्षमा करेंगी जो मैं आपको इँगलैण्ड ले आया?'

'मैं, मिस्टर फ़ॉग!' अपने हृदय की धड़कनों को दबाते हुए श्रीमती आऊदा ने कहा।

'कृपा करके मुझे बात पूरी कर लेने दीजिये', मिस्टर फ़ॉग बोले। जब मैंने आपको उस देश से बहुत दूर ले जाने की बात सोची थी, मैं अमीर था, और मैंने सोचा था कि अपनी सम्पत्ति का कुछ भाग आपकी मर्ज़ी पर छोड़ दूँगा। आपका जीवन सुखी और आनन्दमय होता, क्योंकि आप उस देश में बहुत दूर होतीं जो आपके लिए इतना खतरनाक हो गया था।'

'मैं जानती हूँ, मिस्टर फ़ॉग', युवती ने उत्तर दिया, 'और अब मैं आपसे पूछूँगी,—क्या आप मुझे क्षमा करेंगे जो मैं आपके साथ यहाँ तक चली आई, और—कौन जानता है इसके लिए भी जो मैंने आपके विलम्ब का कारण बनते हुए आपके विनाश में सहायता की?'

'श्रीमती, आप भारतवर्ष में कैसे रह सकती थीं और आपकी सुरक्षा उसी समय निश्चित हो सकती थी जब आपको कहीं इतनी दूर हटा दिया जाता कि वे अन्ध-विश्वासी आपका पता न पा सकते।'

'इसलिए, मिस्टर फ़ॉग', श्रीमती आऊदा ने उत्तर दिया, 'केवल भयानक मौत के पंजों से मुझे छुड़ाकर ही आप सन्तुष्ट नहीं हुए बल्कि मुझे विदेश में ले आकर मेरी स्थिति को दृढ़ करने की भी बात आपने सोची।'

'हाँ, श्रीमती', फ़ॉग ने उत्तर दिया, 'लेकिन घटनाओं ने अब करवट ले ली है और भाग्य रूठ गया है। फिर भी मैं आपकी स्वीकृति चाहता हूँ कि जो कुछ थोड़ा बहुत आपके निमित्त रह गया है, उसे ठीक-ठाक कर दूँ।'

'लेकिन आप मिस्टर फ़ॉग, आपका क्या होगा?' श्रीमती आऊदा ने पूछा।

'मैं, श्रीमती', भद्र पुरुष ने रुखाई से उत्तर दिया, 'मुझे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है।'

'लेकिन, कैसे, श्रीमान् आप आनेवाली दशाओं का सामना करेंगे ?'

'जैसे मुझे करना चाहिए', मिस्टर फ़ॉग ने उत्तर दिया। 'हर हालत में', श्रीमती आऊदा कहती गई, 'आप जैसे व्यक्ति तक जरूरत पहुँच ही कैसे सकती थी। आपके मित्र—'

'मेरे कोई मित्र नहीं हैं, श्रीमती।'

'आपके रिश्तेदार—'

'अब मेरे कोई रिश्तेदार नहीं हैं।'

'मुझे आप पर दया आती है, तब, मिस्टर फ़ॉग, एकाकीपन बड़ा दुःखद होता है। क्या कहा ? क्या आपका कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है जिसे आप अपने दुःख-दर्द की कहानी कह सकें ? सुनते हैं कि यदि दो जने हों तो बड़ी-से-बड़ी मुसीबत भी सही जा सकती है।'

'ऐसा ही सुना जाता है, श्रीमती।'

'मिस्टर फ़ॉग', तब उठते हुए और अपना हाथ उन्हें पकड़ाते हुए श्रीमती आऊदा ने कहा 'क्या आप इसी समय एक साथ ही, एक रिश्तेदार और मित्र पाने की इच्छा रखते हैं ? क्या आप मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना पसन्द करेंगे ?'

इस पर, अबकी मिस्टर फ़ॉग उठे। उस समय उनकी आँखों में एक ऐसी आभा देखी गई जो अब तक कभी नहीं देखी गई थी। उनके ओठों पर एक कम्पन भी परिलक्षित हुआ। श्रीमती आऊदा ने उनको देखा। यह सचाई, यह दृढ़ता, यह नैतिक बल, यह मधुरता उस युवती की कोमल दृष्टि की थी जिसने उन्हें बचाने के लिए हर बात की हिम्मत की और जिसकी कृपा से उसे अपना जीवन

प्राप्त हुआ था। इस दृष्टि ने पहिले मिस्टर फॉग को चकित किया, फिर उनके हृदय में उतर गई। उन्होंने क्षण मात्र के लिए अपनी आँखें बन्द कीं, मानो यह कोशिश कर रहे हों कि वह दृष्टि और गहराई में न उतर जाये। जब उन्होंने आँखें फिर खोलीं, उन्होंने सरलता से कहा,—

'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। हाँ, सचमुच, संसार की पवित्रतम वस्तु की सौगन्ध, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, और मैं सम्पूर्णतया तुम्हारा ही हूँ!'

'आह!' उनके हाथ को अपने हृदय पर दबाते हुए श्रीमती आऊदा जोर से बोल उठीं।

मिस्टर फॉग ने पासेपार्टाऊट के लिए घण्टी बजाई। वह तुरन्त आ गया। मिस्टर फॉग अब भी श्रीमती आऊदा का हाथ अपने हाथ में पकड़े हुए थे। पासेपार्टाऊट सब समझ गया और उसका चौड़ा चेहरा सख्त गर्म देशों में सबसे ज्यादा ऊँचाई पर चमकते हुए सूर्य के समान चमक उठा।

मिस्टर फॉग ने पूछा कि मेरी-ली-बोन पेरिस के पूज्य सैमुएल विल्सन को सूचित करने के लिए देर तो नहीं हो गई थी।

पासेपार्टाऊट ने बड़ी मधुरता से मुस्कराते हुए कहा,—

'किसी काम के लिए देर नहीं होती।'

उस समय आठ बजकर पाँच मिनट हुए थे।

'अब तो यह कल होगा, सोमवार को', उसने कहा।

'क्या कल सोमवार को?' मिस्टर फॉग ने युवती की तरफ देखते हुए कहा।

'कल सोमवार को!' श्रीमती आऊदा ने उत्तर दिया।

बड़ी तेजी से दौड़ता हुआ पासेपार्टाऊट बाहर चला गया।

(३६)

यहाँ अब यह बताने की आवश्यकता है कि संयुक्त देश (ब्रिटिश साम्राज्य) में कैसा मतान्तर हुआ होगा, जब उन्हें बैंक के असली डाकू, जेम्स स्ट्रैन्ड के एडिनबर्ग में १७ दिसम्बर को गिरफ्तार होने की खबर लगी होगी।

तीन दिन पहिले, फ़िलियास फॉग एक मुजरिम थे जिनका पीछा पुलिस बड़ी तेजी से कर रही थी। अब वे सबसे बड़े ईमानदार व्यक्ति थे जिन्होंने बड़े गणितीय ढंग से पृथ्वी की परिक्रमा करना शुरू कर दिया था।

क्या ही प्रभाव पड़ा! पत्रों में कैसी उत्तेजना हुई! सब पक्ष या विपक्ष में बाजी लगानेवाले इस मामले को भूल ही गये थे। अब उनकी याद फिर ताजी हो गई। बातचीत का फिर महत्त्व बढ़ा, नई बाजियाँ लगाई गईं और नई उमंग से। फ़िलियास फॉग के नाम की इँगलैण्ड में फिर कीमत बढ़ गई।

रिफार्म क्लब के पाँच साथियों ने तीन दिन बड़ी बेचैनी से गुजारे। फ़िलियास फॉग को वे भूल चुके थे। क्या वे फिर उनके सामने आयँगे? इस समय वे कहाँ थे? उस दिन १७ दिसम्बर को, जिस दिन जेम्स स्ट्रैन्ड गिरफ्तार हुआ था, फ़िलियास फॉग के रवाना होने से छिहत्तरवाँ दिन हुआ था और उनकी कोई खबर नहीं थी! क्या वे मर गये थे? क्या उन्होंने प्रयत्न करना छोड़ दिया था या शर्त के अनुसार भ्रमण कर रहे थे? और क्या वे २१ दिसम्बर शनिवार की शाम को पौने नौ बजे वहाँ पहुँच जायँगे?

हमें अब उस उत्सुकता को व्यक्त करने का प्रयत्न करना छोड़ देना चाहिए जो तीन दिनों तक लण्डन के समाज में रही। उन्होंने फ़िलियास फॉग की खबर पाने के लिए अमरीका, एशिया आदि

को लिखा। उन्होंने सुबह-शाम सैविल रो के मकान को भी देखा। वहाँ क्या होता ? पुलिस खुद नहीं जानती थी कि जासूस फिक्स का क्या हुआ जिसने इतनी बदकिस्मती से अपने को एक गलत व्यक्ति के पीछे लगा दिया था। इस बात से और अधिक लम्बी रकमों पर नये सिरे से बाजियों का लगना बन्द नहीं हुआ। फ़िलियास फॉग, एक घुड़दौड़ के घोड़े की तरह आखिरी मोड़ पर पहुँच रहे थे। अब उन पर सौ की नहीं बल्कि हजारों की बाजी लग रही थी। अब भी गठिया के मरीज बुड्ढे लार्ड एल्बेमार्ले ने इनके पक्ष में दाँव लगाया।

अतः शनिवार के दिन शाम को पालमाल और पड़ोस की सड़कों पर भीड़ इकट्ठी हो गई। मान लिया गया होगा कि रिफार्म क्लब के चारों ओर स्थायी रूप से स्थित दलाल ही होंगे। आमद-रफ्त जाम हो गई। उन्होंने बहस की, झगड़े और 'फ़िलियास फ़ॉग' की बोलियाँ बोलीं जैसा कि वे अँगरेजी कॉन्सलों के बारे में करते हैं। भीड़ को पीछे करने में पुलिस को कठिनाई हुई और जैसे ही फ़िलियास फ़ॉग के वहाँ उपस्थित होने का समय पास आता गया, वैसे ही उत्तेजना बढ़ती गई।

आज शाम को, फ़ॉग साहब के पाँचों साथी रिफार्म क्लब के आलीशान कक्ष में एकत्रित थे। दोनों महाजन, जॉन सुलीवन और सैमुएल फैलिनटिन, इन्जीनियर ऐन्ड्रू स्टुअर्ट, बैंक ऑफ इँगलैण्ड के डॉयरेक्टर गॉथियर रैल्फ और शराब-निर्माता थॉमस फ़्लैनागन—सब ने बड़ी उत्सुकता से इन्तजार किया।

क्लब की घड़ी ने जब आठ बजकर पचीस मिनट का समय सूचित किया तो एन्ड्रू स्टुअर्ट ने उठते हुए कहा,—

'सज्जनो, हमारे और मिस्टर फ़िलियास फ़ॉग के बीच तय हुआ समय २० मिनट के बाद बीत जायगा।'

'लिवरपूल से आखिरी गाड़ी कब आती है ?' थॉमस फ़्लैनागन ने पूछा।

'सात बजकर तेइस मिनटों पर', गॉथियर रैल्फ़ ने उत्तर दिया, 'और दूसरी गाड़ी रात को, बारह बजकर दस मिनट के पहिले नहीं आती।'

'अच्छा, सज्जनो', एन्ड्रू स्टुअर्ट ने कहा, 'अगर फ़िलियास फ़ॉग सात बजकर २३ मिनट पर गाड़ी में आ गये होते, तो उन्हें यहाँ आ जाना चाहिए था। अब हम कह सकते हैं कि हम बाजी जीत गये।

'तय करने से पहिले आइये इन्तजार कर लें', सैमुएल फैलिनटिन ने जवाब दिया। 'आप जानते हैं कि हमारे मिस्टर फ़ॉग विचित्र व्यक्ति हैं। उनकी समय की पाबन्दी विख्यात है। न वे कभी जल्दी ही आते हैं, और न कभी देर ही में। वे यहाँ बिल्कुल ऐन मौके पर ही आयँगे, नहीं तो मुझे बड़ा आश्चर्य होगा।'

'और मैं', एन्ड्रू स्टुअर्ट ने कहा, जो हमेशा घबराये से रहते हैं, 'अगर उन्हें देखूँगा तो यही कहूँगा कि वे हैं ही नहीं।'

'वास्तव में' थॉमस फ़्लैनागन ने उत्तर दिया, 'फ़िलियास फ़ॉग की योजना निरर्थक थी। वे चाहे जितने ही समय के पाबन्द क्यों न होते, वे अपरिहार्य विलम्बों को नहीं रोक सकते थे और एक या दो दिनों की देर भी उनके भ्रमण को चौपट कर सकती थी।'

'इसके अतिरिक्त आप देखेंगे कि हमने अपने साथी की कोई खबर नहीं पायी है जब कि उनके मार्ग पर टेलीग्राम के तारों की समुचित व्यवस्था है।' जान सुलिवन ने कहा।

'सज्जनो ! वे हार चुके हैं,' एन्ड्रू स्टुअर्ट ने जवाब दिया, 'वे सौ बार हारे धरे हैं। आप जा ते हैं, इसके अतिरिक्त, कि लिवरपूल के लिए चलनेवाला जहाज 'चाइना' कल आ गया था। लिवर-पूल के लिए न्यूयार्क से कोई दूसरा जहाज चलता ही नहीं है।

देखिए, यह रही यात्रियों को सूची जिसे 'शिपिंग गजट' ने प्रकाशित किया है, और फॉग साहब का नाम इस सूची में है ही नहीं। अत्यन्त अनुकूल परिस्थितियों को मानते हुए भी, हमारे साथी मुश्किल से अभी अमरीका पहुँचे होंगे! मैं समझता हूँ कि उन्हें कम से कम २० दिनों की देर हो जायगी। इस हालत में लॉर्ड एल्बेमार्ले अपने ५००० पाउण्ड से हाथ धो बैठेंगे।'

'यह प्रत्यक्ष बात है' गॉथियर रैल्फ ने उत्तर दिया, 'और कल हमें बेरिंग बन्धुओं को फॉग साहब का चेक देना रह जायेगा।'

उस समय क्लब की घड़ी में आठ बजकर चालिस मिनट हुए थे।

'अब भी पाँच मिनट हैं,' एन्ड्रू स्टुअर्ट ने कहा।

पाँचों साथियों ने एक दूसरे को देखा। यह माना जा सकता है कि उनके हृदय जरा तेजी से धड़क रहे थे, क्योंकि अच्छे खिलाड़ियों के लिए भी यह अच्छा खतरा था। लेकिन उन्होंने अपने को धोखा नहीं दिया, क्योंकि सैमुएल फैलेनटिन के कहने से वे ताश खेलने बैठ गये।

'मैं बाजी का अपने हिस्से का ४००० पाउण्ड नहीं दूँगा चाहे मुझे कोई ३९९९ पाउण्ड ही क्यों न दे!'

इस समय घड़ी ने आठ बजकर ४२ मिनट सूचित किये।

खिलाड़ियों ने अपने ताश उठाये, लेकिन उनकी आँखें बराबर घड़ी पर ही जमी थीं। यह मानना पड़ेगा कि उनकी पुख्तगी होते हुए भी घड़ी की सुइयाँ इतनी देर में घूमती हुई उन्हें भी नहीं लगी थीं।

तब एक क्षण के लिए सन्नाटा रहा। क्लब का विशाल कक्ष खामोश था। बाहर उन्होंने भीड़ का शोरगुल सुना और जोरों की चिल्लाहटें भी। घड़ी का पेन्डुलम (लटकन) गणितीय क्रम से

एक-एक सेकेण्ड बजा रहा था और उनकी टिक-टिक हर एक खिलाड़ी के कान से टकराती थी।

'आठ बजकर ४४ मिनट,' जॉन सुलीवन ने कहा।

एक मिनट बीते मानो बाजी जीत ली जाय। एन्ड्रू स्टुअर्ट और उनके साथी लोग अब आगे न खेल सके। उन्होंने पत्ते हटा दिये थे।

चालीसवें सेकेण्ड पर, कोई नहीं। पचासवें पर भी कुछ नहीं।

पचपनवें पर, बाहर जोरों का हंगामा, जय जयकार, यहाँ तक कि लगातार कोसने की आवाजें।

खिलाड़ी उठ पड़े।

सत्तावनवें सेकेण्ड पर, क्लब के कक्ष का द्वार खुला और घड़ी ने अभी साठवें सेकेण्ड की टिक भी नहीं की थी कि फिलियास फॉग हाजिर हो गये। उनके पीछे एक उत्साहित भीड़ थी जो बल-पूर्वक भीतर घुस आई थी, और उन्होंने अपनी शान्त आवाज में कहा,—

'सज्जनो, यह रहा मैं!'

(३७)

हाँ! फिलियास फॉग खुद।

यह याद होगा कि शाम को आठ बजकर पाँच मिनट पर, यात्रियों के लन्दन पहुँचने के २५ घण्टे के बाद पासेपार्टाऊट को उसके मालिक ने पूज्य सैमुएल विल्सन को एक विवाह के सम्बन्ध में सूचना देने के लिए कहा था जो दूसरे दिन होनेवाला था।

पासेपार्टाऊट प्रसन्नचित्त चला गया। वह तेज चाल से पूज्य सैमुएल विल्सन के निवास-स्थान पर गया, जो अभी घर नहीं आये थे। निस्सन्देह पासेपार्टाऊट ने रास्ता देखा, पूरे २० मिनटों तक। आठ बजकर ३५ मिनट पर वह पादरी के मकान से चल दिया। लेकिन किस हालत में! उसके बाल बिखरे हुए, टोपी नदारद,

भागता हुआ, जैसा कि कभी देखा नहीं गया, राहगीरों से टकराता हुआ, फुटपाथों पर एक चश्मे की तरह भागता हुआ।

तीन मिनटों में वह सैविल रो वाले मकान पर आ गया था और बेदम होकर मिस्टर फॉग के कमरे में गिर पड़ा।

वह बोल नहीं पाया।

'क्या बात है ?' मिस्टर फॉग ने पूछा।

'मालिक'—पासेपार्टाऊट हकलाया—'शादी असम्भव !'

'असम्भव ?

'कल—असम्भव'

'क्यों ?'

'क्योंकि कल इतवार है।'

'सोमवार,' मिस्टर फॉग ने उत्तर दिया।

'नहीं—आज—शनिवार।'

'शनिवार ? असम्भव !'

'हाँ, हाँ, हाँ !' पासेपार्टाऊट चिल्ला पड़ा। 'आपने एक दिन की गलती की है। हम २४ घण्टे पहिले आ गये थे। अब दस मिनट भी नहीं हैं।'

पासेपार्टाऊट ने मालिक का कॉलर पकड़ लिया और पराजित न होनेवाली ताकत से उन्हें आगे घसीटा।

इस प्रकार खिंचते हुए फॉग साहब कमरे के बाहर हुए। उन्हें कुछ सोचने-समझने का भी मौका नहीं मिला। वे गाड़ी में कूद कर बैठ गये और कोचवान को एक सौ पाउण्ड देने को कहा। दो कुत्तों को कुचलते और पाँच गाड़ियों से टकराते हुए वे रिफार्म क्लब पहुँचे।

जब वे क्लब के भव्य कक्ष में पहुँचे तो घड़ी ने पौने नौ बजाये।

फिलियास फॉग ने अपनी यात्रा अस्सी दिनों में समाप्त कर ली थी !

फ़िलियास फ़ॉग ने २०००० पाउण्ड की बाजी जीत ली थी !

और अब देखना यह है कि फ़िलियास फ़ॉग जैसा आदमी, जो एक-एक सेकेण्ड का हिसाब रखता था, बड़ी होशियारी बर्तता था, वह पूरे एक दिन, यानी २४ घण्टों की गलती कैसे कर बैठा !

२१ दिसम्बर को उन्होंने शनिवार की शाम कैसे समझ लिया, जब कि वह शुक्रवार ही था यानी २० दिसम्बर; लण्डन से उनकी रवानगी का केवल उन्नासीवाँ दिन।

इस गलती का कारण यह है, जो साधारण-सी बात है।

अनजान में, फ़िलियास फॉग ने यात्रा करते समय एक दिन की बचत की थी जिस पर कोई शक भी उन्हें नहीं हुआ। क्योंकि उन्होंने संसार की यात्रा पूर्व की तरफ़ जाते हुए की थी और अगर वे प्रतिकूल दिशा में जाते तो उन्हें एक दिन अधिक लगता।

निस्सन्देह, पूर्व की ओर यात्रा करते हुए फ़ॉग साहब सूरज की ओर जा रहे थे। इसके परिणामस्वरूप दिन उतनी ही बार चार मिनट कम होते गये जितनी बार उन्होंने इस दिशा में अंशों को पार किया। पृथ्वी की परिधि में ३६० अंश होते हैं और अगर इन ३६० अंशों को ४ मिनट से गुणा कर दिया जाय तो ठीक २४ घण्टे हो जाते हैं—यानी अनजान में प्राप्त किया हुआ पूरा दिन। दूसरे शब्दों में पूर्व की ओर यात्रा करते हुए फ़िलियास फ़ॉग ने सूरज को ८० बार सबसे ज्यादा ऊँचाई पार करते देखा था जब कि लण्डन में उनके साथियों ने उसे ७९ बार ही देखा था। इसीलिए यह दिन शुक्रवार नहीं बल्कि शनिवार था और इसीलिए शाम उनके साथी रिफार्म क्लब में उनका उत्सुकता से रास्ता देख रहे थे।

पासेपार्टाऊट की प्रसिद्ध घड़ी, जिसमें सदैव लण्डन का ही समय रहता था, यही बात सूचित करती अगर घण्टे और मिनट के साथ-साथ वह दिन भी बताती !

तब फिलियास फॉग ने २०,००० पाउण्ड जीत लिये थे। चूँकि उन्होंने अपनी यात्रा में १६,००० पाउण्ड खर्च कर दिये थे, आर्थिक लाभ नगण्य था। फिर भी जैसा कि कहा जा चुका है, उस सनकी व्यक्ति को रुपये की जगह बाजी जीत जाने का ज्यादा खयाल था। वे जीत चाहते थे, रुपया नहीं। यहाँ तक कि जो एक हजार पाउण्ड बच रहे थे वह भी उन्होंने पासेपार्टाऊट और बद-नसीब फिक्स को बाँट दिया जिसके खिलाफ वे कोई बुरी बात अब न सोच सके। केवल पाबन्दी के कारण उन्होंने बत्ती के जलने का खर्च पासेपार्टाऊट के भाग से काट लिया जो उसी की गलती से ६२० घण्टे तक जलती रही थी।

उसी दिन शाम को, हमेशा की तरह स्थिर और विचलित न होनेवाले मिस्टर फॉग ने श्रीमती आऊदा से कहा—'

'क्या अब भी यह विवाह आपको पसन्द है ?'

'मिस्टर फॉग,' श्रीमती आऊदा ने जवाब दिया, 'यह तो सवाल मुझे आपसे करना करना चाहिए था। आपका विनाश हो गया था; अब आप अमीर हैं—'

'मुझे क्षमा करें, श्रीमती; मेरा सर्वस्व आपका ही है। अगर आपने विवाह की बात न सोची होती तो मेरा नौकर पूज्य सैमुएल विल्सन के घर न गया होता। मुझे मेरी गलती न मालूम हुई होती और—'

'प्यारे मिस्टर फॉग'—युवती ने कहा।

'प्यारी आऊदा,' फिलियास फॉग ने उत्तर दिया।

यह तुरन्त समझ में आ जाता है कि विवाह ४८ घण्टे बाद

हुआ। आभापूर्ण, अत्यंत प्रभावशाली, और तेजपूर्ण पासेपार्टाऊट युवती का गवाह रहा। क्या उसने युवती को नहीं बचाया था ? क्या उन्हें उसका आदर नहीं करना चाहिए था ?

दूसरे दिन, पासेपार्टाऊट ने जोर से अपने मालिक के कमरे का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला, और शान्तचित्त फॉग उपस्थित हो गये।

'क्या मामला है, पासेपार्टाऊट ?'

'मामला क्या है, श्रीमान्, यह मैंने अभी मालूम किया है—'

'क्या ?'

'कि हम संसार की यात्रा ७८ दिनों में कर सकते थे।'

'निस्सन्देह', मिस्टर फॉग ने उत्तर दिया, 'भारतवर्ष को पार करके नहीं। लेकिन अगर मैंने भारतवर्ष को पार न किया होता, मैं श्रीमती आऊदा को न बचा पाता और वे मेरी स्त्री न होतीं, और—'

और मिस्टर फॉग ने चुपचाप दरवाजा बन्द कर लिया।

इस प्रकार फिलियास फॉग ने अपनी बाजी जीती। अस्सी दिनों में उन्होंने पृथ्वी की परिक्रमा कर डाली थी।

ऐसा करने के लिए उन्होंने प्रत्येक प्रकार की सवारी की थी—जलपोत, रेलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, लघुपोत, माल के जहाज, बर्फ पर फिसलने वाली गाड़ी, हाथी। इस मामले में इस निराले व्यक्ति ने अपनी आश्चर्यजनक शान्ति और समय की पाबन्दी का प्रदर्शन किया था।

लेकिन इसके बाद ? घर से बाहर जाकर उन्हें क्या मिला ? वे अपनी यात्रा से क्या चीज घर लाये ?

कुछ नहीं। यही आप कहेंगे, न ? कुछ नहीं, शायद। एक सुन्दर आकर्षक युवती जरूर उनको प्राप्त हो गई थी जिसने उनको

अत्यन्त आनन्दित और सुखी कर दिया। हो सकता है यह असम्भव प्रतीत हो।

सचमुच, क्या इससे कम पर आप पृथ्वी की परिक्रमा नहीं करेंगे?